

ईरान के सूफ़ी कवि

लेखक

श्री बाँकेबिहारी

श्री कन्हैयालाल



ग्रन्थ-संख्या—६८
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भण्डार
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
वि० '९६,
मूल्य ४।।)

मुद्रक—
कृष्णाराम मेहता
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्राकथन

प्रस्तुत पुस्तक में ईरान के सनाई, रूमी, अत्तार, शब्सतरो, निजामी, जामी, हाफिज और उमर खैय्याम आदि नौ प्रसिद्ध सूफी कवियों की चुनी हुई रचनायें संग्रहीत हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि इनके अतिरिक्त और प्रमुख सूफी कवि हैं ही नहीं वरन् इन कवियों के प्रति मेरा विशेष प्रेम होना ही इस चुनाव का प्रधान कारण है। अनवरो आदि और अच्छे सूफी कवियों को स्थान परिमित होने के कारण छोड़ देना पड़ा।

कविताओं के चुनाव के सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि ये सूफी सिद्धान्तों का निदर्शन हैं और प्रस्तुत संग्रह का ध्येय भी, रहस्यवादी सूफी कवियों की वाणी में ही उनके सिद्धान्तों की व्याख्या कर देना है। कवियों के द्वारा ही सूफी मत को अभिव्यक्ति सम्भव है क्योंकि कविता ही सूफी मत का प्राण है।

मेरा विश्वास है कि साहित्यिक आनन्द के अतिरिक्त ऐसी पुस्तकों के अध्ययन से भिन्न राष्ट्रों की संस्कृति से परिचित होने में भी सहायता मिलती है।

संग्रह कवियों के क्रमानुसार है और रचनायें १००० से १५०० ईसवी अर्थात् पांच शताब्दियों तक विस्तृत सूफीमत की रूपरेखा का सामान्य परिचय देती हैं।

अनुवाद केवल शब्दार्थ न होकर भावानुकूल रहे इस का प्रयत्न किया गया है। अनुवाद में मूल का सौन्दर्य अपेक्षाकृत घट जाता है इसीलिए कविताओं का मूल फारसी रूप भी दे दिया है। इससे पाठकों को फारसी के छन्द-सौन्दर्य, भाषा-माधुर्य और काव्य-संगीत का परिचय मिल सकेगा और अनुवाद उन्हें इन कवियों की भावना की अतल गहराई और कल्पना की ऊँची उड़ान तक पहुँचने में सहायता देगा।

सूफियों और सूफी मत से ही प्रस्तुत संग्रह का सम्बन्ध है अतः इन विषयों पर कुछ कहना असंगत न होगा। सामान्यतः विषय का विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :—

- (१) सूफी शब्द
- (२) सूफी कौन हैं ?
- (३) उनके मूल सिद्धान्त

१—सूफी शब्द

इस शब्द के सम्बन्ध में बहुत सी धारणायें बन गई हैं। किसी की धारणा है कि यह कित्ता कम्बल (सूक) पहनता था इसी कारण इन्हें यह नाम दिया गया। एक दूसरा मत है कि इनके पूर्वज अहले सुफ़ा अर्थात् हज़रत साहब के साथी थे इसीलिये यह सूफी कहे जाने लगे। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि सूफी का उद्गम फ़ैल सूफ (Philosophy) से है जिसका मूल अर्थ ज्ञान है।

इस सम्प्रदाय का हज़रत अली अर्थात् मुहम्मद साहब के दो सौ वर्ष बाद से अधिक विकास हुआ। इनके स्वतन्त्र विचारों के कारण इन पर अत्याचार बढ़ते गए परन्तु कुछ समय के उपरान्त इनके उच्च विचारों के कारण बहुतों ने इस सम्प्रदाय का आश्रय लिया और इसके सिद्धान्तों को समझ कर औरों को समझाने का प्रयत्न किया।

सूफी विशेष रूप से ईरान का ही मत नहीं है। अपने वेदान्ती, भक्ति-मार्गी, कुछ अंशों में बौद्ध तथा पश्चिमीय रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय वाले सूफियों से विशेष भिन्न नहीं हैं। मूलतः सब एक ही हैं परन्तु भिन्न भिन्न देशों में उनके नामकरण भिन्न हो गये हैं। वास्तव में वे सभी सत्य के अन्वेषक और अलौकिक प्रेम के भिक्षुक हैं।

२—सूफी कौन हैं ?

सूफी दिव्य प्रेम के भिक्षुक हैं। न इन्हें कुक् से मतलब है न ईमान से, क्योंकि दोनों को यह ढोंग मानने हैं। संसार में हर ओर ढोंग देख कर तथा किसी को घंटा बजाते और किसी को बनावटी माला जपते देख कर इन का मन विरक्त हो उठता है। वे इन सब बाहर के बन्धनों को तोड़ कर पूजा जप और माला के पाखण्ड से बच कर अपने प्रियतम की खोज में ही तन्मय रहना चाहते हैं।

सूफी के निकट मतमतान्तर ऊँच नीच, हिन्दू मुसलमान आदि का कोई मूल्य नहीं। वह तो संसार की विविधता में एकता देखता है, जहाँ कहीं उसे अपने प्रियतम का आभास मिल जाता है वहीं वह मस्तक झुका देता है। अपने मजहब के सम्बन्ध में एक सूफी ने कहा है :—

“मर्द आशिक रा न वाशद इल्लते,
आशिकां रा न देह मिल्लते।
मजहबे इश्क अज हमा दीनहा जुदास्त,
आशिक रा मजहब व मिल्लत ख़ुदास्त।”

अर्थात् प्रेमी का लगाव संसारो इल्लत से परे है। उसका मजहब कोई नहीं। सब दीनों से अलग वह केवल भगवत प्रेम ही से सरोकार रखता है।

यही वह अपने जीवन से बतलाना चाहता है। उसके निकट प्रेम ही साधन है प्रेम ही साध्य है। सूफी उस परदे को हटाने का प्रयत्न करता है जो दैवी प्रेम को छिपाये है और अपने उद्देश्य को प्रेम ही द्वारा ढूँढ़ता है। अपनेपन को नष्ट करके, वह परमात्मा से मिलने की इच्छा रखता है। जहाँ एक बार वह परदा उठा कि वह प्रेम के अर्थ को जान जाता है, और उसमें तन्मय हो हरिभजन के आनन्द में डूबा अपने दिन बिता देता है।

३-सूफी मन के मूल सिद्धान्त

सूफी का प्रमुख ध्येय अपने अहं को मिटाना है। रूमी ने इसी को एक उदाहरण द्वारा बताया है :

“ किसी ने प्रियतम के दरवाजे पर जाकर खटखटाया। अन्दर से एक आवाज ने पूछा ‘तू कौन है’ ? उस ने कहा ‘मैं’। आवाज ने कहा ‘इस घर में ‘मैं’ और ‘तू’ दो नहीं समा सकते’। और दरवाजा नहीं खुला। वह दुःखी प्रेमी वापिस जंगल में तप करने चला गया। साल भर कठिनाइयाँ सह कर वह लौटा और उसने फिर दरवाजा खटखटाया। फिर उससे वही प्रश्न किया गया ‘तू कौन है ?’ प्रेमी ने जवाब दिया ‘तू’। दरवाजा खुल गया। ”

इस सत्य तक पहुँचने के लिए सूफियों के मत में एक मार्ग बताया गया है और उसके समझने के लिए यह जान लेना जरूरी होगा कि इस मत के आधार-भूत सिद्धान्त कौन कौन से हैं। सूफियों के मूल सिद्धान्त निम्न-लिखित हैं :

(१) परमात्मा का अस्तित्व है : वही केवल यथार्थता है और शेष सब माया है। प्रायः उसे ज्योति कहते हैं। केवल उसी का अस्तित्व है।

(२) सम्पूर्ण जगत यानी बाह्य सृष्टि सारहीन है। अपनी आन्तरिक ज्योति के अतिरिक्त वह भो असार है। यह आन्तरिक ज्योति पथ —प्रदर्शक का काम करती है और अन्तिम प्रकाश की ओर ले जाती है।

(३) सत्य की प्राप्ति जीवन का उद्देश्य है।

(४) इस की प्राप्ति बुद्धि या तर्क द्वारा नहीं हो सकती। वे इसके मूल सिद्धान्तों को नहीं समझ सकते। दर्शन शास्त्र या आत्मविद्या से कोई सहायता नहीं मिल सकती। सत्य, बुद्धि और ज्ञान के परे है। इस ईश्वरीय रहस्य का निर्णय तर्क शास्त्र द्वारा नहीं हो सकता।

(५) इस की प्राप्ति केवल आत्म-प्रकाश द्वारा हो सकती है। यह योगाभ्यास द्वारा प्राप्त हो सकता है, जिससे कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं। प्रधानतः जब सांसारिक अस्तित्व का ध्यान नहीं रहता तब सिद्धि की अवस्था प्राप्त होती है। जब सीमित आत्मा इस महान ज्योति से मिलती है और उसमें विलीन हो कर अपने को भूल जाती है तभी यह अवस्था प्राप्त

होती है। या यों कहा जाय कि आत्मा ज्योति रूपी नदी में मिल जाती है जिसकी वह पहिले एक लहर मात्र थी।

(६) यह अभ्यास स्वयं नहीं किये जा सकते। गुरु का होना अति आवश्यक है। यात्रा आन्तरिक और रास्ता अदृश्य है। वही पथ—प्रदर्शक हो सकता है जो इस पर चल चुका है। वही इससे परिवर्तित है। ऐसा व्यक्ति मुक्त होता है।

(७) बहुत खोज के बाद गुरु मिलता है, और वह तभी प्राप्त होता है जब कि जिज्ञासु की पिपासा बहुत अधिक हो जाती है। उस को पहचानना कठिन है, पर समय अनुकूल होने पर वह स्वयं जान लिया जाता है।

(८) गुरु में पूर्ण विश्वास बहुत आवश्यक है और गुरु की आज्ञा का पालन शीघ्र ही फलदायक होता है। विश्वास से ही शिष्य का मार्ग प्रकाशमय हो उठता है, उसे दैवी दृष्टि प्राप्त होती है और अन्त में वह प्रेम सागर में मग्न हो जाता है।

यही सूफी मत का सार है। प्रेमी सूफी को एक एक पर विचार करना और चलना आवश्यक है।

सूफियों का विश्वास है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। उससे एकाकार होने के लिये 'नासूत, शरियत, मलकूत, जबरूत, मारफत, फना, हकीकत क्रमबद्ध सीढ़ियाँ हैं जिनको पार करने उपरान्त ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। इन सीढ़ियों पर पहुँचने का मार्ग 'अबूदयत, इश्क, जोदद, मारफत, बज्द, हकीकत, वसल, फना' है जिसे पथ-प्रदर्शक सच्चा गुरु बताता है। वास्तव में मार्ग और उद्देश्य का भेद एक सीमा तक पहुँच कर स्वयं ही मिट जाता है और साधक के निकट साधन और साध्य दोनों एक ही हो जाते हैं।

सूफी के लिए दरिद्र परन्तु तप और पवित्रता से पूर्ण जीवन आवश्यक है। उसके लिए आत्म-निरीक्षण तथा मन की एकाग्रता अनिवार्य है जिसके साधन उसे सगुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने ध्येय तक पहुँचे हुए सूफी इसी को प्रमाणित करते हैं कि उनका अनुभव दिव्य ज्ञान के समान तर्क और बुद्धि के परे है। फिर भी उनके विश्वास की आधार-शिला होने के कारण वह अन्तर्गत अनुभव सत्य ही कहा जायगा। अस्तु हमारे तर्क और बुद्धि से परे जो एक अगांचर सत्य है सूफी उसी में विश्वास रखता है। उसकी साधना उस तक पहुँचना है और उसकी सिद्धि उससे एकाकार हो जाना है।

यह विषय इतना विस्तृत है कि जिस पर विस्तार पूर्वक कुछ लिखना असम्भव है। सूफियों के, उरसि का अनुमान, मार्ग की अवधारण, रहस्य-

वादी के सात स्थान, गुह की आवश्यकता, प्रेम की धारणा, मृत्यु का अनुमान आदि विषय ऐसे हैं जिनमें से एक एक पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं ।

प्रस्तुत संग्रह का उद्देश्य सूफी कविता का दिग्दर्शन मात्र था । गुल्शानेराज, लवायह आदि पुस्तकें ऐसी हैं जिनमें सूफी रहस्यवाद के सिद्धान्त विस्तार सहित दिये गये हैं । सादी की कृतियाँ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर जाने वालों के लिए नैतिक नियमों का संकलन है । उसकी तुलना बौद्ध साहित्य के अष्टाङ्गिक मार्ग से की जा सकती है ।

हाफिज़ और उमर खैय्याम प्रेम मदिरा का पान कराने हैं और अपने बाग के गुलाबों की भीनी भीनी सुगन्धि देते हैं । निजामी अपने गीतों में अलौकिक प्रेम की उमंग को लौकिक प्रेमी की भाषा में चित्रित करते हैं और महान रहस्यवादी जलालउद्दीन रूमी हमें इतनी ऊँचाई तक पहुँचा देते हैं जहाँ दिव्य स्पर्श का अनुभव होने लगता है ।

वास्तव में सूफियों की कविता में लौकिक आवरण में छिपी अलौकिकता हमें ऐसा आनन्द देती है जो चिर परिचित होने पर भी चिर नवीन है । पाठकों को मेरे इस कथन की सत्यता इस छोटी सी पुस्तक से मालूम हो जायगी ।

मैं उन लेखकों तथा प्रकाशकों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी निम्न पुस्तकों से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी मदद मिली :

लिटरेरी हिस्टरी आफ़ परशिया—ब्राउन—(४ जिल्दे—केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस)

परशियन लिट्रेचर—लीवी

परशियन लिट्रेचर—जैकसन

डिक्शनरी आफ़ इसलाम—ह्युज

मनतकुत्तेर-अत्तार (नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

लैला मजनूँ—निजामी—(नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

गुलशाने राज—शम्सतरी—मुरत्तिबा म्दिनकीलड्

दीवान हाफिज़ शीराज़—अबदुल फ़तह अबदुल रहीम—(इरातबए जामा उसमानया सरकार)

मिरातुल मसनवी—रूमी—मुरत्तिबा तलमाज़ हुसेन (आजम स्टीम प्रेस—हैदराबाद)

रुबाईयात उमर खैय्याम—(नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

गुलिस्तौ व बोस्तां—सादी (मतवा, मुजबली, देहली)

दीवाने शम्श तबरेज़—अबदुल मलिक अरवी, गोरखपुर

(च)

लवायह जामी—(मतवा मुजबली देहली)

रुमी—सुलेमान नदवी (मतवा मारिफ आजमगढ़)

मैं स्वर्गीय मौलवी अन्सारी, पेश इमाम मुसलिम बोर्डिंग प्रयाग की स्मृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में कई महीनों तक आकर सूफी कविता के अनुवाद में मुझे सहायता दी। उनकी सहायता के बिना सम्भवतः यह संग्रह कभी निकलता ही नहीं। मैं अपने मित्र श्री रामचंद्र टंडन का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रूठ ठीक करने में मुझे सहायता दी। इस पुस्तक के प्रकाशन और छपने में मदद देने के लिए मैं श्री राय कृष्णदास, डाक्टर मोतीचन्द तथा श्री वाचस्पति पाठक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग)
१८-६-३६।

बाँके बिहारी

क्रम

१	सनाई	...	...	.	१
२	उमर खय्याम		...	...	४७
३	निजामी	..		..	७९
४	फरीदुद्दीन अत्तार		.		१०५
५	रुमी	.	..	..	१७३
६	शेख सादी	.	...	...	२१९
७	शब्दसतरी	...			२३१
८	हाफिज		...	...	३१५
९	जामी		.	...	३८१
	शब्दार्थ				४०५

सनाई

(मृत्यु १९३१ ई०)

आपका पूरा नाम है अब्दुल मजीद मजदूद बिन अदम । आप ग़ज़न के निवासी थे । किसी किसी की यह भी धारणा है कि आपका निवास स्थान बलख था । आप फ़ारसी भाषा के प्रथम तथा एक उब सूफी कवि थे । प्रोफ़ेसर ब्राउन ने अपनी 'लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ़ परशिया' में आपके विषय में लिखा है :—

“मसनवी लिखने वाले तीनों लेखकों में आपका नाम सर्व-प्रथम है । अत्तार का नम्बर दूसरा, और जलालुद्दीन रूमी का तीसरा है ।”

निस्सन्देह फ़ारसी भाषा के सूफी कवियों में यह तीनों सर्व-प्रथम हैं । परन्तु यह जो उपर्युक्त स्थान इन लोगों को दिया गया है वह साहित्य के इतिहास तथा समय के अनुसार है । यदि कविता की उत्तमता, भाव-प्रदर्शन तथा विचारों की गम्भीरता पर दृष्टि डाली जाय तो रूमी का नम्बर पहला, अत्तार का दूसरा तथा सनाई का तीसरा होगा ।

आरम्भ में सनाई भी एक दरबारी कवि थे और सुल्तानों की प्रशंसा में क़सीदे लिखा करते थे । परन्तु कुछ काल उपरान्त, सौभाग्य से इनकी भेंट एक सूफी से होगई । जैसा कि दौलत शाह, जामी तथा अन्य इतिहास-लेखकों की पुस्तकों से प्रकट होता है । सत्संग का फल ऐसा हुआ कि जीवन के प्रति इनके विचारों में बहुत बड़ा उलट-फेर होगया । शम्श तबरेज़ के दीवान का सम्पादन करते हुए, उसकी भूमिका में, मौलवी अब्दुल मलूक अबरी ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

“एक दिन सनाई, सुल्तान महमूद की प्रशंसा में एक कविता लिख कर नदी की ओर जा रहे थे । मार्ग में एक शराबख़ाने के दरवाज़े से होकर निकले । उस ससय लायेख़वार नामक एक प्रसिद्ध मदिरा-सेवी, साकी से कह रहा था कि सुल्तान महमूद के अन्धेपन के नाम पर एक प्याला भर दे । साकी ने कहा कि सुल्तान महमूद एक बड़ा भारी मुसल्मान बादशाह है । दुनिया में मशहूर हो रहा है । उसके लिये ऐसा कहना मुनासिब नहीं है । लायेख़वार ने कहा कि वह बहुत बुरा आदमी है । अपने मुल्क को तो क़ब्ज़े में रख नहीं सकता है, दूसरे मुल्कों को जीतने के लिये फिर रहा है । यह कह कर उसने प्याला उठाया और पी लिया । अबकी बार उसने साकी से कविवर सनाई की भरी कविता के नाम पर दूसरा प्याला माँगा । साकी ने कहा कि सनाई तो एक बहुत ही ऊँची तबियत का शायर है । उसकी कविता तो बड़े मजे की होती है । लायेख़वार ने कहा कि अगर वह ऐसा होता तो क्या ऐसे काम में लगा रहता । उसने कुछ बेहूदा बातें एक काग़ज़ पर लिख रक्खी हैं और इसके सिवा यह भी नहीं समझता कि वह किस लिये पैदा हुआ है ।”

उसकी इन बातों से सनाई के हृदय पर एक ऐसा धक्का लगा कि उनके नेत्र खुल गये। सांसारिक बातों से हटा कर उन्होंने अपने दिल के धोड़े की बाग सत् की तरफ मोड़ दी और अब इस नवीन जगत में भ्रमण करने लगे। उन्होंने अपनी भावमयी कविता का आनन्द बहुतों को प्रदान किया। मौलाना रूम के सम्मुख यदि कोई उनकी प्रशंसा करता तो वह कह दिया करते थे, “यह तो सूर्य को अच्छा बतलाने के समान है।” मौलाना रूम ने अपनी मसनवी के आरंभ में सनाई के विषय में इस प्रकार लिखा है :—

“अत्तार रूह है, और सनाई उसकी दो आँखें। और मैं तो सनाई तथा अत्तार के पैरों के समान हूँ।”

प्रोफेसर निकल्सन ने उनके विषय में कहा है, “मनुष्य का आरंभ विवेक-पूर्ण जीवन, सत्, और तर्क से हुआ है।” जब रूमो के समान बड़े-बड़े विद्वानों ने सनाई की प्रशंसा की है तो उन्हें महान् कवि की पदवी से भूषित करना अत्युक्ति न होगा। बहुत से मनुष्य उनकी बड़ाई केवल इसी लिये करते हैं कि वह एक ईश्वर के प्रेम में मस्त कवि थे। परन्तु मेरी समझ में वह एक श्रेष्ठ सूफी थे। और यद्यपि रूमो की समानता के न थे तब भी एक उत्तम और उच्च कवि थे। उनकी रचनाएँ “दिल” और “इश्क” बहुत ही उत्तम और उच्च भावनाओं की प्रेरक हैं।

सनाई की ख्याति उनके रचे हुए एक काव्य “हदीका” के कारण और भी अधिक हो गई। इसमें ग्यारह सहस्र पद हैं। इन पदों में आध्यात्मिकता की तथा आत्मिक अनुभवों की झलक पूर्णरूप से वर्तमान है। ब्राउन का कहना है कि इस पुस्तक की प्रतियाँ बहुत सुलभ नहीं हैं। इनकी कविता के महत्व को समझने के लिये “दीवान” देखना आवश्यक है, जिसकी एक हस्तलिपि मेरे पास है और जिसमें से कई एक कविताएँ मैंने इस पुस्तक में उद्धृत की हैं। प्रोफेसर ब्राउन का भी यही मत है। उनका कहना है कि “दीवान” में लिखी हुई कुछ कविताएँ “हदीका” से भी कहीं उत्तम हैं, और उनमें सनाई के भाव-नियंत्रण और व्यक्तित्व की पूर्ण झलक विद्यमान है। उदाहरण के लिए उन्होंने निम्न आशय के पद उद्धृत किये हैं :—

“वह हृदय जो सांसारिक पीड़ाओं और कठिनाइयों से परे है बहुत ही उत्तम है।

उसे प्रेम की मुहर अथवा हस्ताक्षर भी नहीं प्रदर्शित कर सकते।

मैं केवल आपका प्रेम चाहता हूँ और यदि वैभव अथवा धन मेरे भाग्य में नहीं है तो उसकी कोई चिन्ता नहीं।

कारण कि धन का सम्बन्ध संसार से है और संसार तथा प्रेम कभी साथ-साथ चल नहीं सकते।

जब तक आप मेरे हृदय में निवास करते हैं तब तक वह सांसारिक पीड़ाओं का अनुभव भी नहीं कर सकता।” (लि० हि० प०, जिल्द २, पृ० ३१७)

सनाई की मृत्यु सन् ११३१ ई० में हुई।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न-लिखित हैं :—

दीवान ।

हदीकुल हकीकत ।

तरीक़ुत-तहकीक़ ।

ग़रीबनामा ।

कारनामा ।

अक्लनामा ।

सैरुल इवाज़ुल उलमद ।

इश्कनामा ।

(१)

चंद अर्जी दावाए दुरवेशो व लाके आशिकी ।
ना चशीदा शरबते आँ नाजमूदा ददे दीं ॥

(२)

तना पाए आँ रह नदारी चे पोई ।
दिला जाय आँ बुत नदानी चे जूई ॥
अर्जीं रहरवाने मुखालिक चे चारा ।
कि बर लाक गाहे सरे चार मूई ॥
अगर आशिकी कुप्रो ईमों यके दाँ ।
कि दर अकल रानाम्त ईनेक खूई ॥
तु जानी व अंकाशतस्ती कि शखसी ।
तु आवी व पिंदाशततस्ती सबूई ॥
हमों चीज रा ता न जोई न यावी ।
जुर्जी दोस्त रा ता न यावी न जोई ॥

(१) तू कब तक अपने इस उदासी वेध और प्रेम पर अभिमान करता हुआ बैठा रहेगा ? न तो तूने अभी उसका शर्वत ही पिया है और न उस पीड़ा के आनन्द का अनुभव ही किया है ।

(२) हे प्रेमी ! जब तू उस मार्ग में आगे बढ़ने की क्षमता ही नहीं रखता तब व्यर्थ में क्यों दौड़ रहा है ? ऐ मन ! जब तू उस प्यारे का स्थान ही नहीं जानता तब व्यर्थ में क्यों उसकी खोज कर रहा है ?

जब कि तू चौराहे पर खड़ा हुआ है तब इन भिन्न-भिन्न पथों पर चलने वाले पथिकों से किस प्रकार बच सकता है ?

यदि तेरे हृदय में लगन लगी हुई है तो अपने धर्म और उसके विपरीत धर्मों को एक ही समझ । यह बुद्धिमानी की बात है और अच्छे स्वभाव से सम्बन्ध रखती है ।

तू प्राण है, परन्तु तूने अपने आपको मनुष्य समझ लिया है । तू जल है परन्तु तूने अपने आपका घड़ा समझ रक्खा है ।

अन्य वस्तुएँ खोज करने ही से प्राप्त होती हैं, परन्तु उस प्यारे के विषय में एक आश्चर्य की बात है । जब तक तू उसे पा न जायगा उसकी खोज ही न करेगा ।

यक़ीं दाँ कि तू ऊ न बाशी ब लेकिन ।
चो तू दरमियाना न बाशी तू ऊई ॥

(३)

ए दिल अर उक़्बात बायद दस्त अज़ दुनिया बेदार ।
पाक़बाज़ी पेश गीरो राहे दीं कुन इस्तिथार ॥
ताजो तख़्ते मुल्के हस्ती जुम्ला रा दरहम शिकन ।
नक्बे मोहरे मुक़लिसी ओ नेस्ती दर जाँ निगार ॥
पाय बर दुनिया नेही बर दोज़ चश्म अज़ नामो नंग ।
दस्त दर उक़्बा ज़नो बर बंद राहे फ़ख़रो आर ॥
चू ज़ना ता कै नशीनी बर उमीदे रंगो यू ।
हिम्मत अंदर राह बंदो ग़ाम ज़न मरदानावार ॥
आलमे सिफ़ली न जाए तुस्त अर्ज़ी जा बर गुज़र ।
जेहदे आँ कुन ता कुनी दर आलमे उलबी क़रार ॥
ता न गरबी फ़ानी अज़ औसाफ़े ई फ़ानी सकर ।
बे नेयाज़ी रा न बीनी दर बहिश्ते किर्दग़ार ॥
गर चो बूज़र आरज़ए ताजदारी रोज़े हश्र ।
बाश चू मंमूरे हल्लाज इंतज़ारे ताजदार ॥

विश्वास रख कि वह तुझमें सदैव वर्तमान रहता है, परन्तु जब तू बीच में से दूर हो जायगा उस समय वस वही वह रह जायगा ।

(३) हे मन ! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है तो संसार को त्याग दे और अन्तःकरण को शुद्ध करके उस धर्म मार्ग में आगे बढ़ ।

सिंहासन और ताज, राज्य और अस्तित्व सबको एक किनारे रख दे ।
भिखारी बन जा और यह समझ ले कि मैं कुछ हूँ ही नहीं ।

इस संसार को ठुकरा दे, नाम और वैभव सबको लात मार कर आगे बढ़ । तू अपने अभीष्ट पर ही ध्यान जमाए रख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा का कुछ विचार ही मत कर ।

क्षियों के समान बनाव श्रृंगार करता हुआ कब तक बैठा रहेगा ? मार्ग में आगे बढ़ने का साहस कर और पुरुषों के समान दृढ़ता से क्रद्ध आगे बढ़ ।

यह नाशवान् संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है ; अतएव यहाँ से चल दे और उस लोक में पहुँचने का प्रयत्न कर जिसके आगे अमर शब्द लिखा जाता है ।

जब तक तू इस क्षणभंगुर जगत के मिथ्या बन्धनों को तोड़ कर शुद्ध न हो जायगा, तब तक तू ईश्वर के बनाए हुए उस स्वर्ग में शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकता ।

यदि तू मृत्यु के उपरान्त, उसके द्वार में पहुँच कर ताज पाने की इच्छा

अज हदीसे इश्के जौबाजौ मजन बर खीरा लाफ ।
ता तू अंदर बन्दे इश्के खेश मौदी उसतुवार ॥

(४)

चूँ इश्क बदस्त आमद तन गोर कुनो ख़ुश जी ।
चूँ अज़ल वपा आमद पै कोर कुनो ख़म जन ॥
आतश अंदर खाकपाशाने हमा आलम जनद ।
हर कि ग़ दर रूप आवे तुस्त वर सर बाद तू ॥

(५)

ख़ारस्त हमा जहानो अंगह ।
बूए तो दराँ मियाना वरदे ॥
दर तो कि रसद बदस्त मरदी ।
ता अज़तो न बूद पाए मरदे ॥

(६)

ऐ न गुज़राए अज़लो जानम ।
वै ग़ारत करदा ईनो आनम ॥

रखता है, जिस प्रकार कि बूज़र ने किया था, तो मन्सूर के समान अपने आपको मिटा कर उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न कर ।

अपने आप को सबसे पहले मिटा डाल, तब सच्चे प्रेमियों के प्रणय की बातें करके अभिमान दिखा । यदि ऐसा नहीं कर सकता है तो अभिमान करना भी व्यर्थ है ।

(४) यदि तुझे प्रेम प्राप्त हो जावे तो फिर शरीर से किसी प्रकार का सम्बन्ध मत रख (उसे समाधि में सुला कर आनन्द का जीवन व्यतीत कर) बुद्धि जत्र अपनी सीमा पर पहुँच जावे तो आगे बढ़ने का प्रयत्न छोड़ दे ।

जिस मनुष्य के मुख पर तेरी आभा की झलक है, जिसके मस्तिष्क में तू बास करता है, वह समग्र संसार के खाक उड़ानेवालों को भी जला कर भस्म कर देता है ।

(५) यह सम्पूर्ण संसार एक कौंटे के समान है और उसमें तेरी सुगन्ध एक गुलाब के पुष्प के समान व्याप्त हो रही है ।

भक्ति द्वारा तुझ तक किसी की भी पहुँच नहीं हो सकती, जब तक कि स्वयम् तेरी ही तरफ से कोई सहायता न मिले ।

(६) ऐ मेरे बुद्धि और प्राणों के साथी, और मेरे इस लोक और परलोक के सर्वस्व !

ऐ नक्शे खयाले तो यक़ीनम ।
 वै खाले जमाले तो गुमानम ॥
 ता बा ख़ुदम अज़्ज अदम कम कम ।
 चूँ बा तो शुदम हमा जहानम ॥

(७)

दीदए याक़ूब रा दीदारे यूसुफ़ तूतियास्त ।
 ज़ोहरए फ़रहाद बायद ता ग़मे शीरी कशद ॥

(८)

न आँजा मेहतरी बाशद न आँजा केहतरी बाशद ।
 न आँजा सरवरी बाशद न ख़ैलो नै हशम बीनी ॥
 न दादे आलिमाँ मानद न ज़ल्मे ज़ालिमाँ मानद ।
 न ज़ौरे जाबिराँ मानद न मख़दूमो ख़दम बीनी ॥
 बज़ेरे ख़िश्तो ग़िल बीनी हमाँ शाहाने आलम रा ।
 चुनाँ दिलवर हज़ाराँ पेश दर ज़ेरे क़दम बीनी ॥
 बे आ ता अहले मानी रा दरी आलम बग़म बीनी ।
 बे आ ता लुफ़े रब्बानो व अहसानो करम बीनी ॥

तू ही मेरे विश्वास का आधार है, और तेरे ही सौंदर्य पर मुझे अभिमान है ।

मैं जब तक अपना निजत्व मानता हूँ, तब तक बहुत हेय और तुच्छ हूँ । परन्तु जब तेरे साथ हो जाऊँगा तब सारा संसार हो जाऊँगा ।

(७) याक़ूब की आँखों का सुरमा यूसुफ़ का दीदार है । उमी को लगा कर वह मिलन मन्दिर तक पहुँच सकती है । शीरी के लिये तड़पने का फ़रहाद के समान हृदय की आवश्यकता है ।

(८) उस स्थान पर तुझे सभी समान दिखलाई देंगे । छोटे-बड़े का भेद-भाव कहीं भी दृष्टि में न आवेगा । वहाँ पर न कोई सेनापति होगा और न सेना ही ।

न विद्वानों की प्रशंसा ही शेष रहेगी; न आतताइयों के अत्याचार ही रह जायेंगे । न आतंकवादियों का आतंक रहेगा, न स्वामियों का ही अस्तित्व रह जायगा !

संसार के जितने भी सम्राट् थे, उन सभी को तू ईंट और मिट्टी के ढेर के नीचे दबा हुआ देखेगा, और इसी प्रकार सैकड़ों बलवानों तथा बहादुरों को पैरों के नीचे पड़ा हुआ पावेगा ।

यह आकर देख कि अपने आन्तरिक रहस्यों को समझने वाले लोग वास्तव में उदासीन रहते हैं, अथवा ईश्वर की दया, प्रेम और भक्ति का तमाशा देखते हैं ।

चे पोई गिंदे ईं मैदों चे गरदी गिंदे ईं जिंदों ।
चे वंदी दिल दरिं वीरों कि चंदीं रंजो गम बीनी ॥

(९)

कज वराए पुरुना कगदन किशत आदम रा इलाह ।
दूर चेहल सुवहा इलाही तीनते पाकश खमीर ॥
चूं तोरा दर दिल जे बहरे दास्त न युवद खार खार ।
नेस्त दर खैरे तो खैरे जौं मकुन दर खीर खीर ॥
अज हमा आलम गुजरीत अज हमा जानो दिलस्त ।
आँ तुई कज कुल्ले आलम ना गुजरी ना गुजरी ॥
कम न गरदद गंजहाए फजलत अज बदहाय मा ।
तू निको कारी कुनो अज फजले खुद बर मा मगोर ॥
हंच ताअत नायद अज मा हम चुनीं बे इस्लते ।
रायगाँ मां आफरीदी रायगाँ मां दर पिजोर ॥

(१०)

दास्ती दावा कुनी वो नक्स रा फरमाँ बरी ।
गर समद खाही चिरा वाशी तलब गारे वसन ॥

तू इस मैदान में इश्वर से उधर क्यों दौड़ रहा है और इस कारागार का चक्कर क्यों लगा रहा है ? इस ऊजड़ स्थान से क्यों प्रेम करने लगा है ? यहाँ रहने में तुझे बहुत से दुख उठाने पड़ेंगे, और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा ।

(९) आदम की खेती का टढ़ करने ही के लिये ईश्वर ने अपनी सृष्टि-रचना के समय उसकी पवित्र मिट्टी को चालीस दिनों में गूँधा था ।

जब तेरे हृदय में दोस्त की चाह नहीं है और न उसके हाथ से निकल जाने का ही शोक है, तो तेरी भलाई, भलाई नहीं कही जा सकती । व्यर्थ में अपने आपको कष्ट मत दे ।

यह सम्पूर्ण संसार नाशवान् है । दिल का भी कोई अस्तित्व नहीं है । एक तू ही ऐसा है जो इस सृष्टि में अमर कहा जा सकता है ।

हमारे अनुचित कार्यों से तेरी दया की महिमा घटती नहीं है । तू दयालु है । हमारे इन कुत्सित कर्मों पर ध्यान न दे । हम तेरा दिया हुआ दण्ड सहन नहीं कर सकते ।

हमसे इच्छारहित प्रार्थना संभव नहीं । यदि तूने हमें ऐसा उत्पन्न किया है तो बिना हमारी प्रार्थना के हमें स्वीकार कर ले ।

(१०) तू ईश्वर का प्रेमी होने का भी दावा करता है और उस पर भी इच्छाओं के बन्धन में है । यदि तू वास्तव में, सच्चे दिल से भगवान् से लौ लगाए हुए है तो मूर्ति की इच्छा क्यों रखता है ?

हेच कस नसतूद दर यक हाल दो माबूद रा ।
 हेच कस न शुनूद रोजो शब करीं दर यक वतन ॥
 खिरमने खुद रा बदस्ते खेशतन सोजेम मा ।
 किर्म पीला हम बदस्ते खेशतन दोजद कफन ॥
 अज मुरादे खेश बरखेज अर मुरीदी इश्क रा ।
 दर यमन साकिन न बाशी ता तु बाशी दर खुतन ॥
 आज रा खुरदन दिगर दाँ आरजू खुरदन दिगर ।
 हर दो नतवानी तो खुरदन या वलीदे या समन ॥
 पाय आँ मरदाँ न दारी जामण मरदाँ मपोश ।
 बर्ग बे बरगी न दारी लाफे दरवेशी मज्जन ॥

(११)

राहे अजले आकिल्लाँ रा रम्जे ऊ वर रम्ज बूद ।
 दर्दे जाने आशिक्राँ रा दर्दे ऊ मरहम बुवद ॥

राहे दीं पैदास्त लेकिन सादिके दीदार कू ।
 यक जहाने शौक बीनम आशिके ख्वार कू ॥

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और इसी प्रकार रात और दिन का भी एक स्थान पर इकट्ठा होना असम्भव है। भगवान् से लगन लगा कर किसी दूसरी वस्तु को इच्छा हृदय में मत रख।

हम अपने ही हाथों से अपने खलिहान को (मंचित सम्पत्ति को) नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं। रेशम का कीड़ा भी अपने ही हाथों से अपने को कारागार में डाल लेता है।

यदि प्रेम तेरा उद्देश्य है तो सब से पहले अपने हृदय की आकांक्षाओं को मिटा डाल। उस सुन्दर स्थान (यमन) को प्राप्त करने के लिए इस स्थान (खुतन) का त्यागना आवश्यक है।

लालच को मिटा देना और बात है, और आकांक्षाओं को मिटाना दूसरी बात है। ऐ आराम से दिन व्यतीत करने वाले, तू दोनों को एक साथ नहीं मिटा सकता।

तेरे पैर उन मुर्दों के पैरों से भिन्न हैं, अतएव उन के समान बन्ध धारण मत कर। त्यागियों का सामान तेरे पास नहीं अतएव त्यागी बनने का दावा न कर।

(११) ज्ञानियों के ज्ञान मार्ग में उसके रहस्य बहुत ही गम्भीर हैं और प्रेमियों की पीड़ा के लिए वह मरहम का काम करता है।

सत्य धर्म का मार्ग कुछ कुछ दिखलाई अवश्य पड़ता है परन्तु पूर्ण रूप से हमारी दृष्टि में नहीं आता। प्रेम करने के लिये सभी स्थान उपयुक्त हैं परन्तु कष्टों और कठिनाइयों को भेल कर प्रेम करने वाला कोई भी नहीं है।

सालहा बाशद चो बुलबुल गुफतिओ ऊ खुद नकद ।
बस बवाग आखिर दमे किरदार बेगुफार कू ॥

सिरें बिस्मिल्लाह अगर खाही कि गरदद जाहिरत ।
चूँ “सनाई” अन्वल अलकाबे हसीं बायद निहाद ॥

ऐ ख्वाजा तोरा दर दिल रैबस्तो सफाए ।
बर हस्तिन ऊ चूँ कि हमीनस्त चे जाए ॥
गर बातिनत अज नूरे यक्कीनस्त मुनवर ।
बर जाहिरे तो चूँ के हमी नेस्त सफाए ॥
आरे चो बुवद सूरते तलबीस चो तहकीक ।
पैदा शबदो हर चे सवाबी व खताए ॥
दावा के मुजरद बुवद अज शाहिदे माना ।
बातिल शबद अज अमल जे चूने व चराए ॥
ता शाहिदे वक्ते तो बुवद हश्मतो नेमत ।
बोमारे दिलत रा न बुवद हेच शफाए ॥
ई हस्त वजूदश मुताल्लिक वरजाए ।
ई हस्त हुमूलश मुतवलिद बरियाए ॥

वर्षों से तू बुलबुल के समान चहकता चला आ रहा है। कहता बहुत कुछ है परन्तु करता कुछ भी नहीं है। आखिर कभी तूने शान्ति के साथ किसी बात पर अमल भी किया है ?

ईश्वर के रहस्य को तू तभी समझ सकेगा, जब कि पहले “सनाई” के समान अपने हृदय की पवित्रता को आवश्यक बना लेगा।

यदि तेरे हृदय में विश्वास के साथ ही साथ सन्देह भी है तो ईश्वर से मिलना असम्भव है।

परन्तु यदि तेरे हृदय में विश्वास का उजाला है तो वाह्य सन्देह की कोई चिन्ता नहीं है।

यदि सन्देह किसी प्रकार विश्वास के रूप में परिणत हो जावे तो निस्सन्देह अच्छे और बुरे का भेद प्रकट हो जावेगा।

निरर्थक किसी बात का दावा करना ठीक नहीं हुआ करता है। उसमें न तो किसी प्रकार की सचाई होती है और न कोई सार। ऐसे दावे के लिए किसी प्रकार के तर्क की आवश्यकता नहीं है।

जब तक संसारी पवित्रता और संसारी विभूतियाँ तेरा ध्येय हैं, उस समय तक तेरा रोगी हृदय कभी आरोग्य लाभ नहीं कर सकता।

संसार की श्रेष्ठ वस्तुएँ दुआ अथवा आशीर्वाद माँगने से ही प्राप्त हो सकती हैं, और संसारी वस्तुएँ छल तथा कपट से मिल सकती हैं।

ता ईं दां रफीकाने तो हमराहे तो बाशन्द ।
हरगिज न बुवद रुवाजा तुरा राह बजाए ॥
शौ नेस्त तू अज खेशो मय अन्देश अजौं पस ।
यकसाँ शमुर ईं हर दो बजाए व वफाए ॥
अन्दर सिफते नेस्त चे नामे व चे नंगे ।
बर बामे खराबात चे चुगादे चे हुमाए ॥
गर निजदे “सनाई” न शुदे खिलअते अव्वल ।
अज दीदा नमूदे रहे तहक्कीक सनाए ॥

ता कै जे हर कसे जे पए सीम बीमे मा ।
वज बीमे सीम गश्ता निदामत नदीमे मा ॥
ता हस्त सीम वामा बीमस्त यारे ऊ ।
चू सीम रफ़ दर पए ऊ रफ़ बीमे मा ॥
ऐ ओं कि मुफलिसीस्त बलाए अजीमे तो ।
सीमस्त गोई अस्ल निशातो नईमे मा ॥
बेहतर बेदों कि हस्त तमन्नाए तो मुहाल ।
सीमस्त वैहक अस्ले बलाए अजीमे मा ॥

अतएव जब तक यह दो प्रतिद्वन्दी तेरे साथ रहेंगे तब तक तू किसी भी पद को प्राप्त नहीं कर सकता है ।

तू सब से पहले अपने अहंकार को मिटा डाल, वस इसके उपरान्त किसी प्रकार का भय न कर । समझ रख कि यह दोनों वस्तुएँ तेरे पद को बढ़ावेंगी ।

मृत्यु के लिये गौरव और पद दोनों समान हैं । मदिरागृह की छत पर उल्टू हो अथवा हुमा, इससे किसी का क्या बनता बिगड़ता है ?

यदि “सनाई” को उसकी कृपा पहले ही से प्राप्त न हो जाती तो उसका उस तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं दिखलाई देता ।

हम चाँदी के लिये कब तक सब लोगों से भय खाते रहेंगे ? इसी चाँदी के डर से हमें लज्जित होना पड़ा है ।

जब तक हमारी गाँठ में रुपया है तब तक भय भी हमारा साथ नहीं छोड़ सकता, परन्तु इसके जाते ही हमारा भय भी सदा के लिये किनारा कर जायगा ।

तुम निर्धनता को सबसे बुरा समझते हो और कहते हो कि रुपया ही हमारी प्रसन्नता की कुंजी है ।

ख़ूब समझ लो कि तुम्हारा यह विचार निरर्थक है और यह रुपया ही संसार में सब आपत्तियों की जड़ है ।

आयन्द हर दो बाहम हर दो बहम रवन्द ।
 गोई बिरादरन्द बहम बीमो सीमे मा ॥
 गर मा हमा सियाह गलीमेम तुफा नेस्त ।
 सीमे सुपीद करदा सियाह ईं गलीमे मा ॥
 ऐ अज नईम करदा लिवासे खुद अज नसेज ।
 हौं ता जे रूप किन्न नवाशी नदीमे मा ॥
 गोई बरहना पायौं वर मा हसद वरन्द ।
 हर गह कि बिनगरन्द व कपशे अदीमे मा ॥
 दर हसरते नसीमे सबाणम ए वसा ।
 आरद सबा नसीमो नयारद नसीमे मा ॥
 इमरोज पुखतायेम चो असहावे कहक वार ।
 करदा जे गोर बाशद कहफो रक्कीमे मा ॥
 आलम चो मञ्जिलस्तो खलायक मुसाफिरन्द ।
 दर वै मुजव्वरस्त मकामे मुक्कीमे मा ॥
 हस्त आँ जहाँ चो सीमो फलक सीम दारे ऊ ।
 मा गल्लादार अजो व अमल हम कसीमे मा ॥

रूपया और भय संसार में साथ ही साथ आते हैं और चले जाते हैं ।
 ऐसा ज्ञात होता है मानों वे दोनों सगे भाई हैं ।

हमारे भाग्य के मन्द होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है । इसी रुपये ने हमें ऐसा बनाया है । इसी के न होने से हमारी गणना अभागों में है ।

अपने वैभव से भी बढ़ कर तुमने उत्तम वस्त्र धारण किये हैं । सावधान !
 अभिमान और अहंकार को लेकर हमारे पास मत आना ।

तुम कहते हो कि नंगे पाँव फिरने वाले हमारे जूतों को देख कर डाह करते हैं । परन्तु यह बात नहीं है । वह तुम्हारी नरी की जूतियों पर दृष्टि भी नहीं डालते ।

हम तो वायु के नरम और मस्त कर देने वाले झोंको के इच्छुक हैं ।
 शीतलता के स्थान में वायु में कभी ताप भी हो सकता है । परन्तु वह हमारे लिये नहीं है ।

आज हम सुन्दर भवनों में बड़े आनन्द से शान के साथ लेटे हुए हैं, कल
 कब्र में हमें शरण लेनी पड़ेगी ।

संसार एक यात्रा है, और मनुष्य यात्री हैं । यहाँ पर किसी का विश्राम
 करना केवल एक धोखा है ।

परन्तु वह दूसरा लोक चाँदी के समान उज्ज्वल है । आकाश उसका
 कोषाध्यक्ष है । हमारे पास गल्ला बहुत है और आशाएँ बढ़ी हुई हैं ।

तीमारे बीम दाशतन्द अज मा हिमाकृत असत ।
 तीमार दारद आँ के बमा दाद बीमे मा ॥
 मा अज जमाना उम्रे बका वाम करदएम ।
 ऐ वाण मा के हस्त जमाना गरीमे मा ॥
 दर वस्के ई' जमानए नापायदारे शूम ।
 विशनौ कि मुखतसर मसले जद हकीमे मा ॥
 गुक्त आँ जमाना मारा मानिन्दे दाया अस्त ।
 वस्ता दरे उमीदे रज्जीओ कतीमे मा ॥
 ता ऊ बजामो दिल हमा गाँ रा बे परवरद ।
 मानिन्दे मादराने शफोको रहीमे मा ॥
 चूँ मुहते बरायद वर मा अदू शवद ।
 अज बादे आँ के वूद सदोके हमीमे मा ॥
 गर दानदत बदस्त शबो रोजो माहो साल ।
 चूँ दाले मुनहनी अलिफे मुस्तकीमे मा ॥
 अंगह फरो वरद वजमीं बे खरयानते ।
 आँ कामते मकव्वमो जिस्मे जसीमे मा ॥

भय की चिन्ता करना हमारे लिये मूर्खता है । भय उसी के लिये छोड़ दो जिसने उसे उत्पन्न किया है, तथा जिसने तुम्हें वह प्रदान किया है ।

हमने जमाने से दो वस्तुएँ ऋण में ली हैं । एक जीवन और दूसरी अमरता । हमारी बर्बादी इसी कारण हो रही है कि जमाना यह चाहता है कि हम उससे ऋण लेते रहें ।

इस खोटे और भाग्यहीन जमाने के लिये विद्वानों ने एक छोटा सा उदाहरण दिया है ।

वह कहते हैं कि यह हमारे प्रति एक धात्री के समान है । दूध पीने वाले तथा बड़े बच्चे दोनों ही इससे ऐसी ही आशा रखते हैं ।

हम चाहते हैं कि वह दिलोजान से सबका पालन-पोषण करे और हमसे एक दयालु माता का सा बर्ताव करे ।

परन्तु कुछ समय उपरान्त वही हमारा शत्रु हो जाता है । गोकि किसी समय वह हमारा एक शुभेच्छु मित्र था ।

समय ने—रात-दिन, वर्षों और महीनों ने—तुम्हारे ऊपर वह विपत्तियाँ गिराई हैं कि तुम्हारी कमर सुक गई है ।

अन्त में यही आपत्तियाँ एक घातक के समान तुम्हें मृत्यु के मुख में ढकेल देती हैं ।

पैवस्ता पेशे चश्म हमी दारद अनकरीब ।
 अन्दामहाए कोफ्तए चूँ हशीमे मा ॥
 गोई सफीह वूद फलाँ शायद अर बेमूर्द ।
 चूँ आँ सफीह मुर्द नमोरद हकीमे मा ॥
 मा जेरे खाक खूफ्तओ मीरास खोर मा ।
 दादा व बाद खिर्मने हाए क़दीमे मा ॥
 गोई कि वादे मा चे कुनन्दो कुजा रबन्द ।
 फरजन्दगानो दुखतरगाने यतीमे मा ॥
 खुद याद नावरी कि चे करदन्दे चूँ शुदन्द ।
 आँ मादरानो आँ पिदराने क़दीमे मा ॥
 पिन्दार गर तवल्तुदे अक़लस्त ला मुहाल ।
 आँ तुर्का विनगरन्द कि नफसे लईमे मा ॥
 शुद अक़ले मा अक़ाल कि बस मा तगाकुलेम ।
 फरयाद अज़ी तगाकुले अक़ले अक़ीमे मा ॥
 गर जन्नतो जहीम नदीदी बर्बा के हस्त ।
 शगलो फ़राओ जन्नते मा ओ जहीमे मा ॥

यही समय हमारे टूटें हुए चूर-चूर शरीर को सदैव अपनी आँखों से देखता रहता है । उसमें दया का भाव कम है ।

ऐसा ज्ञात होता है कि जो मनुष्य मर गया है वह जाहिल था और उसे मरना ही चाहिये था । अब ऐसे जाहिल की मृत्यु के उपरान्त हमारे विद्वानों की क्या अवस्था होगी ?

हम समाधिस्थ होंगे और हमारे उत्तराधिकारी हमारी सम्पत्ति का पाकर खूब मज़ा उड़ाते होंगे ।

हमारी मृत्यु के उपरान्त न मालूम हमारे बच्चों की क्या दशा होगी ? वे न मालूम क्या खायेंगे, पियेंगे और कहाँ जायेंगे ?

तुम स्वयम् इस बात का विचार नहीं करते कि तुम्हारे अगले पुरुषाई न मालूम कहाँ चले गये और क्या कर गये ।

अभिमान और अपनत्व का आविर्भाव होना बुद्धि से आवश्यकीय है । परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि हमारी तबियत बहुत ही नीच है ।

हम बहुत ही अधिक सुस्त हैं और इसी लिये हमारी बुद्धि भी मन्द पड़ गई है । इस मन्द बुद्धि के आलस्य पर शोक है ।

तूने नरक नहीं देखा है । समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है ।

रैहाने रूहे मा चे करागस्तो कारेगी ।
 मशगूलयस्त शरलें अजावे अलीमे मा ॥
 सर गस्ता शुद "सनाई" यारब तु रहनुमाण ।
 पे रहनुमाण खल्क खुदाए रहीमे मा ॥
 मारा अगरचे फेल जमीमस्त तू मगीर ।
 यारब वा फडले खोश्त जे फेले जमीमे मा ॥

(१२)

पेया माँदा बेमूजिबे हर मुगदे ।
 हमा साल दर मेहनतो इज्तेहादे ॥
 न दर हक्के खद मर तोरा इनक्याजे ।
 न दर हक्के हक मर तोरा इनक्यादे ॥
 चो दीवानगाँ माँदै दर तफक्कुर ।
 कि गोई तुरा चू वरायद मुरादे ॥
 जे हिमें दो रोजा मुकामे मजाजी ।
 बहर गोशए करदा जातुलइमादे ॥
 हमाना बखाव अन्दरी ता बेदानी ।
 कि मारा जुजी नेस्त दीगर मश्वादे ॥

हमारा जीवन आनन्दमय कैसे हो सकता है ? विश्वास तथा बेकिकरी से ।
 कार्य में व्यस्त रहना तथा चिन्ता से परे रहना भी दुःख देने वाली वस्तुएँ हैं ।

भगवन् ! "सनाई" सीधे मार्ग को भूल गया है । उस फिर उसी सत्य
 मार्ग पर ला । तू ही संसार का पथ-प्रदर्शक और दयालु दाता है ।

यह सत्य है कि हम पापी हैं । हमारे कर्म बुरे हैं । परन्तु तू अपनी दया
 दिखला और हमें क्षमा प्रदान कर ।

(१२) तू बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के वर्ष भर परिश्रम तथा प्रयत्न
 करता रहा है ।

न तो तू अपनी ही चिन्ता करता है और न ईश्वर की ही उपासना
 करता है ।

बस एक पागल के समान कभी इस गली में और कभी उस गली में घूसा
 करता है ।

तेरो कोई इच्छा किस प्रकार पूर्ण हो सकती है जब तू इस दो दिन के
 संसार में भवन निर्माण करने में लगा हुआ है ?

तू सांसारिक कार्यों में इस प्रकार संलग्न है, मानो स्वप्न देख रहा है ।
 तनिक सावधान होजा और समझ ले कि तुझे और भी कहीं लौट
 कर जाना है ।

चे बेबारा मरदी चे सर गश्ता खलकी ।
 चे बर बातिले वाशदत इसतिनादे ॥
 मजाजीस्त ईं शूम दुनिया कि दायम ।
 तोरा नेस्त इल्ला बरू अत्तमादे ॥
 पस ऐ ख्वाजा दावा रसद आँ कसे रा ।
 कि माबूदे ऊ गश्ता वाशद जमादे ॥
 पसंगह रसीदन बतहकीके माना ।
 तमन्ना कुनी वा चुनीं एतकादे ॥
 बेदानी हमीं मश्क आँ कद्र बारं ।
 कि जाए मईशत दो वाशद करादे ॥
 तु गर राहे हक़ रा हमी जाई अन्बल ।
 तलय करदा वाशद सबीलुर रिशादे ॥
 ज़ियादत बुवद मर तुरा हर ज़माने ।
 ब आमालो अफ़आले खेश एतमादे ॥
 पस अज़ नेस्ती साज़े आँ राह साज़ी ।
 कुजा बेहतर अज़ नेस्ती नेस्त जादे ॥

तू लाचारी और विपत्तियों का शिकार हो रहा है। न मालूम तुझे क्या हो गया है जो एक निरर्थक बात पर विश्वास कर रहा है ?

यह अनित्य संसार तेरे लिये मुनहला है—मन-मोहक है—और तूने भूल से उसी में चित्त लगा रक्खा है।

फिर बता कि वह मनुष्य, जो एक सारहीन वस्तु की ओर आकर्षित हो रहा है, ईश्वर से मिलने का दावा किस प्रकार कर सकता है ?

और फिर संसार में इस प्रकार संलग्न रह कर तू आन्तरिक भेदों को किस प्रकार समझ सकता है ?

परीक्षा करने से तुझे यह तो ज्ञात ही हो जायगा कि जीवन व्यतीत करने के लिये दो संसार हैं।

यदि तू ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग समझ लेना चाहता है तो सबसे पहले एक सीधे और सच्चे मार्ग का इच्छुक बन।

इसके उपरान्त तेरी सदैव उन्नति होती रहेगी और तू स्वयम् अपने कार्यों पर विश्वास करेगा।

उस समय तू अपने आपको नष्ट करके उस मार्ग पर चलने को प्रस्तुत होगा, जहाँ कि अहंकार को मिटा डालने से बढ़ कर और कोई वस्तु ही नहीं है।

सलाहें “सनाई” दरीनस्त दायम ।
 शवद दर रहे इश्क हमचूँ रिशादे ॥
 बे गुलम सलाहें दिल अज रूप माना ।
 सलाहस्त ई मशमूर अन्दर फसादे ॥
 न बीनी कि परवानओ शमा हरगिज ।
 कि बर बातिनश खीरा गरदद बिदादे ॥
 शवज खुद बरी गर्दतावर हकीकत ।
 तुरा बे तो हासिल शवद इनहिदादे ॥
 बरी गरदद अज खेशतन चूँ “सनाई” ।
 कुनद ऊ जे खोशी खुरा चूँ जियादे ॥

(१३)

अगर मुश्ताक़े दीदारी व दायम ।
 उमीदे दीदने दीदार दारी ॥
 जे दीदारत न पोशीदस्त दीदार ।
 बे बी दीदार गर दीदार दारी ॥
 दिला ता चूँ “सनाई” दर रहे दी ।
 तरीके जोहदो इसतिगफ़ारदारी ॥
 मुसलमाँ नेस्ती ता हमचो गवरौ ।
 जे हस्ती वर मियाँ ज़ज़ार फ़दारी ॥

“सनाई” की भलाई इसी में है कि वह प्रेम का सदैव सीधा और सच्चा मार्ग पकड़े रहे ।

मैंने अपने आन्तरिक विश्वास के बल पर मन को सत्यता का वर्णन कर दिया है । यह एक बहुत ही उत्तम वस्तु है । इसकी गणना बुराई में मत कर ।

क्या तुम नहीं समझते कि दीपक और पतंगों में कैसा प्रेम है ? पतंगा सदैव उसी के प्रणय में मस्त रहता है । वह कभी किसी दूसरे का ध्यान भी नहीं करता है ।

अपने आपको भुला दे । हकीकत (ईश्वरीय वास्तविकता) तक पहुँचने का यही उपाय है । इसी उपाय से तू अपने आप को भी दूर कर सकता है ।

जब “सनाई” का अपनत्व मिट जायगा तब वह अपनत्व का अभिमान रखने वालों के समान कैसे रहेगा ?

(१३) यदि तेरे हृदय में दर्शनों की लालसा लगी हुई है, यदि यही तेरा अभीष्ट है,

तो स्मरण रख कि वह तेरी दृष्टि से छिपा नहीं है । अगर तेरी (ज्ञान) नेत्रें हैं तो उसको देख ले ।

ऐ दिल ! तू “सनाई” के समान धर्म-मार्ग में पवित्रता और विवेक का ढोंग कब तक रखेगा ?

क्या तू धर्म-मार्ग में दृढ़ नहीं है जो अग्नि की पूजा करने वालों के समान अपनी कमर में निजत्व का धागा बाँधे हुए है ?

(१४)

अथा अज चंवरं इसलाम दायम करदा सर धेक्क ।
 जे सुन्न करदा दिल खारी जे विदअत करदा सर मशहूँ ॥
 हवा हमवारा शैताने शुदा बर नफसे तो सुलतौँ ।
 तनत रा जेह पैराया दिलत रा कुफ पैरा मूँ ॥
 अगर दर एतकादे मन बशर्का ता बनजम आरम ।
 अला रमे तो दर तौहीद फमले गोशदार अकनूँ ॥
 तुरा पुरसीद ग्वाहम मन जे सिरें बैजण मुर्गे ।
 चे गुफ्तस्त अन्दरीं माना तुरा तलकीने अकलातूँ ॥
 मुपेदा जर्दे मी बीनम दो आव अन्दर यके खाना ।
 वज्राँ यक खाना चन्दीं गूना मुगा आयद हमीं बेक्क ॥
 न गोई अज चे मानी गश्त परे जाग चू कतराँ ।
 जे वहरे चे दुमे ताऊस रंगीं शुद चु वू कलमूँ ॥
 हुमायो चुगद रा आखिर चे इल्लत वूद दर खिलकन ।
 चरा शुद दर जहाँ ईं शूमो आँ शुद ईं चुनीं मैमूँ ॥
 न गोई कज के मी गरदद चकाक इलहाने मूमीकार ।
 न गोई कज चे मी मानद तदर्व अनवाण असकातूँ ॥

(१४) हे मनुष्य ! तूने सबे धमे का त्याग कर दिया है। उसके पवित्र नियमों को छोड़ कर इन्द्रियों का दासत्व स्वीकार कर लिया है।

तेरे मिर पर सदैव शैतान सवार रहता है और धर्म-विरुद्ध आचरण करने तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करने में तुझे अनीब आनन्द आता है।

यदि तुझे मेरे विश्वास के प्रति कोई सन्देह है तो मैं तेरे सम्मुख कविता की कुछ पंक्तियाँ कहता हूँ। यह उसके प्रति विश्वास प्रकट करती हैं। इन्हें ध्यान से सुनना।

मैं तुझसे चिड़िया के अंडे का राज पूछता हूँ। बता, अकलातून ने इस विषय में क्या कहा है ?

मैं देखता हूँ कि एक अंडे के अन्दर सफेद और पीले, दो तरह के पानी हैं, और इसी अंडे से सैकड़ों प्रकार के पक्षी उत्पन्न होते हैं।

अब यह बता कि कौने के पर काले क्यों हुए और मोर की पूँछ रंग बिरंगी क्यों हुई ? उसमें इतने रंगों का समावेश होने का क्या कारण है ?

उल्लू और हुमा के जन्म में क्या खराबी है, जिसके कारण उल्लू को लोग बुरा मानते हैं और हुमा का देखना शुभ शकुन समझा जाता है।

पपीहे को ऐसे मधुर स्वर में सुन्दर राग अलापना कौन सिखाता है, और चकोर को इतने सुन्दर वस्त्र पहनने को कौन देता है ?

तक्रकुर कुन यके दर खिलकने शाहीनो मुरगाबी ।
 वे गोई कज चे मानी रास्त ई जीं सक्त अज आँसू ॥
 यके चू रायते सीमीं हमेशा दर हवा नाज्वाँ ।
 यके रा जौरके जरी रवाँ हमवारा दर जैहूँ ॥
 गुरेजाँ ई के चू गरदद बजौ अज बंगे ऊ गेमन ।
 शितावाँ आँ के चू रेजद जे हिंसीं शहवा अज वै खूँ ॥
 अजबतर जीं हमा आनस्त कीं परिन्दा मुर्गारा ।
 मुरत्तय मसकने बादस्त दीगर सौनो दीगर गू ॥
 यके रा बंशए साजी यके रा बादिए आमू ।
 यके रा कुल्लए काफो यके रा साहिले जैहूँ ॥
 यके खुद रा बतमए आँ बगरदू बुर्दा चू कारू ।
 यके खुद रा जे बीमे आँ व आव अरुगन्दा चू जुन्नू ॥
 नगीरद बाद रा चंगो नशायद आव रा रंगी ।
 यके खनीन इलमासस्त व दीगर जौरके जौते ॥
 नगोई ता चेरा करदन्द केला चंगे आँ जाहन ।
 नगोई ता चेरा दादन्द रंगे ई वराँ अकमे ॥

शाहों और मुर्गावियों की तरफ ध्यान से देख कर बताओ कि इन में इतना अन्तर किस प्रकार हुआ ? किमने उनकी रचना में इतना भेद डाल दिया ?

जिसके कारण एक रुपहले भंडे के समान वायु में फहराती रहती है और दूसरी एक सुनहली नाव के समान पानी में नैरा करती है ।

मुर्गाबी शाहों के पंजे से अपने प्राण बचाने के लिये छिपती फिरती है, और शाहों उनका रक्त बहा कर और उनको खाकर अपनी शुधा शान्ति करने के उद्योग में लगी रहती हैं ।

इससे भी अधिक आश्चर्य की एक दूसरी बात है । यह दोनों पक्षी वायु में रहने वाले हैं । परन्तु इस पर भी भिन्न-भिन्न हवाओं में रहते हैं ।

किसी को जंगल की हवा भली मान्दम होती है और किसी को जलाशयों के किनारे की वायु लाभदायक है । कोई-कोई काफ पर्वत की चोटियों पर रहना पसन्द करती हैं और कोई नदियों के किनारे ।

एक पक्षी दूसरे का शिकार करने के लिये आकाश में चकर लगाया करता है और दूसरा उसके भय से नदी में जाकर छिप रहता है ।

शिकारी पक्षी का कठोर पंजा वायु को थामने में असमर्थ है और जल-पक्षियों का रंग नदी के पानी से नहीं धुनता ।

बताओ किस कारण शिकारी पक्षी का दिल इतना कठोर है और पंजा इतना दृढ़ तथा जल के पक्षी का रंग इतना सुन्दर ?

बगर हमचूँ मने आजिज़ दर्री मानी कि पुरसीदम ।
 चे गोई दर सबाते तो सराये हब्बे अफतीमू ॥
 न माली हर निहाले रा चो मालस्त हस्त जाबो गिल ।
 जे बहरे तपके खुरशोदस्त चू लुके हवा मक़्क ॥
 चेरा वर यक ज़मी चंदी नवाते मुखतलिफ़ वीनम ।
 जे गुल वज़ नरगिसे वज़ यासमीनो अज़ समन मौजू ॥
 हमेदू मेखुरानद आब लेकेशाँ हमी रोयद ।
 वरंगे रंगे मिबरो मुंबुला वारंगे मा ज़रयू ॥
 अगर डलत तबाए शुद वजूदे जुमला पस चू शुद ।
 यके मुमसिक यके मीलो यके आरद यके ताहूँ ॥
 अज़ अंगूरस्तो ख़शखाशस्त अस्त उनसुरे हरदो ।
 चेरा दानिश वरद वादा चेरा खाव आवरद अफयू ॥
 हमाना ई कि मन गुफ़तम तबाए कर्द न तवानद ।
 न अफ़लातूनो न अंबर व ज़रको हीलओ अफ़म ॥

अच्छा, यदि इस विषय में तुम भी मेरे ही समान अनजान हो और इन समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ हो तो अपने ही सांसारिक रहन सहन को देखो और समझो ।

जब सूर्य तपता है, और हवा गर्म होती है, तो तुम वृक्ष की छाया की शरण क्यों लेते हो ? यह इस लिये कि तुम मिट्टी तथा पानी के संयोग से उत्पन्न हुए हो और इसी लिये चित्त को प्रसन्न करने वाली हवा की भी आवश्यकता है ।

फिर यह बताओ कि पृथ्वी पर नाना रंग की वस्तुएँ क्यों उत्पन्न की गई हैं ? गुलाब, नरगिस, चमेली और बेला इत्यादि के पुष्प क्यों खिलते हैं ?

उनको पानी से सींचा जाता है, परन्तु व उत्पन्न हात हैं पृथ्वी म स । उनम से किसी का रंग श्वेत होना है, किसी का पीला, किसी का लाल और काला ।

यदि यह कहा जाय कि इस कारीगरी में किसी का हाथ नहीं है तो फिर इनके खिलने के ढंग पृथक् पृथक् क्यों हुए ? ये भिन्न-भिन्न रूपों में अपनी बहार क्यों दिखलाते हैं ? एक सिमटा हुआ है, दूसरा लिपट कर फैलता है, कोई सीधा है तो कोई चपटा ।

अंगूर तथा पोस्ता दोनों की असलियत एक ही है । परन्तु फिर शराब नशा क्यों लाती है और अफीम बेसुध क्यों कर देती है ?

इससे यह सिद्ध होता है कि अपने आप यह बानें नहीं हो सकती हैं । अफ़लातून अपनी हिकमत से और सामरी अपनी जादू से ऐसा करने में असमर्थ हैं ।

मगर बेचूँ ख़ुदाबन्दे कि फ़रज़न्दाने आदम रा ।
 बक्रुदरत दर बजुद आवुर्द बे आलत व काफ़ो नू ॥
 ख़ुदाबन्दे कि दायम हस्त असहाबे मआसीरा ।
 जनाबे फ़जले ऊ मामन अज़ाबे अदले ऊ मामूँ ॥
 हमेशा वूद पेश अज़ या हमेशा वाशद ऊ बेशक ।
 बक्राला रचना मीगो व मीदौ वस्के ऊ बेचूँ ॥
 कलामशहमचो बादशहक वलेकिन गुपते ऊ मुशकिल ।
 सिकातशहमचो ज़ानशहक वलेकिन सिरें ऊ मख़ज़ूँ ॥
 हमू बख़िशन्दए दौलत हमू दानिन्दए किकरत ।
 हमू दरिन्दए गेती हमू दारिन्दए गरदूँ ॥
 के पिनहौँ कर्द जुज़ एज़िद वसगे ख़ारा दर आज़र ।
 कि रोयानदहमाँ जुज़ वै जे ख़ाके तीरा आज़गूँ ॥
 सदक़ हैराँ व दरिया दर दवाँ आहू व सहरा वर ।
 रमीदो आरमीदा हर दो दर दरिया व दर हामूँ ॥
 के पुर करदो के आगन्द अज़ गयाहो क़तरए बारौँ ।
 दहाने ईँ व नाफ़े आँ जे मुश्के लूल्हए मकनूँ ॥

हाँ, यह काम निस्मन्देह उस अनुपम जगत्कर्ता ईश्वर का है, जिसने अपनी इच्छा शक्ति केवल शब्द द्वारा (“मृष्टि हो जा ” इस शब्द से) मनुष्य मात्र को बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न किया है ।

ईश्वर वह है जो सदैव पापात्माओं पर दया दिखलाता है और उनको शरण देता है । उसके राज्य में रह कर मनुष्य अपने आपको खोटे कर्मों से बचा सकता है ।

उसका न आदि है और न अन्त । उसकी उपमा यदि किमी से दी जा सकती है तो केवल उमी से ।

वह जो कुछ कहता है वह अवश्य होता है । उसका कथन भी उसी के समान पवित्र है । परन्तु उमका कहना कठिन है । उसके गुण भी उसी के समान हैं, परन्तु उनका भेद पाना कठिन है ।

वह हमें धन-सम्पत्ति प्रदान करता है और हमारे हृदय की बातों को जानता है । यह संसार और आकाश सब उमी के अधिकार में हैं ।

ईश्वर के अतिरिक्त पत्थर में अग्नि किसने छिपा रक्खी है और उसकी शक्ति के सिवाय काली मिट्टी में से लाल रंग के फूल किसने उत्पन्न किये हैं ?

नदी में सीपियाँ और जंगल में हिरन उसी ने उत्पन्न किये हैं । दोनों अपने अपने स्थानों में आराम से रहते और भागते फिरते हैं ।

उसी परब्रह्म ने बरसा के पानी के बूँद से सीप का मुँह भरवाया और जंगल की घास से हिरण की नाक में मुश्क उत्पन्न की ।

जे बहरे आँ कि चूँ सीमीं सिपर गरदद दर अफजनी ।
 कि काहद माहरा हर माह हत्ता आदा कल उरज्जु ॥
 कि बनदद चूँ खिजाँ आयद हजारों किलए अदकन ।
 कि पोशद चूँ बहार आमद हजारों हलए गुलगूँ ॥
 कि गरदानद मुलव्वन कोह रा चूँ रोज़न रिजवाँ ।
 कि गरदानद मुनक्क़श बाग़ रा चूँ सहने अर किलयूँ ॥
 दो आबे मुखतलिफ़ रा मुत्तफ़िक़ बाहम कि गरदानद ।
 बक़्क़दरत दर यके मौज़ा कुनद हर दो बहम माज़ ॥
 पसंगह नुतफ़ा गरदानद वज़ शक़्श कुनद पैदा ।
 मिसालश माहकमां साबित निहादश मुत्तफ़िक़ मोज़ ॥
 यके आलिम यके जाहिल यके ज़ालिम यके आजिज़ ।
 यके मुनयम यके मुक़लिस यके शादाँ यके महज़ ॥
 तआला शानहू कि जुमला अज़ आव ऊ पिदीद आवुर्द ।
 पसंगह जुमला दर दम वै बखाक अन्दर कुनद मदफ़ूँ ॥
 अया दिल बस्ता दर दुनिया व ग़स्ता गाफ़िल अज़ उक़्वा ।
 चे सूद अज़ सूदे इम रोज़न कि फ़रदा मी शवी मानूँ ॥
 चो आलम रा हमी दानी कि फ़ानी ग़शन ख़ाहद पस ।
 बमहरे आलमे फ़ानी चग़ दिल करदई मरहूँ ॥

वह कौन है जिसने अपनी शक्ति से चन्द्रमा को आकाश में चमकाया है और उसे घटाता तथा बढ़ाता है ?

पर्वत को स्वर्ग के समान नाना रंग के पुष्पों से कौन सजाता है और उपवन विविध प्रकार के पौधों तथा फूलों से कौन सुशोभित करता है ?

फिर कौन अपनी शक्ति से दो वस्तुओं को मिला कर एक कर देता है ? और फिर उसे बिन्दु के रूप में परिणत कर उससे मनुष्य उत्पन्न करता है ?

और ऐसा बेसा मनुष्य भी नहीं वरन् सुन्दर शरीर वाला और आँख-नाक-कान इत्यादि से दुरुस्त ।

विद्वान, मूर्ख, गुणी, दार्शनिक, तत्ववेत्ता और बड़े बड़े ज्ञानी उसी ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किये हैं ।

वह इतना बड़ा कारीगर है कि उसने इन सबको केवल जल से उत्पन्न किया और फिर उन्हें मिटा कर मिट्टी में मिला दिया ।

हे संसार के व्यवसायियों और अंत को न सोचने वाले ! आज के लाभ के पीछे तुम इतना क्यों पड़े हुए हो जब कि कल मृत्यु के उपरान्त तुम्हें घाटा उठाना पड़ेगा ?

जब तुम्हें यह ज्ञान है कि संसार क्षणिक है तो फिर उसमें इस प्रकार तल्लीन क्यों हो रहे हो ?

इलाही बंदए बेचारए मिसकीं "सनाई" रा ।
 कि ऊ अज दीनो ताअतहाय तो दरमाँदओ मदयूँ ॥
 अगर चे हस्त ऊ मतऊँ बजिलतहा तमा दारद ।
 बदी तौहीदे नामतऊँ जजाए अज तो नामहन् ॥

(१५)

ऐ पेश रवे हरचे निकोईस्त जमालत ।
 वै दूर शुदा आफतो नुकसों जे कमालत ॥
 ऐ मरदुमके दीदए मा बंदए चशमत ।
 वै जाने पसंदीदए मा हाल जे हालत ॥
 गम खुरदनम इमरोज हरामस्त चो बादा ।
 अज बख्त बमन दादा जमाना बहलालत ॥
 ऐ बुलबुले गोइंदा व ए कवके खिरामों ।
 मै खुर कि जे मै बाद हमेशा परो बालत ॥
 जोहरा बनिशात आमद चूँ याफ़ समानत ।
 खुरशेद बरश्क आमद चूँ दीद जमालत ॥
 हर रोज़ दिगर गूना ज़नद शाख़ बरी दिल ।
 ई बुलअजबी बी कि बर आवुर्द निहालत ॥

हे ईश्वर ! "सनाई" तेरा सेवक है । वह दीन है, नाचीज़ है, परन्तु सदैव से तेरा भक्त रहा है ।

वह नीच करके प्रसिद्ध हो रहा है । परन्तु उसे पूर्ण आशा है कि सच्ची भक्ति के उपलक्ष में वह तुझसे इनाम पायेगा ।

(१५) हे भगवन् ! तेरा रूप मृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है । वह अनुपमेय है । तेरा कमाल हानि और आपत्ति से परे है ।

मेरी आँख की पुतली, तेरी आँखों की प्रतीक्षा में सदैव तन्मय रहती है और मेरे प्रिय तथा रोगी प्राण तेरे प्राणों का एक अंश हैं ।

आज मैं अधीर हो रहा हूँ । मुझमें एक नवीन प्रसन्नता समाहित हो रही है । कारण कि भाग्य ने आज मेरे नेत्रों के सम्मुख तेरा जलवा प्रगट कर दिया है ।

हे सुन्दर राग अलापने वाली बुलबुल और शीघ्रगामी कवक तू प्रेम में मस्त रह । इस प्रणय रूपी मदिरा से तेरे परों में उड़ने की शक्ति सदैव बनी रहेगी ।

तेरा गाना सुन कर जुहरा मोहित हो गया और तेरा रूप देख कर सूर्य भी लज्जित हो गया है ।

तेरा बेल-बूटे से सुसज्जित शरीर देखने योग्य है क्योंकि यह तेरा सुमज्जित शरीर मेरे चित्त को प्रतिदिन नये ढंग से लुभाता है ।

जाँ नीच बशुकराना बनिज्दे तो फ़रिस्तम ।
खुद कारे दो सद जाँ बे कुनद बूए विसालत ॥

(१६)

राजे अज़ल अन्दर दिले उश्शाक़ निहाँनस्त ।
जाँ राज़ ख़बर याफ़ कसे रा कि अयानस्त ॥
कूरा ज़े पसे परदए उश्शाक़ दुई नेम्त ।
जाँ मिम्ल न दारद कि शहंशाहे जहाँनस्त ॥
गोयन्द अज़ाँ मैदाँ उरा कि दर आमद ।
कै ख़ाजा दिलो रूह ख़ाना व ख़ानमस्त ॥
गर माहे जलाल आमद दर नात कुसूफ़े तो ।
वर तीरे विसाल आमद दर शिब्हे कमानमस्त ॥
ऐ कूए दो सद बार हज़ार अज़ सरे माना ।
कुशतस्त कज़े शाँ वजुज़ अंकिशत निशानस्त ॥
आँ कसं कि रिदाए ज़रे मा वर कतिक उक़तद ।
आँ नेस्त रिदा अज़ सिफ़ते तैए लिसानस्त ॥

मैं अपने प्राणों तक को कृतज्ञता से तेरे लिये अर्पण कर सकता हूँ । तेरे मिलने की सुगन्ध ही दो सौ प्राणों के बराबर है ।

(१६) मृष्टि के आदि के रहस्य प्रेमियों के हृदय में गुप्त हैं । इस भेद को वही जान सकता है, जिस पर वह प्रकट हो ।

वह अपने प्रेमियों से किसी प्रकार का छिपाव नहीं रखता है । और वह अनुपम इसी लिये कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण संसार का बादशाह है ।

प्रेमियों को इस क्षेत्र में घुसने की (प्रविष्ट होने की) आज्ञा अवश्य दी जाती है परन्तु उनके दिलों और प्राणों की इस प्रणयक्षेत्र में नज़र ली जाती है ।

यदि उसका चन्द्रमुख तेरी दृष्टि से ओझल हो गया है, यदि तेरी दृष्टि के सम्मुख एक मोटा आवरण आ गया है, तो इसमें तेरे ही विचारों का अपराध है । और यदि उसके मिलन में किसी प्रकार का सन्देह है तो इसमें भी तेरे गुमानों का ही अपराध है ।

इस हृदय में लागों बार उसके रहस्य प्रकट हुए हैं, परन्तु आकुलता की अग्नि से हृदय ऐसा जल गया है कि अब आगे बढ़ने का साहस भी नहीं होता है ।

हमारी ज़री की यह चादर जिसके कन्धों पर डाल दी जाती है, उसका मानों मुँह बन्द कर दिया जाता है । यह चादर नहीं है । इसमें दूसरे का मुँह बन्द करने का गुण है । (इसका आशय यही है कि हमारे दर्जे को पहुँच कर मनुष्य को दशा ऐसी हो जाती है कि वह रहस्य खोल नहीं सकता ।)

गोयन्द निकोयस्त दरीँ परदा दिले मा ।
मीदाँ ब हकीकत कि जे इकबाले एहसानस्त ॥
नज्मे गोहरे मानी दर दीदए दावा ।
चूँ मरदुमके दीदा दरीँ राफल निहानस्त ॥
दर राह फना नामदर्ई जाय अज्जीजौँ ।
कों शेरे “सनाई” सबवे कुव्वते जानस्त ॥

(१७)

खेज ऐ दिल बर फिगन ईँ मरकवे तहवील रा ।
वक्क कुन वर ना कसौँ आँ आलमे तानील रा ॥
ना गुजारे खत्ते माना हर्के रंगारंग रा ।
मह कुन अज लौहे दावा नक्शे कालो क्रील रा ॥
अंदरीँ सकहाय मानी दर रहे मानी मजू ।
आँ कि दर सरना नयादी नकहे इसराफील रा ॥
कै कुनद वरदास्त दरमाँ दर बियावाने खिरद ।
नावदाने बामे गिलखन सैले रोदे नील रा ॥
दस्ते इब्राहीम बायद बर सरे कोहे फिदा ।
ता न वुर्रद तेरो वुराँ दस्ते इस्माइल रा ॥

लोग कहते हैं कि इस पद के भीतर हमारा दिल बड़े आनन्द में है । यदि ऐसा है तो इसे भी उसकी दया का चिह्न समझना चाहिये ।

ऊपरी दृष्टि से यदि उसके रहस्य को देखा जाय तो आँख भुलावे में अवश्य आ जायगी ।

प्रिय प्राण ! अभी तक तुम मृत्यु के समक्ष नहीं पड़े हो । यदि ऐसा अवसर आता तो तुम भी समझ जाते कि “सनाई” की यह कविता तुम्हें बल प्रदान करने वाली है ।

(१७) ऐ दिल, उठ और अपने उद्यम में लग । वहाना छोड़ दे और बेकारी को निरुधमी मनुष्यों के लिये छोड़ दे ।

इन तमाम निरर्थक बातों को छोड़ दे । उनसे कोई आशय नहीं निकलता । व्यर्थ किसी बात का दावा करने में समय को बर्बाद न कर और अधिक बातें मत बना ।

इन मौखिक बातों के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयत्न मत कर । कारण कि “इसराफील” “सरना” में प्रविष्ट नहीं होने ।

हमारी बुद्धि इस बात को किस प्रकार मान सकती है कि भाड़े के मकान की छत का नावदान नील नदी की वाढ़ को सहन कर सकता है ।

फिदा के पर्वत पर इस्माइल का हाथ न काटने के लिये यदि कोई तलवार चला सकता है तो वह केवल इब्राहीम का हाथ है ।

मर्दे चूँ ईसीए मरियम बायद अन्दर राहें सिद्क ।
ता बे दानद कद्रे हर्फे आयते इंजील रा ॥
दर शबे तारीक कुजा बीनद दहाने पशशारा ।
आँ के ऊ दर रोजे रौशन मी न बीनद पील रा ॥
अज बुलूँ सू रौगने पुर सूद कै दागद तुरा ।
चूँ दरूँ सू नूर न बुवद ज़रवाण कंदील रा ॥
खेज अकनूँ खेज काँ साअत वसे हसरत खुरी ।
चूँ बबीनी बग सरे खुद तेगे इजराईल रा ॥

(१८)

अज हवाए फकदारौँ काखे फगफूरी मस्ताद ।
दर सराए सूदे सलमाँ तरुते अय्यारी मजो ॥
खारे पाए गाहे दरवेशाने आँ दरगाह रा ।
दर कफे दस्ते उरूमे अहदे अम्मारी मजो ॥
हर कमे रा नूरे सिद्के इश्क ई रह कै देहद ।
मूरने खुरशीद रा अन्दर शबे तारी मजो ॥
बग सरे तूरे हवा तंवूरे शहवत मी जनी ।
इश्के मरदे लंतगानी रा वर्दा खारी मजो ॥

ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिये मरियम के पुत्र ईसा के समान मनुष्य की आवश्यकता है । क्योंकि उसे धर्म-ग्रन्थ इंजील के शब्दों का मूल्य मालूम रहता है ।

जिस मनुष्य को दिन के उजाले में हाथी न सूझता हो वह रात्रि के अन्धकार में मच्छड़ का मुख किस प्रकार देख सकता है ?

यदि कन्दील के अन्दर वाले दीपक में तेल न हो तो बाहर से उसमें तेल भरा होना तुम्हे रोशनी कब देगा !

यदि तुम्हें उठना है तो इसी समय उठ और जो कुछ करना है कर ले, अन्यथा जिस समय यमदूत तरे मिर पर मृत्यु की तलवार लेकर आ उपस्थित होगा, उस समय शोक के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा ।

(१८) उदासियों के पास सुन्दर स्वर्ण-मन्दिर कहाँ से आये और सुलेमान के पास ऐयारी (जादू) का तरुत कहाँ से आ सकता है ?

इस मन्दिर में आने वाले प्रेमियों के पैर में जो काँटा चुभना है, उसे दुलहिन के हाथ में खोजने से क्या लाभ होगा ?

इस मार्ग में सत्य प्रणय की चमक किमको प्राप्त हो सकती है ? अंधेरी रात में सूर्य कैसे प्राप्त हो सकता है ?

तू सांसारिक विषयों में पड़ा हुआ जीवन के झूठे सुखों का आनन्द छूट रहा है । फिर बता इस बुरी अवस्था में रह कर तू सच्चा प्रणयी किस प्रकार हो सकता है ?

घर तो खाही नमो शैतौं दर ककत जारी कशद ।
नामे इश्के दोस्त रा जुज अज सर जारी मजो ॥

(१९)

कमे कू जे गोशे हकीकत अयाँ शुद ।
मजाजी सिकात वै अन्दर निहाँ शुद ॥
निशाने बुवद अज हकीकत मर ऊ रा ।
चे शुद ई कि अज नेस्ती बे निशाँ शुद ॥
कमे कू चुनीं शुद कि मन शरह करदम ।
यकीं दां कि ऊ बादशाह जहाँ शुद ॥
मलिक शुद जमीनो जमों रा पसंगह ।
चो कररोबियाँ साकिने आसमों शुद ॥
रवाँ गश्त फरमाने ऊ चूँ सियाही ।
मरूग कि गुफ ई चुनीं शौ चुनाँ शुद ॥
चो दर नेस्ती जद दमे चंद ईसा ।
तने बेरवाँ अज दमश वा रवाँ शुद ॥
न बीनी कि हर कू जे खुद गश्त फानी ।
जे अहे बक़ा गश्नो साहब किराँ शुद ॥

हाँ, यदि तू अपनी शैतान इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो विनय तथा नम्रता के साथ अपने प्यारे में प्रेम-याचना कर । तुझे सफलता प्राप्त होगी ।

(१९) जिस पर ईश्वर का रहस्य प्रकट हो जाता है, वह संसार के समस्त बन्धनों से छूट जाता है ।

इस वास्तविकता को प्राप्त कर लेने का चिह्न यही होता है कि मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अपने आपको मिटा देता है ।

जो मनुष्य ऐसा हो जाता है, जैसा कि मैंने वर्णन किया, वह साधारण मनुष्य से बहुत ऊँचा हो जाता है, और संसार का मझाट बन जाता है ।

वह पृथ्वी तथा जीवधारियों का बादशाह होकर आकाश पर चढ़ जाता है । वह स्वर्गीय दूत का पद प्राप्त कर लेता है ।

उसमें इतनी शक्ति हो जाती है कि उसकी आज्ञा सभी मानते हैं !

उसमें इतनी सामर्थ्य आ जाती है जितनी ईसा में थी । वह भी उन्हीं के समान चार फूँके मार कर मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सकता है ।

जो मनुष्य ऐसा होता है वह मृत्यु को प्राप्त होकर अमर हो जाता है और फिर संसार में वह पथ-प्रदर्शक समझा जाता है ।

हमज़ नेम्ती बुद कि वा मुश्ते खाके ।
मोहम्मद व जंगे मिपाहं गरौं शुद ॥
बसा दर रहे नेम्ती कस्ब करदन ।
गुमाहौं यक्कीं शुद यक्कीं हा गुमाँ शुद ॥
कसे कू जे हहे रमूज अम्त आजिज ।
वयाने “मनाई” वऊ तरजुमा शुद ॥

(२०)

अजबल खलल ए खाजा अन्दर अमल आयद ।
फरदा की वनिजदे तो रमूले अजल आयद ॥
जायल शुदा गीर आँ हमाँ मुल्के तो वयक दम ।
अंगह की रमूले मलिके लमयजल आयद ॥
हर साल यके काख कुर्ना दीगर दर वै ।
हर रोज़ तुरा आरज़ूए नौ अमल आयद ॥
जी काख वर आउरदा व आयूके मन इमरोज ।
हक्का कि हमाँ वूए रमूमे तलल आयद ॥
शादी व ग़मत अबलहोओ हिर्मे बगेबाँ ।
दानम जे नुजुमे जे हिसावे जुमल आयद ॥

यह एक ऐसी शक्ति है कि जिससे शक्तिवान् होकर मुहम्मद साहब एक मुट्ठी धूल लेकर एक बृहत् सेना से भिड़ने के लिये पहुँच गये थे ।

इस मृत्यु-मार्ग में बहुधा ऐसा होता है कि मन्देह विश्वास के रूप में और विश्वास सन्देह के रूप में परिणत हो जाता है ।

जिसको उस विश्व के रचयिता का भेद नहीं ज्ञात है, उसे यह भेद, “मनाई” का यह वर्णन पूर्णतया समझा सकता है ।

(२०) तुम्हारे जीवन में जो सब से पहली रुकावट होती है, जो सब से पहला विघ्न आ उपस्थित होता है, वह उम समय होता है जब मृत्यु का दूत आकर सिर पर सवार होता है ।

जिस समय उम अविनाशी ईश्वर का दूत आ जाता है, उस समय तेरी सारी बादशाही समाप्त हो जाती है ।

प्रत्येक वर्ष तू उसी संसार में एक नया भवन तैयार करता है और प्रत्येक दिन तेरे हृदय में कोई न कोई नया काम करने की इच्छा होती है ।

तेरे इन आकाश-चुम्बी महलों से, यदि वास्तव में देखा जावे तो खंडहरों और जंगलों की बू आती है ।

तेरी प्रसन्नता और शोक, तेरी मूर्खता और डाह का सम्बन्ध इस महल से है । यह सम्पूर्ण बातें मेरी समझ में ज्योतिषविद्या की गणना के हिसाब से हुआ करती हैं ।

ऐ बस कि न बाशी तू व ऐ बस कि बरीं चख्ख ।
 बे तो जोहलो जोहराओ हूतो हमल आयद ॥
 हरचंद तू तमादरी कायद जे कवाकिय ।
 वै हक हमा अज फजलो कजाए अजल आयद ॥
 रोजे की बदीवाँ मसलन देर तर आई ।
 तरसी की दर असबाबे विजारत खलल आयद ॥
 गुफ्त 'सनाई' कि व दीवाने विजारत ।
 ऐ बस कि दीवाने विजारत बदल आयद ॥

(२१)

ऐ औँ कि तुरा अज तूईए तुस्त तसरफ ।
 औँ बेह कि न गोई सखुन अज वूए तसबुक ॥
 दर कूए तसबुक व तकल्लुक मगुजर हेच ।
 जीरा कि हरामस्त दरी कूए तकल्लुक ॥
 दर उशवए खेशी तू व औँ राह न दानी ।
 ऐ दोस्त तुरा अज तूईए तुस्त तबक्कु ॥

ऐसा बहुधा होगा कि जब तू मिट जायगा तब तेरी अनुपस्थिति में इस आकाश के ऊपर "जोहल" और "जोहरा" नामक सितारे "हूत" और "हमल" के "बुर्ज" में दिग्वाई देंगे ।

तू जिन वस्तुओं के प्राप्त करने को अपने भाग्य से आशा रखता है, वह सभी तुझे तभी प्राप्त होंगी जब ईश्वर की तेरे ऊपर दया होगी तथा उसकी आज्ञा होगी ।

उदाहरण के लिये एक बात ले, कि जिस दिन तू कचहरी में देर से पहुँचता है, उस दिन तुझे यह भय लगा रहता है कि कहीं पदाधिकारी क्रोधित न हो जावें ।

"सनाई" ने यह बान डम लिये कही है कि बहुधा यह देवने में आता है कि मंत्री के न्याय में भी अन्तर पड़ जाता है ।

(२१) हे मनुष्य, तेरी बुद्धि पर अहंकार का पर्दा पड़ गया है। तू अहंकार के अधिकार में आ गया है। तेरे लिये यही अच्छा होगा कि तू सूफियों के रास्ते का वर्णन बिल्कुल छोड़ दे ।

सूफियों के मार्ग में कभी बनने का प्रयत्न मत करना । कारण कि इस मार्ग में बनना बहुत ही बुरा है ।

तू अपने चोचलों और करेबों को नहीं छोड़ता है । ऐमा ज्ञात होता है कि सिर से पैर तक स्वार्थ में फँसा हुआ पड़ा है ।

राहेगत हकीकत कि वरा नेस्त निहायत ।
 जिनहार मकुन दर रहे तहकीकत तवक्कुफ ॥
 तो चन्द हमी खाही मिनहाजुल मेराज ।
 एहयाए उलुमे दीं बा शरह तआरुफ ॥
 कि नशनवद इमरोज "सनाई" बहकीकत ।
 बिगिरिफ्त ब इसगर रहे इश्क तअन्नुफ ॥
 गर नेक अजो विशनवी ऐ दोस्त अजी पस ।
 वर शाहिदे यूसुफ न कुनी किस्सए यूसुफ ॥

(२२)

ऐ ऐने हकीकत अन्दर ऐन ।
 बाज करदा ज बहरे दीदन ऐन ॥
 पेश ऐने तो ऐने दोस्त अयाँ ।
 तू रसीदा ब ऐन गोई ऐन ॥
 चूँ कि आयद जे ऐने तो हमा तां ।
 एस्तादा चो सदे जुलकरनैन ॥
 ॥ ना तू गोई तुई व आँ तू तुई ।
 आन अज तो दरोग वाशद दैन ॥

ईश्वरीय वास्तविकता का मार्ग बहुत ही बड़ा है । यदि इस मार्ग में तुम्हें आगे बढ़ना है तो मावधान होकर चलना । मार्ग में विश्राम करना उचित नहीं है ।

तू कब तक उन्नति के मार्ग का इस प्रकार इच्छुक रहेगा, कि अपने को प्रसिद्ध करने के लिए धार्मिक विद्याओं को जीवित रखेगा ।

“सनाई” आज तेरी जाँच पड़ताल सुनेगा भी नहीं क्योंकि वह दृढ़ता के साथ अपने को मिटाने का मार्ग ग्रहण कर चुका है ।

मित्र, यदि इस बात को तुम इस समय ध्यान से सुन लो तो फिर यूसुफ के प्यारे के सामने कभी यूसुफ नाम तक न लो ।

(२२) तुम उस स्थान तक पहुँच गये हो, जहाँ पर ईश्वरीय वास्तविकता प्रकट हो जाती है, और फिर भी उसे देखने के लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हो ।

तुम ईश्वर के भेदों को जानते हो । वह तुम्हारी दृष्टि के सम्मुख है । परन्तु इस पर भी यह पूछ रहे हो कि वह क्या है ।

जब तुमको अपने ही अन्दर अपना वास्तविक स्वरूप दिखलाई देने लगेगा तो तुम्हारा अभिमान तुम्हारे सामने ऐसा ही खड़ा रहेगा जैसा कि सिकन्दर के सामने दरवाजे की चौखट ।

॥ जिस समय तक तुम्हारे हृदय से ‘मैं’ और ‘तू’ का भेद-भाव दूर नहीं

कै मुसल्लम बुवद तुरा तौहीद ।
 चूँकि इसनाद मी कुनी इसनैन ॥
 पेशे तो ज़ मियाँ ब बातिलो हक़ ।
 चंद गोई तफ़ाऊते मावैन ॥
 दर यके हाल मुसतहील बुवद ।
 इजतिमाए वजूदे मुसल्लिफ़ैन ॥
 अज्वल अज़ खेश पेश नेह तो कदम ।
 ता जुदा गरदद अस्ले माँ अज़ दैन ॥
 नज़र अज़ ग़ैर मुनक़ते कुन ज़ों के ।
 शाहिदे ग़ैर गर दिल आरद ग़ैन ॥
 चन्द गोई जे हाल खेश कि क़ाल ।
 क़ाले बेहाल आर बाशद व शैन ॥
 चूँ “सनाई” जे खुद न मुनक़नई ।
 चे दिकायत कुनी जे हाले हुसैन ॥

॥ होगा, उस समय तक तुम्हारी स्वार्थ-भावनाएं भी दूर नहीं हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त ‘तू’ शब्द का मुख से निकालना भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा।

जब कि तुम ‘मैं’ और ‘तू’ को दो मिट्ट कर रहे हो और उनमें अन्तर समझते हो तो फिर ईश्वरीय मार्ग में आगे बढ़ने के योग्य तुम नहीं हो।

तुम स्वयम् इस बात को समझ सकते हो कि ऐसा विचार रखते हुए ईश्वर तक पहुँचना और उसके भेदों को समझना तुम्हारे लिये कितना कठिन है।

एक ही अवस्था और एक ही समय में दो प्रतिकूल बातों का एकत्रित होना असम्भव है, और विलकुल असम्भव है।

दोनों बातें इकट्ठी हो ही नहीं सकतीं, सब से पहले इस बात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा सारा अहङ्कार मिट जावे, जिससे कि तुम्हारी वास्तविकता, धर्म से पृथक् हो जावे।

दूसरों की तरफ से अपनी दृष्टि फेर लो। कारण कि यदि उनकी तरफ देखोगे तो तुम्हारे हृदय में बुराई उत्पन्न होगी।

अपना वर्णन कब तक रहेगा। इससे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना नहीं है। इन मौखिक बातों से और दावों से तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा और बदनामी उठानी पड़ेगी।

“सनाई” का कहना है कि यदि तुम अपने अपनत्व का परित्याग नहीं करते हो तो फिर ‘हुसैन’ का क्या वर्णन करते हो ?

(२३)

कसे कन्दर सफे मरदों व मैखाना कमर बन्दद ।
बराबर कै बुवद वा आँ कि दिल दर खैरो शर बन्दद ॥
जे दी हरगिज नआरद याद वज्र करदा अदेशत ।
दिल अन्दर दिल करेबे नरजो ददें मा हजर बन्दद ॥
बसा पीरे मुनाजाती कि वा मरकव फिरो मानद ।
बसा गिंदे खराबानी कि जीं वर शेरे नर बन्दद ॥
कसे कू वा अर्याँ वाशद खबर पेशा मुहाल आमद ।
चो खिलवत वा अर्याँ साजद कुजा दिल दर खबर बन्दद ॥
चो दर दावा कमरबन्दी जे मानी बेखबर वाशी ।
कुजा दानद कसे मानी कि दर दावा कमर बन्दद ॥
न फिरअौने शवद आँ कस कि जा अंदर जमीं साजद ।
न याकूबे शवद आँ कस कि दिल रा दर पिसर बन्दद ॥
बतराँ वस्त मी नाजी गहं तख्त गहं वस्त ।
बतराँ वस्त कै नाजद कसे कू रस्त वर बन्दद ॥

(२३) शरावखाने के मनुष्यों की जो मनुष्य सेवा करता है, वह उससे अच्छा है जो सांसारिक भगड़ों में व्यस्त रहता है ।

न तो वह बीती हुई बातों का ध्यान करता है और न भविष्य के धन्धों का । न तो उसे अपने काम में आने वाली वस्तुओं का ही विचार है और न शरीर को सुख देने वाली चीजों का ।

बहुतेरे प्रार्थना करने वाले सवारी पर चलने पर भी थक जाते हैं । और बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रणय-मार्ग में मस्त शेर पर सवार होकर चले जाते हैं ।

जिसके मम्मुख बह प्रकट हो गया तथा जिसने उसके जल्वे को देख पाया उसके हाल-चाल जानने की क्या आवश्यकता है ? जो प्रत्येक क्षण उसके समक्ष है, उसको खबर की क्या चिन्ता है ।

अहङ्कार में आ जाने पर, बढ़ बढ़ कर बातें करने से तू आन्तरिक उन्नति से वंचित रह जायगा । कारण कि मौखिक दावा करने वाले आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं ।

ध्यान देकर देखो कि संसार से मोह करने वाला मनुष्य (उस पर अपना घर बनाने वाला) फरऊन होकर रह जाता है और पुत्र को प्यार करने वाला याकूब हो जाता है ।

मुझे अपने वैभव और पद का गर्व है । इन वस्तुओं को प्राप्त करके मैं दूसरों को तुच्छ समझता हूँ । परन्तु यह अहङ्कार व्यर्थ है । यह सब वस्तुएँ क्षणिक हैं ।

दरो हमचूँ “सनाई” बाश न दीदारो न दुनिया ।
कसे कूँ चूँ “सनाई” शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद ॥

(२४)

गे गिरिफ्तारे नियाजो आजो हिरसो अजलो माल ।
जिमतिहाने नकसे हिस्सी चंद बाशी दर बवाल ॥
चंद दर मैदाने कुद्से अज खीरा ताजी अस्पे लाफ ।
चूँ न दारी दारो इश्क अज हजरते कुद्से जलाल ॥
वातिन अज मानीत पाको जाहिर अज दावा पिदीद ।
चूँ तिही तबली बरार आवाज अज जरूमे दवाल ॥
मर्द वाशो वर गुजार अज हफ़ गरदूँ पाए खेश ।
ता शवी रसता अजी अलकाजहाये क़ील व क़ाल ॥
रूह रा दर आलमे रूहानियाँ कुन आव खुर ।
नक़म रा दर मुम्मे अस्पे रूह कुन क़तउलमनाल ॥
चूँ मुक़स्सल ग़शती अज औसाफ़े नफ़्मानी वइन्म ।
अज हमा अजसादे नफ़्सानी कुनद रूह इनफ़िसाल ॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी “सनाई” के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार । क्योंकि ‘सनाई’ के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं ।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य ! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा ? वह सब क्षणिक हैं ।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रंगता तब व्यर्थ में पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा ?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी बाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं । तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता ।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों अकाश-खण्डों में ऊपर पहुँचना है । और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा ।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं । अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा ।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी ।

जेहत कुन ता बुरी मंजिल अन्दर नूर रह ।
ता न मानी मुनकते दर औसते जिल्ल जलाल ॥
चूँ मुमक्का गश्ती अज औसाके नफ्सानी तुरा ।
दस्त तक्दीर ऊ तआला गोयद पे सैयद तआल ॥
कै खबरदारी रमाने गर दरो बाकिफ शबी ।
ता कि खुरसंदी ब मुश्ने इल्महाए वर मुहाल ॥
रौ ब जेरै सायए ला खानए इल्ला बगीर ।
ता कि अज इल्लात बिनुमायद हमा राह मुहाल ॥
चूँ ब तर्के नेफ्स गुफ्ती बश शुदी ऊग यकी ।
इ चुनी मी वाश अज अनफासे नफ्स अन्दर हलाल ॥

(२५)

शिगीफ आमद मग वर दिल अजी मुलताने जिन्दानी ।
कि दर जिन्दाने मुलतानी मनम शैताने रिन्दानी ॥
गरीबज जाहे नरानी जे नाफरमानिए लश्कर ।
बदम्ने दुशमनों दर माँदा अंदर चाहें जून्मानी ॥

तुम्हको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे ।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुम्हें अपने पास बुला लेगा ।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सत्र रखेगा और उन्हीं से उत्पन्न ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसको समझ नहीं सकेगा ।

जा और विगग के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की बहुमूल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिससे सारी सच्चाई तुझे संसार के बहुमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे ।

जैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से पवित्र किया, तुम्हको उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुम्हें वैसे भी इन्द्रियों के चङ्गुल में न पड़ना चाहिये ।

(२५) मुझे दिल के बन्दी सम्राट् पर आश्चर्य होता है कि मैं मस्त होकर भी शैतान के शैतानी पञ्जे में पड़ा हुआ हूँ ।

उसकी सेना ने उसकी आज्ञा न मानी । उसके पद ने उसका साथ न दिया, जिसके परिणाम-स्वरूप शत्रु के हाथों बन्दी होकर आँधरे कुएँ रूपी कारागार में वह अपने दिन व्यतीत कर रहा है ।

सिपाहे बेकराँ दारी व लेकिन बेवफा जुमला ।
 हमा दर अश्वा मगररन्द दर रामजी व नादानी ॥
 जे बद रूई व खुदराई हमाँ यकवारगी रफ़ा ।
 जे गुलशनहाय रूहानी बगुलखनहाय जिस्मानी ॥
 तलबगारन्द नुजहत रा व नशानासन्द ई' माया ।
 कि गुलशनहाय जिसमानीस्त गिलखनहाय रूहानी ॥
 दराँ दरिया किगन खूद रा कि मौजश वाश्त अत्र हिकमत ।
 कि जज़ए ऊ वक्कीमत तर बुवद अज दुरे उम्मानी ॥
 अगर गोया व पैदाई यके खामोश पिनहाँ शौ ।
 खुशा खामोशो गोयाओ खुशा पैदाओ पिनहानी ॥
 फिरस्ती गर तुरा वर सिरें जाने खुद वक्कूफ उफतद ।
 कुजा वाक्किफ तवानद शुद कमे वर मिरें यजदानी ॥
 अजॉ रू दर मकाने जेह हम वाग मकीनी तू ।
 कि अंदर वंद हफ़ अख्तर असीरे चार अरकानी ॥
 चेरा दर आलमे अवली न परी चू मलायक तू ।
 चेरा तू इनसिआ जिन्नी दग्न्दो हं तनो जानी ॥

ऐ दिल ! तूरे अधिकार में अगणित मैनिक हैं, परन्तु उनमें स्वामिभक्ति का बिन्कुल अभाव है। सब को मिथ्याभिमान और झल ने धागे में डाल रक्खा है।

वह सब के स्वार्थ तथा अपकर्म्मों के कारण, यकायक आत्मिक प्रकाश में से निकल कर शारीरिक सुखों में व्यस्त हो रहे हैं।

उनके हृदय में सांसारिक आमोद-प्रमोद और विलास के विचारों ने घर कर लिया है। और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि शारीरिक सुख आत्मा को निर्बल बना देते हैं।

तुम यदि किम्बो नदी में तैरना चाहते हो तो ऐसी नदी में तैरो जिसमें हिकमत (वैद्यक) की लहरें उठती हों। कारण, कि ऐसी नदी का एक साधारण पत्थर का टुकड़ा भी मोती से अधिक मूल्य रखता है।

यदि तू वाचाल है और उसके साथ ही साथ सबकी दृष्टि के सम्मुख भी है तो चुप हो जा और तनिक छिप भी जा। क्योंकि जो मनुष्य चुप और गुप्त रह कर अपना कार्य करता है वह अच्छा होता है।

यदि अपने प्राणों का रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे तो तुझे स्वतंत्रता मिल जायगी। इसके उपरान्त ईश्वर का भेद तुझे ज्ञात हो जायगा।

तू सदैव से नादान चला आ रहा है। इसका कारण यही है कि तू सात सितारों की शतें मानता है और चारों दिशाओं के भीतर वन्द है।

तू इस बुद्धि को दुनिया में स्वर्गीय दूतों के समान क्यों नहीं विचरण करता ? मनुष्यों व जिन्नों के समान शरीर तथा प्राणों की चिन्ता में व्यस्त क्यों हो रहा है ?

चे पेचानी सरज़ ताअत चे बाशी रोज़ो शब गाफ़िल ।
 चे पोशी जामाए शहबन दिले जाँ रा चे रंजानी ॥
 कि ता दस्ते जवाँमर्दी जे दुनिया बर न अफ़शानी ।
 चुनाँ दाँ बर खते दीं बर कि दस्ते वा हमर दानी ॥
 बर्दी हिस्मत कि अन्दर सर हमीं दागी सर अन्दर कश ।
 मज़ाये पंखो दू की न मरदे रज़म मैदानी ॥
 अगर खाही कि व हशमत जे अहलिल बैते दीं वागी ।
 वे आवी दर रहे ईमाँ यके तस्लीमे मलमानो ॥
 अया मै ख़ुदाए ग़फ़लत कुनू मस्ती व मैहांशी ।
 ख़ुमार अज़ दीं कुनद फ़ग़दा कमाले ख़ेश नुक़सानी ॥
 व पेश आदमे शरई मुजूदे इनक्रियाद आवर ।
 गर अज़ शुबहत न चू इबलोमाँ वर पैकारे शैतानी ॥

(२६)

शाहरा खाही कि बीनी खाक शौ दरगाह रा ।
 जावे ख़ुत आव जन मैदाने शाहंशाह रा ॥
 हम व चश्मे शाह रूप शाह खाही दींदो वम ।
 दींदा अंदर कारे शह कुन कोरिग़ बदखाह रा ॥

तू ईश्वर को भुलाकर दिन-रात सांसारिक भ्रमों में पड़ा रहता है और इन्द्रियों की तृप्ति में अपने दिल तथा प्राणों को कष्ट देता रहता है ।

जब तक तू साहस तथा प्रतिज्ञा के साथ इस संसार को नहीं छोड़ देगा, उस समय तक सच्चे धर्म को नहीं जान सकेगा और न उस मार्ग में आगे ही बढ़ सकेगा ।

जो कुछ जानता और समझता है उसी पर सत्र करके बैठ रहना बियों का कार्य है । यह समर-भूमि में वीरों के समान लड़ना नहीं है ।

तू इस धर्म-मार्ग में यश और पद प्राप्त करने का इच्छुक है तो सलमान की भाँति तेरी प्रतिष्ठा होगी ।

इस समय तू आलस्य में पड़ा हुआ है । मदिरा की मस्ती में सब कुछ भूला हुआ है । परन्तु प्रलय के दिन यही भूल तेरे लिये हानिप्रद सिद्ध होगी ।

तुझे उस सृष्टिकर्ता के सम्मुख भक्ति-भाव से शिर झुकाना उचित है और इबलीस के समान सन्देह में न पड़ कर शैतान के समान कार्य में दत्तचित्त होना चाहिये ।

(२६) यदि तू उस राजराजेश्वर के दर्शनों की अभिलाषा रखता है तो उसके मन्दिर की धूल बन जा और उसके आने के मार्ग में अपनी प्रतिष्ठा का छिड़काव कर दे ।

उसका मुख केवल उसी के नेत्रों से देखा जाता है, अतएव अपनी आँखों को उसकी नज़र करके उसके शत्रु को अन्धा बना दे ।

आह गम्माज आमद अन्दर राहे इश्को आशिकी ।
 वन्द वर नेह दर निहोँ खानए खमोशी आह रा ॥
 दर्दे इश्क अज मर्दे आशिक पुर्स अज आकिल मपुर्स ।
 का गही न जुवद जे आवे चाह यूसुक जाह रा ॥
 अक्ले बाकिदस्त मनिशौँ अक्ल रा बर तग़े इश्क ।
 आत्ममाँ उश्शाक़राओ रेसमाँ जोलाँह रा ॥
 गर सिपर बिकगनद अक्ल अज इश्क गो बिकगन रवास्त ।
 रूप खानूँ सुख बादा खाक वर सर दाह रा ॥
 दर्द मूसा वार खाही जामे फिरऔनी तलब ।
 वा रजाओ आफियत रोजे मलामतगाह रा ॥

(२७)

गाहे रज्म आमद बेया ता मैल जी मैदौँ कुनेम ।
 मर्दे इश्क आमद बेया ता गिर्दे ऊ जौलाँ कुनेम ॥
 चंग दर फित्राके ई माशूके आशिककुश जनेम ।
 पस लगामे नेस्ती रा वर मरे फरमाँ कुनेम ॥

आह भरने से प्रणय प्रकट हो जाता है । सभी लोग ऐसे मनुष्य को समझ जाते हैं । अतएव उसको मुख से निकलने ही न दे ।

प्रेम का मजा किसी ज्ञानी को क्या मालूम होगा ? उसे तो वही जान सकता है जिसने प्रेम किया है । अतएव उसके स्वाद के विषय में प्रेमी से ही प्रश्न करना उचित है । कारण कि जिसको यूसुक का ज्ञान प्राप्त है वह कुर्ण के पानी के विषय में क्या कह सकता है । प्रेम को पीड़ा का अनुभव प्रेमियों को ही हो सकता है ।

हमारा बुद्धि किसी काम की नहीं है, उसमें कुछ करने की सामर्थ्य नहीं है । वह उस प्रेम को समझ नहीं सकती । प्रेमियों के लिये आकाश बनाया गया है और जुलाहों के लिये सूत ।

यदि बुद्धि प्रणय से पराजित हो जावे तो इसमें कोई हानि की बात नहीं है । दुलहिन यदि स्वयम् अपने आपको सँवार सकती है, तो किमी परिचारिका की क्या आवश्यकता है ?

यदि मूसा के समान प्रणय-पीड़ा का इच्छुक है तो किसी फरऊन का सामना कर और सब प्रकार की मलामतों को सहन कर ।

(२७) युद्ध का समय निकट है, चलो समर भूमि को चलें । प्रणय-मार्ग का वीर आ गया है, आओ उससे युद्ध करने चलें ।

चलो, इस प्रेमी का मार डालने वाली प्रेमिका का शिकारबन्द पकड़ लें, और मृत्यु का सुख-पूर्वक आवाहन करें ।

गर बरायद खत्ते तौक्री अश वरीं मसूरे मा ।
 वाज दादा बर खते मन्मूर दुरअकशाँ कुनेम ॥
 अज खयाले चेहरये गम्माजे रंग आमेजे ऊ ।
 पस बरस्मे हाजियाँ गह तौक गह कुरवाँ कुनेम ॥
 ॥ नंगे ईं मसजिद परस्ताँ रा दरे दीगर जनेम ।
 चूँ कि मसजिद लायगह शुद किवलारा वीराँ कुनेम ॥
 खाके पाए मरकबे उशशाक रा अज रूप फर्क ।
 तृतीयाए चश्मे शाहाने हमा गैहाँ कुनेम ॥
 ईं न शर्ते मोमिनी वाशद न रस्मे बेखुदी ।
 ताअते सुलताँ बे माँदम खिदमते दरवाँ कुनेम ॥
 चूँ अरुसाने तबीयत महरमे माँ नेस्तन्द ।
 वा अजीजाने तरीकन्द शायद अर पैमाँ कुनेम ॥
 हर चे अज पेशी व बेशी हस्त दर अतगाके मा ।
 मा बदौँ अज दिल मलाये मा अलेहा फाँ कुनेम ॥
 पे "मनाई" ता दरी दामा मजन दम जुज व इश्क ।
 हात चूँ शमए मुनीरौ रौशनो ताबाँ कुनेम ॥

यदि वह हमारी प्रार्थना का किसी प्रकार स्वीकार कर ले तो हम उसके दर्शनों पर अपने नेत्रों के अश्रु-चिन्दुओं को न्योछावर करने के लिये उद्यत हैं ।

उसके उम सुन्दर मुख के ध्यान में, प्रेमीजन कभी तो भ्रमर के समान उस पर मड़राने के लिये उद्यत होते हैं और कभी अपने प्राणों को उस पर न्योछावर कर देने के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं ।

॥ तुम्हें उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिये, जो मसजिद और मन्दिर के भग्नों में पड़े हुए हैं । जब मसजिद में कीचड़ और पानी भर जाये तब किवला को जाकर उजाड़ डालें ।

प्रेमियों का पद बहुत ही ऊँचा होता है । इस संसार के सम्राटों से भी वह कहीं बड़े-चड़े हुए हैं ।

यह ईमानदार होने की शर्त नहीं है और न इसे बुद्धिमानी ही कह सकते हैं कि हम राजा को छोड़ कर द्वारपाल की सेवा में लगे रहें ।

यदि हमारे स्वभाव की खूबियाँ हमारा साथ नहीं देती हैं, तो हमें उचित है कि प्रेम के मार्ग में बढ़ने वाले मनुष्यों का उदाहरण अपने सम्मुख रखें ।

इसके अतिरिक्त हममें यदि किसी बात की कमी है और कोई वस्तु मात्रा से अधिक वर्तमान है तो उनको दूर कर देना ही उचित है । उन्हें मिटा देना चाहिये ।

"सनाई" का कथन है कि मनुष्य को इस ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर और किसी तरफ अपने मन को न दौड़ाना चाहिये, जिससे वह भी प्रेम की इस अलौकिक आभा से दीपक के समान उज्ज्वल हो उठे ।

अंदलीबे ईं नवाही दर कफ़स औला तरी ।
 काशकारा अंगहे गरदी कि मौं पिनहौं कुनेम ॥
 तात फ़रमाने न आमद जीं कफ़स बेहूँ मपर ।
 चूँ शुदी ताऊस जायत मंज़रे गेवौं कुनेम ॥

(२८)

ता मोतकिफ़े राहे ख़राबात न गर्दी ।
 शाइस्तए अरबाबे करामात न गर्दी ॥
 अज़ बन्दे अलायक़ न शवद नअसे तो आज़ाद ।
 ता बन्दए रिंदाने ख़राबात न गर्दी ॥
 दर राहं हक़ीक़त न शवी किब्लए अहरार ।
 ता किदबए असहाबं लिबासात न गर्दी ॥
 ता ख़िदमते रिदौं न गुज़ीनी ब दिलो जीं ।
 शायस्तए सुक्काने समावात न गर्दी ॥
 ता नेस्त न गरदी चो “सनाई” ज़े अलायक़ ।
 निज़दे उक़ला अहले मुबाहात न गर्दी ॥

(२९)

अज़ पण मरदानगी पाइन्दा जात आमद ख़यार ।
 वज़ पण तर दामनी अंदक हयात आमद समन ॥

तू इस उपवन की बुलबुल है। तुझे पिजरे में ही बन्द रहना उचित है।
 क्योंकि वास्तव में तू प्रकट तभी होगी जब हम तुझे छिपा देंगे।

जब तक तेरे लिये आज्ञा न हो पिजड़े में से निकल कर बाहर जाने का
 प्रयत्न मत करना। हाँ, उस समय, जब तू मयूर बन जायगी हम वड़ी
 प्रसन्नता के साथ तुझे अपनी अट्टालिका के ऊपर स्थान देंगे।

(२८) जब तक तू प्रणय मार्ग में पाँव तोड़ कर नहीं बैठेगा तब तक
 करामातियों में तेरी गणना नहीं हो सकती है।

जब तक प्रणय-मार्ग के मस्त लोगों की इज़्ज़त न करेगा तब तक तेरी
 इन्द्रियाँ सांसारिक बन्धनों से बाहर नहीं आ सकती हैं।

जब तक तू मतवाले प्रेमियों के आगे होकर उसी मार्ग पर नहीं चलेगा
 तब तक ईश्वर को पहचानने में तू समर्थ नहीं हो सकता।

यदि तन और मन से तू इन मस्तों की सेवा न करेगा तो उस लोक में
 रहने वालों को तुझे अपने बीच में स्थान देना असम्भव है।

जब तक तू “सनाई” के समान संसार के समस्त बन्धनों को तोड़ कर
 अलग न कर देगा, तेरी गणना ज्ञानियों में नहीं की जा सकती।

(२९) अपने लक्ष्य पर मर मिटने के लिये वह साहसी लोग चुने गये हैं,
 जिनकी कभी मृत्यु नहीं हांती और पाप-कर्म करने के लिये उन मनुष्यों की

राहरो ना देव बीनी बा करिश्ता दर मसाफ ।
 जिमतिहाने नफसे हिस्सी चंद वाशी मुमतहन ॥
 चूँ बुरूँ रफू अज तो देव ईंनक दर आमद जिबरईल ।
 चूँ दर आमद जिबरईल ईंनक बुरूँ शुद अहेमन ॥
 ईं जहानो आँ जहाँ हर देा बयक दम दर कशद ।
 चूँ निहंगे दर्दे दीं नागाह बुकशायद दहन ॥
 सूप ईं हजरत न पोयद हेच दिल वा आरजू ।
 बा चुर्नी गुलरुस्त न खुसपद हंचकस वा पैरहन ॥
 गर हमी खाही कि परहा रोयदत जी दामगाह ।
 हम चो किरमे पीला दर गिर्दे निहादे खुद मनन ॥
 वारे मानी वन्द अजी जा जी के दर सहराए हशन ।
 सरख कासिद वृद खाहद रोजे बाजारे सुखन ॥
 वादो किवला दर रहे तौहीद न तवौँ रफू रास्त ।
 या रजाए दोमन बायद या हवाए खेशन ॥

मृष्टि की गई है, जिनको बहुत थोड़े दिन जीने के लिये दिये गये हैं (वास्तव में मनुष्य वही है जो इस थोड़े से जीवन को अपकर्मों में व्यतीत न करके ईश्वरीय खोज में संलग्न रहता है) ।

तू उस परब्रह्म की खोज में आगे बढ़ । उस समय तुझे दिखलाई देगा कि शैतान स्वर्गीय दूतों से युद्ध कर रहा है । इन सांसारिक विषय-वासनाओं में कब तक फँसा रहेगा ?

तेरे अन्दर से बुराइयों का भूत भाग गया है और उसमें अब सद्भावनाओं का प्रकाश हो गया है । स्वर्गीय दूत के आ जाने पर शैतान कब रह सकता है ?

धर्म का घड़ियाल जब अपना मुख खोलता है तो दोनों लोकों को निगल जाता है ।

कोई भी मनुष्य हृदय में किसी अन्य आकांक्षा को लेकर इस दरबार की ओर अग्रसर नहीं हो सकता और ऐसी प्रियतमा के साथ कोई भी किसी प्रकार का वस्त्र पहन कर शयन नहीं कर सकता ।

यदि तू इस संसार-रूपी जाल से निकल भागने के लिये पर चाहता है तो रेशम के कीड़े के समान अपने आस-पास जाला मत लगा ।

यदि यहाँ से कोई सामान अपने साथ ले जाना चाहता है तो आध्यात्मिक वस्तुओं को अपने साथ ले जा । क्योंकि मृत्यु के उपरान्त तू जिस स्थान पर पहुँचता है वहाँ खाली हातों से काम नहीं चल सकता ।

इस प्रणय मार्ग में तू दो लक्ष्य अपने सामने रख कर मत चल । और न इस प्रकार काम ही चल सकता है । या तो तू अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम कर या अपने यार की इच्छाओं पर चल ।

यार नामए मा व मन दर आलमे हुस्नस्त तो बस ।
 चूँ अजीं आलम बुलूँ रफ़्ती न मा बीनी न मन ॥
 चंग दर फ़ित्राके साहब दौलते जन ता मगर ।
 घर तर आई जी सरिश्ने गौहरे हरके मज़न ॥
 पोशिश अज़ दीं साज़ ता वाकी बेमानी बहे आँके ।
 गर बरीं पोशिश न मीरी हम तू रेज़ी हम करून ॥

(३०)

दर गहे खल्क हमा ज़क्रों फ़रेबस्तो हवस ।
 कार दरगाहे खुदावन्दे जहाँ दारदो वस ॥
 हर कसे नामे कसी याक़ अज़ीं दरगह याक़ ।
 ग़े विरादर कसे ऊ वाश मैं अंदेश ज़े कस ॥
 बंदग़ खासे मलिक वाश कि बा दाग़े मलिक ।
 रोज़हा ऐमनी अज़-शहना व शवहा ज़े असम ॥
 गर चे दर तायती अज़ हज़रते ऊ ला नामन ।
 वर चे गर मामियती अज़ दरे ऊ ला तैअस ॥

‘मेरे’ और ‘हमारे’ का चर्चा केवल इस संसार तक ही है। यहाँ से निकल कर मेरे और ‘हमारे’ का भाव नितान्त निर्मूल मिट्ट होना है।

किसी बड़े आदमी की शरण ले, जिससे तू इन बुरी बातों से बचा रहे और उनका तुझ पर कोई असर न हो।

यदि अपने आप को किसी रंग में रँगना है तो प्रेम-रंग में रँग। क्योंकि इस रंग में रँगा हुआ मनुष्य मृत्यु के बन्धनों से छूट जाता है।

(३०) यह संसार विभिन्न जीवधारियों का निवास-स्थान, छल-कपट तथा विविध वासनाओं का क्रीड़ा-स्थल है। किसी काम का नहीं है। यदि किसी काम की कोई वस्तु है तो वह केवल ईश्वरीय लोक। एक धार्मिक मनुष्य बन जा और ईश्वरीय प्रेम में लवलीन हो जा। अन्यथा जितनी भी वस्तुएँ हैं सब तुझे दुःखद प्रतीत होंगी।

यदि किसी को किसी प्रकार का यश प्राप्त हुआ तो वह केवल उसी ईश्वर के सम्बन्ध से। अतएव हे मित्र ! तू उसी की सेवा में मग्न रह और किसी से भय मत कर।

उस बादशाह का तू अनन्य भक्त बन जा। उसकी सेवा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता मत कर। उसकी सेवा, उसके सेवक का पद, तुझे सदैव सांसारिक जालों से बचाये रहेगा।

तू भक्ति करता है, परन्तु इस पर भी ईश्वर की तरफ से निश्चिन्त मत होना और अपकर्म्म करके भी उसकी दयालुता के प्रति निराश न होना।

गर चे खूबी तू सुए ज़िश्त बख़ारी मनिगर ।
 कंदरीं मुल्के चो ताऊस निगरस्त मगम ॥
 तू फरिश्ता शबी अर जेहद् कुनी अज़ पए आँके ।
 बर्गे तूतस्त कि गश्तस्त बतदरीज अतलस ॥
 आशिकी बर खुदो बर शहबतो बर खावो खुरिश ।
 नफ़्से गोयाय तो अज़ हिकमत अज़ानिस्त अस्तरस ॥
 चंग दर गुफ़्तए यज़दानो पैयंबर जन अज़ाँ के ।
 काँ चे क़ुरआनो ख़बर नेस्त फ़िसानस्तो हवस ॥
 पोस्त बेगुज़ार कि ता साफ़ शवद खूने तो जाके ।
 कि चो बे पोस्त बुवद साफ़ शवद खूँ ज़े अदस ॥
 नामे बाक़ी तलबी गर्द कमाँ ज़ारी गर्द ।
 कज़ कमाँ ज़ारो कम उम्र ने आवद करगस ॥
 अज़ बगुज़ार कि वा अज़ ब हिकमत न रमी ।
 वर बयाँ वायदत अज़ हाले “सनाई” बर रस ॥

तू भला है परन्तु इस पर भी बुरे से घृणा मत कर । बुरे से बुरे मनुष्य से भी भलाई की आशा की जा सकती है । (क्योंकि इस संसार में मक्खी के भी मोर के समान नक्शो निगार होते हैं) ।

प्रयत्न करने से तू देवत्व प्राप्त कर सकता है । शहतूत के वृत्त की पत्तियाँ धीरे-धीरे अतलस के रूप में परिणत हो जाती हैं ।

तू सदैव विषय-वासनाओं की पूर्ति में लवलीन रहता है और आँख मूँद कर ग़ाने और सोने में आनन्द अनुभव करता है । इसी कारण तेरी इन्द्रियाँ इतनी बलवती हो गई हैं ।

भगवान और पैगंबर के कहने पर चल, क़ुगन और हदीसों को पढ़, उनके सिवा सब बेकार कहानियाँ हैं ।

अपनी खाल उतार दे जिससे तेरा रक्त शुद्ध हो जावे । अपने आपका पवित्र करने के लिये वाह्य लालसाओं का त्याग कर दे । तू इस बात को स्वयम समझता है कि झिलका उतार देने से मसूर का रंग साफ़ निकल आता है ।

यदि तूझे अपना नाम शेष रखना है तो किसी को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न मत कर । अपने इसी गुण के कारण गृद्ध ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त किया है ।

लालच को अपने हृदय में भूल कर भी स्थान न दे । लालच के कारण सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती । यदि इसका उदाहरण चाहता है तो “सनाई” का हाल देख ले और उससे शिक्षा प्राप्त कर ।

उमर खय्याम

(सन् ११२३ ई०)



उमर खैय्याम

(कवि की कुछ पक्तियों का ईरान के एक प्राचीन चित्रकार द्वारा आकृत भाव चित्र)

यह कवि तथा ज्योतिषी थे। ईरान में उनकी ख्याति इस लिये नहीं है कि वह एक ब्रह्मवादी कवि थे वरन् इस लिये है कि वह गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञाता थे। किट्ज़ेजराल्ड के अनुवाद द्वारा पाश्चात्य में इनका नाम अमर हो गया है, और पूर्व की अपेक्षा में पच्छिम इनकी ख्याति अधिक है। इनकी कविता एक अनोखे ढंग की है। सूफी लोगों की कविता में आत्मवाद होता है, परन्तु इनकी कविता में निराशावाद की लहर है। इनकी कविता परंपरा से स्वतंत्र है और तत्कालीन रुढ़ियों से मुक्त। यह एक बड़े व्यंग्यात्मक कवि थे और आडम्बर (धार्मिक चिह्नों) की आलोचना बड़े जोरदार शब्दों में किया करते थे। इन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक बार इसकी असफलता के विषय में अपनी लेखनो उठाई है। हम लोगों में वह रुबाइयात के लेखक के नाम से प्रसिद्ध हैं। अब बड़े-बड़े विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि उनके नाम से जितनी भी रुबाइयाँ प्रसिद्ध हैं वह वास्तव में बहुत से कवियों की लेखनियों से निकली हुई हैं, जिनमें से इब्रमिना भी एक थे। कुछ रुबाइयाँ वास्तव में इन्हीं की हैं, परन्तु वे गणना में बहुत ही कम हैं। मौलाना सैयद मुनैमान नदवी ने अपने 'उमर खय्याम' नामी निबंध में जिसको उन्होंने 'ओरियेंटल कान्फ़ेम' के सन्मुख पढ़ा था, इनके ऊपर बहुत ही बढ़िया प्रकाश डाला है। इस बात में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है कि वह एक उच्च कौटिक कवि थे, और रुबाजा इमाम के शब्दों में उनकी यह इच्छा कि मेरी कब्र ऐसे स्थान पर बने जहाँ कि वृक्ष वर्ष में दो बार अपने पुष्प बरसाया करें, कीटस की इच्छा के समान पूर्ण भी हो गयी। उनकी कब्र नैशापुर में बनी हुई है, जहाँ पर शंफ़ादू और नाशपाती के वृक्ष अपनी पुष्प-वर्षा करते हैं। उनकी चतुष्पदी कवियाँ का प्रचार रूस वालों द्वारा सबसे पहले यूरोप में हुआ था। तब से उनका नाम अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है।

उनकी रचनाएं निम्न हैं :—

रुबाइयात ।

ज्योतिष और गणित की पुस्तकें ।

(१)

आमद सहरे निदा जे मैखानए मा ।
कै रिंद खराबातिए दीवानए मा ॥
बर खेज कि पुर कुनेम पैमाना जे मै ।
जौ पेश कि पुर कुनन्द पैमानए मा ॥

(२)

मै कुवते जिस्मो कुवते जानस्त मरा ।
मै काशिके असरारे निहाँनस्त मरा ॥
दीगर तलबे दीनबो उकवा न कुनम ।
यक जुरआ पुर अज हर दो जहाँनस्त मरा ॥

(३)

अज वादए नात्र लाल शुद गौहरे मा ।
आमद बफुगाँ जे दस्ते मा सागरे मा ॥
अज बसकि हमी खुरेम मै बरसरे मै ।
मा दर सिरै मै शुंदम व मै दर सर मा ॥

(४)

आशिक हमा रोजा मस्तो शैदा वादा ।
दीवानओ शोरीदओ रुमवा वादा ॥
दुर हुशयारी गुस्सए हर चीज खुरेम ।
चू मस्त शवेम हर चे वादा वादा ॥

(१) एक प्रभात काल में मेरे मदिरा-गृह से एक आवाज मेरे कानों में पड़ी कि 'ऐ मेरे मतवाले, मदिरा प्रेमी ! उठ बैठ । आ जीवन के प्याले के भर जाने से पहले ही हम उस ईश्वर के प्रेम रूपी प्याले का पान करें । मृत्यु होने से पहले ही उससे लगन लगा लें ।'

(२) प्रणय को मदिरा हमें बहुत लाभ पहुँचाती है । उससे हमारे शरीर तथा प्राणों को शक्ति प्राप्त होती है । उसके पीने से रहस्यों का पता लग जाता है । बस, मैं उस मदिरा का केवल एक घूँट चाहता हूँ । उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवन की ही चिन्ता रहेगी और न मृत्यु की ।

(३) इस प्रणय-रूपी शुद्ध मदिरा के पान कर लेने से प्रणय-मार्ग में हमारी प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई है । मदिरा का पात्र भी सदैव भरा ही रहता है । इस प्रणय-मदिरा की अधिकता से, हमारे मस्तिष्क तक में धुआँ छा गया है, और सच्चे प्रणय को हमने पहचान लिया है ।

(४) प्रणयी को समस्त दिन प्रणय में ही मतवाला रहना चाहिये ।

(५)

ग. आँक गुर्जादए जहानी तु मरा ।
 खुशतर जे दिलो दीदओ जानी तु मरा ॥
 अज जाने मनमा अजीज तर चीजे नेस्त ।
 सद वार अजीज तर अजानी तु मरा ॥

(६)

खाही जे किराक दर कुगाँ दार मरा ।
 खाही जे विसाल शादमाँ दार मरा ॥
 मन वा तू न गोयम कि चेमाँ दार मरा ।
 जे इन्साँ कि दिलत खास्त चुनाँ दार मरा ॥

(७)

चंदाँ बखुरम शराव की बूए शराव ।
 आयद जे तुराव चँ खम जेरे तुराव ॥
 ता बरसरे खाके मन रसद मखमूरे ।
 अज बूए तुरा बे मन शवद मन्तो खराव ॥

(८)

माओ मैओ मागूक दरीं कुंज खराव ।
 जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराव ॥

उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिये। होश में रहने पर प्रत्येक वस्तु की चिन्ता घेरे रहती है, परन्तु मतवाला हो जाने पर सभी वस्तुओं का ध्यान मस्तिष्क से दूर हो जाता है। यदि किसी का खयाल रहता है तो उसी वस्तु का जिसने मतवाला बना दिया है।

(५) प्यारे! तू मेरे लिए संसार में सब से बढ़ कर है। तू मुझको दिल, आँख और कान इत्यादि सभी से बढ़ कर प्रिय है। प्यारे! प्राण से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नहीं होती, परन्तु तू मुझको प्राणों से भी सौ गुना अधिक प्रिय है।

(६) मैं तेरी इच्छा पर निर्भर हूँ। यदि तू अपने वियोग में मुझे तड़पाना चाहता है तो तड़पा, और मिलन का मुख देना चाहता है तो मुख दे। तू जिस अवस्था में मुझे रखना चाहता है रख। मैं कभी इसके विरुद्ध अपने मुख से एक शब्द भी नहीं निकालूँगा।

(७) मैं इतनी मदिरा पान करूँगा, कि उसकी मदक मेरे फर्श के नाँचे से निकलती हुई समाधि तक जा पहुँचे, और उममें से भी निकलने लगे ताकि कोई मतवाला प्रेमी उस तक आ पहुँचे तो उसकी मदक से और भी मतवाला तथा बेसुध हो जावे।

(८) इस सुनसान, वीहड़ में, मैं हूँ, मदिरा है और और मेरी प्यारी है। प्राणों को, दिल को, प्याले को तथा वस्त्रों को, मदिरा के लिये गिरवी रख

फ़ारिग जे उमीदे रहमतो बीमे अज़ाब ।
आज़ाद जे खाकओ बादो जे आतिशो आव ॥

(९)

हर दिल कि दरू मेहो मोहब्बत बमिश्रित ।
गर मार्किने मसजिदस्त वर अहल कुनिशत ॥
दर दफ़तरे इश्क नामे हर कम के नविशत ।
आज़ाद जे दोज़खस्त वो फ़ारिग जे बहिशत ॥

(१०)

असरारे जहाँ चुनों के दर दफ़तरे मास्त ।
गुफ़तन नतवाँ जाके बवाले मरे मास्त ॥
चूँ नेस्त दर्री मरदुमे नादाँ अहले ।
गुफ़तन न तवाँ हर उध्वे दर खातिरे मास्त ॥

(११)

बर नर्जे मिपहरे खातिरम रोज़े नख़ुस्त ।
लौहो कलमो बहिशतो दोज़ख मी जुम्त ॥
पस गुफ़त मरा मोअल्लिम अज़ इल्मे दुरुस्त ।
लौहो कलमो बहिशतो दोज़ख वा तुम्त ॥

(१२)

ऐ आमदा अज़ आलमे रुहानी तफ़न ।
हैराँ शुदा दर पंजो चहागे शशो हफ़न ॥

दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन ! कृपा कर' और न उसके क्रोध का ही भय है। मैं इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि चारों भूतों से पृथक् हूँ।

(९) जिस हृदय में प्रेम की लगन लग गई, वह चाहें मसजिद में निवास करता हो चाहे बुतखाने में, जिस किस्म का भी नाम प्रेमियों की सूची में आ गया, उसको न तो नरक की ही चिन्ता है और न स्वर्ग की इच्छा।

(१०) संसार की गुप्त बातें, जिन्हें हमारा दिल समझता है, प्रकट नहीं की जा सकती हैं। क्योंकि वह मेरे सर का बाल है। इन नादान मनुष्यों में कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य नहीं है, अतएव अपने हृदय का भेद हम प्रकट कर ही नहीं सकते हैं।

(११) मृष्टि जिस समय उत्पन्न हुई थी, मेरा हृदय भी वासनाओं का केन्द्र था। उसमें भी स्वर्ग-नरक के भेद-भाव वर्तमान थे। उस समय सबी शिक्षा देने वाले गुरु ने बहुत ठीक कहा था कि तस्ती और कलम तथा स्वर्ग और नरक के फेर में क्यों पड़ा हुआ है ? यह सब तो तेरे ही पास हैं।

(१२) ऐ आध्यात्मिकता के फेर में पड़े हुए मानव ! तू मार्ग में चलने से

मैं खुर कि नदानी जे कुजा आमदर्ई ।
खुशबाश नदानी बकुजा खाही रक्षत ॥

(१३)

दिल सिरें हयात रा कमाहण दानिस्त ।
दर मौत हम असरारे इलाण दानिस्त ॥
इमरोज कि बाख्दी नदानिस्ती हेच ।
फर्दा कि जे खुद रवी चे खाही दानिस्त ॥

(१४)

ता बाज शिनाख्तम मन ईं पाण जे दस्त ।
ईं चखें फिरौ माया मरा दस्त बे वस्त ॥
अफसोम कि दर हिसाब खाहन्द निहाद ।
उमरे कि मरा बे मयो मागूको गुजरत ॥

(१५)

चं आमदनम व मन न बुद रोजे नखुस्त ।
वी रफने बेमुराद अजमेस्त दुरुस्त ॥
वर खेजो मियाँ बे वन्द पे साक्को चुस्त ।
तन दोहे जहाँ बमै फिरौ खाहम शुस्त ॥

बहुत थक गया है। इस संसार के प्रपंच ने तुझे और भी व्याकुल बना रक्खा है। तुझको जब यही नहीं ज्ञान है कि तू कहाँ से आया है, तो मदिरा पान करले और सदैव प्रमत्न रहा कर। तुझे यह भी ज्ञान नहीं है कि अन्त में तू कहाँ जायगा।

(१३) दिल को जीवन का भेद पूर्णतया ज्ञात हो गया है। उसने यह भी समझ लिया है कि मृत्यु में भी ईश्वर के कुछ रहस्य गुप्त हैं। तू इस समय अपने आपे में है, परन्तु इस पर भी मृत्यु के रहस्य को नहीं समझता। कल जब तू अपने आपे में नहीं रहेगा, इन बातों को क्या समझ सकेगा ?

(१४) जिस समय से मैं होश में आया हूँ, उसी समय से काल-चक्र में फँस कर विपत्तियाँ उठा रहा हूँ। परन्तु मुझे एक बात का शोक है। मेरे जीवन का कुछ हिस्सा यों ही गुजर गया था। उस समय न तो मैं यार को ही समझता था, और न उसके प्रणय में मतवाला हो रहा था। वह समय भी जीवन के हिसाब में जोड़ लिया जायगा। गोकि वह व्यर्थ गया।

(१५) मैं जन्म के समय स्वयम् अपने अस्तित्व को पहचान न सका था, और इस संसार से—जिसमें किसी की इच्छाएँ पूर्ण नहीं होती—चला जाना ही अच्छा है। अतएव साकी ! उठ, शराब पिलाने के लिये उद्यत होजा। इस जगत की चिन्ताओं व दुखों का अन्त मैं इसी मदिरा की मस्ती से करना चाहता हूँ।

(१६)

साक़ी मै मारेफ़त मरा मकरमतस्त ।
दर मशरबे बेमारेफ़तौ मासियतस्त ॥
बेमारेफ़त आदमी चेकार आयद हेच ।
मक़सूद ज़े आदमी हर्मी मारेफ़तस्त ॥

(१७)

बुतख़ानओ काबा ख़ानए बंदगी अस्त ।
नाक़ूम ज़दन तरानए वन्दगी अस्त ॥
मेहर्गबो कलीमाओ तमबीहो मलीब ।
हक्का कि हमा निशानए वन्दगी अस्त ॥

(१८)

अज़ मंज़िले कुफ़ ता वर्दी यक नफ़सस्त ।
वज़ आलमे शक़ ताबैसक़ी यक नफ़सस्त ॥
ई यक नफ़से अज़ीज़ रा ख़श मींदार ।
कज़ हामिले उम्रे मा हमी यक नफ़सस्त ॥

(१९)

हर दफ़तरे आलीये मआनी इश्क़स्त ।
सर बैत क़मीदए ज़वानी इश्क़स्त ॥
ऐ आँके ख़बर नदारी अज़ आलमे इश्क़ ।
ई नुक़ता वेदाँके ज़िन्दग़ानी इश्क़स्त ॥

(१६) हे साक़ी ! मुझको पुरस्कार में मिलन-मदिरा प्राप्त हुई है । जिसको मिलन-सुख का अनुभव नहीं हुआ उसका अस्तित्व व्यर्थ है । उसको निकम्मा कहना चाहिये । मनुष्य-जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर से साक्षात् ही करना है ।

(१७) मन्दिर तथा काबा, दोनों ही ईश्वर की पूजा के स्थान हैं । शंख बजाना उसी को आवाहन करना है । मसजिद की महराब, गिरजा की बेदी, तसबीह और माला सब में सत्य है । यह उसी परमेश्वर की पूजा की स्मृति में हैं ।

(१८) धर्म तथा उसके प्रतिकूल चलने में तनिक-सा ही अन्तर है और इसी प्रकार सन्देह तथा विश्वास में बहुत कम अन्तर है । अतएव दोनों में यदि किसी प्रकार की विभिन्नता है तो केवल एक दम की । इस बहुमूल्य दम को आनन्द से व्यतीत कर । कारण कि हमारे जीवन का सार केवल यही एक दम है ।

(१९) अन्तःकरण की प्रथम तथा सच्ची प्रेरणा प्रेम से ही प्रारम्भ होती है । यह पुस्तक प्रणय से ही प्रारम्भ होती है । युवावस्था के लिये सबसे उत्तम

(२०)

दर मैकदण् इश्क अजल इस्मे मनस्त ।
रिदी व परस्तीदने मै कस्मे मनस्त ॥
मन जाने जहानम् अंदरीं दैरे मुर्गो ।
ईं सूरते कौन जुम्लगी जिम्मे मनस्त ॥

(२१)

दर हेच मरे नेस्त कि अमरारे नेस्त ।
दिल रा खबर अज अंदको बिमायारे नेस्त ॥
हर ताफा ग्वंद राहे दर पेश ।
इस्ला रहे इश्क रा कि सालारे नेस्त ॥

(२२)

माकी दिले मन जे दस्त गर खाहद रफ़ ।
वहस्त कुजा जे खूद वदर खाहद रफ़ ॥
माकी कि चु जर्न तंग अज खेश पुरस्त ।
यक जुरआ अगर देही वमर खाहद रफ़ ॥

(२३)

आँ बादा कि काविले हयानस्त बजात ।
गाहे हैवो मी शवद वगाह नवात ॥

वस्तु प्रेम ही है । हे मनुष्य ! तू इस प्रेम-रूपी जगत का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है । तू इस रहस्य को समझ ले कि जीवन, प्रणय का ही नाम है ।

(२०) इस प्रणय के मदिरा-गृह की सूची में सब से पहला मेरा ही नाम है । मस्ती और मदिरा-पान मेरे हो हिस्से में आ पड़े हैं । शराब विक्रेताओं के इस घर में जो कुछ हैं मैं ही हूँ । मैं ही शरीर और मैं ही प्राण हूँ । यह समस्त संसार की मूर्तों में केवल मैं ही मैं हूँ ।

(२१) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो रहस्य से खाली हो, परन्तु दिल को थोड़े और बहुत का कुछ भी ध्यान नहीं है । प्रत्येक झुंड का कुछ न कुछ मार्ग है । ये सब निश्चित मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं । परन्तु प्रणय के गगोह का कोई निर्णित मार्ग ही नहीं है ।

(२२) माकी यदि मेरा हृदय मेरे हाथ से जाता भी रहेगा तो क्या होगा ? वह स्वयम् एक नदी है और नदी अपने आप से बाहर कब होती है । यह बात अवश्य है कि यदि किसी अहंकारी तथा ओढ़े सूफी को यदि एक घूंट भी अधिक दे दी जावे तो वह उबलने लगता है ।

(२३) जिस मदिरा के पान करने से मस्ती आ जाती है, वह कभी बेसुध कर देती है और कभी ध्यान में ला देती है । यह समझना कि गुण अपने आप

ता जन न बरी कि हस्त गरदद हैहात ।
भौसूक बजाने तुम्ह गर हस्त मिफात ॥

(२४)

दर मोमओ मदरसओ दैरो कुनिश्त ।
नरसिदए दोजखस्तो जोयाए बहिश्त ॥
आँकस कि जे अमगरे खदा बा खबरस्त ।
जीं तुरुम दर अंदरूने दिल हेच नकिश्त ॥

(२५)

तगसे अजलो बीमे फना हस्तिए तुस्त ।
वर्ना जे फना शाखे बक्रा खाहद रुस्त ॥
मन अज दमे ईसवी शुदम जिंदा बजौं ।
मर्ग आमदो अज बजूदे मन दस्त वेशुस्त ॥

(२६)

दरियाव कि अज रूह जुदा खाही रफ्त ।
दर परदए अमगरे खदा खाही रफ्त ॥
मै खुर कि न दानी जे कुजा आमदर्द ।
खुश जी चो न दानी के कुजा खाही रफ्त ॥

वर्तमान रहते हैं, उचित नहीं जँचता । उनका अस्तित्व भी तो उसी सर्व-शक्तिमान के साथ लगा हुआ है ।

(२४) शिक्षा-मन्दिर, मन्दिर और मस्जिद में, जितने भी मनुष्य हैं, वह दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं । एक तो वह जो नरक से डरते हैं और दूसरे वह जो स्वर्ग के इच्छुक हैं । परन्तु जिसको ईश्वर से लगन लग गई है, वह इन बातों को कभी अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता ।

(२५) मृत्यु का डर और विनाश का भय केवल तुम्हीं को है, वरन् विनाश वह वस्तु है जिससे अमरत्व का अंकुर फूटता है । ईसा की कृपा से मेरे प्राणों को वह शक्ति प्राप्त हो गई है कि मृत्यु आकर और जीवन से निराश होकर लौट गई । मेरा सांसारिक अस्तित्व मिट गया है और मृत्यु अब मेरे निकट आकर ले ही क्या सकती है ?

(२६) अवकाश से कुछ न कुछ लाभ उठाने का प्रयत्न करो । कारण कि तुमको रूह से पृथक् होना आवश्यकीय है और ईश्वर की खोज में निकलना है । शराब पियो । तुमको न तो यही ध्यान है कि कहाँ से आये हो, और न यही विचार है कि कहाँ जाओगे । अतएव जो कुछ भी करना है अपने जीवन में कर लो । पीछे पड़ताना पड़ेगा ।

उमर खय्याम

(२७)

बाहर बंदो नेक राज न तवानम गुफ़ ।
दायम सखुने दराज न तवानम गुफ़ ॥
हाले दारम् कि शरह न तबौ दादन्द ।
राजे दारम् कि बाज न तवानम गुफ़ ॥

(२८)

धारब तू करीमी व करीमी करमस्त ।
आसी जे चे रू बरू जे बागे यरमस्त ॥
बाताअतम अरबे बख़शी औ नेस्त करम ।
बा मासिएतम अगर बख़शी करमस्त ॥

(२९)

ऐ वाए बरौ दिल कि दरू सोजे नेस्त ।
सौदा जदए मेहे दर अफ़रोजे नेस्त ॥
रोजे कि तू बेवादा बसर खाही बुर्द ।
जाया तर अजौ रोज़ तुरा रोज़े नेस्त ॥

(३०)

मन बन्दए आसीअम रजाए तू कुजा अस्त ।
तारीक दिलम नरे सफ़ाए तू कुजा अस्त ॥
मारा तू वहिशत अगर वताअत वख़शी ।
ई मुज्द वुवद लुफ़ो अताए तू कुजा अस्त ॥

(२७) प्रत्येक अच्छे अथवा बुरे से अपना भेद नहीं कह सकता और न सदैव लम्बा चौड़ा वर्णन ही कर सकता है। मेरा ऐसा हाल है कि जिसको खोल कर किसी से कह नहीं सकता और मेरा रहस्य ऐसा है कि जिसका माफ़ शब्दों में वर्णन ही नहीं हो सकता।

(२८) भगवन् ! तू दयालु है और दयालुता से ही तेरी ख्याति है। फिर पापी को स्वर्ग से वंचित क्यों किया गया है ? यदि भक्ति और भजन के कारण तू मुझे क्षमा प्रदान करके अपनाता है, तो इसमें तेरी दयालुता कहाँ रही। हाँ, दुष्ट होने पर भी यदि तू मुझे अपनावे तब तेरी दयालुता अवश्य है।

(२९) जिस हृदय में किसी प्रकार की पीड़ा न हो, वह शोचनीय है। और जो किसी के प्रेम में पागल न हो उस पर धिक्कार है। प्रेम-विहीन जितने भी दिवस तेरे व्यतीत हो रहे हैं, वह सब व्यर्थ हैं, उनमें तनिक भी मार नहीं।

(३०) मैं पापिष्ठ हूँ। तेरी वह पापियों को क्षमा प्रदान करने वाली दया कहाँ है, जिसमें मुझे भी क्षमा मिले ? मेरे हृदय में अन्धकार हो रहा है, अपने प्रकाश से उसे भी प्रकाशित कर दे। यदि भक्ति के कारण तूने मुझे स्वर्ग प्रदान किया तो इसमें तेरी कृपा कब हुई।

(३१)

हर दिल कि दूरु मायए तजरीद कमस्त ।
बेचारा हमा उम्र नदीमे नदमस्त ॥
जुज खातिरे फारिया कि निशादे दारद ।
बाक्री हमा हर चे हस्त असवावे रामस्त ॥

(३२)

पुर खू जे फिराकत जिगरे नेस्त कि नेस्त ।
शौदाए तू साहब नजरे नेस्त कि नेस्त ॥
बअ्याँ कि न दारी सरे मौदाए कमे ।
सौदाए तू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥

(३३)

चूँ रिजके तु ऊँचे अदल किस्मत फरमूद ।
यक जर्ग न कम शुदो न खाहद अफजद ॥
आमूदा जे हर चे हस्त मी वायद शुद ।
आजादा जे हर चे हस्त मी वायद वृद ॥

(३४)

जानम व फिदाए आँ कि ऊ अह्न चुवद ।
सर दर कदमश अगर नेहम सह चुवद ॥
गवाही कि वेदानी वयर्की दोजख वृद ।
दोजख वजहो मोहवते नाअह्न चुवद ॥

(३१) जिस हृदय में त्याग की उमंग कम है, वह जीवन भर लज्जित ही बना रहेगा। जिस हृदय में त्याग है, सांसारिक विघ्नों की छाया नहीं है, वहाँ प्रसन्न है। शेष सभी वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं।

(३२) कोई भी हृदय ऐसा नहीं है, जो तेरे विरह से पीड़ित न हो और कोई भी ज्ञानवान मनुष्य ऐसा नहीं है जो तेरे लिये व्याकुल न हो। तुझे किमी की भी चिन्ता नहीं है, परन्तु तेरा ध्यान सभी को है।

(३३) ईश्वर के इशारों पर तू नाचना है और वह जो चाहता है तुझे करना ही पड़ेगा। फिर तो तुझे यही उचित है कि संसार में किसी की परवाह न कर। क्योंकि बन्धनों से मुक्त रहने ही में भलाई है।

(३४) जो मनुष्य उस पर फिदा है, वह इन्सान है। उस पर मैं अपने आपको न्योछावर करने के लिये उद्यत हूँ। और उसके चरणों में पड़ा रहना सरल समझता हूँ। परन्तु यदि तुम नरक की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहते हो, तो समझ लो कि ईश-विमुख, अज्ञानी मनुष्य का संगति ही नरक है।

(३५)

बोसीदा मुरक्काअंद ईं खामे चंद ।
 ना रफ़ा रहे सिद्को सफ़ा गामे चंद ॥
 बेगिरिफ़ा जे तामात अलिक लामे चंद ।
 बदनाम कुनिन्दए निकू नामे चंद ॥

(३६)

दर आलमे जाँ बहोश मी बायद बूद ।
 दर कारे जहाँ खमोश मी बायद बूद ॥
 ता चश्मो ज़बॉ व गोश बर जा बाशद ।
 बे चश्मो ज़बानो गोश मी बायद बूद ॥

(३७)

शब नेस्त कि अक्ल दर तहैयुर न शवद ।
 वज्र गिरया कि नारे मन पुर अज़दुर न शवद ॥
 पुर मी न शवद कासए सर अज़ सौदा ।
 आँ कासा कि सर निगू बुवद पुर न शवद ॥

(३८)

आँहाँ कि मुहीने फ़ज़लो आदाव शुदन ।
 दर करके उलूम शमए असहाव शुदन ॥
 रह जी शबे तारीक न बुरदंद बुम् ।
 गुफ़ंद फ़िस्मानाओ दर ख़ाव शुदंद ॥

(३५) कुछ ऐसे साधु हैं जो फटी हुई गुदड़ी पहने हुए हैं। वे मन्त्र तथा पवित्र मार्ग से कहीं दूर हैं। वे पूरे ढोंगिया हैं। उन्होंने केवल कुछ शब्द ईश्वर के विषय में रट लिये हैं, और बहुत से अच्छे तथा सच्चे मनुष्यों को व्यर्थ में बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है।

(३६) प्राणों के सम्बन्ध में सतर्क रहना आवश्यक है, और सांसारिक कामों में शान्ति से काम लेना उचित है। जिह्वा, कान, नेत्र इत्यादि को उचित शिक्षा देने के लिये, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना आवश्यक है, जब उनकी न सुनोगे तो वह सभी ठीक मार्ग पर आ जायेंगे।

(३७) प्रत्येक गत को मैं उसका ध्यान करके रोता हूँ। परन्तु इस पर भी उसकी लगन में पागल नहीं होता हूँ। सत्य बात तो यह है कि ईश्वर के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है वह रोने अथवा चिन्ता करने से उत्पन्न नहीं होता है, परन्तु अन्तःकरण तथा हृदय से उत्पन्न होता है।

(३८) संसार में एक से एक बढ़ कर ज्ञानी मनुष्य हो चुके हैं। उन्होंने योग तथा ज्ञान के मार्ग में बहुत सी नवीन खोजें की हैं, परन्तु वह लोग भी इस मायामय संसार का पार नहीं पा सके। केवल एक कहानी कह कर सो रहे।

(३९)

ता बूद दिलम् जे इश्क महरूम न शुद ।
कम बूद जे असरार कि मफहूम न शुद ॥
अकनूँ कि हर्मी बिनगरम् अज कूण खिरद ।
मालूमम् शुद कि हेच मालूम न शुद ॥

(४०)

दर दह हराँ के नीम नाने दारद ।
अज बहे निशाम्न आस्ताने दारद ॥
नै खादिमे कस खुवद नै मखदूम कसे ।
गो शाद बेजी कि खुश जहाने दारद ॥

(४१)

क्रौमे जे गुजाफ दर गरूर उफतादंद ।
क्रौमे जे पण हूरो क्रमूर उफतादंद ॥
मालूम शवद चु पर्दहा बर दारंद ।
कज कूण तु दूर दूर दूर उफतादंद ॥

(४२)

उमरत ताकै वखुद परस्ती गुजरद ।
या दरपण नेस्तीओ हस्ती गुजरद ॥
मै खुर कि चुनीं उम्र कि गम दरपण ओम्न ।
ओ बेह कि वखाव या ब मस्ती गुजरद ॥

(३९) जिन दिनों मैं प्रेम में पागल था, लगभग सभी रहस्य मुझ पर प्रगट थे। परन्तु जब ज्ञान से काम लेकर देखता हूँ, तो मालूम होता है कि मैंने अब तक कुछ भी नहीं समझा था।

(४०) संसार में वही मनुष्य सुखी है, जिसे खाने के लिए आधी रोटी मिलती है, और बैठने के लिये थोड़ी सी जगह, जो न तो किसी का चाकर है, और न किसी का स्वामी। उससे कह दो, भग्न रहं उसका संसार सब से अच्छा है।

(४१) कुछ मनुष्य व्यर्थ की बातें बना कर अहंकारी हो गये हैं। कुछ लोगों ने स्वर्ग की सुन्दरियों तथा सौन्दर्य का अखाड़ा ही बना डाला है। परन्तु जब बीच का पर्दा उठा दिया जायगा, उस समय सब को ज्ञात हो जायगा कि वह तेरी गली से कहीं दूर जा पड़े हैं।

(४२) तेरी उम्र, अपने स्वार्थ में मस्त रह कर कब तक व्यतीत होती रहेगी और कब तक तू इस जीवन तथा मृत्यु की खोज में व्यस्त रहेगा ? आ और मदिरा-पान करके नशे में सब कुछ भुनाद। उस जीवन से, जिसमें दुःख तथा क्लेश हों, सोना अथवा मस्त रहना कहीं उत्तम है।

(४३)

इश्के कि मजाजी बुवद आवश न बुवद ।
 चू आतशे नीम मुर्दा तावश न बुवद ॥
 आशिक बायद कि सालो माहो शबो रोज़ ।
 आरामो करारो खुरो खावश न बुवद ॥

(४४)

दर राह चुनों रौ कि सलामत न कुनन्द ।
 वा खल्क चुनों जी कि कयामत न कुनन्द ॥
 दर मसजिद अगर रबी चुनों रौ कि तुरा ।
 दर पेश न खाहंदो इमामत न कुनन्द ॥

(४५)

दर राह खिरद वजुज खिरद रा मपमन्द ।
 चू हस्त रफीके नेको वद रा मपमन्द ॥
 खाही कि हमों जहाँ तुग बेपमन्दन्द ।
 भी वाश वखुशदिली व खुदरा मपमन्द ॥

(४६)

खाही कि तुरा मतबते अमरार रसद ।
 मपमन्द कि कस राज़ तू आज़ार रसद ॥
 अज्र मार्ग मै अन्देश बरामे रिज़क मखुर्द ।
 की हर दो बक्त खेश नाचार रसद ॥

(४३) सांसारिक प्रेम में वह प्रभा अथवा वह उज्ज्वलता नहीं होती जो ईश्वरीय प्रेम में होती है। वह अधजली अग्नि के समान शोभाहीन होता है। प्रेमी तो ऐसा होना चाहिये जो वर्षों और महीनों क्या प्रत्येक क्षण बेकल और बेचैन रहे।

(४४) मार्ग में चलते हुए इस प्रकार चल कि लोग तुम्हें सलाम न कर सकें, और उनसे ऐसा वर्ताव कर कि वह तुम्हें देख कर उठ न खड़े हों। मसजिद में यदि जाता है तो इस प्रकार जा कि लोग तुम्हें इमाम न बना लें। नम्र बन और अपने को चतुर प्रकट मत कर।

(४५) बुद्धि के मार्ग में बुद्धि के अतिरिक्त किसी और को न मान। जब तुम्हें साथी अच्छा मिल गया है तो बुरे को पसन्द मत कर। यदि तू यह चाहता है कि सभी लोग तुम्हें प्रसन्न रहें तो सदैव प्रसन्न-चित्त रह और अपनी पसन्दी पर मत चल।

(४६) यदि तू संसार में धर्मात्मा तथा पुण्यवान् बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिससे किसी का कष्ट न पहुँचे। मृत्यु का कभी भय मत कर और रोटियों की धिन्ता छोड़ दे। क्योंकि यह दोनों वस्तुएँ समय पर स्वयम् ही आ उपस्थित होती हैं।

(४७)

मौजूदे हकीकी बजुज इंसों न बुवद ।
वर कब्जे कसे ईं सखुन आमाँ न बुवद ॥
एक जुर्ग अजी शराबे बंश मी कश ।
ता खल्के खुदा पेश तू यकसाँ न बुवद ॥

(४८)

चंदाँ मर्दे ईं रह के दुई बरखेजद ।
गर नेस्त दुई जे रहरवी बरखेजद ॥
तु ऊ न शबी ऊ लेक गर जेहदकुनी ।
जाण बेरमे कज तु तुई बरखेजद ॥

(४९)

बदस्ताहे कमाँ हेंच बमकसद न रमद ।
यक बद न कुनद ता वखुदश मद न रसद ॥
मन नेके तू खाहम व तू खाही बदेमन ।
तू नेक न बीनी व यमन बद न रमद ॥

(५०)

खरम दिले आँ कसे कि मारुफ न शुद ।
दर जुव्वओ दरीओ दर मूफ न शुद ॥
मीमुर्गी सिफत बअश परवाजी कर्द ।
दर कुंजे खराबण जहाँ यूफ न शुद ॥

(४७) इस संसार में मनुष्य ही एक खास चीज है, परन्तु प्रत्येक के लिये यह समझना कठिन है। तू इस वेमेल मदिरा का एक घूँट पीले जिसके प्रभाव से ईश्वर के समस्त जीवधारी तुझे समान दृष्टि आवेंगे।

(४८) ईश्वर की खोज में, उमके पाने की इच्छा में, इतना आगे मत बढ़ जा कि भगवान् और भक्त के बीच का अन्तर ही जाता रहे। यदि यह भेदभाव ही नहीं रहेगा तो फिर उसके प्राप्त करने के लिये आगे किस प्रकार बढ़ा जावेगा। तू स्वयम् कभी ब्रह्म नहीं हो सकता परन्तु भक्ति और साधना से इस पद तक पहुँच सकता है कि तेरा अहम् भाव तुझसे पृथक् हो जावे।

(४९) दूसरों का बुरा चाहने वाला कभी अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। वह किसी से एक बुराई करता है कि इतने ही में स्वयम् उसकी सौ बुराइयाँ इधर-उधर फैल जाती हैं। मैं तेरी भलाई चाहता हूँ और तू मेरी बुराई, तो इसका फल यही होगा कि तुझे भलाई नहीं प्राप्त होगी और मैं बुराई से अलग रहूँगा।

(५०) जो मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं है, उसका जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत होता है। वह बढ़िया कुर्ता और कम्बल नहीं पहनता तो अच्छा करता है।

(५१)

अन्दर रहे इश्क जुमला साफ़ो दुर्दन्द ।
 वन्दर तलबश जुमला बुजुर्गो खुर्दन्द ॥
 इमरोज शबोरोज जे फरदा ईनम्त ।
 फरदा तलबो दर गमे फरदा मुर्दन्द ॥

(५२)

गर बादा बकोह् दर्देही खस कुन्द ।
 बुवद आँ कि बादा रा नक्स कुन्द ॥
 अज बादा मरा तौबा चे मीं फरमाई ।
 रुहेस्त कि ऊ तरबियते शखस कुन्द ॥

(५३)

आँ कौम कि सज्जादा परस्तंद खरन्द ।
 जीराके बजेरे वारे सालूस दरन्द ॥
 वीं अज हमा तुर्फातर कि दर्दादये जोहद ।
 इस्लाम फरोशन्दो जे काफिर बतरन्द ॥

(५४)

असरारं अजल बादा परस्तां दानन्द ।
 कदरे मै व जाम तंगदस्तां दानन्द ॥

ऐसा मनुष्य ही पत्नी के समान ऊपर आकाश में उड़ जाता है, और इस संसार के उजाड़-खण्ड का उल्लू नहीं बनता ।

(५१) प्राण्य-मार्ग में बहुत ही भ्रष्ट और पवित्र मनुष्य भोगन्दे हैं, और ईश्वर को ग्याज में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य भी हेय तथा तुच्छ हो रहे हैं । जिस प्रकार आज दिन है और फिर रात होगी, उसी प्रकार कल भी दिन और रात का चक्र आवेगा । यह कल के इच्छुक उसी की चिन्ता में मर गये हैं ।

(५२) यदि किसी पहाड़ को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे, इस लिये जो उसे बुरा बनलाता है वह स्वयम् बुरा है । मुझे मदिरा न पीने की शिक्षा क्यों देते हो ? यह तो ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

(५३) मृगछाला धारण करने वाले त्यागियों पर जो विश्वास करके उनकी अभ्यर्थना करते हैं, वह मूर्ख हैं । ऐसे साधु कपट के बोझ से दबे हुए हैं । यदि उन्हें धार्मिक दृष्टि से देखें तो वह और भी बुरे सिद्ध होते हैं । उन्हें तो विधर्मियों से भी बुरा कहा जा सकता है ।

(५४) मदिरा के आह्वानों पर ही जन्म के दिन के रहस्य प्रगट हुआ करते हैं, और शराब तथा प्यालों की इच्छा निर्धनो ही को हुआ करती है । यदि नू

गर चश्मे तो हाले मन वेदानद ना अजब ।
शक नेस्त कि हालं मस्त मस्तौ दानन्द ॥

(५५)

सुस्ती मकुनो फ़रीज़िए हक़ बगुज़ार ।
दर ओहदए आँ जहाँ मनम बादा बयार ॥
दर खून कसे व माले कसे कस्द मकुन ।
वाँ लुक्त्ता कि दारी जे कसाँ बाज़ मदार ॥

(५६)

दी कूज़ा गरे बदीदम अन्दर बाज़ार ।
बर पारए गिले हमो लकद ज़द विस्तार ॥
वाँ गिल बज़वाने हाल वा ऊमी गुफ़्त ।
मन हमचाँ तू बूदा अम मरा गर्मेदार ॥

(५७)

गर गौहरे ताअतत न सुफ़म हरगिज़ ।
वर गिर्दे रहत जे रुख़ न रफ़म हरगिज़ ॥
नौमीद नेअम जे वारगाह करमत ।
जीराके यक़ेरा दाँ न गुफ़म हरगिज़ ॥

(५८)

बाजे बूदम परीदा अज़ आलमे राज़ ।
बू ता कि परम दमे नशीनी बकराज़ ॥

मेरे हाल को जानता है, तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है ? मस्त लोगों की बातें मस्त ही जाना करते हैं ।

(५५) आलस में मत पड़ा रह और ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर । उस लोक का बोझ मैं अपने मिर पर लेता हूँ । वस मदिगा ला ; और कुछ न चाहिये । किसी के प्राणों तथा धन को लेने का कुत्सित विचार मत कर और जो कुछ भी तुझे प्राप्त है, उसमें से दूसरों को भी दे ।

(५६) कल मुझको हाट में एक कुम्हार दिखलाई दिया था जो थोड़ी-सी गीली मिट्टी को अपने पैरों से रौंद रहा था । वह मिट्टी उससे यह शब्द कह रही थी कि मैं भी तेरे ही समान किसी समय मनुष्य के रूप में थी और मुझ में भी यह सब बातें वर्त्तमान थीं ।

(५७) भगवन् ! मैंने कभी तेरी पूजा नहीं की और न तुझ तक पहुँचने का प्रयत्न ही किया है, परन्तु इस पर भी मैं निराश नहीं हूँ । मुझे तेरी कृपा का भरोसा है । कारण कि मैंने कभी भी अपने मुख से एक को दो नहीं कहा । सदैव मुझे तेरा ध्यान रहा है ।

(५८) मैं एक बाज़ था और उस रहस्यमय लोक से इस आशा को

ईँ जा के न याफ़तम् कसं महरमं राज़ ।
जाँ दर के दरामदम् बुरूं रशतम बाज़ ॥

(५९)

मा आशिके आशुफ़्फ़ओ मस्तेम इमरोज़ ।
दर कूए बुताने बाद़ा परस्तेम इमरोज़ ॥
अज़ हस्तिग़ ख़ेशतन बग़ुले रूस्ता ।
पैवस्ता व मेहराबे अलस्तेम इमरोज़ ॥

(६०)

रफ़्फ़न्द ज़े रफ़्फ़गाँ यके न आमद बाज़ ।
ता वा तू बग़ोयद अज़ पसे पर्देग़ राज़ ॥
कारत ज़े नियाज़ मी कुशायत न निमाज़ ।
बाज़ीचा बुवद निमाज़ बे मिद्क़ो नियाज़ ॥

(६१)

मो पुरसीदी कि चीस्त ईँ नज़शं मजाज़ ।
गर बर गोयम हकीक़तश हस्त दगाज़ ॥
नक्क़शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाग़ ।
बाँगाह शुदा बक़ैरे औँ दरिया बाज़ ॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो । परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया ।

(५९) हम आज प्रेमी हैं । लगन लग रही है । हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं । हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं । हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं ।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया । अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है । तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से । जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है ।

(६१) तू मुझसे इस बाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है ? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा । वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है ।

(६२)

ऐ वाक़िके असरारे ज़मीरे हमाकस ।
दर हालते इज़्ज़ दस्तग़ीरे हमाकस ॥
यारव तो मरा तौबा देहो उज़्रपेज़ीरे ।
ऐ तौबा देहो उज़्रपेज़ीरे हमा कस ॥

(६३)

पंदे देहमत अगर बमनदारी गोश ।
अज़्र वहे खुदा ज़ामए तज़वीर मपोश ॥
उक़्बा हमा रोज़म्त दुनिया यकदम ।
अज़्र वहे दमे मुल्के अवद मफ़रोश ॥

(६४)

बग़ुज़ार दिला बसवसए फ़िके मांहाल ।
दर कश क़दहे बाद़ओ बुग़ुज़ार ज़े मलाल ॥
आज़ाद शओ मुज़र्ग़दा बाद़ा परमन ।
ता मर्द शवी रसी बसर हद्दे कमाल ॥

(६५)

मै ग़ुर कि न इल्म दस्तग़ीरद न अमल ।
इज़्ज़ा करमो रहमते हक्क़े इज़्ज़ो जल ॥
ओँ नायफ़ए कि अज़्र ख़िरे मै न ख़ुरन ।
अज़्र जुस्तए अतआम शुमारए अहवल ॥

(६२) हे ईश ! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदों से परिचित है और लाचारी तथा दुःखद अवस्था में सब की सहायता करता है। भगवन ! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर। तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ। परमेश्वर के लिये कपटी मत बने। छल-छद्म का जामा मत पहनो। सचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है। तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत बिगाड़ो।

(६४) हे हृदय ! व्यर्थ की चिन्ताओं के भ्रमेले में अपने आपको मत डाल। मदिरा का एक प्याला पीले और शोक को अपने हृदय में स्थान मत दे। स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मनुष्य के समान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके।

(६५) मदिरा पान कर मतवाला बन जा। यह ज्ञान न तो तेरी किसी प्रकार की सहायता हो करेगा और न उसके उपयोग से कोई लाभ ही

(६६)

असरारे हकीकत न शवद हल बसवाल ।
न नीज बदरवाखतने नैमतो माल ॥
ता जाँ न कनी खूँ न खुरी पंजह साल ।
अज काल तुरा रह न नुमायन्द बहाल ॥

(६७)

वानप्रस हमेशा दर नबर्दम चे कुनम ।
वज कर्दए खेशतन व दर्दम चे कुनम ॥
गीरम के ज़ेसन दर्गुज़रानी व करम ।
आं शर्म के दीदी के चे कर्दम चे कुनम ॥

(६८)

अज खालिके किर्दगार वज रब्बे रहीम ।
नौमीद मशौ वजुमो इमयाने अज़ीम ॥
गर मस्तो खराब वूदा वाशी इमरोज़ ।
करदा बख़शद वरउम्तोखानहाण रमीम ॥

(६९)

गोयन्द मरा कि मै परमनम हस्तम ।
गोयन्द मरा आरिको मस्तम हस्तम ॥

पहुँचेगा । ईश्वर तथा गुरुजनों की अनुकम्पा ही तेरी सहायक हो सकती है ।
अतएव जो लोग मूर्खता से प्रणय-मदिरा का सेवन नहीं करते उन्हें बिल्कुल
जानवर ही समझना चाहिये ।

(६६) ईश्वर के रहस्य पृथ्वी से नहीं मायूम होते और न धन-दौलत
खर्च करने से ही उनका पता लग सकता है । उसके लिये पचास वर्ष की
कठोर तपस्या की आवश्यकता है । पचास वर्ष तक ध्यान करो और अपने
हृदय के रक्त को सुखा डालो, तब कहीं हम नाशवान शरीर को वहाँ तक पहुँ-
चने की सामर्थ्य हो सकती है ।

(६७) मैं सदैव अपनी वासनाओं का वश में करने का प्रयत्न किया
करता हूँ । अपने पाप कर्मों से दुखी रहता हूँ, और क्या करूँ ? मुझे वह क्षमा
प्रदान कर देगा, परन्तु इस बात की लज्जा मेरे हृदय में सदैव रहेगी कि तूने
मेरे बुरे कर्मों को देख लिया ।

(६८) बड़े से बड़ा पाप कर्म करके भी उस जगत्पिता की तरफ से
निराश मत हो । यदि तू आज मस्त तथा मतवाला हो रहा है तो स्मरण रख
कि मृत्यु के उपरान्त ईश्वर तुझ पर अपनी दया-दृष्टि अवश्य डालेगा और
क्षमा प्रदान करेगा ।

(६९) लोग मुझे शरायी कहते हैं ; निस्सन्देह मैं ऐसा ही हूँ । सब के

दर जाहिरे मन निगाहे विसयार मकुन ।
कन्दर बातिन चुनाँ के हस्तम हस्तम ॥

(७०)

ता ज्ञान न बरी कि मन बखुद मौजूदम ।
या ई रहे खूखार बखुद पैमूदम ॥
चू वूद हकीकते मरा अज वै वूद ।
मन खुद कि बुदम कुजा बुदम कै वूदम ॥

(७१)

मकसूद जे जुमला आकरीनिश मायेम ।
दर जिम्मे खिरद जौहरे बीनिश मायेम ॥
ई दायरण जहाँ चु अंगुशतरीम्त ।
बे हेच शके नक्शे नगीनिश मायेम ॥

(७२)

मन जाहिरे नेम्ती व हस्ती दानम ।
मन वातिने हर फराजो पस्ती दानम ॥
बाई हमा अज दानिशे खुद बेजारम ।
गर मरतवाए वराय मस्ती दानम ॥

सब मुझे मस्त और मतवाला बताते हैं। उनकी बात भी ठीक है। परन्तु मेरी बाह्य दशा पर अधिक ध्यान न दो और न उस पर किसी प्रकार का आक्षेप ही करो। कारण कि भीतर तो मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ। उस पर किसी की भी दृष्टि नहीं पड़ती।

(७०) यह मत समझ लेना कि इस संसार में मैं स्वयम् ही आ उपस्थित हुआ हूँ, और इन विपत्तियों से परिपूर्ण मार्ग पर चल रहा हूँ। मेरी आत्मा को उसी ईश्वर ने इस रूप में भेजा है। अन्यथा मैं स्वयम् क्या था, कहाँ था और किस समय था? अर्थात् मैं स्वयम् कुछ भी नहीं था।

(७१) इस सृष्टि के सर्व-श्रेष्ठ जीव हमी हैं और इस शरीर के अन्दर बुद्धि नामक जो पदार्थ है वह हमारे ही सम्बन्ध से सार्थक है। संसार इस सृष्टि का एक अँगूठी के समान अंश मात्र है और निस्सन्देह हम ही इस संसार रूपी अँगूठी के नगोने हैं।

(७२) मैं मृत्यु तथा जीवन के बाह्य-रूप से भली-भाँति परिचित हूँ और प्रत्येक ऊँचाई तथा निचाई के भेद को भी खूब समझता हूँ। परन्तु यदि मैं मस्ती से भी बढ़ कर किसी पद को समझने लगूँ तो मेरा सारा ज्ञान व्यर्थ जायगा।

(७३)

मन वादा खुरम वलेक मस्ती न कुनम ।
अला बक्रदए दराज्ज दस्ती न कुनम ॥
दानी गरज्जम जे मै परस्ती चे बुवद ।
ता हमचो तू खेशतन परस्ती न कुनम ॥

(७४)

मा खिक्रए जोहद दर सरे ख़ुम करदेम ।
वज्ज खाके खरावात तयम्मुम करदेम ॥
वाशद कि दरूने मैकदा दरयावेम ।
उम्रे कि दरूने मदरसा गुम करदेम ।

(७५)

यागव मन अगर गुनाह वेहद करदम ।
वर जानो जवानीआ तने ख़ुद करदम ॥
चू वर करमत वसूके कुल्ली दारम ।
वरगश्तमो तौवा करदमो वद करदम ॥

(७६)

चंदौंके जेख़ुद नेस्त तरम हस्त तरम ।
हरचंद बलंद पायातर पस्त तरम ॥
जी तुफा तर आँके अज शगावे हस्ती ।
हर लहजा तू हुशियार तरम मस्त तरम ॥

(७३) मैं मदिरा अवश्य पीता हूँ परन्तु मस्ती नहीं दिखलाता, और सागर को छोड़ किमी दूसरी वस्तु की तरफ हाथ भी नहीं बढ़ाता । तुम बता सकते हो कि शराब पीने से मेरा क्या आशय है ? यह कि तुम्हारे समान अपने आप को न समझू ।

(७४) मदिरा के लिये मैंने परहेजगारी से हाथ खींच लिया और शराब-खाने की धूल से बज्र कर लिया । ऐसा मैंने इस लिये किया कि शिन्नालय में अपनी उम्र का जितना भाग व्यतीत किया है, उसे पुनः प्राप्त कर लूं ।

(७५) हे भगवन ! अपनी युवावस्था में, अपने इस शरीर तथा प्राणी से मैंने इतने अपकर्म किये हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती । परन्तु मुझे तेरी कृपा का पूरा विश्वास है इसी लिये मैं ने अपकर्मों से हाथ खींच लिया है और बुराई को त्याग दिया है ।

(७६) मैं जितना ही अपने आप को मिटाता जाता हूँ, उतना ही मेरा जीवन बढ़ता जा रहा है और जितना ही अधिक अपने ऊँचे होने का घमंड करता हूँ, उतना ही अधिक पतन की तरफ जा रहा हूँ । इससे भी विलक्षण एक और बात है । इस जीवन की तरफ से जितना ही सतर्क हो रहा हूँ, उतना ही उसमें और फँसता जा रहा हूँ ।

(७७)

गर दर गीरी चे गूना परवाज कुनम ।
वा इश्क तूए चे गूना आघाज कुनम ॥
यक लहजा सरिश्के दीदा भी न गुजारद ।
ता चश्मे बरूए दीगरे बाज कुनम ॥

(७८)

असरारे अजल रा न तू दानी व न मन ।
वीं हर्फे मोअम्मा न तू खानी व न मन ॥
हस्त अज पसे पर्दा गुफ्तगूए मनो तू ।
चँ पर्दा वरउफ्तद न तू मानी व न मन ॥

(७९)

हक जाने जहानस्तो जहाँ जुमला वदन ।
वमनाफे मलाएका हवासे ई तन ॥
अफलाक अनासिरो मवालीद आज्ञा ।
तौहीद हमीनस्त दिगरहा हमा फन ॥

(८०)

ऐ आँके तुई खुलामए कौनों मकों ।
वगुजार दम वसवमए मूढ़ा जियाँ ॥
यक जामे मै अज साक्कीए बाक्की बिस्तौ ।
ता बाज रही तू अज रामे हर दो जहाँ ॥

(७७) जब तू मुझे पकड़े हुये है, तब मैं भला किस प्रकार उड़ सकता हूँ ? और फिर तेरे प्रेम का आरम्भ किस प्रकार कर सकता हूँ ? आँखों से आँसू अविरल रूप से गिर रहे हैं, फिर दूसरी तरफ देखना भी चाहूँ तो किस प्रकार देख सकता हूँ ?

(७८) सृष्टि के आरंभ के रहस्यों का न तुझे पता है और न मुझे । यह ऐसी पहलिका है जिसके विषय में न तू साच सकता है और न मैं । यह जितनी भी बातें हो रही हैं, यह जितने भी “मैं” और “तू” के भेद-भाव हैं वह केवल एक पर्दे के कारण हैं । यदि यह पर्दा हमारे बीच से उठ जावे तो फिर न “तू” रहे और न “मैं” — दोनों ही एक हो जावें ।

(७९) यह संसार शरीर है और ईश्वर प्राणों के समान है । समस्त स्वर्गीय दूत विचारों के समान हैं । यह जितनी भी वस्तुएँ हैं सब उसी के शरीर के भागों के समान हैं । वास्तव में देखा जाय तो उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । जो अन्य वस्तुएँ हैं उनका होना और न होना समान है ।

(८०) ऐ इन्सान ! कि तू ही अस्तित्व के संसार का निचोड़ है । थोड़ी देर के लिए अपने लाभ और हानि को न सोच । हमेशा के रहने वाले साक्षी से एक शराब का प्याला ले ले, जिससे तुझे दोनों लोकों की चिंता न रह जाय ।

(८१)

ताबे तवानी खिदमते रिंदाँ मी कुन ।
 बुनियादे निमाजो रोजा वीरौ मी कुन ॥
 बशिनो सखुने रास्त जे “खय्याम उमर” ।
 मै मी खुरो रह मी जनो यहसाँ मी कुन ॥

(८२)

शुद अज हमा नाकमाँ निहाँदारी तू ।
 राज अज हमा अबलहाँ निहाँदारी तू ॥
 विनिगर कि मियाने मर्दुमा कारे तू चीस्त ।
 चश्म अज हमा मर्दुमा निहाँदारी तू ॥

(८३)

ऐ ज़िन्दगिए तनो तवानम हमा तू ।
 जाने व दिले ऐ दिलो जानम हमा तू ॥
 तू हस्तिग मन शुदी अज आनम हमा तन ।
 मन नेस्त शुदम दर तू अजानम हमा तू ॥

(८४)

गर अम्पो यराकस्तो गर फीरोजा ।
 मगार मशौ व दौलते दह रोजा ॥
 अज कहे फलक हेच कसे जाँ न वरद ।
 इमरोज सुबू शिफस्तो करदा कोजा ॥

(८१) जब तक हो सके और जितना भी हो सके मतवालों की सेवा में लगा रह, और इन व्यर्थ के ब्रतों तथा उपवासों की जड़ काटता रह । “उमर खय्याम” की सच्ची बात सुन । मदिरा पान कर, सदैव निडर रह, और दूसरों की भलाई करता रह ।

(८२) जो लोग पृथक् रहने वाले हैं, उन पर तू अपने गुप्त भेदों का प्रकट नहीं करता है, और न मूर्खों में ही अपने हृदय की बात कहता है । तनिक ध्यान तो दे कि तूने अभी तक क्या किया ? अब तक तू मभी में आँख चुराता रहा ।

(८३) मेरे शरीर तथा स्वास्थ्य का तू ही सब कुछ है । तू ही प्राण, तू ही हृदय, यहाँ तक कि जो कुछ भी है तू ही है । मैं शरीर इस लिये बना हुआ हूँ कि तू ही मेरा जीवन है । मैं तुझ में भिट कर मिल गया हूँ । अतएव जो कुछ भी है तू ही तू है । मैं कुछ भी नहीं हूँ ।

(८४) अगर तरे पास धोड़े और लड़ाई के सामान हैं और तुझे सांसारिक विजय और सफलता प्राप्त है, तो अहंकार मत कर । यह सब कुछ केवल दम दिन के हैं । समय के चक्कर से अपने आपको कोई भी नहीं बचा सकता ।

(८५)

मायेम बलुत्के हक़ तबल्ला करदा ।
वज़ ताअतो मामियत तबरी करदा ॥
आँजा कि इनायते तू बाशद बाशद ।
ना करदा चूँ करदा करदा चूँ न करदा ॥

(८६)

ऐ नेक न करदा बदीहा करदा ।
अंगाह बलुत्के हक़ तबल्ला करदा ॥
वर अफ़ मकुन तकिया कि हरगिज़ न बुवद ।
ना करदा चूँ करदा करदा चूँ ना करदा ॥

(८७)

ऐ दर रहे बंदगियत यकसौँ कहो मेह ।
दर हर दो जहाँ ख़िदमते दरगाहे तू बेह ॥
नकबत तू सितानीओ सआदत तू देही ।
यारब तू बफ़जले ख़ेश बिसतानों वदेह ॥

(८८)

अज़ आतशो वादो आव खाकेम हमा ।
दर आलमे कौन दर हलाकेम हमा ॥
ता तन बा मास्त दर जकाएम हमा ।
चूँ तन बरखद रवाने पाकेम हमा ॥

यदि आज घड़ा फूटता है तो कल कूज़ा भी टूट जायगा । यदि आज विजय है तो कल पराजय भी अवश्यम्भावी है ।

(८५) मैं अब ईश्वर की दया का भिखारी बन गया हूँ । पूजा-पाठ इत्यादि सभी का परित्याग कर चुका हूँ । कारण कि जहाँ उसकी कृपा होगी वहाँ बदी भी नेकी में परिणत हो जायगी ।

(८६) हे मनुष्य ! तूने शुभ कर्म तो एक भी नहीं किया है, हाँ अपकर्म अवश्य बहुत किये हैं । परन्तु इस पर भी तू ईश्वर की दया पर भरोसा रखता है । चूमा तुझे प्राप्त नहीं हो सकती । जो कुछ हो चुका है वह मिट नहीं सकता और जो कुछ हुआ नहीं है वह हो नहीं सकता ।

(८७) हे भगवन् ! तेरी भक्ति के मार्ग में सब समान हैं । किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है । और दोनों लोकों में तेरी ही सेवा सर्वश्रेष्ठ है । तू मनुष्य की दुर्बुद्धि को लौटा कर सुबुद्धि उसे प्रदान करता है । हे परमात्मन् ! दया कर और यह लेन-देन कर ले ।

(८८) हम सब मनुष्य अग्नि, पवन और वायु से मिल कर बने हैं । और इस जीवन के बन्धनों में पड़ कर जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़े हुए हैं ।

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू बकस ननुमाई ।
 गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई ॥
 वीं जलवागरी बखोश्तन बनुमाई ।
 खुद ऐन अयानी व खुदी बीनाई ॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज गुबार तन पाक शवी ।
 तू रूहे मुजस्समी बर अफलाक शवी ॥
 अर्शास्त नशीमनें तू शरमत बाद ।
 काई व मुक्रीम खित्तए खाक शवी ॥

(९१)

चूँ मी न खद व इख्तियारत कारे ।
 खुश बाश दरी नकस कि हस्ती बारे ॥
 चूँ बाकफीए ऐ पिसर जे हर असरारे ।
 चन्दीं चे बरी बेहूदा हर तीमारे ॥

(९२)

बर गीर जे खुद हिसाब अगर वा खवरी ।
 कव्वल तू चे आवदीं व आखिर चे बरी ॥

जब तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तब तक हमें बहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सब कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे ।

(८९) उसके रंग निराले हैं । कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है । तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है । कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि बन जाता है ।

(९०) हे हृदय ! यदि शरीर के साथ तेरा सम्बन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा । बस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा । तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं । अतएव तुझे इस बात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है ।

(९१) जब कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो । अरे भाई ! जब तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन बन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो ?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्मों का, अपनी ही

गोई न खुरम बादा कि मी बायद मुर्द ।
मी बायद मुर्द गर खुरी वरना खुरी ॥

(९३)

रौ बेखबरी गुर्जी अगर बाखबरी ।
ता अज कफे मस्ताने अजल बादा खुरी ॥
तू बेखबरी बेखबरी कारे तू नस्त ।
हर बेखबरे रा न रसद बेखबरी ॥

(९४)

गर आमदनम वखुद बुद नाम दमे ।
वर नीज शुदने वसन बुदे कै शुदमे ॥
बे जाँ न बुदे कि अंदरीं दैरे खराब ।
न आमदमे न शुदमे न बुदमे ॥

(९५)

खाही कि पमंदीदए अनाम शबी ।
मक़वूले क़वूले ख़ामओ आम शबी ॥
अन्दर पए मौमिनो जहूदी तरसा ।
वदगू मबाश ता निको नाम शबी ॥

वामनाओं की पूर्ति के लिये किये हुए कार्यों का हिसाब कर लो । देखो, जब तुम इस संसार में आए थे तो साथ में क्या लाए थे, और यहाँ से जाते समय क्या ले जाओगे । तुम यह कहते हो कि मरना जरूरी है मैं शराब न पिऊंगा । मरना तो है ही, पियो या न पियो ।

(९३) यदि तुम बाख़बर हो तो बेख़बर बन जाओ । जिससे प्रणय में पागल, मृत्यु के बन्धनों से रहित, मतवालों के हाथ की मदिरा का स्वाद ले सको । तुम बेख़बर हो और सुस्ती करना तुम्हारा काम नहीं है । प्रत्येक बेख़बर और मतवाले को यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तविक रूप में ऐसा हो जावे ।

(९४) यदि इस संसार में आना मेरे अधिकार में होता तो मैं यहाँ कभी भी न आता, और यदि जाना मेरे हाथ में होता तो मैं क्यों जाता ? इससे बढ़ कर कोई भी बात न होती कि मैं इस ऊँड़ स्थान में न आता, न जाता और न रहता ।

(९५) तुम में सर्वप्रिय बनने की इच्छा होनी चाहिये । ऐसा करो जिससे सब लोग तुम्हें पसन्द करें और अपने सम्बन्धी तथा अन्य लोग भी तुम्हें अच्छा समझें । तू मोमिन, यहूदी तथा ग़ब्र की बुराई उनकी अनुपस्थिति में मत कर, जिससे लोग तुम्हें अच्छा समझें ।

(९६)

बामन तो हर उब्हे गोई अज की गोई ।
 पैवस्ता मरा मुलहिदो बेदी गोई ॥
 मन खुद मुकद्दम हर उब्हे गोई हस्तम ।
 इन्साफ बेदेह तुरा रसद की गोई ॥

(९७)

धा दर्द कनाअत कुनो आजाद बजी ।
 दर बन्दे फजनी मशो आजाद बजी ॥
 मुनिगर बफजनी जे खुदी गुस्सा मखर ।
 दर कम जे खुदी निगह कुनो शाद बजी ॥

(९८)

ता दर हविसे लालो लवो जामे मै ।
 ता दरपए आवाजे दको चंगो नै ॥
 ईहा हमा हशवस्त खुदा मीदानद ।
 ता तर्के तअल्लुक न कुनी हेचे नै ॥

(९९)

हरचन्द जे दस्ते दह रामकश वाशी ।
 दर जौगे जफाए चख ता खुश वाशी ॥
 जिनहार जे दस्ते ना कमाँ आवे जुलाल ।
 वर लव मचकाँ अगर दर आनश वाशी ॥

(९६) तू मुझे बुरा समझता है। जो कुछ भी कहता है, वह शत्रुता से। इसी लिये तू मुझे सदैव अहंकारी तथा विधर्मी कहा करता है। मैं स्वयम् इस बात को मानता हूँ कि तू मुझे जैसा कहता है, वास्तव में मैं वैसा ही हूँ। परन्तु तनिक न्याय की दृष्टि से देख कि तुझे यह कहना उचित है अथवा नहीं।

(९७) आपत्तियों को धैर्य के साथ सहन कर और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर। अधिक लाभ करने की इच्छा मत कर और निश्चिन्त होकर रह। जो तुझसे बढ़ कर है उससे ईर्ष्या मत कर और न वैसा बनने की चिन्ता कर। जो तुझसे कम है, उसकी तरफ देख और सदैव आनन्दित रह।

(९८) सांसारिक प्रलोभनों में व्यस्त रहना, नाच-रंग का इच्छुक होना, उचित नहीं है। ईश्वर खूब जानता है कि इन बातों में कोई सार नहीं है। यदि कुछ करना चाहते हो तो संसार के प्रति अपने बन्धनों को तोड़ दो। त्याग ही सब कुछ है।

(९९) समय के चक्कर में पड़ कर तुम विपत्तियाँ उठा रहे हो। भाग्य

(१००)

बादर्द बेसाज ता दवाए याबी ।
अज दर्द मनाल ता शेफाए याबी ॥
मी बाश बक्ते बेनवाई शाकिर ।
ता आक्रबतुल अम्र नवाए याबी ॥

(१०१)

गर शादीए खेशतन दराँ मीदानी ।
का सूदा दिले रा बशमे बेनिशानी ॥
दर मातमे अजले खेश बेनशीं हमाँ उम्र ।
मीदार मुसीबत कि अजब नादानी ॥

(१०२)

हंगामे सुफेदा दमे खुरोसे सहरी ।
दानी कि चरा हमी कुन्द नौहागरी ॥
यानी कि नमूदन्द दर आईनए सुब्ह ।
कज उम्र शबे गुजश्नो तू बेखबरी ॥

(१०३)

ऐ सोखतए सोखतए सोखतनी ।
वै आतिशे दोजख अज तू अफरोखतनी ॥

तुम्हें रुला रहा है । पर इस पर भी सावधान रहो । आग में पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख्य मनुष्यों के हाथों का ठण्डा पानी होठों से न लगाना ।

(१००) आपत्तियों को भेलते रहो, जिससे तुम्हें उनसे बचने की कोई औपधि मिल जावे । पीड़ा के विरुद्ध आवाज मत उठाओ ताकि उसके लिये कोई दवा मिल जावे । आश्रय हीन होने पर भी कृत्तता का भाव हृदय से दूर मत करो, ताकि तुम्हें कुछ प्राप्त हो जावे ।

(१०१) यदि तुम किसी चिन्ता रहित व्यक्ति को विपत्तियों में फँसा देने से ही प्रसन्न हो सकते हो तो अपनी बुद्धि पर खेद प्रकट करो । अपनी नादानी पर शोक करो और अपना समस्त जीवन इसी पश्चात्ताप में व्यतीत कर दो ।

(१०२) प्रभात काल के धुंधले प्रकाश में—बहुत तड़के ही, मुर्ग क्यों बाँग दिया करता है ? उसके चिल्लाने का आशय तुमको सचेत करना है । वह कहता है कि तुम्हारे जीवन की एक रात व्यर्थ में व्यतीत हो गई है । अब उठो और सावधानी से अपना कार्य करो ।

(१०३) हे जले-भुने हुए और जला डालने योग्य मनुष्य ! तू इतना

ता कै गोई कि बर “उमर” रहमत कुन ।

हक रा तो कुजा बरहमत आमोस्तनी ॥

नीच है कि नरक की अग्नि भी तुम्ही से जलानी चाहिये । तू यह कब तक कहता रहेगा कि “उमर” पर दया दिखला । तू ईश्वर को भी दया का पाठ पढ़ाने कहाँ से आगया है ?

निज़ामी

(जन्म १९४१ ईस्वी, मृत्यु १९८३ ईस्वी)

इनका नाम था इलियाम अबू मुहम्मद । इनकी रचनाएँ अधिकतर आत्म-संबंधी न होकर शिनाप्रद कहानियों के रूप में हैं । उनमें वही भाव है जो “किदौसी” की रचनाओं में । परन्तु अन्तर भी है । जैसा कि लिबी ने लिखा है, “इनके विषयों का संबंध स्वयं अपने आप से है । उनमें शृंगार रस की प्रधानता है । “किदौसी” ने अपनी कविता में अधिकतर प्राचीन वीरों के वीरोचित कृत्यों का निरूपण किया है । परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया है । हालांकि इन विषयों की कमी नहीं थी । इनकी रचनाओं को हम ‘रोमान्स’ के नाम से पुकार सकते हैं । इन्हें काव्य कहना उपयुक्त न होगा । यह ईरान के प्राचीन और बड़े बड़े कवियों में हैं । इनमें अपने विषय को वर्णन करने की शक्ति समुन्नत अवस्था में वर्तमान थी और उपयुक्त शब्दों और भाषा पर भी इनका पूर्ण अधिकार था । इनकी कल्पना ऊँची उड़ान उड़ने वाली थी । उसमें माधुर्य के अतिरिक्त कहर रस का भी अच्छा समावेश रहता था । प्रोफेसर ब्राउन ने एक स्थान पर लिखा है, “इस देश (ईरान) के बड़े बड़े कवियों में आपका नम्बर तीसरा है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोमान्टिक मसनवी के लिखने में इन्होंने कमाल दिखलाया है । ईरान और टर्की दोनों में इनकी ख्याति अभी तक बनी हुई है ।” इनकी रचनाओं में भावों की गम्भीरता के अतिरिक्त आकर्षण भी है । “मख़ज़नुल असरार” जिसमें से कई एक पद मैंने दिये हैं, एक रहस्यवाद से सम्बन्ध रखने वाली रचना है और “सनाई” के “हदीक़ा” तथा “रूमी” की मसनवी के ढंग में लिखी गई है । मैंने कुछ पद इनके खुसरो-शीरी से भी उद्धृत किये हैं, जो कि एक प्रकार से आत्मचरित ही के समान हैं । इससे विदित होता है कि इनमें रहस्यवाद भी था ।

मुख्य मुख्य रचनाएँ : -

मख़ज़नुल असरार ।

खुसरो-शीरी ।

लैला मजनूँ ।

हप्त पैकर ।

स्कन्दनामा ।

गुफ्तार दर बाज़ जुसतने दिल

हातिके खिलवत बमन आवाज़ दाद ।
दाम चुना कुन कि तवाँ बाज़ दाद ॥
आव दर्ी आतशे पाकत चरास्त ।
बाद जुनेबत कशे खाकत तुरास्त ॥
खाके तबारिन्दह बताबूत बरुश ।
आतशे ताबिदा बयाकून बरुश ॥
गाफिल अज़ीं बेश न बायद नशाम्त ।
वर दरे दिल रेज़ गर आबेत हस्त ॥
दर ख़मे ई ख़म कि कबूदे ख़शस्त ।
किस्सए दिल गो कि सेरादे ख़शाम्त ॥
दूर शौ अज़ राहं जनाने हवास्त ।
ग़ह तौ दिल दौ दो दिल ग़ शनाम्त ॥
अर्श पराने कि ज़े तन रस्ता अन्द ।
शहपरे जिवरील बरो बस्ता अन्द ॥

हृदय की खोज का ज़िक्र

एकान्त में, भविष्य के पुकारने वाले ने मुझे आवाज़ लगाई कि इतना ही ऋण ले जितना चुका सके ।

तेरी इस पवित्र अग्नि में जल क्यों सम्मिलित है ? और वायु तेरी मिट्टी को ऊपर क्यों उड़ाता है ?

इस ताप को बढ़ाने वाली मिट्टी को अपनी समाधि के प्रति अर्पण कर दे और चमकती हुई अग्नि अपनी आत्मा के हाथ में सौंप दे ।

इमसे अधिक सुस्त बैठे रहना उचित नहीं है । यदि तुझ में किसी प्रकार मज धज शेष है तो हृदय-मन्दिर के द्वार पर चल ।

इसी नीले रूप के मटके (आकाश) के अन्दर अपने हृदय के उस राग का वर्णन कर जो बहुत ही उत्तम कहा जाता है ।

वामनाओं से रहित हो जा । तेरा मार्ग यदि किसी को ज्ञात है तो दिल को । अतएव उसी से मित्रता कर ।

जो लोग अपने शरीरों को छोड़कर ऊपर उठ गये हैं—जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है—उन्होंने हृदय को स्वर्गीय दूत जिब्रील की बादशाही हासिल कर ली है ।

बाँके अना अज्दो जहाँ ताफतन्द ।
 कृत जे दरयूजए दिल याफतन्द ॥
 दीदओ गोशपुरअज गारज अफजूनी अन्द ।
 कारगरे परदए बेरूनी अन्द ॥
 पुंवा दर आगनदा चोगुल गोशे तो ।
 नरगिसे चश्म आवलए होशे तो ॥
 नरगिसो गुल रा चे परस्ती ववाग ।
 ए जे तो हम नरगिमो हम गुल वदाग ॥
 दीदा कि आईना हर नाकस अस्त ।
 आतशै ऊ आवे जवानी वमस्त ॥
 तवा कि वा अकल बदल्लाल गीस्त ।
 मुन्नजिरे नकदे चेहल साल गीस्त ॥
 ता व चेहल माल के बालिग शवद ।
 खर्जे सफर हाश मबालिग शवद ॥
 वाग कनू वाएदत अफसुं मरन्वा ।
 दसे चेहल मालगी अकनू बेरन्वा ॥

जिन लोगों ने संसार से मुख मोड़ लिया है, उन्होंने भीख माँगने की शक्ति हृदय से ही प्राप्त की है ।

आँख और कान इच्छाओं के कारण प्रदान किये गये हैं । इनका सम्बन्ध केवल स्थूल शरीर तथा संसार के बाह्य मौन्दर्य से है ।

तेरे कानों में गुलाब के पुष्प के समान रुई भरी हुई है और तेरे नेत्रों का नरगिस तेरी बुद्धि का डाला है ।

तू उपवन में जाकर नरगिस और गुलाब के पुष्पों पर क्यों मोहित हो रहा है ? यह दोनों स्वयम् तेरे प्रेम में मतवाले हो रहे हैं ।

तेरे नेत्र भली और बुरी, दोनों प्रकार की वस्तुओं को देखते हैं । जब तक युवावस्था की चमक है उनमें भी शोभा है ।

इच्छा, जो कि बुद्धि को दलाल बनाए हुए है उस समय की प्रतीक्षा में है, जब तू चालीस वर्ष का हो जावेगा ।

जिस समय तू चालीस वर्ष का होगा उस समय इच्छा की भी उल्लस-कूद समाप्त हो जायगी । उसमें शान्ति तथा गम्भीरता आ जायगी । परन्तु उस समय तक उसके मार्ग-व्यय का लेखा-जोखा बहुत बढ़ जायगा । उसके कार्यों की सूची बहुत लम्बी हो जायगी ।

अब तुम्हें कोई सहायक मंत्र मिलना चाहिये । व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नहीं है । चालीस वर्ष व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा कर ।

दस्त बर आवर जे मियौ चारा जूए ।
 ईं गमे दिल दिले गमखार जूए ॥
 गम मखुर अलबत्ता चो गमखार हस्त ।
 गरदने गम विशकन अगर यार हस्त ॥
 हर नकसे रा कि ज़बूने गमस्त ।
 यारीए याराँ मददे मोहकमस्त ॥
 चूँ नफसे ताज़ा शवद वादो कम ।
 नेस्त शवद सद गम अजौँयक नकम ॥
 मुब्दे नख़्स्पी चो नकम वर जनद ।
 मुब्दे दोवम बाँग वर अखतर जनद ॥
 वेशतरी सुब्द वख़्तारी रसद ।
 गर नपसी सुब्द वयारी रसद ॥
 अज़ तो नआयद बतो वर हेच कार ।
 यार तलव कुन कि वर आयद जे कार ॥
 गरचे हमाँ ममलुकते ख़वार नेस्त ।
 चूँ निगरम हेच बेहज़ यार नेस्त ॥
 हस्त ज़ियारी हमारा न गुज़ार ।
 ख़ासा जे यारे कि बुवद दस्तगीर ॥

प्रयत्न करने के लिये हाथ फैला और हृदय के शोक को कम करने के लिये, अपने साथ समवेदना प्रगट करने वाले किसी अन्य हृदय को खोज निकाल ।

जब तेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला कोई है, तो किसी प्रकार की चिन्ता न कर । मित्र की उपस्थिति में दुख को अलग भगा दे ।

जो हृदय दुख के भार से दबा हुआ है, उसके लिये मित्रों का होना बहुत ही उत्तम है ।

दो आदमियों के साथ कुछ समय के लिये मन-बहलाव होता है और उम्मी कुछ समय में सैकड़ों दुख दूर हो जाते हैं ।

जब पहला प्रभात अपनी उज्ज्वलता लेकर प्रकट होता तब वह आकर तारों को ड़ाँट बताता है ।

यदि यह दूसरा प्रभात सहायता न दे तो पहले प्रभात को लज्जित होना पड़े ।

तू म्वयम् अपने कार्य को पूर्ण करने में असमर्थ है । अतएव किसी ऐसे मित्र की खोज कर जो तेरे कार्य को पूर्णता तक पहुँचा सके ।

मारा देश इतना हेय तथा तुच्छ नहीं है, परन्तु जब मैं ध्यान से देखता हूँ तो मित्र से बढ़ कर कोई अन्य ज्ञात नहीं होता ।

सभी को एक मित्र की आवश्यकता होती है और विशेषकर ऐसे मित्र की जो सहायता कर सके ।

ईं दो से यारे कि तू दारी तरन्द ।
 खुशकतर अज हलकए दर बर दरन्द ॥
 दस्त दरआवेज बकित्राके दिल ।
 आवे तो बाशद कि शबी खाके दिल ॥
 चूँ मलिकुलअर्श जहाँ आफरीद ।
 ममलुकते मूरते जाँ आफरीद ॥
 दाद बतरतीबे करम रेजिशी ।
 मूरतो जाँरा वहम आमेजिशी ॥
 जीं दो हम आगोश दिल आमद पिदीद ।
 आँ खलके कू बाखिलाफत रसीद ॥
 दिल कि बदो खुतबए मुलतानिअस्त ।
 अकदशे रुहानीओ जिममानिअस्त ॥
 नूरे अदीमत जे सुहैले वैअस्त ।
 मूरतो जाँ हर दो तुफैले वैअस्त ॥
 चूँ मखूने दिल वदिमाराग रसीद ।
 रौशने मराजे वचिराग रसीद ॥
 गोश दरौ हलका जवौँ साखतम ।
 जान हदफ हातिके जाँ साखतम ॥

तेरे दो-तीन मित्र हैं। तू उन्हें बहुत ही अच्छा समझता है। परन्तु वे तुझे किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते।

अतएव तू हृदय के पल्ले को खूब सँभाल कर थाम ले। यदि तू हृदय का सहारा पकड़ लेगा तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी।

स्वर्ग के स्वामी ने सृष्टि की रचना की, और उन देशों को बनाया जहाँ मनुष्य रहते हैं, जिनके शरीर तथा प्राण प्रधान अंग हैं।

अपनी कृपा से उमने शरीर और प्राणों को एक किया।

उम समय इन दोनों के संसर्ग से मन उत्पन्न हुआ। यह वही बालक था जो आगे चलकर विरोधी के रूप में पाया जाता है।

मन वही वस्तु है जो शरीर तथा आत्मा का साग समझा जाता है। इसी के कारण मनुष्य की वादशाही भी है।

तुझ में उसी का प्रकाश है और शरीर तथा प्राण उसी के साथी हैं।

मन की आवाज जैसे ही मेरे मस्तिष्क में पहुँची, वैसे ही उसमें ज्ञान का प्रकाश होगया।

अन्तरात्मा में जो पुकार रहा था, अब मैं उसी के ध्यान में मग्न हो गया।

चर्च जबाँ गशतम अज्जौँ करविही ।
 तबाजे शादी पुरो अज्ज गम तेही ॥
 रेखतम अज्ज चशमए गर्म आवे सर्द ।
 कातशे दिल देगे मरा गर्म कर्द ॥
 दस्त बर आवुरदम अज्जौँ दस्त बन्द ।
 राहज्जनौँ आजिजो मन जोर मन्द ॥
 यक तग अज्जौँ राह दो मंजिल शुदम् ।
 ता वयके तग बदरे दिल शुदम ॥
 मन सूए दिल रफतमो जौँ सूए लव ।
 नीमए उमरम शुदा दर नीम शव ॥
 बर दरे मकमूरए रूहानीयम ।
 गूए शुदा कामते चौगानियम ॥
 गूए परस्त आमदा चौगाने मन ।
 दामने दिल गशत गिरीवाने मन ॥
 पाए जे मर साखतओ सर जे पा ।
 गूए सिफत गशतमो चौगौँ तुमा ॥
 कारे मन अज्ज दस्त मन अज्ज खुद शुदा ।
 सद जे यके दीदा यके सद शुदा ॥

इस साहस के कारण मेरी मूक वाणी में वाक्-शक्ति आगई, चित्त प्रसन्न हो गया और दुख दूर हो गये ।

भारी तथा जलती हुई आँखों से मैंने आँसुओं के रूप में ठण्डे पानी को बहा दिया । कारण कि उसके कारण शरीर में भी तपन थी ।

अपने हाथों को भी मैंने बन्धनमुक्त कर लिया और मुझमें इतना बल आगया कि इन्द्रियाँ अब मेरे वश में आ गईं ।

दो दिन के मार्ग को मैंने अपनी शक्ति के कारण केवल एक ही दौड़ में पूरा कर लिया और एक ही भ्रष्ट में दिल के कपाटों तक पहुँच गया ।

मन की तरफ जाने के प्रयत्न में ही मैं अधमरा सा हो गया और आधी ही रात में मेरी अवस्था भी आधी रह गई ।

आत्मिक द्वार के सम्मुख पहुँच कर मेरा समस्त शरीर मुलायम हो गया । जो शरीर डण्डे के समान कड़ा था वही गेंद के समान बन गया ।

मैं उस गेंद के प्रेम में मस्त हूँ और मेरा गुलबंद मन की चादर का अंचल बना हुआ है ।

मैं शिर को पैर और पैर को शिर बना कर गेंद के समान लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा । कभी कभी डण्डे के समान सीधा भी खड़ा हो जाता था ।

इस समय मैं अपने आपे में नहीं था । मेरी चेष्टाएँ भी एक प्रकार

हम सफ़रों जाहिलो मन नौ सफ़र ।
 गुरबतम अज़ बेकसीयम तल्ज़तर ॥
 रू ना कज़ाँ दर बेतवानम गुज़श्त ।
 पाण दरूँ नै व सरे वाज़गश्त ॥
 चूँकि दराँ नक़ब ज़वानम गिरिफ़्त ।
 इश्क़ नक़ीबाना इनानम गिरिफ़्त ॥
 बरदरे आ महरमे ईं दर मनम ।
 मर ज़े बराए तो ज़े तन बर कनम ॥
 हलक़ा ज़दम गुफ़्त दरीं वक्त़ कीस्त ।
 गुफ़्तम अग़र वार देही आदमीस्त ॥
 पेश रवाँ परदा बरन्दाख़तन्द ।
 परदए तरकीब दरन्दाख़तन्द ॥
 अज़ हरमे ख़ासा तरीने मरा ।
 बाँग़ बरामद कि “निजामी” दरा ॥

शिथिल तथा व्यर्थ हो गई। यहाँ तक कि सौ मुझे एक दिखाई पड़ता था। और एक, सौ के रूप में।

अन्य यात्री मेरी अवस्था को समझ नहीं रहे थे और मैं एक नया यात्री था। कोई भी किसी प्रकार की सहायता नहीं देता था, इस कारण, इस यात्रा में मुझे कष्ट अधिक भोगना पड़ा।

मुझ में, दरवाज़े के भीतर घुसने का साहस नहीं था। पैर भी अन्दर ले जाने के लिये आगे नहीं बढ़ते थे। इसके अतिरिक्त पीछे फिर जाने का ध्यान ही नहीं था।

उस संकीर्ण स्थान पर मेरी जिह्वा रुक गई। उस समय प्रेम मेरा पथ-प्रदर्शक बना।

उसने उत्साहित करते हुए कहा कि द्वार पर आ। मैं इसका भेद जानता हूँ। मैं जहाँ तक हो सकेगा तेरी सहायता करूँगा।

मैंने दरवाज़े की माँकल बजाई। मन ने पूछा कि इस समय कौन आया है। मैंने उत्तर दिया कि, आज्ञा दीजिये तो एक मनुष्य अन्दर आए।

ईश्वरीय सहायता ने नेत्रों के आगे से पर्दा हटा दिया। शरीर को छोड़कर आत्मा पृथक् होगई।

उस राजभवन के, सब से भीतर भाग से, जिसमें पहुँचना अत्यन्त कठिन था, एक आवाज़ आई कि “निजामी” यदि भीतर आना चाहता है तो चला आ।

खास तरीं महरमे आँ दर शुदम ।
 गुफ़ दहूँ आय दहूँ तर शुदम ॥
 ॥ वार गहे याक़तम अफ़रोख़ता ।
 चश्मे वद अज़ दीदने आँ दोख़ता ॥
 हफ़ ख़लोफ़ा व यके ख़ाना दर ।
 हफ़ ह़िकायत वयक़ अफ़साना दर ॥
 मुल्के अज़ाँ पेश कि अफ़लाक़ रास्त ।
 दौलते आँ ख़ाक़ कि आँ ख़ाक़ रास्त ॥
 दर नफ़स आबाद दमे नीम सोज़ ।
 मद्र नशीं ग़श्त शहे नीम रोज़ ॥
 सुख़े सवारी बअदब पेशो ऊ ।
 लाल क़बाण ज़फ़र अन्देशो ऊ ॥
 तल्लख़ जवाने यज़की दर शिकार ।
 ज़ेर तरे ऊ वसीहण दुर्द ख़ार ॥
 क़म्दे कर्मी करदा कमन्द अफ़ग़ने ।
 मीम ज़ेरा साग़्हा रोई तने ॥
 ई हमा परवानवो दिल शमा वूद ।
 जुमला पराग़न्दा ओ दिल ज़मा वूद ॥

अब मैं उस दरबार के रहस्य को भली भाँति समझ गया और मन ने कहा यदि और आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो तो चले आओ। यह सुन कर मैं और भी भीतर बढ़ गया।

अब मैंने अपने मन के अन्दर जो देखा, वह बहुत ही विलक्षण वस्तु थी। उस अकथनीय शोभा का केवल अनुभव किया जा सकता है।

मन रूपी उभी मन्दिर में मान मार्ग थे और सातों सिलसिले भी वहीं थे।

उस देश को आकाश से भी बढ़ कर पाया। पृथ्वी का समस्त वैभव वहाँ प्रस्तुत था।

उस अधजली स्वॉम के स्थान में यानी मीने के उस भाग में मैंने मन को बैठा हुआ पाया।

उसके पास ही फेफड़ा, एक लाल सवार के रूप में बड़ी ही नरमी के साथ शिर झुकाए हुए खड़ा था।

पित्त भी वहीं था और उसके नीचे ही तलछट पीने वाली तिल्ली भी उपस्थित थी।

बुद्धि अपने स्थूल शरीर पर चाँदी का, कवच धारण किये हुए आक्रमण के मामान से लैस वहीं खड़ी हुई थी।

यह सब पतंगों के समान थे और मन दीपक के समान। यह सब उसके आज्ञाकारी ज्ञात होते थे।

मन बकिनाश्रत शुदा मेहमाने दिल ।
 जाँ बनवा दादा बसुलताने दिल ॥
 चूँ अलमे लशकरे दिल याकतम ।
 रूप खूद अज आलमियाँ ताकतम ॥
 दिल व जवौं गुफ़ कि पे बे जवौं ।
 मुर्गे तलब वगुज़र अज़ीं आशियाँ ॥
 आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त ।
 ईं जिगरे ताज़ा नमक सूद नेस्त ॥
 बे नमकौरा तू जिगर मीदेही ।
 गंज जे दुर ज़र जे गोहर मीदेही ॥
 माया अम अज सर्व तवानातरअस्त ।
 पायम अज़ौं पाया ववालातर अस्त ॥
 गंजमो दर कीसए क़ारूँ नियम ।
 वा तो मस्तम जे तो बेरूँ नियम ॥
 मुर्गे लवम वा नफ़से गरमे ऊ ।
 परे जवौं रेखता अज शरमे ऊ ॥
 माख़्तम अज शर्म सर अफगन्दगी ।
 गोशे अदब हलज़ा कशे वन्दगी ॥

मैं बड़े ही धैर्य के साथ मन का अतिथि हुआ । और उस सम्राट के सम्मुख अपने प्राणों की भेंट लेजाकर रक्खी ।

जब मन की सेना का झण्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध छुड़ा लिया ।

मन ने ज़बान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पत्नी ! उस घोंसले का परित्याग कर दे । उस सांसारिक घोंसले से कोई सम्बन्ध न रख ।

मैं अपने लिये ख्याति नहीं चाहता और तेरी इन हाल ही में लिखी हुई कविताओं में भी कुछ आनन्द नहीं है ।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नहीं है, तू उन्हें तीरम बना देता है और रुपये तथा मोतियों के ढेर के ढेर उन्हें दे डालता है ।

मेरी छाया सरो के वृत्त से भी कहीं बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है ।

मैं एक कोप अवश्य हूँ, परन्तु वह कोप नहीं जो क़ारूँ की थैली में बन्द है ।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ में व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ । मन की इन मारपूर्ण बातों को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया ।

और मैंने अपना शिर मुका लिया । मैंने अपने कानों को बड़े अदब के साथ मन की इन बातों को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया ।

चूँके नदीदम जे रियाजत गुज़ीर ।
ग़श्तम अज़ीं खाजा रियाजत पेज़ीर ॥
खाजये दिल अहदे मरा ताज़ा कर्द ।
नामे 'निज़ामी' फ़लक आवाज़ा कर्द ॥

हिकायत ईसा पैग़म्बर अलेहिस्सलाम

पाण मसीहा कि जहाँ मी नवश्त ।
वर सरे बाज़ारचण मी गुज़श्त ॥
गुर्ग मगे दर गुज़र उफ़तादा दीद ।
यूसुफ़श अज़ चह बदर उफ़तादा दीद ॥
वरसरे आँ जीफ़ा ग़रोहं क़नार ।
वर भिक्ते करग़से मुर्दार खार ॥
गुफ़्त यके बहश्ते ईँ दर दिमाग़ ।
तीरगी आरद चु नफ़्स दर चिराग़ ॥
वाँ दिगरे गुफ़्त अगर हासिलस्त ।
कोरिण चश्मस्तो बलाण दिलस्त ॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं ।
अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली ।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को
आकाश तक पहुँचा दिया ।

पैग़म्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करते थे । एक दिन वह एक
छांटे से बाज़ार में घूम रहे थे ।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था । उसके शरीर से प्राण
निकल चुके थे ।

उसके आस पास एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर
के मांस को खाने वाले गृध्रों के समान उसकी चुगइयाँ बतला रहे थे ।

एक ने कहा कि इसका डर मस्तिष्क को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे
दीपक को मुख की भाप । -

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है । इसको देखने से भय के
मारे हृदय धड़कने लगता है ।

हर कस अजाँ परदा नवाए सरुद ।
 वर सरे आँ जीफा जफाए नमूद ॥
 चू बसखून नौबते ईसा रसीद ।
 ऐब रिहा कर्द बेमाना रसीद ॥
 गुफ़ जे नक़शे कि दर ऐवाने उस्त ।
 दुर बसुफ़ैदी न चो दन्दाने उस्त ॥
 ऐब कसों मनिगरो यहमाने खेश ।
 दीदा फ़ेरोबर बगरीवाने खेश ॥
 ॥ आईना रोज़े कि बिगीरी बदस्त ।
 खुद शिकन आँ रोज़ मशो खुद परम्त ॥
 खेशतन आरा मशी चू बहार ।
 ता नकुनद दर तो तम रोज़गार ॥
 जामए ऐबे तो तुनक रिश्ता अन्द ।
 जाँ बतो नौ परदा फ़ेरो हिश्ता अन्द ॥
 चीस्त दरी हलकए अंगुशतरी ।
 काँ न बुवद तौके तो चू बिनगरी ॥

प्रत्येक मनुष्य ऐसे वचन कह कर कुत्ते के मृत शरीर को बुरा कह रहा था ।

जब हज़रत ईसा की बारी आई तो उन्होंने बुराइयों को छोड़ कर उसकी अच्छाइयों का वर्णन करना प्रारम्भ किया ।

उन्होंने कहा कि उसके शरीर की अच्छाइयों को देखने से मालूम होता है कि उसके दाँत मोती से भी अधिक स्वच्छ हैं ।

वह मनुष्य जो उसकी बुराई कर रहे थे, यह सुन कर हँसने लगे ।

॥ दूसरे मनुष्यों के दोषों और अपने गुणों को मत देखो । जब दूसरों के दोषों की तरफ़ दृष्टि जाय, अपने को देखो ।

अपने आप को दूसरों से बढ़ कर लगाने का प्रयत्न मत करो । ऐसा करना स्वार्थपरता से खाली नहीं है ।

यदि तुम दूसरों में दोष निकालोगे, संसार तुम्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा ।

तुम्हारे दोषों का आवरण बहुत हल्का है और इसीलिये नौ आकाश के नौ पर्दे तुम्हारे ऊपर डाले गये हैं ।

इस आकाशी घेरे में, वह क्या वस्तु है, जो तुम्हारे गले में तौक के समान पड़ी हुई है ?

गर न सगी तौक्रे सुरइया मकश ।
 गर न खरी वारं मसीहा मकश ॥
 कीस्त फलक पीर शुदा बेवण ।
 चीस्त जहाँ दुज्द ज़दा बेवण ॥
 जमलण दुनिया जे कोहन ता बनौ ।
 चूँ गुज़रिन्दस्त नयरज़द बजौ ॥
 अंदोहे दुनिया मखूर ए ख्वाज़ा खेज़ ।
 गर तो खुरी वख़्शे “निज़ामी” वग़ेज़ ॥

हिकायत मोबिदे हिन्दू कि मारिफ़त याफ़्त

मोबिदे अज़ किशवरे हिन्दोस्ताँ ।
 रहगुज़रे वर्द सूए बोस्ताँ ॥
 मरहलण दीद मुनक्क़श ख़्वात ।
 ममलुकने याफ़्त मुज़व्वर बिसात ॥
 गुनचा वख़्त बसता चो ग़ादूँ कमर ।
 लालण कम उम्र जे खुद वे ख़वर ॥
 मोहलते शाँ ता नक़से बेश नह ।
 हंच कैसे आक़बत अन्देश नह ॥

सुरग्या का तौक़ उठाने का प्रयत्न मत करो यदि तुम कुत्ते नहीं हो । यदि गधे नहीं हो तो मसीह को अपने ऊपर सवार मत कराओ ।

आकाश क्या है ? एक वृद्ध विधवा । संसार क्या है ? एक चोर की लूटी हुई विधवा ।

नई और पुरानी इनके चक्करों में मत पड़ो । संसार के बदलने पर एक कौड़ी के भी नहीं रहेंगे ।

कमर बाँध कर उठ खड़े हो और इस संसार की चिन्ता मत करो । यदि तुम खाओ भी तो “निज़ामी” का भाग अलग निकाल दो ।

एक ब्राह्मण की कहानी जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया

भारतवर्ष में, एक दिन एक पारसा मनुष्य बाग़ की तरफ़ घूमने निकल गया ।

उसे वहाँ बहुत ही सुन्दर स्थान दिखलाई दिया । उसमें धास का सुन्दर फ़र्श बिछा हुआ था ।

और मनोहर कलियाँ चित्त को आकर्षित कर रही थीं । लाला के पुष्प मस्ती में भ्रम रहे थे ।

परन्तु उसका जीवन कुछ ही दिनों का था । इस तरफ़ किसी का भी ध्यान नहीं जाता था ।

पीर चो जाँ रौज़ए मीनू गुज़श्न ।
 बादे महे चन्द बदौसू गुज़श्न ॥
 जाँ गुलो बुलबुल कि दरौं बारा दीद ।
 नालए मुश्ते ज़रानो जाग दीद ॥
 दोज़खे उफ़ाद वज़ाने बहिश्त ।
 कैसरे आँ क्रम शुदा दर कुनिश्त ॥
 सबज़ा बतहर्लील खारे शुदा ।
 दस्तए गुल पुशतए खारे शुदा ॥
 पीर दरौं तेज़ रवाँ बिनगरीस्त ।
 वर हमा खनदीद वख़ुद बरगिरीस्त ॥
 गुप्त कि हंगामे नुमाइन्दगी ।
 हेच नदारद सरे पाबन्दगी ॥
 हर चे सर अज़ स़ाक व आवा कशद ।
 आक़बतश सर वख़राबी कशद ॥
 बेह ज़े ख़राबी चो दिगर कूए नेम्त ।
 ज़ज़ वख़राबी शुदनम रूए नेस्त ॥
 चं नज़र अज़ बीनिशे तौफ़ीक़ मारुन ।
 आरिके ख़द गश्तो ख़दा रा शिनाख़न ॥

वृद्ध भक्त उस स्थान से अपने घर को लौट गया और उसके कुछ ही महीने बाद पुनः उधर ही आ निकला ।

उसने उस उपवन में पुष्प खिले हुए देखे थे और बुलबुलों का गगन सुना था । अब वहाँ पर चील-कौआँ का जमघट देखा ।

स्वर्ग, नर्क में परिणत हो गया था । उस सुन्दर उपवन की शोभा अर्थात् पुष्प किनारा कर गया था ।

और घास जल कर पीली पड़ गई थी । पुष्पों के गुच्छों के स्थान पर अब कंटक ही कंटक दिखलाई पड़ते थे ।

वृद्ध शीघ्रता से इन सब वस्तुओं को देख गया । फिर वह इन सब पर हँसा और अपने ऊपर आँसू गिराए ।

उसने अपने मनमें सोचा कि आखिर, दिखावे का कोई मूल्य नहीं होता है ।

मिट्टी और पानी के संयोग से जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नाश होकर ही रहती है ।

जब विनाश का मार्ग ही सर्वोत्तम है फिर उसे छोड़ कर मुझे और किस तरफ जाना चाहिये ।

जब उसमें ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने अपने स्वरूप का समझ और ईश्वर को पहचान लिया ।

मैरफये गोहरे आँ राज शुद ।
 ता बअदम सूए गोहर बाज शुद ॥
 ए के मुसलमानीबो गवरीत नेस्त ।
 चशमे तोरा कतरण अबरीत नेस्त ॥
 कमतर अजॉ मोबिदे हिन्दू मवाश ।
 तर्के जहाँ गीरां जहाँ जू मवाश ॥
 खेज रिहा कुन कमरे कुल जे दस्त ।
 कू कमरे खेश बखूने तो वस्त ॥
 चन्द चां गुल खीरामरी माखतन ।
 मर वकुलाहो कमर अफराखतन ॥
 हस्त कुलाहो कमर आफाते इश्क ।
 हर दो रिहा कुन बखराबाते इश्क ॥
 गह कुलहत खाजगिए गिल देहद ।
 गह कमरत बन्दगिए दिल देहद ॥
 कोश कर्जी खाजा गलामी रेही ।
 ना चो “निजामी” जे निजामी रेही ॥

अब वह इस रहस्य को पहचानने वाला हो गया और ईश्वर के मूल्य को समझ कर उसी तरफ़ बढ़ गया ।

मूर्ख ! न तो तू धर्म का ही कुछ ज्ञान रखता है और न ईश्वर को समझने की शक्ति । तू तो नितान्त निर्लज्ज है ।

उस हिन्दू ब्राह्मण से पीछे मत रह जा । इस संसार की खोज मत कर, इसका त्याग कर देना ही उत्तम है ।

इन सांसारिक प्रलोभनों में मत पड़, वह तुझे मिटा डालने पर तैयार हैं ।

एक पुष्प के समान अपने रंग और रूप पर कब तक गव करता रहेगा । टोपी और पटके पर ग़रूर करता रहेगा ।

टोपी और पटका प्रेम के लिये आफतें हैं । प्रेम के मार्ग में इनका त्याग अवश्य है ।

कभी यह ताज तुझे पुष्प के समान इस उपवन का सम्राट् बना देता है और कभी यह पटका तुझे इच्छाओं का दास बना देता है ।

प्रयत्न कर कि दास के स्थान पर स्वामी होकर रहे और फिर “निजामी” के समान अपनत्व को मिटा कर स्वतंत्र होजावे ।

खुसरो व शीरीं

जमाना खुद जुजीं कारे नदानद ।
 कि अन्दोहे देहद जाने सितानद ॥
 चां कार उफतादा गरदद बेनवाए ।
 दरश दरगीरद अज हर सू वलाए ॥
 बहर शाखे गुले कू दर जनद चंग ।
 बजाए गुल बेबारद वर सरश संग ॥
 चुनों अज खुशदिली बे वह गरदद ।
 कि दर कारश तबरजद जह गरदद ॥
 चुनों तँग आयद अज शोरीदने मस्त ।
 कि वर वायद गिरिफ्तश जीं जहाँ रस्त ॥
 इनाने उम्र अजीं सौं दर नशेबस्त ।
 जवानी रा चुनीं पा दर रकेबस्त ॥
 कसे याबद जे दौरौं रस्तगारी ।
 कि वर दारद इमारत जीं इमारी ॥
 मसीहावार दर वै वर नशीनद ।
 कि वा चंदीं चिरागश कस नबीनद ॥

खुसरू और शीरीं

ममय एक विचित्र वस्तु है। उसे दूसरों को नष्ट करने में आनन्द आता है।
 जब कोई विपत्तियों का मारा अमहाय हो जाता है, तब उसके चारों तरफ
 अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

यदि किसी पुष्पकी डाल को हिलाना है तो पुष्प न गिरकर उसके शिर पर
 पत्थर गिरते हैं।

खुशी से वह इतना महरूम हो जाता है कि उसके लिए तिर्याक भी
 जहर हो जाता है।

उमकी अवस्था इतनी हीन हो जाती है कि वह इस संसार को छोड़ देने
 पर उत्तारू हो जाता है।

अवस्था ढलती जा रही है और युवावस्था भी किनारा करने के लिये
 उत्सुक हो रही है।

काल के चक्र में वही मनुष्य नहीं पड़ता है जो इस स्थान को प्यार नहीं
 करता, यहाँ अपना घर नहीं बनाता।

ईसा के समान ऐसे मंडप में बैठा रहता है जहाँ महान् दीपकों के प्रकाश
 से भी वह दिखलाई नहीं पड़ता है।

जहाँ देवस्तो वक्त, देव बस्तन ।
 बखुश खूई तबाँ अज देव रस्तन ॥
 मकुन दोऊस्त बखुद बर खूए बद रा ।
 बहिश्ते दीगराँ कुन खूए खद रा ॥
 चु दारद खूए तो मरदुम सरिश्ती ।
 हर्मी जाओ हर्माँ जा दर बहिश्ती ॥
 मखुस्प ए दीदा चंदों गाफिलो मस्त ।
 चो हुशयाराँ बर आवर जी जहाँ दस्त ॥
 कि चंदों खुफ़ स्नाही दर दिले खाक ।
 कि फरमोशत कुनद दौराने अफलाक ॥
 बर्दा पंजाह साला हुक्का वाज्जा ।
 बर्दा यक मोहरा गिल ता चन्द बाज्जी ॥
 जे पंजह साल अगर पंजह हज़ारस्त ।
 कलम दरकश कि हम नापायदारस्त ॥
 नशायद आहनी तर बूदन अज संग ।
 बेबी ता रेग चँ रेज़द वफ़रसंग ॥

मंसार एक प्रेत के समान है और अच्छे स्वभाव तथा गुणों के द्वारा ही उससे छुटकारा मिल सकता है ।

तू बुरा स्वभाव छोड़, अपने लिये नर्क न बना । अपने स्वभाव को ऐसा बना कि दूसरे लोग भी तुझे स्नेह की दृष्टि से देखें ।

ऐसा न बन कि और तुझसे दूर भागने का प्रयत्न करें । यदि तेरा स्वभाव मनुष्यता से परिपूर्ण होगा तो तू यहाँ भी स्वर्ग में रहेगा और वहाँ भी ।

हे नयन ! इतने मतवाले मत बनो । सतर्कता से काम लो और निद्रा को दूर करो ।

समाधि में सोने के लिये इतना अवकाश मिलेगा कि सांसारिक विपत्तियाँ भी तुझे भूल जायँगी ।

अतएव इन प्रलोभनों पर इस समय आसक्ति मत दिखला । तूने पचास वर्ष तमाशा किया और वह भी केवल एक गोले से (मुहरे से) । अब कब तक इसी खेल में व्यस्त रहेगा ?

यदि पचास हजार वर्ष भी तुझे मिलें तो उन्हें अस्वीकार करदे । उनमें किसी प्रकार का स्वाद नहीं है ।

पत्थर सबसे कठोर वस्तु है, परन्तु वह भी रेत के रूप में कोसों तक उड़ता है ।

जर्मी नुतयेस्त रंगश चूं नरेजद ।
 कि बर नुतए चुनी जुज खूं न खेजद ॥
 बसा खूने के शुद दर खाके ईं दशत ।
 सियहवकते नरस्त अज जेरे ईं तशत ॥
 हराँ जरा कि आरद तुंद वादे ।
 फरीदूने बुवद या कैकुवादे ॥
 कफे गिल दर हमा रूण जर्मी नेस्त ।
 कि बर वै खूने चंदी आदमी नेस्त ॥
 कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल ।
 चे मुदत दारदो चूंनस्त अहवाल ॥
 नमानद कस कि वीनद दौरे ऊ रा ।
 बदौ ता दर नयावद गौरे ऊ रा ॥
 बहर सद साल दौरे गीरद अज सर ।
 चे आँ दौराँ शुद आयद दौरे दीगर ॥
 बरोजे चन्द वा दौराँ दीदीन ।
 चे शायद दीदनो चे तवाँ गुनीदन ॥
 जे जौरो अद्ल दर हर दौर साजेस्त ।
 दर दानिंदा रा पोशीदा राजेस्त ॥

पृथ्वी एक कश है । उसका रंग क्यों नहीं उड़ता ? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता ।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ बच कर नहीं निकल सका है । संसार में सभी फँस जाते हैं ।

आँधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है । वह कण फरीदूं या कैकुवाद की राख के बने हुए होते हैं ।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गीली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है ।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था ? उसके विगत इतिहास का किसे पता है ?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा ? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है ।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा ।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है ?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अन्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है ।

नमीखाही कि बीनी जौर बर जौर ।
 नयायद गुलु राजे दौर वा दौर ॥
 शबो रोज अवलक्रे शुद तुन्द रफतार ।
 बई अवलक्रे इनाने खेश मसपार ॥
 बसद फन गर तुमाई जू फनूनी ।
 नशायद बुर्द अजी अवलक्रे हरूनी ॥
 फलक चन्दौ कि देगे खाक रा पुस्त ।
 नरफु अज खूर ऊ खामी चू की मुस्त ॥
 कुमारिस्ताने चखे नीम खाया ।
 बसे पुर माया रा बुर्दस्त माया ॥
 अरुसे खाक अगर बदरे मुनीरस्त ।
 बदस्तो याद कुन अमरश कि पीरस्त ॥
 मगर हक्के कि खाहद वृदन अज याद ।
 तिलाक्रे अम्र खाहद खाक रा दाद ॥
 अगर वाद आयदो गर न आयद इमरोज ।
 तू वरवादे चुनी मशअल मै अफरोज ॥
 दर्गी यकमुश्ते खाक ए खाक दर मुश्त ।
 गर अफरोजी चिरागे अज देहमगुश्त ॥

तुमको अन्याचार पर अन्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता ।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोंड़े के समान हैं । इस घोंड़े के मुपुर्द अपनी नाग मत कर देना ।

यदि तुम सैकड़ों विद्याओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोंड़े की शगरता को दूर करने में समर्थ न हो सकोगे ।

आकाश ने मिट्टी की हाँड़ी को बहुत ही पकाया परन्तु इस पर भी उसका कच्चापन दूर नहीं हुआ ।

आकाश का जुआखाना बहुत से धनवानों का धन खीन कर ले गया है । संसार प्रलोभनों में परिपूर्ण है और यद्यपि एक चन्द्रमुखी रमणी के समान है, परन्तु वह बूढ़ी है और उसमें कोई मार नहीं है ।

खुदा को अगर याद रखना चाहता है तो दुनिया को त्याग देने में ही भलाई है ।

हवा की तरफ से जो न्याय होगा वह संसार से बिलकुल ही पृथक कर देगा उसकी धूल को सदैव के लिये भाड़कर फेंक देगा ।

यदि तू अपनी दम उँगलियों से भी इस दीपक को जलाने का प्रयत्न करेगा तब भी यह मिट्टी किसी प्रकार से तेरी सहायता न करेगी ।

नशुद मुमकिन कि ईं खाके खतरनाक ।
 बअंगुश्ते बुरीदा बर कुनद खाक ॥
 चु यूसुफ जीं तुरंज अर सर बेताबी ।
 चु नारंजे जुलेखा जख्म याबी ॥
 सहरगह मस्त शौ संगे वरन्दाज ।
 जे नारंजो तोरंज ईं खौ बेपरदाज ॥
 बुरू अफगन बतह जीं दारे नोहदर ।
 मकुन कैमन शबी जीं मारे नोहसर ॥
 नफस कू खाजा ताशे जिन्दगानीस्त ।
 बया परवरदण बादे स्त्रिजानीस्त ॥
 अगर यकदम जानो बंइश्क मुर्दस्त ।
 कि बरमा यकबयक दमहा शुमुर दस्त ॥
 बबायद इश्क रा फरहाद बृदन ।
 पमंगाहे बमुर्दन शाब बृदन ॥
 मोहन्दिश दस्तये पौलाद नेशा ।
 जे चावे नार बुन करदे हमंशा ॥

यह मुमकिन नहीं कि इस संसार में कटी उँगलियों वाला मिट्टी खाद सके ।

यदि यूसुफ के समान तू इस नींव से पृथक् हो जायगा तो जुलेखा की नारंगी के समान तुझ में भी घाव हो जायेंगे ।

प्रभात होते ही मतवाला बन जा और एक ढेला फेंक कर मार तथा नारंगी और नींव से यह भोजनालय भर दे ।

इस शरीर रूपी गृह में जिसमें नौ इन्द्रियों के रूप में नौ द्वार हैं अपना सब सामान बाहर निकाल ले चल । देखना, इस नौ फन वाने मर्प की तरफ से सतर्क रहना ।

वह स्वाँस, जिसमें हमारा जीवन कायम है विनाश-रूपी वायु की उत्पन्न की हुई है ।

प्रेम-विहीन एक भी साँस निकालना व्यर्थ है । कारण कि हमारे जीवन की साँसें गिनती की हैं ।

प्रणय के लिये “फरहाद” का होना आवश्यक है और उसी अवस्था में मृत्यु के समय हर्ष होगा ।

“फरहाद” सदैव फौलाद के बमूल का बेट अनार की लकड़ी काट कर बनाया करता था,

जे बहरे आँके बाशाद दस्तगीरश ।
 बदस्त अंदर बुबद फरमाँ पिजीरश ॥
 चु बिशुनीद ई सखुनहाए जिगर ताब ।
 फराजे कोह कर्दे आँ तेशा पुरताब ॥
 चुनीं गोयँद खाके बूद नमनाक ।
 सिना दर संग रफ़ो चोब दर खाक ॥
 अजाँ दस्ता बर आमद शोशण नार ।
 दरखे गश्तो नार आवुर्द बिसयार ॥
 अजाँ शोशा कनू गर नारयाबी ।
 दवाए दर्दे हर बीमार बाबी ॥
 “निजामी” गर नदीद आँ नार बुन रा ।
 बदफ़तर दर चुनीं खाँद ई सखुनहा ॥

हिकायत बुलबुल वा बाज़

दर चमने बाग़ चो गुलबुन शिगुफ़ ।
 बुलबुल वा बाज़ दर आमद वगुफ़त ॥

ताकि वह उसके हाथ से फिसल न जावे और हाथ ही में ठीक ठीक बना रहे ।

जब फरहाद ने हृदय को बेधने वाली बातें सुनीं तो पर्वत की चोटी पर से उस बमूले को फेंक मारा ।

लोग कहते हैं कि वहाँ पर कुछ गीली मिट्टी थी । बमूले का फल पथर में घुस गया और दस्ता मिट्टी में ।

उसी दस्ते की लकड़ी में कल्ले फूटे और धीरे धीरे एक बड़ा भारी वृक्ष उत्पन्न हो गया और उसमें अनार के सहस्रों फल उत्पन्न हुए ।

यदि उस अनार का तुम्हें एक भी फल मिल जावे तो सभी रोग दूर हो सकते हैं ।

“निजामी” ने उस अनार के वृक्ष को नहीं देखा है, परन्तु पुस्तकों में उस कहानी को पढ़ा है ।

बुलबुल और बाज़ का वार्तालाप

जिस समय उपवन में गुलाब के पुष्प खिल रहे थे, बुलबुल और बाज़ में इस प्रकार बातचीत हुई ।

कज हमह मुँगाँ तुई खामोश सार ।
 गोय चेरा बुरदई आखिर बेयार ॥
 ता तु लबे वसता कुशादी नफ़स ।
 यक सखुने नरज नगुस्ती बकस ॥
 मंजिले तो दस्त गहे सनजरी ।
 तोमण तो सीनण कबके दरी ॥
 मनके वयकदम ज़दन अज काने गैब ।
 सद गोहरे सुफ़ता बर आरम जे जैव ॥
 तोमण मन किर्म शिकारी चेरास्त ।
 खानण मन बर मरे खार चेरास्त ॥
 बाज वदो गुफ़्त हमा गोश बाश ।
 खामुशियम बिनगरो खामोश बाश ॥
 मनके शुदम कारशिनास अन्दके ।
 सद कुनमो बाज नगोयम यके ॥
 रौ कि तुई शेफ़तण रोज़गार ।
 जौं के यके न कुनीओ गोई हजार ॥
 मनके हमा मानीयम ई सैद गाह ।
 सीनण कवके देहद अज दस्त शाह ॥

बुलबुल ने बाज से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है ?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय में अभी तक एक भी अच्छी बात मुँह से नहीं निकाली।

संजर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकार के कलेजे को खाना है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोता के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटें छोटें कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और कौटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बग़वान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुम्हें संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हमहूँ ज़रूम ज़बानी तमाम ।
 किर्म खुरीआख़ार नशीनी वस्मलाम ॥
 ख़ुतबा चो बर नामे फरेदूँ कुनन्द ।
 हुक्म बर आवाज़े दुहुल चूँ कुनन्द ॥
 सुबह चो बा बाँगे ख़रूसस्तो बस ।
 ख़न्दा ज़न अज़ राहे फ़सूलो बस ।
 चर्ख़ कि दर मारज़ैर फ़रयाद नेस्त ।
 हेच सरज़ तर्क़श आज़ाद नेस्त ॥
 बर मक़श आवाज़ए नज़मे बलन्द ।
 ता चो “निज़ामी” नशबी शह बन्द ॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ में चकोर का सीना
 ग़िलवाता है ।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कीड़े
 मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे ।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का ख़ुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि
 डंके की चोट का ।

प्रभात के पास केवल एक आवाज़ है और वह है मुर्ग की । इसीलिये
 वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है ।

आकाश के पास एक भी आवाज़ नहीं है । इसीलिये कोई भी उसके फ़न्दे
 में बाहर नहीं है ।

ऊँचे दर्जे की कविता करने में ख्याति न प्राप्त कर । कहीं “निज़ामी” के
 समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नज़रबन्द न कर दिया जावे ।

फ़रीदुद्दीन अत्तार

(जन्म सन् ११५७ ई० , मृत्यु सन् १२३० ई०)

रूमी कहा करते थे कि डेढ़ सौ वर्ष उपरान्त मन्सूर का आत्मिक प्रकाश अत्तार की आत्मा में प्रकाशित हुआ है। सनाई के समान अत्तार का प्रारम्भिक जीवन भी गुणों और उत्तम व्यवहारों से पूर्ण न था। यह औषधि बेचा करते थे। एक दिन जब यह दूकान पर बैठे हुए थे एक साधु आया और बोला कि अन्ताह के नाम पर कुछ दे दे। अत्तार किसी कार्य में व्यस्त थे। अतएव साधु के कई बार माँगने पर भी इनका ध्यान उधर न गया। अन्त में उसने कहा, “खवाजा ! आपकी जान कैसे निकलेगी !” अत्तार ने उत्तर दिया, “जिस प्रकार तुम्हारी”। साधु ने कहा, “तुम भी मेरी तरह मर सकते हो ?” इसका भी उत्तर इन्होंने हाँ में दिया। इस पर साधु अपने लकड़ी के प्याले को सर के नीचे रखकर लेट गया और जोर से अन्ताह की आवाज लगाई। उसकी आत्मा शरीर को त्यागकर उड़ गई। अत्तार को बहुत ही आश्चर्य और दुःख हुआ। फल स्वरूप इन्होंने दूकान उठा दी और संन्यास ग्रहण कर लिया।

बलख जाते समय रूमी से इनकी भेंट हुई थी, यह बहुत वृद्ध हो चुके थे। शेख ने इनके लिये एक पत्र भी लिखा था जिसे मौलाना रूमी सदैव अपने पास रखते थे। जामी का कथन है,

“अत्तार की, कृत्तियों में सूफियों के भावों की स्थान स्थान पर झलक दिखलाई पड़ती है।”

अत्तार की ख्याति उनकी रचनाओं की बाहुल्यता के कारण और भी अधिक है। उन्होंने ११४ पुस्तकें लिखी थीं, जिनमें से ३० पाई जाती हैं। ब्राउन का कथन है, “यदि वह और भी कम लिखते तो उनका और भी अधिक नाम होता और लोग उनकी कृत्तियों को अधिक चाव से पढ़ते। इनकी पन्दीनामा, मन्तकुलतीर और तजकरत्तुल औलिया नामक रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं और उनका कई एक भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। मन्तकुलतीर के कारण—जिसमें से कई एक पंक्तियाँ मैंने इस पुस्तक में भी उद्धृत की हैं—उनके नाम ने लोगों के दिलों में और भी अधिक घर कर लिया है। इस रचना में लेखक ने आत्मा को परमेश्वर की खोज में व्यस्त दिखलाया है। सूफी यात्री की उपमा एक पक्षी से देकर ईश्वर को सीमुर्ग माना है। पक्षीगण एकत्रित होकर अपने पथ-प्रदर्शक हुमा की अध्यक्षता में ईश्वरीय खोज का विचार करते हैं। प्रत्येक अपनी इन्द्रिय जनित कठिनाइयों और बन्धनों को उसके सामने रखता है और हुमा उनका समाधान करता है। हुमा इस स्थान पर उनके सम्मुख शेख सनाओं की घटना रखता है, जो कि एक बड़े भक्त थे और एक लड़की के ऊपर आसक्त होने के कारण जिन्होंने, उसे सन्तुष्ट करने के लिये उसके शूकरोँ तक को चराना स्वीकार किया था। शेख ने, हृदय में ज्ञान

उत्पन्न होने पर उस लड़की को त्याग दिया। लड़की भी उनके विरह में पागल होकर वहीं पहुँची और उनके जीवन में भक्ति का मिश्रण करके संसार से चल बसी।

“मोक्ष-मार्ग की कठिनाइयाँ और उसके सातों भाग—प्रेम, ज्ञान स्वतंत्रता, सम्मिलन, आश्चर्य, निराशा और मृत्यु के रूप में—प्रगट किये गये हैं। मानव हृदय की मलिनताओं से पृथक होकर आत्मा अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेती है।”

(लि० हि० आ० पर जिल्द २, पृष्ठ ५१२)

“पत्तियों की कठिनाइयाँ तथा उनके भिन्न २ भाग्य, मोक्ष तथा सत्य पथ को ग्रहण करने वालों की विपत्तियों को प्रदर्शित करते हैं और इन बातों का वर्णन, पुस्तक को, जार्ज बनियन की लिखी हुई पुस्तक पिलग्रिम्स प्राभेस, के समान बनाता है।”

(लीवी—परशियन लिटरेचर—पृष्ठ ४७)

अत्तार का जन्म नोशापुर में ११५७ ई० में हुआ था। यह अबू तालिब मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पिता का नाम था अबूबक्र इब्राहीम। इन्होंने बहुत से नगरों तथा देशों में भ्रमण किया था। जैसे रें, ब्यूक, मिश्र, दमिरक, मक्का, भारतवर्ष, तुर्किस्तान इत्यादि, परन्तु अन्त में यह अपने जन्मस्थान में ही जाकर रहे। यह रहस्यवाद की पुस्तकों को बहुत अधिक पढ़ा करते थे और लगभग ३९ वर्ष तक उन्होंने अपने इस अध्ययन को जारी रखा। रहस्यवाद के साहित्य में इनकी कुछ रचनाएँ बहुमूल्य प्रतीत होती हैं। उन्होंने सूफियों के सातों स्टेजेज का बहुत ही उत्तम भाषा में वर्णन किया है।

अपने उदण्ड विचारों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मकान लूट कर उनको अन्त में निकाल दिया गया। सुना जाता है कि इसके उपरान्त वह मक्का को चले गये और वहाँ पर उन्होंने इसानुलईनब नामक पुस्तक लिखी।

उनकी मृत्यु का समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। विशेषज्ञों में, इस विषय पर मतभेद है। कई एक कारणों से ब्राउन ने उनकी मृत्यु का होना सन् १२३० ई० में लिखा है। लेब्रो भी इससे सहमत है। प्राचीन कहानी के अनुसार यह कहा जाता है कि उनको चंगेज खाँ ने मार डाला।

प्रमुख रचनाएँ :—

पन्द नामा,
तज्जकिरातुल औलिया,
मन्तकुलतीर,
कसीदा,
मुसीबत नामा,
बुलबुल नामा,
शुतुर नामा।

जवाब दादने हुदहुद

हुदहुदे रहबर चुनीं गुफाँ जमाँ ।
कौं के शुद आशिक नयंदेशद जे जाँ ॥
चूँ बतर्के जाँ बगोयद् आशिके ।
खाह जाहिद बाश खाही कामिके ॥
चूँ दिले तू दुश्मने जाँ आमदस्त ।
जाँ बर अकशाँ रह ब पायाँ आमदस्त ॥
सहेरह जानस्त जाँ ईमार कुन ।
पस बरफगन परदओ दीदार कुन ॥
गर तुरा गोयंद अज ईमाँ वराय ।
बर स्निताव आयद तुरा कज जाँ वराय ॥
तू कमे ईं गीरो आँ रा बर किशाँ ।
तर्के ईमाँ गीरो जाँरा बर किशाँ ॥

हुदहुद का उत्तर देना

उस समय पथ प्रदर्शक हुदहुद ने कहा कि जो सच्चा प्रेमी होता है उसे अपने प्राणों को चिन्ता नहीं रहती है ।

प्रेमियों में उन्हीं लोगों की गणना होती है जो अपने प्राणों का मोह छोड़ देते हैं । प्राणों का मोह छोड़ देने पर जीव प्रणय का अधिकारी हो जाता है फिर वह चाहे पाप करे या उपासना ।

तेरा यह दिल ही तेरे प्राण का बैरी है । बस तू अपने प्राणों को दे दे, तेरा मार्ग साफ हो जायगा ।

यही प्राण तेरे मार्ग की रुकावटें हैं । इसको न्यौछावर कर दे और फिर पर्वा उठाकर उसका दर्शन कर ।

यदि तुझसे कहा जावे कि तू अपना धर्म न्यौछावर कर दे, अथवा अपने प्राण दे डाल ,

तो तू इसे बहुत ही तुच्छ समझ और इस माँग को पूरा कर दे । अर्थात् धर्म भी छोड़ दे और प्राण भी जाने दे ।

मुनकिरे गर गोयदी बस मुनकरस्त ।
 इश्क कू कज कुफो ईमों बरतरस्त ॥
 इश्क रा बा कुफो बा ईमों चे कार ।
 आशिके रा लहज्ज बा जों चे कार ॥
 आशिक आनश बर हमों खिर्मने जनद ।
 अरी बर फर्कश जन्द अर्दम जनद ॥
 दर्दों खूने दिल बे वायद इश्क रा ।
 किस्सण मुशकिल बे वायद इश्क रा ॥
 साक्रिया खूने जिगर दर जाम कुन ।
 गर नदारी दुर्द अज मा वाम कुन ॥
 इश्क रा दर्द बेवायद पर्दा सोज !
 गाह जों रा परदा दर गह परदा दोज ॥
 जर्गये इश्क अज हमा आफाक बह ।
 जर्गये दर्द अज हमा उश्शाक बेह ॥
 इश्क मगजे कायनात आमद मुदाम ।
 लेक इश्क आमद जे बेदर्दी तमाम ॥

यदि इस मत को न मानने वाला कोई कह बैठे कि यह तो बिल्कुल ही मूर्खता है। भला ऐसी भी कोई लगन है जो नास्तिकता तथा धर्म से बढ़कर है !

तो उससे कह दे कि प्रेम को धर्म और नास्तिकता से क्या सम्बन्ध है ! प्रेमियों को तो एक क्षण भर के लिये भी प्राणों का मोह नहीं होता है ।

यदि क्षण भर के लिये भी उसके दिल में प्राणों की ममता जागृत हो उठे तो उसके शिर पर आरा चला देने हैं । प्रेमी अपना सम्पूर्ण खलिहान स्वयम् जलाकर भस्म कर डालता है ।

प्रणय के लिये दर्द और हृदय का रक्त दोनों को न्यौछावर कर देना चाहिए । प्रणय के लिये सबसे कठिन बात सदैव अनुरक्त रहना है ।

ये साकी ! अब प्याले में हृदय का रक्त भर दे । यदि तेरे पास तलछट नहीं है तो हम से उधार ले ले ।

प्रेम के लिये, लगन के लिये ऐसा तलछट होना चाहिये जो पर्दे को ही जला डाले (अर्थात् कभी प्राणों को खा बैठे और कभी उसे फिर लौटा ले) कभी प्राण के पर्दे को फाड़ डाले और कभी उसे फिर सीदे ।

प्रेम का एक क्षण भी सारे संसार से बढ़कर मूल्य रखता है और तनिक सी पीड़ा सम्पूर्ण संसार के प्रेमियों से बढ़कर है ।

प्रणय इस सारे जगत का सार है ; परन्तु इसमें दया का लेशमात्र भी नहीं है ।

कुदसियाँ रा इश्क हस्तो दर्द नेस्त ।
 दर्द रा जुज आदमी दर खर्द नेस्त ॥
 हर के रा दर इश्क मोहकम शुद कदम ।
 दर गुजश्त अज कुफ़ ओ अज इस्लाम हम ॥
 इश्क सूये फ़क़ दर वोकुशायदत ।
 फ़क़ सूये कुफ़ रह बे नमायदत ॥
 इश्क रा बा काफ़िरी खेशी बुवद ।
 काफ़िरो ख़द गेने दरवेशी बुवद ॥
 चू तुरा ई कुफ़ ओ ई ईमाँ न माँद ।
 ई तने तू गुम शुदो ई जाँ न माँद ॥
 बाद अर्जी मर्दे शही ई कार रा ।
 मर्द बायद ई चुनी असरार रा ॥
 पाण दर नेह हम चो मरदानो मतर्स ।
 दर गुज़र अज कुफ़ो ईमानो मतर्स ॥
 चन्द तरसी दस्त अज तिफ़ली बेदार ।
 वाज़ शौ चू शेर मरदाँ दर शिकार ॥
 गर तुरा सद उक़्बा नागह ओफ़तद ।
 बाक न बुवद चू दर्ी रह ओफ़तद ॥

स्वर्गीय दूत प्रेमी हैं, परन्तु उनमें प्रणय पीड़ा नहीं है। पीड़ा के योग्य मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नहीं है।

जो प्रेम में संलग्न है, उसको धर्म पावन और नास्तिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।

प्रणय तेरे सम्मुख फ़कीरी का द्वार खोल देता है और तेरा यही पद तुझे वहाँ पहुँचा देता है जहाँ ईश्वर को नहीं माना जाता है।

प्रणय और नास्तिकता में प्रगाढ़ सम्बन्ध है। वास्तविक प्रेमी वही है जो नास्तिक है।

जब तेरे पास तेरा धर्म और तेरी नास्तिकता कुछ भी नहीं रह जायगा तो यह तेरा शरीर और तेरा प्राण कुछ भी नहीं रह जायगा।

इसके उपरान्त तू इसके योग्य होगा। ऐसे कार्यों के लिये मनुष्य का पराक्रमी होना आवश्यक है।

वीर मनुष्य के समान अपने मार्ग में आगे बढ़ और किसी प्रकार का भय मत कर। नास्तिकता और धर्म दोनों का त्याग कर दे और डर मत।

तू कब तक भय खाता रहेगा, इस बालकन के स्वभाव को छोड़ दे। वीरों के समान आखेट करने में अपनी धुन में मस्त हो जा।

यदि तेरे मार्ग में यकायक कठिनाइयाँ आ पड़ें तो भी उनका भय मत कर।

हिकायत शेख सनआँ

शेख सनआँ पीर अहदे खेश बूद ।
 दर कमालश उऊवे गोयम बेश बूद ॥
 शेख बूद अंदर हरम पंजाह साल ।
 बा मुरीदाँ चार सद साहब कमाल ॥
 हर मुरीदे कानेऊ बूदे अजब ।
 मी नआसूद अज रयाजत रोजो शब ॥
 हम अमल हम इल्म वा हम यार दाश्त ।
 हम अयाँ हम कश्क हम असरार दाश्त ॥
 कुर्व पंजह हज बजा आउरदा बूद ।
 उमरा उमरे बूद ता में करदा बूद ॥
 हम सलातो सौम बेहद दाश्त ऊ ।
 हेच सुन्नत रा करो न गुजाश्त ऊ ॥
 पेशवायाने कि दर पेश आमदन ।
 पेशे ऊ अज खेश बे खेश आमदन ॥

शेख सनआँ की कहानी और उनका एक स्वप्न देखना

शेख सनआँ अपने समय के एक बहुत बड़े साधु थे । उनके चमत्कार के विषय में जितना भी कहा जाय थोड़ा है ।

काबे की मस्जिद में पचास वर्षों तक उन्होंने फेरी लगाई और चार सौ पहुँचे हुए साधु शिष्य उनके साथ थे ।

आश्चर्य यह है कि जो कोई भी साधु उनके दर्शन करता था उनसे मिलता था वह फिर अहर्निश ध्यान-मग्न और ईश्वरीय भेद को जानने में व्यस्त रहता था ।

ज्ञान और विद्या के अतिरिक्त उनको अन्तर्दृष्टि बहुत ही पैनी थी और सब बातें उनपर प्रकट थीं । ठीक ठीक सभी भेदों का उन्हें ज्ञान था ।

पचास हज भी उन्होंने की थीं । और छ्वांटे हज में तो उन्होंने अपनी सारी अवस्था ही व्यतीत कर दी थी ।

व्रत और उपवास भी वह बहुत अधिक रखते थे और किसी भी व्रत को योंही खाली नहीं जाने देते थे ।

बड़े बड़े सन्यासी और त्यागी जो उनके पास आते थे वह अपने आप को भूल जाते थे ।

मूए मी बेशिगाफ़ मर्दे मानवी ।
 दर करामातो मुक्कामात आमदाँ ॥
 हर के बीमारी व सुस्ती याफ़े ।
 अज़ दमे ऊ तंदुरुस्ती याफ़े ॥
 खल्क़ रा किलजुमला दर शादी व ग़म ।
 मुक़तदाए वूद दर आलम अलम ॥
 गर चे खुद रा क़िदवए असहाब दीद ।
 चंद शब ऊ हम चुनों दर ख़ाब दीद ॥
 कज़ हरम दर राहश उफ़तादा मुक्काम ।
 सिजदा मी करदे बुते रा बर दवाम ॥
 चू बेदीदअँ ख़ाब बेदार अज़ जहाँ ।
 गुफ़त दर्दा ओ दरेगा की ज़माँ ॥
 यूसुफ़े सिद्दीक़ दर चाह ओफ़ाद ।
 उक़बए बस सअब दर राह ओफ़ाद ॥
 मी नदानम ता अज़ीं ग़म जाँ बरम ।
 तर्के जाँ गुफ़तम अगर ईमाँ बरम ॥

वह सैकड़ों प्रकार के चमत्कार भी दिखला सकते थे । योग विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे ।

उनमें वह शक्ति विद्यमान थी कि रोगी मनुष्य उनकी फूँक से स्वस्थ हो जाता था ।

संसार के दुःख और शाक उनके लिये समान थे । वह संसार में एक प्रसिद्ध गुरु थे ।

जब उन्होंने अपने आपको साधुओं में एक श्रेष्ठ साधु के रूप में देखा तो कई दिनों तक लगातार एक स्वप्न देखा,

कि काब्रे की मसजिद मे आते हुए मार्ग में वह एक स्थान पर पड़े हुए हैं और वहाँ एक मूर्ति की पूजा कर रहे हैं ।

जब संसार के रहस्यों से परिचित मनुष्य ने यह स्वप्न देखा तो वह दुःख से बोले शोक ! हाय शोक !

इस समय सच्चे यूसुफ़ कुण में गिर पड़े, और एक बहुत भयंकर घाटी मार्ग में आगई ।

मुझे यह ज्ञात नहीं है कि मैं इस शोक से अपने आपको कैसे बचा सकूँगा । और यदि किसी प्रकार धर्म को बचा भी लिया तो प्राण अवश्य ही देना पड़ेगा ।

नेस्त यकतन दर हमा रूप जमी ।
 कू नदारद उक़बए दर रह चुनी ॥
 गर कुनद आँ उक़बा क़तआँ जाएगाह ।
 राह रौशन गर्ददश ता पेशगाह ॥
 वर बेमानद दर पसे आँ उक़बा बाज़ ।
 दर उक़ूबत रह शवद वर वै दराज़ ॥
 आख़िरुलअम्र आँ बदानिश ओस्ताद ।
 वामुरीदाँ गुफ़ा कारेम ओस्ताद ॥
 मी बेबायद रफ़ सूए रूम ज़द ।
 ता शवद ताबीरे ई' मालूम ज़द ॥
 चार सद मर्दे मुरीदे मोतबर ।
 हमरही करदन्द बा ऊ दर सफ़र ॥
 मी शुदंद अज़ काबा ता अक़साए रूम ।
 तौफ़ मी करदंद सर ता पाए रूम ॥
 अज़ क़ज़ा रा वूद आलो मंज़रे ।
 वर सरे मंज़र निशस्ता दुख़तरे ॥
 दुख़तरे तरसाए रूहानी सिफ़त ।
 दर रहे रूहुलअश सद मारेफ़त ॥

समस्त संसार में, कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे मार्ग में ऐसी घाटी न मिलती हो ।

यदि इस घाटी को वह पार कर जाता है तो अपने अभीष्ट तक पहुँचने का सीधा मार्ग उसे प्राप्त हो जाता है ।

यदि उस घाटी में वह भटक जाता है तो मुसीबत के कारण उसका रास्ता लम्बा हो जाता है ।

उन्होंने अपने आस पास बैठे हुए साधुओं से कहा कि मुझे एक बड़ा काम पड़ गया है ।

उसके भेद को समझने के लिये मुझे शीघ्र ही रूम को ओर जाना है ।

शेख के साथ चार सौ बड़े बड़े साधु हो लिये ।

वह काबे से लेकर रूम की अन्तिम सीमाओं तक और समस्त रूम में भ्रमण करते हुए गये ।

संयोग से एक दिन उन्होंने एक बहुत ऊँची अट्टालिका देखी, जिसमें एक लड़की बैठी थी ।

वह लड़की (गुवरा) ईसाई थी । पवित्रता की उज्ज्वलता उसके मुख से प्रकट हो रही थी और वह अपने धर्म तथा आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली सैकड़ों बातों से भली भाँति परिचित थी ।

दर सिपहरे हुस्न दर बुर्जे जमाल ।
 आफताबे बूद इल्ला बेजवाल ॥
 आफताब अज रश्के अक्से रूए ऊ ।
 जर्दतर अज आशिकाने कूए ऊ ॥
 हर कि दिल दर जुल्के आँ दिलदार बस्त ।
 अज खयाले जुल्फ ऊ जुन्नार बस्त ॥
 हर कि जाँ दर लाले आँ दिलबर निहाद ।
 पाए दर रह ना निहादा सर निहाद ॥
 चूँ सबा अज जुल्के आँ मुशकीं शुदे ।
 रूम अज हिंदू सिफत पुरचीं शुदे ॥
 हर दो चशमश फितनए उश्शाक बूद ।
 हर दो अबरुयश बखूबी ताक बूद ॥
 चूँ नज़र बर रूए उश्शाक ऊ फिगन्द ।
 जाँ बदस्ते गमजा बर ताक ऊ फिगन्द ॥
 अबरुयश बर माह ताके बस्ता बूद ।
 मरदुमे बर ताके ऊ बनिशिस्ता बूद ॥

वह बड़ी ही रूपवती और लावण्यमयी थी । उमका सौंदर्य घटने बढ़ने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान था ।

सूर्य, उसके सौन्दर्य के आगे लज्जित होकर फीका पड़ रहा था और उसकी प्रभा, बाला के उन प्रेमियों के रंग से भी अधिक जर्द हो रही थी जो उसकी गली में पड़े हुए थे ।

जिस किसी ने भी उम प्रियतमा को प्रेम की दृष्टि से देखा वह फिर उसी के खयाल में डूबा रह गया ।

जिस मनुष्य ने अपने प्राण उसके ओठों से लगा दिये, उसने प्रेम मार्ग में क़दम रखने से पहले ही अपना शिर दे डाला ।

जब शीतल पवन उमकी जुल्कों से कस्तूरी की सुगन्ध लेकर उड़ती तो मारे देश में एक प्रकार की आनन्द दायक मस्ती की लहर सी दौड़ जाती ।

उस प्रियतमा के वे दोनों नेत्र प्रेमियों को आकुल बनाने वाले थे और उसके मुख पर की बिखरी हुई अलकें उन्हें और भी बेचैन कर रही थीं । उसकी दोनों भँवों की शोभा लासानी थी ।

जब वह अपने प्रेमियों की तरफ़ दृष्टि संचालन करती थी तो उनके प्राण व्याकुल होकर निकलने के लिये फड़फड़ाने लगते थे ।

उसकी भँवों ने चंद्रमा के ऊपर एक ताक़ सा बना दिया था और उसमें एक मनुष्य बैठा हुआ था ।

मरदुमे चशमश चो कर्दे मरदुमी ।
 सैद कर्दे जाने सद सद आदमी ॥
 रूप ऊ दर जेरे जुल्के ताबदार ।
 बूद आतिश पारए बस आबदार ॥
 लाले सैराबश जहाने तिश्ना दाश्त ।
 नरगिसे मस्तश हज्जारों दश्ना दाश्त ॥
 हर कि सूप चश्मए ऊ निश्ना शुद ।
 दर दिले ऊ हर मेजह सद दश्ना शुद ॥
 गुफ़ रा चूँ बर दहानश रह नबूद ।
 वज्र दहानश हर कि गुफ़ आगह नबूद ॥
 हमचु शक्ले सोजनी शक्ले दहाँश ।
 बसता जुन्नारे चु जुल्कश बर मियाँश ॥
 चाहे सीमीं दर जनखदौं दाश्त ऊ ।
 हमचु ईसा दर सखुन जाँ दाश्त ऊ ॥
 सद हज्जारों दिल चुँ यूसुफ़ गर्के खँ ।
 ओफ़तादा दर चहे ऊ सर निगँ ॥

उसके नेत्र की पुतली जब अपनी वीरता प्रदर्शित करती थी तो सौ सौ आदमियों के प्राणों का आखेट करती थी ।

उसका मुख उसकी काली काली अलकों के नीचे अत्यन्त प्रकाशित हो रहा था ।

उसके सुन्दर ओंठ एक संसार को प्रेम से परिपूर्ण कर देने वाले थे और उसकी मतवाली आँखों में महसूस खंजरों की काट छिपी हुई थी ।

जो मनुष्य उसके सौन्दर्य रूमी चश्मे के जल को पीना चाहता था उसके हृदय के अन्दर प्रतिपल सौ खंजरों के चोट की पीड़ा होती थी ।

जब वह बोलती नहीं थी तो उस समय उसके मुख का पता भी नहीं चलता था ।

उसका मुख एक सुई की नोक के समान था । वह अपनी कमर में अपनी अलकों के रंग का काला डुपट्टा बाँधे हुए थी ।

और उसकी ठुड़ी में सफ़ेद चाँदी का सा गड्ढा था । वह ईसा के समान मृतकों को भी जीवन प्रदान करने वाली मीठी बातें किया करती थी ।

सैकड़ों मनुष्य उसके प्रणय में मतवाले होकर यूसुफ़ के समान कुएँ में गिर पड़े थे ।

गौहरे खुरशीदवश दर मूए दाश्त ।
 बुरक़ाए शैरे सियावर रूए दाश्त ॥
 दुखतर तरसा चु बुर्का वरगिरिफ़ ।
 बंद बन्दे शैख आतश दर गिरिफ़ ॥
 चू नमूद अज़ ज़ेरे बुरका रूए ख़ेश ।
 बस्त सद जुआर अज़ यक मूए ख़ेश ॥
 गरचे शैख आँजा नज़र दर पेश कर्द ।
 इश्के तरसाज़ादा कारे ख़ेश कर्द ॥
 शुद दिलश अज़ दमनो दर पा ओम्दाद ।
 जाए आतश वृदो वर जा ओम्दाद ॥
 हरचि वृदश सर बसर नावृद शुद ।
 जातशे सौदा दिलश पुर दृद शुद ॥
 इश्के दुखतर कर्द ग़ारत जाने ऊ ।
 कुफ़ रेख़्त अज़ जुल्फ़ दर ईमाने ऊ ॥
 शैख ईमाँ दाद तरसाई ख़रीद ।
 आफ़ियत वफ़रोख़्त रुस्वाई ख़रीद ॥
 इश्क वर जानो दिले ऊ चीर शुद ।
 ता ज़े दिल नौमीद अज़ जाँ सीर शुद ॥

उसके काले केशों में सूर्य के समान चमकदार एक मोती लगा हुआ था और वह अपने मुख पर काले बालों का घूँघट डाले हुए थी ।

उस ईसाई वाला ने जब अपने मुख से घूँघट हटा दिया तो शैख के शरीर के प्रत्येक जोड़ में आग लग गई ।

घूँघट उसके मुख से जैसे ही दूर हुआ वैसे ही शैख उसके प्रणय-नाश में बँध गया । उसने अपने एक ही बाल से सहस्रों जनेऊ पहिना दिये ।

शैख ने यद्यपि अपनी दृष्टि वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उस बाला का प्रेम अपना काम कर गया ।

शैख का हृदय उसके वश में नहीं रहा और फिर वह उस बाला के पैरों पर गिर गया । उसका हृदय जल रहा था वह ठीक समय पर उचित स्थान पर जा गिरा ।

जो कुछ भी उसके पास था यह सब नष्ट होगया और प्रणय की अग्नि से उसका हृदय जलने लगा ।

उस लड़की के प्रेम ने उसके प्राण लूट लिये और उसकी काली अलकों ने उसका धर्म देकर उसका धर्म खीन लिया ।

शैख ने बेचैनी लेली और अपने मुख को बेचकर अप्रतिष्ठा मोल ले ली । उसने ईमान बेच बुतपरस्ती खरीद ली ।

प्रणय का अधिकार उसके प्राणों और हृदय पर हो गया । यहाँ तक कि वह अपने दिल से निराश और जान से तंग आ गया ।

गुफ़ चूं दीं रफ़ू चे जाये दिलस्त ।
 इश्के तरसा जादा कारे मुश्किलस्त ॥
 चूं मूरीदानश चुनौ दीदन्द जार ।
 जुमला दानिस्तन्द कुक़तादस्त कार ॥
 सर बसर दरकारे ऊ हैरौं शुदन्द ।
 सर नगं गश्तन्द व सर गरदौं शुदन्द ॥
 पन्द दादन्दश बसे सूदे न दाश्त ।
 वृदनी चूं वृद बेहबूदे नदाश्त ॥
 हर के पंदश दाद फ़रमौं मी नबुर्द ।
 जाँ के दुर्दश हेच दरमौं मी न बुर्द ॥
 आशिके आशुफ़ा फ़रमौं चूं वरद ।
 दर्द दरमौं सोज़ दरमौं चूं वरद ॥
 वृद ता शब हम् चुनौं रोज़े दराज़ ।
 चश्मा बर मंज़र दहानश मोंदा बाज़ ॥
 हरचिरागे कौं शब अज़ अख़तर गिरिफ़ ।
 अज़ दिले औं पीरेग़ामख़र गिरिफ़ ॥

उसने कहा कि जब धर्म ही चला गया तो फिर दिलकी क्या चिन्ता है । ईसाई वाला का प्रेम बड़ी कठिन समस्या है ।

जब उसके चेलों ने उसे इस प्रकार व्याकुल देखा तो सबने समझ लिया कि कोई बड़ी जटिल समस्या आ उपस्थित हुई है ।

सबके सब उसके विषय में मोच करने लगे और सिर झुकाकर बैठ गये ।

सबने शेख से बहुत कुछ कहा, शिक्षाएँ दीं, पर उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ । जो होनी थी वह हो चुकी थी, अब उसके लिये कुछ किया नहीं जा सकता था ।

किसी की भी शिक्षा का असर उसके ऊपर नहीं हुआ । न वह किसी का कहना ही मानता था । उसे ऐसा रोग हो गया था जिसकी कोई औषधि नहीं थी ।

आकुल हृदय प्रणयी किसी से आज्ञा किस प्रकार ले और उस रोग पर, जो सभी औषधियों को व्यर्थ प्रमाणित कर चुका हो, कोई औषधि अपना असर किस प्रकार दिखलावे !

बहुत दिनों तक शेख इसी अवस्था में रहा । उसकी आँख उम कोठ पर लगी रहती और मुख आश्चर्य से खुला रहता ।

रात्रि अपने वज्रस्थल पर सहस्रों तारा रूपी दीपकों को धारण करके आती पर ऐसा ज्ञान होता था मानों वह उसी दुखित हृदय वृद्ध के हृदय की अग्नि से जलाए गए हों ।

यकदमश नै ख्वाब बूदो नै करार ।
मी तपीद अज इश्को मी नालीद जार ॥
चूं शबे तारोक दर कारे सियाह ।
शुद निहाँ चूं कुफ़।दर जेरे गुनाह ॥
इश्के ऊ आँ शब यके सद बेश शुद ।
लाजरम यकवारगी अज खेश शुद ॥
हम दिलज ख़ुद हम जे आलम बर गिरिफ़्त ।
खाक बरसर कदा मातम दर गिरिफ़्त ॥
गुफ़्त यारब इम शबम रा रोज़ नेस्त ।
या मगर शमए जहाँ रा सोज़ नेस्त ॥
दर रियाजत माँदाअम शवहा बसे ।
ख़ुद निशाँ न देहद चुनीं शब रा कसे ॥
हम चां शमा अज सोखतन ताबम नमाँद ।
वर जिगर जुज ख़ूने दिल आवम नमाँद ॥
हम चो शमा अज सोज़ तुफ़म मी कुशन्द ।
शब हमी सोज़न्दो रोज़म मी कुशन्द ॥

क्षण भरके लिये भी उसकी आँख नहीं लगती थी और न कभी उसे चैन ही मिलता था । प्रेम व्यथा से तड़पता और खूब रोता था ।

जब रात्रि, काले आवरण में इस प्रकार छिप गई जिस प्रकार धर्म पापों के अन्दर छिप जाता है ,

तब शेख की पीड़ा मौ गुर्ना और बढ़ गई और इसीलिये वह यकायक मूर्च्छित हो गया ।

उसने भगवान तथा इस संसार दोनों से अपने दिल का हटा लिया । सिर पर धूल डाल ली और विलाप करना प्रारम्भ कर दिया ।

“ऐ ख़ुदा ! क्या इस रात के बाद दिन नहीं होगा अथवा दुनिया का दीपक अब जलता नहीं है ।

मैंने बहुत सी रातें जागकर प्रार्थना करने में व्यतीत कर दीं, परन्तु इतनी भयानक और लम्बी रात मैंने अभी तक नहीं देखी । और न इस जीवन में सुनी ही है ।

दीपक के समान जलते हुए मुझे बहुत समय हो चुका है और अब अधिक जलने की सामर्थ्य नहीं रही है । कलेजे पर दिल के रक्त के अतिरिक्त अब और कोई पानी नहीं रहा है ।

दिये के समान जलने की गर्मी मुझे मारे डालती है । रात शमा की तरह मुझको जलाती है और दिन मुझे मारे डालता है ।

जुमलए शब दर शबे खूं मौँदा अम ।
 पाए ता सर गार्का दर खूं मौँदा अम ॥
 हर दमज शब सद शबे खूं बुगज़रद ।
 मी न दानम रोज़े मन चूं बुगज़रद ॥
 हर कि रा यक शब चुनीं रोज़ी बुवद ।
 रोज़ो शब कारश जिगर सोजी बुवद ॥
 रोज़ो शब भिसयार दर तब वूदा अम ।
 मन वज़ारे खेश इम शब वूदा अम ॥
 कारे मन रोज़े कि मी परदाख़तंद ।
 अज बराए इम शबम मी साख़तंद ॥
 यारब इम शब रा न खाहद वूद रोज़ ।
 या मगर शमए फ़लक रा नेस्त सोज ॥
 यारबी चंदी अलामत इमशबस्त ।
 या मगर रोज़े कयामत इमशबस्त ॥
 या जे आहम शमा गरदूं मुर्दा शुद ।
 या जे शर्मे दिलबरम दर पर्दा शुद ॥

सारी रात में अफ़मोस में डूबा हुआ पड़ा रहा हूँ। मर से पैर तक उम में मना रहा हूँ।

रात का प्रत्येक क्षण मुझ पर ग़म की वर्षा करता है। न मालूम दिन कैसे कटेगा।

यदि किसी मनुष्य को ऐसी एक रात भी व्यतीत करनी पड़े तो वह रात-दिन अपने कलेजे को जलाता ही रहे।

अहर्निश मैं एक प्रकार की भयंकर जलन में जलता रहा हूँ और आज की रात को मैं केवल अपने बल के कारण बच गया हूँ।

ऐसा मालूम होता है कि जन्म के दिन मेरे भाग्य में इसी रात का मरण लिख दिया गया।

इस रात को भी, ए खुदा, मालूम होता है दिन न चाहिये। अथवा आकाशी दीप भी इस समय जल नहीं रहा है।

ए खुदा! इस रात में इतनी निशानियाँ (लक्षण) मौजूद हैं कि उनके देखने से यह क़यामत (प्रलय) का दिन ज्ञात होता है।

यह भी हो सकता है कि आकाशी दीप मेरी आह की हवा लगने से बुझ गया हो अथवा मेरी प्रियतमा के मुख को देख कर लज्जित होकर पर्दे के अन्दर छिप गया हो।

शब दराजस्तो सिबह चूं मूए ऊ ।
 वरना सद रह मदुमे बे रूप ऊ ॥
 मी बसोज़म इम शबज सौदाए इश्क ।
 मी नदारम ताक़ते गोशाए इश्क ॥
 अक़ल कू ता इल्म दर पेश आवरम ।
 या व हीलत अक़ल बा खेश आवरम ॥
 दस्त कू ता खाके रह बर सर कुनम ।
 या जे ज़ेरे खाको खूं सर बर कुनम ॥
 पाए कू ता बाज ज़ोयम कूए यार ।
 चश्म कू ता बाज बीनम रूप यार ॥
 यार कू ता दिल देहद दरयक गमम ।
 अक़ल कू ता दस्त गीरद यक दमम ॥
 ज़ोर कू ता नालओ ज़ारी कुनम ।
 होश कू ता साजे हुशायारी कुनम ॥
 रक्तु सभो रक्तु अक़लो रक्तु यार ।
 ई चे दर्दस्त ई चे इश्कस्त ई चे कार ॥

उसके बाल के समान कालो रात लम्बी है। यदि यह बात न होती तो मैं अभी तक उसका मुख बिना देखे हुए सौ बार मर चुका होता।

आज की रात मैं प्रणय की जलन में जल रहा हूँ और अब इस शरीर में प्रेम का आक्रमण सहन करने की शक्ति नहीं है।

वह ज्ञान कहाँ है ताकि उसकी सहायता से विद्या अथवा किसी यत्न से बुद्धि को अपने पास लाऊँ !

वह हाथ कहाँ है कि जिससे गली की मिट्टी सर पर डाल लूँ अथवा मिट्टी और रक्त के नीचे से शिर निकाल लूँ !

वह पैर कहाँ कि जो यार की गली खोज ले। वह नेत्र कहाँ जो उसके चेहरे को देख ले !

इस समय गम में (शोक में) घुल रहा हूँ। ऐसा कोई भी दोस्त नहीं देखता जो मेरी दिलजोई करे। बुद्धि कहां है जो आकर मेरी सहायता करे।

वह सामर्थ्य कहाँ है कि जिससे रोऊँ और चिल्लाऊँ ! होशियार करने वाला होश कहाँ है !

सत्र चला गया, बुद्धि भी विलुप्त होगई, और दोस्त भी चला गया। यह कैसा प्रेम है, यह कैसा अन्धेर है और यह कैसा दुख है !”

जमा शुदने मुरीदान बगिर्द शेख वनसोहत करदन ऊ रा

जुमलए यारों बदिलदारीए ऊ ।
जमा गशतंद आँ शबज जारीए ऊ ॥
हमनशीने गुफ्तश ए शेखे केबार ।
खेजो ई बसवास रा गुस्त वेआर ॥
शेख गुफ्तश इमशबज खने जिगर ।
करदा अम सद बार गुस्त ऐ बेखबर ॥
वाँ दिगर गुफ्ता कि तसबीहत कुजास्त ।
कै शवद कारे तो बेतसबीह रास्त ॥
गुफ्त तसबीहम बेयफगदम जेदस्त ।
ता तवानम वर मियाँ जुआर बस्त ॥
वाँ दिगर यक गुफ्तश ऐ पीरे कुहन ।
खेजो दर खिलवत खुदारा सिजदा कुन ॥
गुफ्त अगर महरूप मन ई जासते ।
सिजदा पेश रूप ऊ जेवासते ॥
आँ दिगर गुफ्ता कि ऐ दानाए राज ।
खेजो खुद रा जमा कुन अन्दर नमाज ॥

बेलों का शेख को घेर कर शिक्षा देना

शेख के जितने भी मित्र थे वह सभी उसे सान्त्वना देने लगे और उसे आँसू बहाते देख कर सब उसके पास आकर इकट्ठे होगये ।

एक सखा ने उससे कहा कि ऐ बड़े साधु ! उठ बैठ और (नहा ले) इस वसवसे को हृदय से निकाल दे ।

शेख ने उत्तर दिया कि मैंने आज की रात अपने कलेजे के खून से सौ बार स्नान किया है ।

एक दूसरे ने कहा कि आपकी माला कहाँ है । बिना उसके सब काम ठीक कैसे चलेंगे ?

उसने कहा मैंने फेंक दी है, ताकि कमर में जनेऊ पहन सकूँ ।

उनमें से एक फिर बोल उठा कि हे वृद्ध फकीर ! उठ, और खुदा के सामने सर मुका ।

उसने उत्तर दिया कि यदि वह सुन्दरी मेरी प्रियतमा यहाँ मौजूद होती तो उसके सामने सर मुकाते हुए मुझे अच्छा मालूम होता ।

तब तक किसी और ने कहा कि ऐ भेदों के ज्ञाता ! उठो और दिल लगाकर नमाज पढ़ो ।

गुफ़ कू मेहराबे अबरूए निगार ।
 ता न बाशद जुज़ नमाज़म हेच कार ॥
 वॉ दिगर गुफ़श पशोमानीत नेस्त ।
 ज़र्रेण दहें मुसलमानीत नेस्त ॥
 गुफ़ कस न बुवद पशीमों बेश अज़ी ।
 ता चेरा आशिक़ न वूदम पेश अज़ी ॥
 वॉ दिगर गुफ़तश कि देवत राह ज़द ।
 तीरे ख़ज़लौ वर दिलत नागाह ज़द ॥
 गुफ़ देवे कू रहे मा मी ज़नद ।
 गो बेज़न अलहक़ कि ज़ेबा मी ज़नद ॥
 वॉ दिगर गुफ़ा कि हर कि आगाह शुद ।
 कौ चुनौ शेख़े चुनीं गुमराह शुद ॥
 गुफ़त मन बस फ़ार्ग़म अज़ नामो नंग ।
 शीशए सालूस बिशिक़स्तम बसंग ॥
 औ दिगर गुफ़श कि चाराने क़दीम ।
 अज़ तो रंज़ूरन्दो मौंदादिल दो नीम ॥
 गुफ़ चं तरसा बचा खुशदिल बुवद ।
 दिल ज़े रंजे ईनो औ गाफ़िल बुवद ॥

उसने कहा कि प्रियतमा के भवन की महराब कहाँ है ताकि उसमें नमाज़ पढ़ने के अतिरिक्त और मेरा कोई काम ही न रहे ।

किसी और ने कहा कि तुझे ऐसा करते हुए लज्जा भी नहीं आती । मुसल्मान होने की तुझे अणमात्र भी चिन्ता नहीं है ।

शेख़ ने कहा कि उससे अधिक और किसका हाल बदतर होगा जो उसका आशिक़ न हो ।

इसके उपरान्त किसी और ने कहा कि शैतान ने तेरा रास्ता रोक दिया है और तेरे हृदय पर यकायक बर्बादी का तीर मार दिया है ।

उसने उत्तर दिया कि वह शैतान जो हमेशा लूटता है बहुत ठीक करता है । उससे कह दो कि लूटे ।

किसी दूसरे ने कहा कि यदि किसी को यह ख़बर मिल गई कि इतना बड़ा पीर इस प्रकार पथ-भ्रष्ट हो गया है तब क्या होगा ।

उसने जवाब दिया कि इज्जत और नाम से मैं रहित हो गया हूँ और मैंने शीशे “ सालूस ” को पत्थर से तोड़ दिया है ।

किसी और ने कहा कि पुराने मित्र तुझसे नाराज़ हैं । उनके दिल टूट गये हैं ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब ईसाई की लड़की राज़ी हो जायगी तब दिल में किसी के भी नाराज़ होने का ख़याल न रह जायगा ।

ओँ दिगर गुफ़ा कि बा यारों बेसाज ।
 ता खेम इमरोज सूए काबा बाज ॥
 गुफ़ा अगर काबा न बाशद दैर हस्त ।
 होशियारे काबा अम दर दैर मस्त ॥
 ओँ दिगर गुफ़त ई ज़मों कुन अजम राह ।
 दर हरम बेनशीनो उफ़े खुद बंस्त्राह ॥
 गुफ़ा सर बर आसताने ओँ निगार ।
 उफ़ ख़ाहम ख़ास्त दस्तज़ मन बेदार ॥
 ओँ दिगर गुफ़ा कि दोज़ख़ दूर हस्त ।
 मर्दे दोज़ख़ नेस्त हर कू आगाहस्त ॥
 गुफ़ा अगर दोज़ख़ बुबद हमराहे मन ।
 हफ़ दोज़ख़ सोज़द अज यक आहे मन ॥
 ओँ दिगर गुफ़ा बउम्मीदे बहिश्त ।
 बाज गरदो तौबा कुन जीकारे जिश्त ॥
 गुफ़ा चू यारे बहिश्ती रूप हस्त ।
 गर बहिश्ते बाएदम ओँ कूप हस्त ॥

दूसरा बोला कि अब आकर साथियों से मिल जा ताकि हम सब फिर काबे को चले ।

पीर ने उत्तर दिया काबा न सहो मन्दिर तो मौजूद है । मैं मन्दिर में मस्त होकर काबे से भी अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ ।

तब किसी दूसरे ने कहा कि उठिये और चल कर मस्जिद में बैठकर ज़मा प्रार्थना कीजिये ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि यदि ऐसा ही करना होगा तो उस प्रियतमा की चौखट पर शिर रखकर करूँगा ।

किसी दूसरे ने कहा कि सब कामों से जानकारी रखते हुये इस नर्क में क्यों आ पड़े हो ।

शेख़ ने जवाब दिया कि यदि नर्क मेरे पास आ जावे तो मेरी एक ही आह से जल कर भस्म हो जावे ।

किसी ने कहा कि स्वर्ग की आशा में इस बुरे काम से हाथ खींच ले और अपने को सुधार ।

उत्तर मिला कि मेरे लिये स्वर्ग के समान सुन्दर मुख वाली प्रियतमा मौजूद है और अगर उससे भी ज्यादा किसी वस्तु की आवश्यकता होगी तो उसकी गली उपस्थित है ।

आँ दिगर गुफ़्तश कि अज़ हक़ शर्मदार ।
 हक़ तआला रा बख़ुद आजर्मदार ॥
 गुफ़्त ई आतश चु हक़ दर मन फ़िगंद ।
 मन बख़ुद न तवानम अज़ गरदन फ़िगंद ॥
 आँ दिगर गुफ़्तश बेरौ ऐ मन बेबाश ।
 बाज़ ईमौ आवरो मोमिन बेबाश ॥
 गुफ़्त जुज़ कुफ़ अज़ मनै हैरौ मखाह ।
 हर कि काफ़िर शुद अज़ो ईमौ मखाह ॥
 चू सख़ून दर वै नआमद कारगर ।
 तन जदंद आख़िर बदौ तीमारदर ॥
 मौजज़न शुद परदग़ दिल शाँ जे खूँ ।
 ता चे आयद अज़ पसे पर्दा बुरूँ ॥
 तुर्बे रोज़ आमद चु बाज़रीँ सिपर ।
 हिंदुवे शब रा ब तेरा अफ़गंद सर ॥
 रोज़े दीगर कीं जहाने पुर गुरुर ।
 शुद जे बहरे चश्मए ख़ुर ग़र्के नूर ॥
 शेख़ ख़िलवतसाज़ कूए यार शुद ।
 वा सगाने कूए ऊ दरकार शुद ॥

कोई फिर कहने लगा। खुदा का लिहाज़ रख और उसको अपने ऊपर दयालु रखने का प्रयत्न कर ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब खुदा ही ने मेरे दिल में यह आग पैदा कर दी है फिर धर्म और ईमान के पीछे क्यों पड़ूँ ।

दूसरे ने कहा कि इस से बाज़ आ और धार्मिक बन जा ।

उसने कहा मुझे कुफ़्र के सिवा कुछ न चाहिये । ऐसा जो काफ़िर हो उस से धर्म की उम्मीद न कर ।

जब किसी की बात ने उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं किया तो उसके साथ दया दिखलाने वाले उसके साथी सब चुप होकर बैठ रहे ।

उनके दिलों में रक्त का प्रवाह जोरों से हो रहा था और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें भविष्य क्या रँग लाता है ।

दिवस रूपी यवन सोने की ढाल लिये हुये आया और उसने रजनी रूपी हिन्दू का शिर अपनी तलवार से काट डाला ।

दर्प पूर्ण जगत पुनः भगवान भास्कर की उज्ज्वलता में मौजें मारने लगा ।

शेख़ ने अपना आसन उसी प्रियतमा की गली में जमा दिया और उसको गली के कूकरों के साथ निवास करने लगा ।

मोतकिफ बेनशिस्त दर त्ताके रहश ।
 हमनु मूए गश्त रूए चूं महश ॥
 कूर्बे माहे रोखो शब दर कूए ऊ ।
 सन्न कर्दञ्ज आफताबे रूए ऊ ॥
 आक्रमत बीमार शुद बेदिल सितौंश ।
 हेच बर नरफ सरअज आसतौंश ॥
 बूद त्ताके कूए आँ बुत बिस्तरश ।
 बूद बालों आसताने आँ दरश ॥
 चूं न बूद अज कूए ऊ बुगुजश्तनश ।
 दुखतरा आगह शुद जे आशिक गश्तनश ॥
 सोशतन रा आंजमी कर्द आँ निगार ।
 गुफ़ रोखा अज चे गश्ती बेकरार ॥
 कै कुनद ए अज शराबे इश्क मस्त ।
 जाहिदाँ दर कूए तरसायाँ नेशस्त ॥
 गर बजुल्फ़म शेख इकरार आवरद ।
 हर दमश दीवानगो बार आवरद ॥
 शेख गुफ़श चूं ज़बूनम दीदर्द ।
 लाज़रम दुजदीदा दिल दुजदीदर्द ॥

उसका चन्द्रमा के समान श्वेत और चमकदार मुख बालों के समान काला पड़ गया । वह रास्ते में मिट्टी पर बैठ गया ।

लगभग एक मास वह उस गली में उसी प्रियतमा के पुनः दर्शन की प्रतीक्षा में पड़ा रहा ।

अन्त में बीमार हो गया । परन्तु उसकी चौखट में अपना सर न उठाया ।

यार की गली की धूल उसका बिस्तर थी । उसके द्वार की चौखट उसके लिये तकिया के समान थी ।

वह उस गली से कहीं जाता हो न था । अन्त में वह ईसाई बाला उसके पास पहुँची,

और उस पर दया भाव प्रदर्शित करने हुये पृष्ठा पे शेख तू किस लिये बेचैन हो रहा है ?

ऐ प्रणय की मदिरा में मस्त साधु, पाक मुसलमान कभी ईसाइयों की गली में भी बैठा करते हैं !

हाँ, यदि मेरी काली अलकों पर, तेरा दिल आगया है तो सदैव के लिये वह पागल बना रहेगा ।

शेख ने कहा कि तूने मुझको दुर्बल देख लिया है । मैं वृद्ध आशिक हूँ और कमजोर हूँ ।

या दिलम देह बाज या बा मन बेसाज ।
 दर नियाजे मन निगर चर्दी मनाज ॥
 जौं फ़िशानम बर तो गर फ़रमौं दिही ।
 बर तो खाही बाजम अज लब जौं दिही ॥
 ऐ लबो जुलफ़त ज़ियानो सूदे मन ।
 रूयो क़ूयत मक़सदो मक़सूदे मन ॥
 गह जे ताबे जुल्फ़ दर ताबम मकुन ।
 गह जे चश्मे मस्त दर स्नाबम मकुन ॥
 दिल चु आतश दीदा चूं अब्र अज तूअम ।
 बेकसो बेयारो बेसब्र अज तूअम ॥
 बेतो बर जानम जहाँ बिक़रोख़तम ।
 को सबी कज़ इश्क़े तो बरदोख़तम ॥
 हमचो बारौं अश्क मो बारम जे चश्म ।
 जाँ के बेतो चश्म ई दारम जे चश्म ॥
 दिल जे दस्तो दीदा दर मातम बेमाँद ।
 दीदा रूयत दीदा दिल दर राम बेमाँद ॥

या तो दिल वापिस करदे या मेरी हो जा । मेरी मोहब्बत को देख और इतना नाज न कर ।

अगर तू आज्ञा दे तो मैं अपनी जान को न्योछावर कर दूँ और अगर तू चाहे तो मुझे अपने ओठों से फिर नई जान बरस दे ।

ऐ प्रियतमा तेरे होठ और तेरी काली अलकें ही मेरी हानि और लाभ के कारण हैं । और तेरा मुख और गला मेरा अभीष्ट है ।

कभी तू अपनी घुंघराली जुल्फ़ों से मुझे बेचैन कर देती है और कभी अपनी मदमाती आँखों से मुझे बेहोश कर देती है ।

तेरो वजह से मेरे दिल में धक् धक् करके आग जल रही है । तूने ही मुझे बेख़बर बना दिया है ।

तेरी जुदाई में मैंने अपनी जान की भी सुधि भुला ही है । और देख तेरे प्रेम में मैंने कौन सी दौलत हासिल की है ।

मैं बादल की तरह अपनी आँखों से आँसू बरसाता हूँ, क्योंकि जब तू नहीं है तब उन आँखों से यही उम्मीद करता हूँ ।

मेरा दिल मुझसे किनारा कर गया और आँख उसके दुख में बेचैन हो गई । आँख ने तेरा मुख क्या देखा कि वह सदैव के लिये मेरे दिल को दुख में फँसा गई ।

उंचे मनज दीदा दीदम कस नदीद ।
 उंचे मनज दिल कशोदम की कशीद ॥
 अज दिलम जुज खूने दिल हासिल न मुंद ।
 खूने दिल ताकै खुरम चूं दिल न मुंद ॥
 बेश अज्जीं बर जाने ई मिसकीं मजन ।
 दर फुतूदे ऊ लकद चर्ही मजन ॥
 रोज़गारे मन वशुद दर इंतज़ार ।
 गर बुवद वस्ले बेआयद रोज़गार ॥
 हर शबे बर जाँ कर्मी साजो कुनम ।
 बर सरे कूये तो जाँ बाजो कुनम ॥
 रूये बर खाके दरत जाँ मीदेहम ।
 जाँ ब निखे खाक अरजो मीदेहम ॥
 चन्द नालम बर दरत दर बाज कुन ।
 यक दमम बा खेशतन दम साज कुन ॥
 आफ़ताबी अज तो दूरी चूं कुनम ।
 ज़रा अम बे तो सबूरी चूं कुनम ॥

जो कुछ मैंने अपनी इन आँखों से देखा है वह किसी को भी दिखलाई नहीं दिया और जो बोझ मैंने अपने दिल की वजह से उठाया है वह किसी ने भी नहीं उठाया है ।

मेरे दिल में अब खून के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रहा है । मैं किस दिल का खून पान करूँ जब कि मेरे पास दिल ही नहीं है ।

इससे भी बढ़ कर अब इस दीन की जान के ऊपर हमला न कर और इसको भी जीतने का यत्न न कर ।

मेरी सारी उम्र इन्तिज़ारी में बीत गई अब यदि मिलन हो जाये तो फिर दिन निकल आयेगा ।

प्रत्येक रात को मैं अपनी जान दे देने की तय्यारी करता हूँ और तेरी गली में जान पर खेलना चाहता हूँ ।

तेरे दर्वाज़े के सामने ही पड़ा रहकर मैं अपने प्राणों को गँवा देना चाहता हूँ और मिट्टी के मोल अपनी जान को बेच रहा हूँ ।

भला, कब तक मैं इस प्रकार तेरे द्वार पर बैठा हुआ आँसू बहाता रहूँ ? थोड़ी देर के लिये ही इस दर्वाज़े को खोल दे और क्षण भर के लिये मुझसे दो बोल बोल दे ।

तू सूरज है, मैं तुझसे कुछ अधिक दूरी पर नहीं हूँ । मैं तेरे लिये ज़रों के समान हूँ, फिर तेरे पास बिना आये हुए कैसे रह सकता हूँ ।

गरचे हम चं साया अम दर इजतराब ।
 बरजे हम अज रोजनत चं आफ़ताब ॥
 हफ़ गरदं रा बर आरम ज़ेरे पर ।
 गर फ़ेरोद आरी बरी सर गश्ता सर ॥
 मी रवम दर खाक जाने सोख़ता ।
 जातशे आहम जहाने सोख़ता ॥
 पायम अज इरके तू दर गिल माँदा अस्त ।
 दस्त अज शौके तू बरे दिल माँदा अस्त ॥
 मी बर आयद जे अबरे रुयत जाँ जे तन ।
 चन्द बाशी वा मनो पिन्हों जे मन ॥
 दुखतरश गुफ़ पे खज़क अज रोज़गार ।
 साजे काफ़ूरो कफ़न कुन शर्मसार ॥
 चूं दमत सर्दअस्त दमसाज़ी मकुन ।
 पीर गश्ती क्रस्दे दिल बाज़ी मकुन ॥
 ई ज़मों अज़मे कफ़न करदन तुरा ।
 बेहतर आयद जाँके अज़मे मन तुरा ॥
 चूं तो दर पीरी वयक नानेगिरौ ।
 इश्क़ वरज़ीदन न विलवानी बेरौ ॥

मैं छाया हूँ । मेरी कोई निजी हम्मी नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तेरे भगोंके से होकर सूरज की रोशनी की तरह अन्दर पहुँच जाऊँगा ।

अगर तू मुझ बेचैन के ऊपर तनिक सी भी दया दिखलायगी तो मैं इतना ऊँचा चढ़ जाऊँगा कि सातों आसमान मेरे नीचे हो जायँगे ।

मैं अपने प्राण को जलाकर मिट्टी में मिला जा रहा हूँ और मेरी आह की आग में दुनियाँ भस्म हो चुकी है ।

तेरे प्रेम के कारण मेरी जान पर आ बनी है और तुझसे मिलने के लिये अपना दिल थामे हुए बैठा हूँ ।

जब तेरा मुँह पर्दे के अन्दर हो जाता है तो मेरी जान निकल जाती है । मेरे दिल की साथिन ! तू कब तक मुझसे पृथक रहेगी ।

लड़की ने उससे कहा कि ऐ दुनियाँ भर के मूर्ख ! तुझे शर्म नहीं लगती । तुझे तो अब कब्र में जाने का सामान करना चाहिये ।

तेरी साँस ठंडी हो चली है तू अब गर्मी न दिखा । अब बुढ़ा होकर प्रेम करने के लिये उतावला न बन ।

इस समय तू अपने कफ़न का इन्तज़ाम कर । अब यही तेरे लिए अच्छा होगा । मुझसे मिलने की इच्छा को अपने दिल से दूर कर दे ।

तू बुढ़ापे में एक रोटी के लिये माग माग फिर रहा है । तू प्रेमी कैसे हो सकता है, जा यहाँ से दूर भी हो ।

चूं ब पीरी नों न ख्वाही याफतने ।
 कै तबानी बादशाही याफतन ॥
 शेख गुफ्तश गर बेगोई सद हजार ।
 मन नदारम जुज गुमे इश्के तो कार ॥
 आशिकोंरा चे जवों चे पीर मर्द ।
 इश्क बर हर दिल के जद तासीर कर्द ॥
 गुफ्त दुस्तर गर दर्री कारी दुरुस्त ।
 दस्त बायद पाक अज इस्लाम शुस्त ॥
 हर के ऊ हमरंगे यारे खेश नेस्त ।
 इश्के ऊ जुज रंगो बूए बेश नेस्त ॥
 शेख गुफ्तश हर चे गोई आँ कुनम ।
 उंचे फरमाई बजाँ फरमा कुनम ॥
 गुफ्त दुस्तर गर तु हसती मर्द कार ।
 कर्द बायद चार चीजन इस्तिथार ॥
 सिद्धा कुन पेशे बुतो कुरआँ बेसोज़ ।
 खुम्र नोशो दीदा अज ईमाँ बेदोज़ ॥

जब कि तू एक गोटी नहीं बना सकता तो फिर बादशाही के लिये क्यों प्रयत्न कर रहा है ?

शेख ने उत्तर दिया कि तू चाहे जिननी मरुत बात कर मैं तेरे प्रेम के अतिरिक्त कोई काम नहीं कर सकता ।

प्रेमियों को बूढ़े और जवान होने में क्या मतलब है । वह हर एक अवस्था में समान है ।

प्रणय जिस दिल पर हमला करता है उस पर अपना रोव जमा लेता है ।

लड़की ने कहा कि अगर तू इस काम में पक्का है तो अपने धर्म इमलाम को छोड़ दे ।

जो आदमी अपने प्यारे के धर्म का नहीं होता है उसका प्रेम रंग और बू में बढ़ कर नहीं होता है ।

शेख ने कहा तू जो कुछ कहेंगी उसे मैं जरूर ही करूँगा, और जो आज्ञा देगी उसे भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा ।

लड़की ने कहा कि अगर तू मेरा सब काम करने के लिये तय्यार है तो तुझको चार बाने माननी पड़ेंगी ।

तू मूर्ति पूजा कर, कुरान को जलादे, शराब पी और धर्म छोड़ दे ।

शेख गुफ़श ख़म्र करदम इख़तियार ।
 बा से आं दीगर नदारम हेच कार ॥
 बा जमालत ख़म्र तानम ख़र्द मन ।
 बां से दीगर ग नतानम कर्द मन ॥
 गुफ़ बर ख़ेजे बेआओ ख़म्र नोश ।
 ख़श बेनोशी ख़म्र आई दर ख़रोश ॥

रफ़तने शेख़ बा दुखतर बै दैरे मुगाँ व मस्त गरदीदन व
 ख़बर शुदने तुरसायाँ अज़ अहवाले ख़ेश

शेख़ ग बुरदंद ता दैरे मुगाँ ।
 आमदंद ओँ जा मुरीदाँ दर कुगाँ ॥
 आतिशे इश्क़ आवेकारे ऊ बबुर्द ।
 जुल्मे तरसा रोज़गारे ऊ वबुर्द ॥
 शेख़ अलहक़ मजलिसे बस ताज़ा दीद ।
 मेज़बाना हुस्ने बे अंदाज़ा दीद ॥
 ज़र्ए अन्नलश न माँदो होश हम ।
 दर कशीदा जाएगाह ख़ामाश हम ॥

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैं शराब इख़्तियार करता हूँ और बाकी की
 तीन चीज़ों की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है ।

मुझे सिर्फ़ इतना अधिकार दे दे कि मैं तेरी सूरत देखता रहूँ । बस मैं
 शराब पी सकता हूँ । और शेष की तीन बातों को मैं छोड़ता हूँ ।

उस लड़की ने कहा कि उठ कर आ और शराब पी । शराब पीने पर
 तुझे वह नशा आयेगा कि तू मतवाला हो जायगा ।

शेख़ का मुन्दरी वाला के साथ मदिरा गृह में जाना और मतवाला
 हो जाना तथा ईसाइयों का उसका समाचार जानना

शेख़ को शराबख़ाने में लिवा ले गये । उसके चेले उसकी दशा पर खेद
 करते हुए और अन्य तर्क-वितर्क करते हुए रह गये ।

प्रेमाग्नि ने उसकी प्रतिष्ठा को भस्म कर दिया और ईसाई वाला ने उसका
 हाल ख़राब कर दिया ।

सत्य यह है कि शेख़ ने उस मदिरा गृह में एक बहुत ही आनन्द दायक
 मजलिस देखी और उसके सौन्दर्य को बहुत ही बढ़ा चढ़ा देखा ।

यह देखते ही शेख़ बेसुध हो गया और एक स्थान पर चुप होकर
 बैठ गया ।

जाम बिसनद ऊ जे दस्तं यारं खेश ।
 नोश करदो दिल बुरीद अज कारं खेश ॥
 चू बयक जा शुद शराबो इश्के यार ।
 इश्के आँ माहश यके शुद सद हजाग ॥
 चू हरीके आवो दंदाँ दीद शेख ।
 लाल उ दर हुक्ता पितहाँ दीद शेख ॥
 आतिश अज शौक दर जानश फिताद ।
 सैले खूनी मूण मिजगानश फिताद ॥
 बादए दीगर गिरिफो नाश कर्द ।
 हलकए अज जुल्फे ऊ दर गोश कर्द ॥
 बुर्व सद तमनीफ दरदी याददाश्त ।
 हिफजे कुरआँ अज बसे उम्ताद दाश्त ॥
 चू मै अज माग बनावे ऊ रमीद ।
 दावए ऊ रफ्तो लाफे ऊ रमीद ॥
 हरचे यादश बूद अज यादश बेरफ्त ।
 वादा आमद अक्ल चू वादश बेरफ्त ॥
 खुन्ने माना कि वृदश अज नखुस्त ।
 पाकुअज लौहे जर्मारे ऊ वशुस्त ॥

उसने अपनी प्रियतमा के हाथ से मदिरा में भरा हुआ प्याना ले लिया और उसे पीकर अपने काम से हाथ धोच लिया ।

मदिरा और प्रेम दोनों इकट्ठे हो गये और उनके सम्पर्क से शरीर के हृदय में प्रणय पहले से लाख गुना बढ़ गया ।

इसके अतिरिक्त शेख ने अपने यार के अधरा को निकट से देखा और डिब्बे में छिपे हुए उसके लाल पर दृष्टि डाली ।

शौक से उसका प्राण फड़फड़ाने लगा और रक्त के बिन्दु उसके नेत्रों में जोरों के साथ टपकने लगे ।

उसने एक और प्याला लेकर पी लिया और अपनी प्रियतमा के केशों की घुँघराली लट को कान में पहन लिया ।

शेख को लगभग सौ पुस्तकें ज्ञानी याद थीं । कुरान का भी पाठ उसने बहुत से गुरुओं से किया था और वह भी उसे कण्ठस्थ था ।

जैसे ही मदिरा उसके कण्ठ से नीचे उतरा उसकी स्मरण शक्ति जाती रही और अहंकार चूर्ण हो गया ।

मदिरा के असर में उसकी बुद्धि और विवेचन शक्ति विलीन हो गई और जो कुछ भी उसे याद था, सब उसके ध्यान से जाता रहा ।

उसके पास जितने भी गुण थे उसमें जितनी भी विशेषताएँ थीं वह सब मदिरा के असर से जाती रहीं ।

इश्क़े आँ दिलवर बेमाँदश साबनाक ।
 हर चे दीगर बूद कुली रक्त पाक ॥
 शेख चू शुद मस्त इश्क़श जोर कर्द ।
 हमचु दरिया जाने ऊ पुर शोर कर्द ॥
 आँ मनम रा दीदमै दर दस्तो मस्त ।
 शेख शुद यकवारगी आँजा जे दस्त ॥
 दिल बेदाद अज दस्तो अज मै खुरदनश ।
 ख़ास्त ता दस्ते कुनद दर गरदनश ॥
 दुखतरश गुफ़तए तू मर्दे कार ना ।
 मुद्ई दर इश्को मानी दार ना ॥
 गर कदम दर इश्क़ मोहकम दारिण ।
 मजहबे ई जुल्के पुरख़म दारिण ॥
 इक़तिदा गर तू बज़ुल्के मन कुनी ।
 वा मन ई दम दस्त दर गरदन कुनी ॥
 गर नखाही कर्द ईजा इक़तिदा ।
 खेजा मरौ ईनक आमा ईनक रिदा ॥

यदि कुछ रह गया उसके पास तो वह विपत्ति ढाने वाला उसकी प्रियतमा का प्रणय । इसके अतिरिक्त उसका सर्वस्व जाता रहा ।

शेख जिस समय मतवाला हो गया, उस समय उसके प्रेम ने और भी ज़ोर बाँधा और नदी की बाढ़ के समान उसने उसके हृदय को जोश और शोर से परिपूर्ण कर दिया ।

एक और बात ने उसे और भी मतवाला बना दिया । उसने अपनी प्रणयिनी को हाथ में मदिरा का प्याला लिये हुए देखा ।

बस फिर क्या था, उसके दिल में वह भयंकर तूफ़ान उठा कि उसका दिल बिल्कुल हाथ से जाता रहा और उसने चाहा कि अपनी प्रियतमा के गले में बाहें डाल दे ।

यह देखकर उसकी प्रेमिका ने कहा कि तू अच्छा आदमी नहीं है । तू केवल अपनी ज़बान से तो कह सकता है परन्तु कार्यों में उन वचनों को परिणत नहीं कर सकता ।

अगर तू प्रेम में संलग्न रहना चाहता है तो मेरी घुँघराली अलकों के समान ही विधर्मी बन जा ।

यदि तू मेरी अलकों की समानता कर लेगा तो उसी समय मेरे गले से लग जायगा ।

लेकिन यदि तू मेरी आज्ञा नहीं मानता तो यहाँ से चला जा । यह तेरी लाठी है और यह चादर ।

शंख आशिक गश्ता कार उफतादा बूद ।
 दिल जे राफलत बर कज्जा बिनिहादा बूद ॥
 आँजमाँ कदर सरश मस्ती न बूद ।
 यक नफस ऊ रा सरे हस्ती न बूद ॥
 आँजमाँ चूँ शंख आशिक गश्त मस्त ।
 मस्त आशिक चूँ बुवद रफता जे दस्त ॥
 बर नआमद बा खुदी रुसवा शुद ऊ ।
 मी न तरसीदअज कसो तरमा शुद ऊ ॥
 बूद मै बस कोहना दर बै कार कर्द ।
 शंख रा सरगशता चूँ परकार कर्द ॥
 पीर रा मै कोहनओ इश्के जवाँ ।
 दिलबरश हाजिर सबूरी कै तवाँ ॥
 शुद खराबाँ पीरो शुद अजदस्त मस्त ।
 मस्त आशिक चूँ बुवद रफता जे दस्त ॥
 गुफ्त बे ताकत शुदम ऐ माहूर ।
 अज मने बेदिल चे मीखाही बेगू ॥

शंख को लगन लग रही थी और वह अपना अर्भाष्ट भी मिट्ट कराना चाहता था । वह बेहोशी में अपने दिल को भाग्य के हाथ में दे चुका था ।

मदिरा पान से पहले ही उसे अपनी प्रेमिका के अतिरिक्त किर्मी का ध्यान नहीं था । अब तो बात ही दूसरी हो गई ।

अब वह मस्त हो रहा था और उस मतवाली अवस्था में अपने आप को खो चुका था ।

प्रणय में अब वह बदनाम हो चुका था । उसे किर्मी का भय नहीं रहा और वह ईसाई हो गया ।

मदिरा बहुत दिनों की रक्खी हुई थी । उसने वह रंग दिखलाया कि शंख का सर चकर खाने लगा ।

एक तो वह वृद्ध था और उस पर ताज्जा प्रेम और पुरानी मदिरा । उसकी प्रेमिका उसके सम्मुख उपस्थित ही थी । बस धैर्य धारण करना असम्भव था ।

अन्त में शंख को मदिरा ने अपने रंग से रंग दिया । और जिस प्रकार कि मतवाला प्रेमी मस्ती में पड़ कर अपने आप को भूल जाता है उसी प्रकार वह भी निज को भुला बैठा ।

तब उसने कहा कि ऐ चन्द्रमुखी अब मैं बहुत ही बेचैन हूँ । बता तू मुझ से क्या चाहती है ?

गर बहुशायरी नगश्तम बुत परस्त ।
 पेशे बुत मुसहक बेसोज़म मस्त मस्त ॥
 दुश्तरश गुफ्त ई ज़माँ मर्देमनी ।
 खाबे ख़ुश बादत कि दर ख़दमनी ॥
 पेश अज़ीं दर इश्क़ बूदी ख़ाम ख़ाम ।
 ख़ुश बेज़ी चूँ पुख़्ता ग़शती बस्सलाम ॥
 चूँ ख़बर नज़दीके तरसायौं रसीद ।
 कौंचुनाँ शंख़े रहे ईशाँ ग़ज़ीद ॥
 शेख़ रा बुर्द सूपे दैर मस्त ।
 बाद अज़ाँ गुल्द ता जुन्नार बस्त ॥
 शेख़ चूँ दर हल्कए जुन्नार शुद ।
 ख़िर्का रा आतशज़दो दरकार शुद ॥
 दिल ज़े दीने ख़ेशतन आज़ाद कर्द ।
 ना ज़े कावा ना ज़े शेख़ी याद कर्द ॥
 बादे चंदी सालआं ईमाँ दुरुस्त ।
 ई चुनीं यक बारा दस्त अज़ वै वशुस्त ॥

जब मैं अपने होश में था मैंने कभी मूर्ति के सामने शिर नहीं झुकाया
 अब मतवाली अवस्था में मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करके क़ुरान को अग्नि के
 हवाले कर दूँगा ।

ईसाई वाला ने कहा कि हाँ अब तू मेरे योग्य हो गया है और काम का
 आदमी बन गया है ।

अब जाकर सुख की नींद सो । इससे पहिले तू कच्चा था । अब पक्का
 हो गया है इसलिये ख़ूब मजे में रहेगा ।

ईसाइयों को यह समाचार मिला कि इस प्रकार के एक शेख़ ने उनका
 धर्म ग्रहण कर लिया है ।

वे सब आये और शेख़ को उसी अवस्था में अपने गिरजे में ले गये ।
 और उससे कहा कि अब अपने धर्म को छोड़ कर हमारे धर्म की दीक्षा
 ग्रहण कर ।

शेख़ ने दीक्षा ले ली और अपनी गुदड़ी को आग में जला दिया ।

वह अपने धर्म से पृथक् हो गया । अब न उसे काबे का ही ध्यान था
 और न अपने शेख़ होने की सुध ।

बहुत बरसों तक अपने धर्म पर दृढ़ रह कर अब उसने एकाएक उसे
 तिलांजलि दे डाली ।

गुफ़ खजलौ कस्दे ईं दरवेश कर्द ।
 इश्क तरसा जादा कारे खेश कर्द ॥
 हरचे गोई बाद अर्जीं फरमाँ कुनम ।
 जीं बतर चे बुवद कि करदम आँ कुनम ॥
 रोजे हुशियारी नबूदम बुत परस्त ।
 बुत परस्तीदम चो गश्तम मस्त मस्त ॥
 बस कसाँ कजा खम्र तरके दीं कुनम ।
 बेशक केअम्मुऊल खवायस ईं कुनम ॥
 शेख गुफ़ ऐं दुखतरे दिलवर चे माँद ।
 हर चे गुफ़ी करदा शुद दीगर चे माँद ॥
 खम्र खुरदम बुत परस्तीदम जे इश्क ।
 कस न बीनद उंचे मन दीदम जे इश्क ॥
 कस चो मन दर आशिकी शैदा न शुद ।
 आँ चुनौ शेखे चुनी रुस्वा न शुद ॥
 कुर्वे पंजह साल राहम बूद वाज ।
 मौज भी जद दर दिलम दरयाये राज ॥

वह कहने लगा कि हाय यह फकीर बरवाद हो गया । ईसाई वाला का प्रेम अपना काम कर गया ।

ऐ प्रियतमा ! अब मैं हमेशा तेरा कहना मानूँगा क्योंकि जो कुछ मैं कर चुका हूँ उससे बुरा अब हो ही क्या सकता है !

जब मैं अपनी सुध में था तो मैंने कभी भी मूर्ति की पूजा नहीं की थी । प्रेम में मतवाला होकर अब वह भी कर लिया ।

बहुत से लोग शराब की बजह से अपना धर्म छोड़ बैठते हैं और वास्तव में पापों का परिणाम यही होता है ।

फिर शेख ने अपनी प्रियतमा से कहा कि जो कुछ भी तूने कहा था वह मैंने सब पूरा कर दिखाया ।

तेरे प्रेम में पड़कर मैंने शराब भी पी और मूर्ति पूजा भी की । बता अब भी कोई तेरी माँग बाक़ी है ।

अफसोस इस प्रेम ने मुझे बरवाद कर दिया । जो कुछ मुझ पर बीती है वह किसी पर भी न बीतेगी । मेरे समान प्रेम में कोई पागल नहीं होगा और न बुढ़ापे में आकर इस प्रकार कोई बदनाम ही होगा ।

पचास वर्षों तक मैं अपने धर्म में रूढ़ रहा । इस दुनियाँ के और खुदा के भेदों को समझने में व्यस्त रहा ।

जरये इश्क अज कमी बर जस्त चुस्त ।
 बुर्द मारा बर सरे लौहे न खुस्त ॥
 इश्क अर्जी बिस्तार करदस्तो कुनद ।
 सुबह रा जुन्नार कर दस्तो कुनद ॥
 पुखतये अरु अस्त अबजद खवाने इश्क ।
 सिर शिनासे गैब सर गरदाने इश्क ॥
 ई हमा खुद रफ़ बर गो अन्दके ।
 ता तू कै खाही शुदन बा मा यके ॥
 चू बिनाये वस्ते तो बर अस्त बूद ।
 उँच करदम बर उमीदे वरल बूद ॥
 वस्तल खाही व आशनाई याफ़तन ।
 चन्द सोज़म दर जुदाई याफ़तन ॥
 वाज़ दुःखर गुफ़ कै पीरे असीर ।
 मन गराँ कावीनमो तू बस फ़कीर ॥
 सीमे ज़र बायद मरा ऐ बेख़बर ।
 कै शव बे सीम कारे तो चोज़र ॥
 चू नदारी ज़र मरे खुद गीरो रौ ।
 नफ़क़ये बेसिताँ जे मन ए पीरो रौ ॥

एकायक तेरे इश्क ने निकल कर मुझ पर हमला कर दिया और मैं फिर वहीं पहुँच गया जहाँ से चलना आरम्भ किया था ।

इस प्रेम ने ऐसे अनूठे काम किये हैं और करता रहता है । इसने शेख को दूसरे धर्म का अवलम्बी बना दिया और बनाएगा ।

प्रेम के प्रारम्भिक अन्तर पढ़ने वाला चेला भी ज्ञान का पक्का होता है और प्रणय की लगन में भटकने वाला मनुष्य ईश्वरीय रहस्यों में जानकारी रखता है ।

शेख ने फिर अपनी प्रेमिका से कहा कि यह सब हो चुका अब यह बतलाओ कि वस्तु कब होगा ?

उसके लिये जो कुछ शर्तें थीं वह पूरी भी हो चुकीं । मैंने जो कुछ किया वह भी तुम्हारे मिलने की उम्मीद पर ।

अब तुम मुझे किस दिन अपना दोस्त समझ कर मिलने की राह बताओगी और मैं कब तक तुमसे अलग रहकर इस जुदाई की आग में जलता रहूँगा ?

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ नये बने हुए बूढ़े ! मुझे अपने लिये दौलत की आवश्यकता है और तू बिल्कुल भिखारी है ।

नादान ! ज़रा सोच तो सही रुपये और अशर्की की माँग तू किस प्रकार पूरी करेगा ? बिना चाँदी के तेरा कार्य किस प्रकार सोना बनेगा ?

तेरे पास अगर रुपया नहीं है तो अपना रास्ता नाप और यहाँ से चला

हम चो खुशीदि सुबुक रौ फर्द बाश ।
 सब कुन मरदानावारो मर्द बाश ॥
 पीर गुफ़ ऐ सर्व कहे सीमबर ।
 अहदे नेको भी बरी अलहक बसर ॥
 कस नदानम जुझ तो ए ज़ेबा निगार ।
 दस्त अज़ी शेवा मुखन आखिर बेदार ॥
 दर रहे इश्क़े तो हर चम बूद शुद ।
 कुफ़ो इस्लामो ज़ियानो सूद शुद ॥
 चंद दारी बेकरारम ज़िन्तज़ार ।
 तू न दारी ई चुनी वामन करार ॥
 जुमलए यारों ज़ेमन बर गश्ता अंद ।
 दुश्मने जाने मने सर गश्ता अंद ॥
 तू चुनी ईशा चुना मन चूं कुनम ।
 नै दिलम माँदा न जाँ मन चूं कुनम ॥
 दोस्तर दारम मन ए ईसा सरिश्त ।
 बा तो दर दोज़ख कि बे तो दर बहिश्त ॥

जा । सकर के लिये यदि खर्च की ज़रूरत हो तो मैं तुम्हें अपने पास से कुछ दे सकती हूँ ।

तेज़ चलने वाले मूरज की तरह अपने रास्ते पर आगे बढ़ और मर्दों का तरह साहम व धैर्य से काम ले ।

बूढ़े ने कहा कि ऐ कठोर हृदय, परन्तु खूबमूरत माशूक ! सच बात तो यह है कि तू बड़ी खूबी के साथ अपने वादे को पूरा कर रही है !

मैं तो तेरे सिवाय किसी दूसरे यार को जानता भी नहीं हूँ । फिर ऐसी बातें करने से क्या लाभ !

मेरे पास जो कुछ भी था वह सब तेरे प्रेम में पड़कर गँवा चुका हूँ । अब न धर्म है और न खुदा ।

नफ़ा और नुक़सान मभी कुछ जाता रहा । तू मुझे अपने लिये कब तक बेचैन रखेगी ? तूने तो मुझसे मिलने का वादा किया था ।

मेरे जितने भी दोस्त थे वह सब मुझसे बिछुड़ गए हैं । और यही नहीं बल्कि मुझ दुखिया की जान के गाहक बन गए हैं !

तू इस प्रकार बदल गई और उन लोगों ने भी मुँह फेर लिया ! अब मैं क्या करूँ ? अफ़सोस न तो अब मेरा दिल ही रह गया है और न जान ही ।

ऐ ईसा के समान दयालू प्रियतम ! मुझे तो तेरे साथ नर्क में रहना अच्छा लगता है और बिना तेरे स्वर्ग भी मुझे बहुत बुरा मालूम देगा ।

आकबत चूं शेख आमद मर्दे ऊ ।
 दिल बसोख्त आँ माह रा बर दर्दे ऊ ॥
 गुल का बीनम कनूं ऐ नातमाम ।
 खूक बानी कुन मरा साले मुदाम ॥
 ता चु साले बुगुजरद हर दो बहम ।
 उम्र बुगुजारेम दर शादी व गम ॥
 शेख अज्र फरमाने जानों सर न ताफ़ ।
 काँ कि सर ताबद जे जानों सर न याफ़ ॥
 रफ़ शेखे काबओ पीरे के बार ।
 खूक बानी कर्द साले इख्तियार ॥
 दर निहादे हर कसे सद खूक हस्त ।
 खूक बायद कुशत या जुन्नार वशत ॥
 तू चुना जन मो वरी ऐ हेंच कम ।
 काँ खतर आँ पीर रा उफ़ादो बस ॥
 दरदरुने हर कसे हस्त ई खतर ।
 सर वुरू आरद चो आयद दर सफ़र ॥

अन्त में जब शेख बिल्कुल उमके काम का होगया तो उम चन्द्रवदनी के हृदय में भी उसके प्रति दया उत्पन्न हुई ।

उसने कहा कि पूरे एक वर्ष तक रोज़ाना मेरे सुअर चराया कर ।

जब एक वर्ष पूरा हो जायगा तब हम दोनों मिलेंगे और साथ साथ रहकर समय बितावेंगे । और दुःख तथा आराम में एक दूसरे के साथी रहेंगे ।

शेख ने अपनी प्रेमिका के कहने को शिरोधार्य कर लिया । जो मनुष्य अपनी प्रणयिनी के वचनों को नहीं मानता वह रहस्य को नहीं समझ सकता है ।

काबे का शेख और इतना बड़ा साधु एक सुअर चराने वाले के रूप में परिणत हो गया और उसने एक वर्ष तक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया ।

प्रत्येक मनुष्य के पास स्वभावतः इच्छाओं रूपी सहस्रों सुअर होते हैं । फिर या तो उनको समाप्त ही कर डाला जावे अथवा उनको चराया जावे ।

ओ दीन-हीन मानव ! तू कदाचित् यह सोचता होगा कि यह आपत्ति केवल उस शेख के ही ऊपर पड़ी ।

नहीं, बात दूसरी है । प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यह विघ्न उपस्थित है और जब वह ज्ञान के मार्ग में अग्रसर होता है तब उसे इसका ज्ञान आता है ।

तू जे खूँके खेश अगर आगह नई ।
 सख्त माझूरी कि मर्दे रहनई ॥
 चूं कदम दर रहनई मगदानावार ।
 हम बुतो हम खूँक बीनी सद हज़ार ॥
 खूँक कुश बुत सोज दर सह्राए इशक ।
 वरना हमचू शेख शौ रुस्वाए इशक ॥
 आक्रबत चूं शेखे दो रुसवा न बूद ।
 दरमियाने रूम सर गोशा न बूद ॥

दर माँदने मुरीदान बकारे शेख व मुराजअत करदन ब काबा

हमनशीनानश चुनौ दरमानदंद ।
 कज करोमाँदन बजाँ दरमानदंद ॥
 जुमला अज यारीए ऊ बगुरेखतन्द ।
 अज गमे ऊ खाक बर सर रेखतन्द ॥
 बूद यारे दरमियाने जमआ चुस्त ।
 पेश शेख आमद कि ए दरकार सुस्त ॥
 मो रबम इमरोज सृए काबा वाज ।
 चीस्त फरमौ वाज बायद गुफ्त राज ॥

यदि तू अपने सुअर को नहीं जानता है तो तू ज़मा के योग्य है, क्योंकि तू इस योग्य नहीं है ।

जब तू इस रास्ते में चलता है लाखों मूर्तियाँ और सुअर तेरे सम्मुख आते हैं ।

प्रेम के नाम पर सुअर को मार डाल और मूर्ति को तोड़ दे । यदि ऐसा नहीं करेगा तो शेख के समान प्रेम में पड़कर बदनामी का कारण बनेगा ।

यदि वह इस्लाम का सन्त इस प्रकार कलंकित न होता तो रूम के देश में सब लोग उसकी इस प्रकार कहानी न कहते ।

शेख के विषय में निराश होकर चेलों का काबे का वापस लौटना

शेख के साथी उसकी अवस्था देखकर निराश होगये । उनसे कुछ करने-धरते न बन पड़ा और खुद उनकी जान पर आ बनी ।

फिर वे सब उसका साथ छोड़कर पृथक् होगये । शंख के शोक में वे सब सर घुनने लगे ।

उनमें से एक को शेख से अधिक स्नेह था । वह जाकर शेख से कहने लगा कि अब तो तुम्हारा कार्य चौपट हो गया !

मैं आज काबे को लौटा जा रहा हूँ । यदि तुम्हें कुछ कहना है तो कह दो ।

या दिगर हमचो तू तरसाई कुनेम ।
 खेश रा मेहराबे रुसवाई कुनेम ॥
 ई चुनीं तनहात मपसनदेम मा ।
 हमचु तो ज़न्नार वर बनदेम मा ॥
 मा चे नतवानेम दीदन ई चुनीं ।
 जूद बेगुरेजेम अज तो जीं ज़मीं ॥
 मोतकिफ़ दर कावा बेनशीनेम मा ।
 ता न बीनेम उंचे मी बीनेम मा ॥
 शेख गुफ़ा जाने मन वर तफ़ वृद ।
 हर कुजा खाहेद बायद रफ़त जूद ॥
 ता मरा जानस्ता दैरम जाए वस ।
 दुरुतरे तरमाए रुह अफ़जाए वम ॥
 मी न दानम अज चे रू आजादायेद ।
 जाँ कि ईजा कार ना उफ़तादायेद ॥
 गर शुमा रा कार उफ़तादे दमे ।
 हमदमे बूदे मरा दर हर गम ॥

क्या हम भी तुम्हारी तरह ईसाई बनकर अपने सर पर बदनामी का टीका लगवा लें ?

हम यह नहीं चाहते कि तू अकेला रह और इसलिये हम भी अब ईसाई हो जायेंगे ।

तुम्हारी यह हालत हम अपनी आँखों में नहीं देख सकते और उससे बचने के लिये हम बहुत जल्द यहाँ से भाग जायेंगे ।

हम कावे में पहुँचकर किसी कोने में छिप रहेंगे । ताकि जो हम देख रहे हैं न देखें ।

शेख ने उत्तर दिया कि मेरी जान में आग लग रही है । मैं तुम्हें क्या बतला सकता हूँ । जहाँ जाना हो जल्द जाओ ।

जब तक जिन्दगी है तब तक मेरे रहने के लिये यही मन्दिर काफी है और वह आत्मा प्रसन्न करने वाली ईसाई की लड़की मेरी जिन्दगी का सहारा है ।

मुझे नहीं मालूम तुम इतने बेफ़िक्र क्यों हो । कदाचित् इस वजह से कि तुम्हारे ऊपर यहाँ किसी प्रकार का काम नहीं पड़ा है ।

अगर तुममें से कोई भी इस काम में फँस जाता तो मुझे हर बात में कोई न कोई नया साथी मिल जाता ।

बाज़ गरदेद ऐ रफीकाने अज़ीज़ ।
 मी नदानम ता चे ख्वाहद बूद नीज़ ॥
 गर जे मा पुर्सन्द बर गोयेद रास्त ।
 काँ जे पा उफ़ादा सर गरदाँ चेरास्त ॥
 चश्म पुरखूनो दहन पुर ज़ह माँद ।
 दर दहाने अज़दहाए कह माँद ॥
 हेच काफ़िर दर जहाँ नदेहद रज़ा ।
 उंचे कर्दे आँ पीरे इसलाम अज़ क़ज़ा ॥
 रूए तरसाए नमूदन्दश जे दूर ।
 शुद जे दीनो अक्लो शेखी ना सबूर ॥
 जुल्क हमच्च् हल्का दर हल्कश फ़िग़ंद ।
 दर ज़वाने जुम्लए खल्कश फ़िग़ंद ॥
 गर मरा दर सर ज़निश गीरद कसे ।
 गो दरी रह ई चुनी उफ़द बसे ॥
 दर चुनी रह कस न सर गीरद न बुन ।
 हेच कस रा नेस्त रूए यक सख़ुन ॥

मेरे प्यारे साथियो तुम लोग अब यहाँ से खाना हो जाओ । मैं नहीं कह सकता कि आगे चलकर क्या होगा ।

अगर लोग मेरा हाल पूछें तो सब वानें ज्यों की त्यों बयान कर देना । ताकि वह लोग भी समझ जावें कि शेख क्यों वापस लौटने से लाचार है ।

लोग पूछें तो कह देना कि शेख की आँखें खून से भरी हुई हैं, उसका मुख ज़हर से कड़वा हो गया है और वह क़हर-रूपी अज़दहे के मुख में जा पड़ा है ।

किसी विधर्मी के द्वारा भी ऐसा काम न होगा जैसा कि उस इस्लाम के पक्के मानने वाले से हो गया है ।

एक ईसाई लड़की की शह्र उसे दूर से दिखला दी गई जिसे देखते ही उसका धर्म और ज्ञान सब कुछ जाता रहा ।

फंजीर के समान जुल्क ने उसके गले में फन्दा डाल दिया और यह बान सारी दुनिया जान गई ।

अगर कोई आदमी मेरी कहानी सुनकर मुझे बुरा भला कहना शुरू करे तो उससे कह देना कि इश्क की राह में ऐसी बहुत सी बातें हुआ करती हैं ।

इस रास्ते में किसी भी आदमी को अपने सर और पैर का खयाल नहीं रहता है और न किसी को कोई बात ही कहने की सामर्थ्य होती है ।

बसके यारों दर गमश बेगिरीस्तन्द ।
 गाह मी मुर्दन्दो गह मी जीस्तन्द ॥
 शेख शौं दर रुम तनहा मौंदए ।
 दाद दीं बरबाद तनहा मौंदए ॥
 आक्रबत रफतंद सूए काबा बाज ।
 मौंदा जाँ दर सोखतन तन दर गुदाज ॥
 चूँ रसीदंद आँ अजीजाँ दर हरम ।
 लब फेरो बसततंदो न कुशादंद दम ॥
 अज हयाये शेख सुद हैराँ शुदंद ।
 हर यके दर गोशए पिनहाँ शुदंद ॥
 शेख रा दर काबा यारे रस्ता वूद ।
 दर इरादत दस्त अज कुल गुस्ता वूद ॥
 बुद बस बीनिन्दओ वम राह बर ।
 ज़रो न बूदे शेख रा आगाह तर ॥
 शेख चूँ अज काबा शुद सूए मफ़र ।
 आँ नबूदौं जाणगा हाज़िर मगर ॥
 चूँ मुरीद शेख बाज आमद वजाय ।
 वूद अज शेखश तिही खिलवत मराय ॥

सार्थी लोग उसके शोक में बहुत रोये और अपने प्राणों को पीड़ित करने लगे ।

उनका शेख और गुरु विधर्मी होकर रुम में अकेला रह गया था और उनसे पृथक् हो गया था ।

अन्त में वह सब काबे को लौट गये, परन्तु उनके प्राण पीड़ा से आकुल हो रहे थे ।

जब वह काया पहुँचे, अफ़सोस के मारे ज़वान बन्द किये थे, और तकलीफ़ में घुल रहे थे ।

अपने गुरु की अप्रतिष्ठा से लज्जित होकर वह इधर-उधर छिपते फिरते थे ।

काबे में शेख का एक ऐसा मित्र भी था जो उसके स्नेह में अपना सब कुछ छोड़ बैठा था ।

वह बड़ी गम्भीर दृष्टि वाला और विद्वान था और शेख के भेदों को उससे अधिक और कोई नहीं जानता था ।

शेख जब काबे से रुम को गया था उस समय वह मित्र घर पर नहीं था । कहीं बाहर गया हुआ था ।

जब वह बाहर से घर लौटकर आया उसने पूजा-गृह को शेख विहीन पाया ।

बाज पुरसीद अज मूरीदों हाले शेख ।
 बाज गुफुन्दश हमा अहवाले शेख ॥
 कज कजा ऊ रा चे कार आमद बसर ।
 वज कदर ऊ रा चे बाज आमद बबर ॥
 रूये तरसाए व यक मूयश बे बस्त ।
 राह बर ईमां जे हर सूयश बे बस्त ॥
 इश्क मी बाजद कनू वा जुल्फो खाल ।
 खिर्का गरता मोहका हालश बहाल ॥
 दस्त कुली बाज दाश्त अज ताअतऊ ।
 खकवानी मीकुनद ई साअतऊ ॥
 ई जमाँ औँ ख्वाजये बिस्तार दर्द ।
 बर मियाँ जुन्नार दारद चारकदर्द ॥
 शेखना गर चे वसे दरदी बे तारत ।
 अज कोहन गबरेश मी न तवाँ शनारत ॥
 चूँ मुरीद औँ किस्सा बिशुनद अज शिगिफ्त ।
 रूये खुद जर कर्द मातम दर गिरिफ्त ॥
 वामुरीदों गुफु ए तरदामनों ।
 दर वफादारी न मरदों न जनों ॥

दूसरे चेलों में उसने शेख का हाल पूछा; उन्होंने ने सब शेख का हाल कह दिया ।

दूसरे चेलों से सब समाचार सुनकर उसकी समझ में आगया कि शेख को भाग्य ने कहाँ ले जाकर पटका था ।

उसकी समझ में आ गया कि वह अब एक ईसाई-बाला के प्रणय में फँसकर अपने धर्म को खो बैठा है ।

उसकी काली अलकों के जाल में पड़कर उसने अपनी गुदड़ी को त्याग दिया है और अपने हालत खराब कर ली है ।

खुदा की अभ्यर्थना से उसने विल्कुल हाथ खींच लिया है और अब सुअर चराया करता है ।

उस मित्र को ज्ञात हो गया कि खुदा से प्रेम रखने वाला वह धृष्ट अब अपनी कमर में चार फेरों वाला जनेऊ बाँधे हुए है ।

हमारा शेख यद्यपि अपने धर्म में उन्नति कर चुका था परन्तु अब प्राचीनता का स्मरण दिलवाकर उसे पुनः उचित मार्ग पर लाना कठिन था ।

शेख के मित्र ने जब यह कहानी सुनी तो आश्चर्य और खेद से उसका मुख पीला पड़ गया ।

तब उसने अन्यान्य चेलों से कहा कि ऐ पापियो, तुम वफादारी में न तो स्त्रियों के ही समान हो और न मर्दों के ।

यारे कार उकतादा बायद सद हजार ।
 यार नायद जुज चुनीं रोजे वकार ॥
 गर शुमा बूदेन यारे शेखे ख्वेश ।
 यारीण ऊ अज चे न गिरिफतेद पेश ॥
 शर्म मां बाद आखिर ईं यारी बुवद ।
 हक गुजारी ओ वफादारी बुवद ॥
 चू निहाद ओं शेख बर जुन्नार दस्त ।
 जुम्लगी जुन्नार मो बायस्त वस्त ॥
 अज बरश अमदन नमी बायस्त शुद ।
 जुम्लगी तरसा हमी वाशस्त शुद ॥
 ईं न यारीओ मुवाफिक बूदनस्त ।
 उंचे करदेद अज मुनाफिक बूदनस्त ॥
 हरकि यारे ख्वेश रा यावर शवद ।
 यार बायद वूद अगर काफिर शवद ॥
 वक्ते नाकामी तवाँ दानिस्त यार ।
 वूद बुवद दर कामरानी सद हजार ॥
 शेख चू उफाद दर कामे निहंग ।
 जुम्ला ज बुगुरेखतंद अज नामो नंग ॥

लानन है तुम्हारी दोस्ती पर । मतलब के तो सैकड़ों यार हुआ करते हैं, लेकिन सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत के समय में काम आवे ।

अगर तुम शेख के दोस्त थे तो उसके साथ दोस्ती का हक क्यों नहीं अदा करते रहे ?

तुम्हें हया लगनी चाहिये । क्या दोस्ती ऐसी ही होती है और शुक्र गुजारी और वफादारी इसी का नाम है ?

जब तुम्हारे शेख ने दूसरे धर्म की दीक्षा ली थी तब तुम्हें भी ऐसा ही करना था ।

जानबूझ कर उसका साथ छोड़ देना ठीक नहीं था बल्कि उसी के समान सब को ईसाई हो जाना था ।

तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह दोस्ती नहीं कही जा सकती है । यह तो बहुत बुरे आदमियों का काम है ।

अपने दोस्त का जो सच्चा साथी होता है वह हमेशा उसके तई सच्चा ही बना रहता है । चाहे वह विधर्मी ही क्यों न हो जावे ।

जब आदमी के दिन बुरे होते हैं उसी वक्त दोस्त की पहचान होती है । अच्छे दिनों में ऐश के जलसों में तो सैकड़ों साथी हो जाते हैं ।

शेख जिस समय मुसीबत में पड़ गया, उस समय उसके सब साथी बदनामी के डर से उसको छोड़ कर भाग गये ।

इश्क़ रा चुनियाद बर बदनामी अस्त ।
 हर के जीं दर सर कशद अज खामी अस्त ॥
 जुम्ला गुफतन्द उंचे गुफ़ी पेश अजीं ।
 बारहा गुफ़ेम बा ऊ बेश अजीं ॥
 अजमे औं करदेम ता ब ऊ बहम ।
 हम नफ़स बाशेम वा शादी बा गम ॥
 जोह बेकरोशेम रुसवाई खरेम ।
 दीं वरंदाजेमो तरसाई खरेम ॥
 लेके राये दीद शेखे कारसाज ।
 कज बरू यक बयक गरदेम बाज ॥
 चूँ नदीदज यारीए मा हेच सूद ।
 बाज गर दानीद मारा शेख ज़द ॥
 बाद अजीं असहाव रा गुफ़्त औं मुरीद ।
 गर शुमारा कार वूद बर मजीद ॥
 जुज दरे हक़ नेसत जाये शुमा ।
 दर हज़ूर हस्ते सरो पाण शुमा ॥
 दर तेज़ुल्लुम दास्तन दर पेशे हक़ ।
 औं यके बुदे अजीं दीगर सबक़ ॥

प्रेम की नींव बदनामी होती है और इस द्वार से होकर निकलने वाला बदनाम हो जाता है ।

यह सुनकर सब चेलों ने दूर ही से कहा कि जो कुछ तू कहता है उससे कहीं ज्यादा हम लोगों ने किया ।

शेख़ को हमने हर तरह समझाया था और इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि दुख और आराम में उसके साथी रहें ।

हमने यहाँ तक कहा था कि हम भी उसी की तरह बदनामी मोल लेकर ईसाई हो जावें ।

लेकिन शेख़ ने हमारी एक भी न सुनी । उसकी यही राय हुई कि हम सब उसके पास से चले जावें ।

हम लोगों को साथ रखने में उसे कोई नफ़ा नहीं दिखलाई दिया और हम को बहुत जल्द वहाँ से रवाना कर दिया ।

यह बातें सुनकर शेख़ के उस खास चеле ने कहा कि अगर तुम अच्छे काम करने वालों और समझदारों में होते,

तो शेख़ का हाल देखकर खुदा के दर्वाजे पर अपना डेरा जमा देते । वहीं उसकी भिन्नत करते और गिड़-गिड़ाकर शेख़ के लिये कहते ।

तब उसके दरबार में तुम्हारी सुनवाई होती जब वह तुमको इस बात में एक दूसरे से बढ़ा-चढ़ा हुआ देखता और समझता कि तुम अपनी आन पर मर मिटने वाले हो,

ता चो हक्क दीदे शुमारा बर करार ।
 बाज दादे शेख रा बे इन्तजार ॥
 गर जे शेखे खेश करदेत यहतराज ।
 अज दरे हक्क अज चे मी गशतेद बाज ॥
 चू शुनीदंद ईसखुन अज इज्जे खेश ।
 बर नयावरदंद यक तन सर जे पेश ॥
 आँ मुरीदश गुप्त आँ खिजलत चे सूद ।
 कार चू उफताद बर खेजेद जूद ॥
 लाजिमे दरगाहे हक्क बाशेम मा ।
 वज तजल्लुम खाक मी बाशेम मा ॥
 पैरहन पोशेम अज कागाज हमा ।
 दर रसेम आखिर व शेखे खुदहमा ॥

बाज गरदीदने मुरीदाँ अज काबा बरूम अज पए शख

जुम्ला मूए रूम रफ्तंद अज अरब ।
 मोतकिफ गशतंद पिनहाँ रोजो शब ॥
 बर दरे हक्क हर यके रा मद हजाम ।
 गह जारी गह शफाअत बूद कार ॥

तो वह फौरन ही शेख को वापस लौटा देता ।

मानलिया कि तुमने शेख का साथ छोड़ दिया, लेकिन खुदा के दर्वाजे पर क्यों नहीं गये ।

दूसरे शिष्यों ने जब यह बातें सुनी तो लज्जा से उनके सिर झुक गये । उनका अपराध प्रमाणित हो चुका था ।

इस पर उसी खास शिष्य ने कहा कि इस ताने से कुछ नहीं होता है । काम आ पड़ा है । आओ, उठो ।

जल्दी हम सब इकट्ठे होकर मस्जिद में जमकर बैठ जावें । खुदा से करियाद करें,

और फटे-पुराने कपड़े पहन लें । उम्मीद है कि उसकी दुआ से हम अपने शेख से फिर मिलेंगे ।

चेलों का शेख से मिलने के लिये काबे से रूम को
 फिर से यात्रा करना

सब शिष्य गए अरब देश से रूम को चल दिये । वहाँ पहुँचकर वे अन्य लोगों की दृष्टि से छिपकर एकान्त स्थान में रहने लगे ।

उन लोगों ने ईश्वर के द्वार पर आसन जमा दिया । उनमें से प्रत्येक विनती करके अपने गुरु को पुनः प्राप्त करने के लिये कहता ।

हमचुनौ ता चिल शबौ रोजे तमाम ।
 सर न पेचीदंद हर थक अज मुकाम ॥
 जुम्ला रा चिल शब न खुर बूदो न ख्वाब ।
 हमचुनौ चिलदर ननौ बूदो न आव ॥
 अज तजरो करदने आँ कौमे पाक ।
 दर फलक उफ्ताद जोशे साबनाक ॥
 सज्ज पोशौ दर फराजो दर करूद ।
 जुम्ला पोशीदंद अज मातम कबूद ॥
 आखिरुलअम्र आँ के बूदज पेशे मक ।
 आमदश तीरे दुआए बर हदक ॥
 बादे चिल रोजे आँ मुरीद पाक बाज ।
 बूद अंदर खिलवते खुद दर नमाज ॥
 सुन्दम बादे बर आमद मुश्कवार ।
 शुद जहाने कश्क बर वै आशकार ॥
 मुस्तफारा दीदमी आमद चो माह ।
 दर बरकगन्दा दो गेसूए सियाह ॥
 सायाए हक आफताबे रूए ऊ ।
 शुद जहाने जान बक्के सूए ऊ ॥

इस प्रकार चालीस दिन तक वह लोग लगातार ईश अभ्यर्थना में निमग्न रहे ।

चालीस दिन तक न तो उन्होंने भोजन हो किया और न शयन । और चालीस रातें भी उन्होंने इसी प्रकार जागकर प्रार्थना में व्यतीत कीं ।

इस पवित्र जात की इस टेक से आकाश हिल उठा और शोर होने लगा ।

सज्ज वस्त्र धारण करने वाले देवताओं ने शोक में काले वस्त्र धारण कर लिये ।

अन्त में उन सब चेलों के मुखिया की प्रार्थना से तीर लक्ष्य पर जा लगा ।

चालीसवें दिन समाप्त होने पर जब वह पवित्र चेला अपने आसन पर प्रातः काल बैठा हुआ था,

सुगन्धित वायु चलने लगी और वह मस्त होकर भूमने लगा ।

उसने देखा कि चाँदी के समान उज्ज्वल पैगम्बरसलम दो काली लटें अपनी गर्दन में डाले हुए उसकी तरफ चले आ रहे हैं ।

उनका मुख सूर्य के समान ईश्वरीय प्रभा में प्रकाशित हो रहा है और सारे संसार की जानें उनके एक बाल पर न्यूँछावर थीं ।

मी खिरामीदो तबस्सुम मी नमूद ।
हर के मी दीदश दरो गुम मी नमूद ॥
आँ मुरीद ऊ रा चो दीद अज जायेजस्त ।
के नबी अल्लाह दस्तम गीर दस्त ॥
रहनुमाण खल्कअज बहरें खुदा ।
शेख मा गुमरह शुदा गहश नुमा ॥
मुसतफा गुफ्त ऐ बहिम्मत दम बलंद ।
गौ कि शेखत रा वरूँ करदम जे बंद ॥
हिम्मते आलीत कारे खंश कंद ।
दम नजद ता शेख रा दर पेश कंद ॥
दरमियाने शेखो हक ता दर गाह ।
बूद गरदे व गुबारे बस सियाह ॥
आँ गुबारज राह ऊ बरदाशतम ।
दरमियान जुल्मतश नगुजाशतम ॥
करदमज बहरें शफाअत शबनमे ।
मंतशर वर रोजगारे ऊ हमं ॥
आँ गुबार अकनू जे रह वगखास्तस्त ।
तौवा बेनशिस्तो गुनाह वरखास्तस्त ॥

वह धीरे धीरे टहल रहे थे और मुस्कुरा रहे थे । उनको जो कोई भी देखता था वह उनकी शोभा पर मोहित हो जाता था ।

उस चले ने जब पैगम्बर को देखा तब उठकर खड़ा हो गया और विनीत भाव से बोला कि ऐ खुदा के नबी, मेरी सहायता कीजिये ।

आप सारी दुनिया को खुदा का रास्ता दिखलाते हैं, हमारे पीर को भी, जो अपने रास्ते को भूल गया है, ठीक रास्ते पर लाइये ।

पैगम्बर साहब ने कहा कि ऐ ऊँचे हौसले वाले मर्द, जा, मैंने तेरे पीर को क़ैद से छुड़ा दिया ।

तेरी ऊँची हिम्मत अपना काम कर गई । तूने जबतक शेख को आगे नहीं बढ़ा लिया दम भी न लिया ।

तेरे शेख और खुदा के बीच में बहुत दिनों से एक काला पर्दा आ गया था और वह भी गर्द-गुबार का ।

मैंने वह गर्द उसके सामने से हटा दी है और अब वह अँधेरे में नहीं रह गया है ।

मैंने उसके हान पर एक फुआर छिड़क दी है, जिसकी वजह से वह सारी गर्द साफ हो गई है ।

अब उसने खराब काम करने से हाथ खींच लिया है और बुराई उससे दूर भाग गई है ।

तू यक्रीं मीदाँ कि सद आलम गुनाह ।
 अज तफे यक तौबा बर खेजद जे राह ॥
 बहरे एहसाँ चूँ दर आयद मौजजन ।
 मह गरदानद गुनाहे मदीं जन ॥
 ईं दो से हरफे बगुफत अज यारे ऊ ।
 दर जमाँ गायब शुद अज दीदारे ऊ ॥
 मर्दअज शादीए ऊ मदहोश शुद ।
 नारए जद कासमाँ पुर जोश शुद ॥
 हम चुनाँ नारा जनों बेरूँ फिताद ।
 जावे दीदा दरमियाने खूँ फिताद ॥
 जुम्लए असहाब रा आगाह कर्द ।
 मुज्दगाने दाद अजमे राह कर्द ॥
 रफ वा असहाबे गिरयानों दवाँ ।
 ना रमीद आँ जा कि शेखे खूकवाँ ॥
 शेख रा दीदन्द चूँ आतश गुदा ।
 दरमियाने बेकरारी खश शुदा ॥
 दीदाआँ दरवेश रा वाज आमदा ।
 वा खुदाए खेश दर राज आमदा ।

तू इस बात पर यकीन रख कि सारी दुनियाँ के बुरे काम केवल उनपर एक बार अफसोस करने से ही दूर हो जाते हैं ।

जब खुदा के अहसान का दरिया बाढ़ पर आ जाता है तब मर्दों और औरतों सभी की बुराइयों को धो देता है ।

यह दो-तीन बातें शेख के प्रधान चले से कहकर पैगम्बर साहब तत्क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो गये ।

वह मनुष्य आनन्द में आकर भूमने लगा और मतवाला हो गया । और उसी अवस्था में इतने जोर से यकायक चित्लाया कि आकाश में एक प्रकार का हुल्लड़-सा मच गया ।

इसी प्रकार चित्लाता हुआ वह बाहर निकला और उसने रोना प्रारम्भ किया । यहाँ तक रोया कि आँसुओं के कीचड़ में लोटने लगा ।

अपने सारे साथियों को उसने यह आनन्द दायक समाचार कह सुनाया और यात्रा करने के लिये प्रबन्ध करने लगा ।

इसके उपरान्त अपने सब साथियों के साथ रोता बिलखता और दौड़ता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेख सुअर चरा रहा था ।

इन सबों ने जाकर देखा कि शेख अग्नि के समान भड़क रहा है और बहुत ही व्याकुल हो रहा है ।

उस प्रधान शिष्य ने देखा कि वह साधु पहले ही से बुरे कामों से हाथ खींच चुका है और खुदा से दिल लगा चुका है ।

हम फिंगंदां बूद नाकूस अज दहूँ ।
 हम गुसिस्ता बूद जुन्नार अज मियाँ ॥
 हम कुलाहे गुन्न की अंदाखना ।
 हम जे तरसाई दिलश परदाखता ॥
 शेख चूँ अमहाव रा अज दूर दीद ।
 खेशतन रा दरमियाने नूर दीद ॥
 हम जे खिजलत जामा बर तन चाक कर्द ।
 हम बदस्ते इज्ज बर सर खाक कर्द ॥
 गाह चूँ अब्र अशके खूनी मीकिशाद ।
 गाह दस्तज जाने शीरी मीकिशाद ॥
 गह जे आहश परदए गरदूँ बेसाख ।
 गह जे हसरत बर तनेऊ खू बेसाख ॥
 हिकमत कुरानी अमरारो खबर ।
 शुस्ता बूद अन्दर जमीरश सर वमर ॥
 जुमला बा याद आमदश यकन्नारगी ।
 बाज रस्त अज जेहो अज बेचारगी ॥
 चूँ बहाले खुद फेरो निगुरीस्ते ।
 दर सजूद उफतादयो बेगुरीस्ते ॥

उसने अपने मुख से शंख को पृथक कर दिया है और जनऊ को तोड़ डाला है ।

उसने ईसाइयों को टोपी को भी उतार कर फेंक दिया था और ईसाई होने का खयाल भी हृदय से अलग कर दिया था ।

जैसे ही उसने इन सब चेलों को अपनी तरफ आने देखा उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि वह उजाले में आगया है ।

मारे शर्म के उसने अपने वस्त्र फाड़कर फेंक दिये और खुदा के सम्मुख विनीत भाव से बैठकर सर पर धूल डालने लगा ।

कभी तो वर्षा की झड़ी के समान अपने नेत्रों से शोक के आँसू बरसाता था और कभी अपने प्राण खो देने की इच्छा करता था ।

कभी उसकी गर्म साँसों से आकाश का पर्दा जलने लगता था और कभी शोक और दुख से उसका रक्त जलने लगता था ।

कुरान और हदीस के सारे रहस्य जो उसके मस्तिष्क से धुल चुके थे,

अब सब उसपर प्रकट हो गये और उसकी सुस्ती तथा काहली दूर हो गई ।

जब वह अपनी अवस्था पर विचार करता तो खुदा के सामने सर पटक कर रोने लगता था ।

हम चो गिल दर खूने दिल आगशता बूद ।
 बज खिजालत दर अरक गुमगशता बूद ॥
 चू चुनाँ दीदंद आँ असहाबे ला ।
 मोदा दर अंदोहो शादी मुबतिला ॥
 पेशे ऊ रक्तंद सरगरदाँ हमा ।
 अज पण शुकराना जाँ अफशाँ हमाँ ॥
 शेख रा गुफंद ए बेपरदा राज ।
 मना शुद अज पेशे खुरशीदे तो बाज ॥
 कुफ़ बरखास्त अज रहो ईमाँ नशस्त ।
 बुनपरस्ते रूम शुद यजदों परस्त ॥
 मौजजद नागाह दरियाये कबूल ।
 शुद शकाअत खाहे कारे तो रसूल ॥
 ई जमा शुकराना आलम आलमस्त ।
 शुक्र कुन हक़ रा चे जाण मालमस्त ॥
 मिन्नत गेजिद रा कि दर दरियाय तार ।
 कर्द राहे हमचु खुशीद आशकार ॥
 आँ कि तानद कर्द रौशान रा मियाह ।
 तौया तानद दाद बा चंदी गुनाह ॥

वह पुष्प के समान अपने हृदय के रक्त में गंग गया था और शर्म के पसीने से तरबतर हो रहा था ।

जब उसके साथियों ने अपने गुरु को आनन्द और शोक दोनों अवस्थाओं में मस्त देखा तो दौड़कर सब उसके पास पहुँच गये ।

और धन्यवाद दे दे अपने आपको उस पर न्यौझावर करने लगे ।

शेख से उन्होंने कहा कि हे वृद्ध गुरु, तेरे सूरज के सामने में रुकावट का पर्दा दूर हो गया है ।

कुफ़ (नाम्निकता) रास्ते में हट गया है मूर्ति का पूजक खुदा को मानने लगा है ।

यकायक खुदा की मुहब्बत ने ज़ोर मारा और खुदा के दूत ने तेरी सिफ़ारिश की ।

अब यह मौक़ा ऐसा आ गया है कि खुदा का शुक्र किया जावे । रंज के दिन दूर हो गये हैं ।

उस खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है जिसने अन्धकार से भरे हुए दरिया में सूरज के समान एक साफ़ रास्ता तेरे लिये निकाल दिया है ।

जो चमकदार चीज़ को भी काला बना सकता है, उसमें बुरे कामों को भी नीचा दिखाने की ताक़त है ।

आतिशे अज तौबा चूँ बेकरोजद ऊ ।
 हरचे याबद जुमला दरहम सोजद ऊ ॥
 क्रिस्सा कोताह मी कुनम ईं जाएगाह ।
 बूद शाँ अलबन्ता हाले अजमे राह ॥
 शेख गुस्ते करदा शुद दर हलका बाज ।
 रक्त वा असहाब ता सूए हिजाज ॥

ख्वाब दीदन दुखतर तरसा व अज अकब शेख रफतन

दीद अजौँ पस दुखतरे तरसा वख्याव ।
 कोफताद दर किनारश आफताव ॥
 आफताव आँगाह वकुशादे जबाँ ।
 कज पए शेखत रवाँ शो ईं जमाँ ॥
 मजहबे ऊ गीरो खाके ऊ बेबाश ।
 पे पिलीदश कर्दा पाके ऊ बबाश ॥
 ऊ चे आमद दर रहे तो अज मजाज ।
 दर हकीकत तू रहे ऊ गीर बाज ॥

जब वह किसी दिल में पश्चानाप की आग भड़का देता है तो उसके द्वारा गुनाहों को भी जला डालता है ।

मैं इस अवसर पर इस कथानक का थोड़े ही शब्दों में वर्णन करना उचित समझता हूँ । सारांश यह कि उन लोगों ने उसी समय यात्रा करने की ठान ली ।

शेख ने स्नान किया और पुनः अपने साथियों के बीच में बैठा और फिर उनके साथ अरब देश को चल दिया ।

ईसाई बाला का स्वप्न देखना और शेख के पीछे जाना

शेख के चले जाने के उपरान्त ईसाई की लड़की ने यह स्वप्न देखा कि उसके अंक में एक सूर्य आकर गिर पड़ा है,

और वह उससे कह रहा है कि इसी क्षण अपने प्रेमी शेख के पीछे रवाना हो जा ।

उसका धर्म स्वीकार करले और उसी की शिक्षाओं पर चल । तूने ही उसे अपवित्र किया था अब स्वयं उसके हाथों से पवित्र बन जा ।

वह सांसारिक प्रणय-जाल में फँसकर तेरे धर्म में आया था परन्तु तू वास्तव में उसके धर्म को म्बीकार कर ।

अज रहश बुदी बराहे ऊ दर आ ।
 चूँ बराह आमद तो हमराही नुमा ॥
 रहजनश बूदी तो पस हमरह बेबाश ।
 चंद अजी बे आगही आगह बेबाश ॥
 चूँ दर आमद दुखरे तरसा जे स्वाव ।
 नूर मीदादे दिलश चूँ आफताव ॥
 दर दिलश दरंदे पिदीद आमद अजब ।
 बेकरारश कर्द ओँ दर्द अज तलब ॥
 आतिशे दर जाने सरमस्तश फिताद ।
 दस्त दर दिल अज दिलो दस्तश फिताद ॥
 मो नदानिस्त ऊ कि जाने बेकरार ।
 दर दर्दने ऊ चे तुलम आवुर्द बार ॥
 कारश उफ़ादो नबूदश हमदमे ।
 दीद खुद रा दर अजायब आलमे ॥
 आलमे काँजा मजाले राह नेस्त ।
 गुंग बायद शुद जवाँ आगाह नेस्त ॥

तूने उसको सीधे मार्ग से हटाया था । अब जा और उसके धर्म में परिवर्तित हो जा ।

तूने उसको पथ—भ्रष्ट किया था अब जाकर उसकी सहायक बन और उसके साथ रह । वह अब अपने उचित मार्ग पर आ गया है । तू कब तक इस प्रकार सुस्ती में पड़ी रहेगी ! अब खुदा को समझ ले ।

ईसाई बाला यह स्वप्न देखकर चौंक पड़ी । उसका हृदय सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था ।

उसके दिल में एक विलक्षण पीड़ा उत्पन्न हो गई जिसने उसे एक आकुल जिज्ञासु बना दिया ।

उसके मतवाले प्राण में एक जलन सी पैदा हो गई और दिल पीड़ित होने के कारण उसका हाथ दिल पर जा पड़ा । उसका हाथ भी व्यर्थ हो गया ।

उसको यह भी ज्ञान न रहा कि उसके व्याकुल प्राणों ने उसके अन्दर कैसा बीज उगा दिया है ।

उसके प्रति स्नेह दिखाने वाला कोई न था । वह बड़ी कठिनाई में पड़ गई ।

उसने अपने आप को एक अनूठे जगत में देखा जहाँ पहुँचने का कोई मार्ग ही नहीं दिखलाई पड़ता था ।

चूँ नज़र बर शेख अकगंद औँ निगार ।
 अशक मी बारीद चूँ अत्रे बहार ॥
 दीदा बर अहदो वफाए ऊ फ़िगन्द ।
 खेश रा बर दस्तो पाए ऊ फ़िगन्द ॥
 गुफ़ अज तशवीरे तू जानम बेसोख्त ।
 वेश अर्जी दर पर्दा नतवानम बेसोख्त ॥
 बर फ़िगन ई परदा ता आगह शवम ।
 अरजा कुन इसलाम ता बारह शवम ॥
 शेख बर वै अरजाए इस्लाम दाद ।
 गुलगुला दर जुम्लए यारौँ फ़िताद ॥
 चूँ शुदाँ महरूए अज अहे अयौँ ।
 अशके बारौँ मौजजन शुद दर जमाँ ॥
 आखिरकलम औँ सनम चूँ राहे याफ़ ।
 जौके ईमाँ दर दिलश नागाह याफ़ ॥
 शुद दिलश अज जौके ईमाँ बेकगर ।
 गम दर आमद गिर्दे औँ वे रामगुसार ॥

उसने अपने नेत्र खोल कर शेख को देखा और उसे वादल के समान औँसू गिराते हुए पाया ।

उस समय उसने शेख के सब्बे प्रेम और प्रतिज्ञा पर विचार किया । और जोश में आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी ।

फिर वह कहने लगी कि तुम्हारे शोक में मरे प्राण जल गये हैं और अब अधिक समय तक पर्दे के भीतर छिपकर जलने को शक्ति मुझमें शेष नहीं रह गई है ।

आप इस पर्दे को दूर कर दीजिये ताकि मैं खुदा तक पहुँच सकूँ । मुझे अपने धर्म इस्लाम की दीक्षा दीजिये जिससे कि मैं उचित मार्ग पर आ जाऊँ ।

शेख ने उसे इस्लाम की दीक्षा दी और उसके मित्र आनन्द के मारे चिल्लाने लगे ।

बह सुन्दरी खुदा को चाहने वालों में से बन गई और उसके नेत्रों से आसुओं की नदी बह चली ।

शेख की शिन्हा पाते ही उस प्रेमिका के हृदय में धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगई ।

धर्म की श्रद्धा से उसका दिल बेचैन होगया । उस निरीह अबला को परमात्मा के प्रेम ने चारों तरफ से घेर लिया !

गुफ़ शेरख़ा ताक़ते मन गश्त ताक़ ।
 मी नदारम हेच ताक़त दर फिराक़ ॥
 मी ख़वम जी ख़ाक़दाने पुर सदा ।
 अज़विदा ऐ शेख़े आलम अलविदा ॥
 चूँ मरा कोताह ख़वाहद शुद सख़ुन ।
 अज़िज़म अफ़ुअम कुनो ख़स्मी मकुन ॥
 ई बग़ुफ़ आँ माहो दस्त अज़ जाँ फ़िशौद ।
 नीम जाने वूद बर जानों फ़िशौद ॥
 जाने शीरीं जो जुदाई ए दरेरा ।
 गश्त पिनहाँ आफ़ताबश ज़ेरे मेरा ॥
 क़त्रए बूद अंदरीं बहरे मजाज़ ।
 सूए दरयाए हक़ीक़त रफ़ू बाज़ ॥
 जुम्ला चूँ बादे ज़े दुनिया मी ख़वेम ।
 रफ़ू ऊ वो मा हमा हम मी ख़वेम ॥
 ई चुनीं उफ़ूद बसे दर राहें इश्क़ ।
 ई कसे दानद कि हस्त आगाहें इश्क़ ॥

और उसने शेख़ से कहा कि ऐ शेख़ मुझमें अब जुदाई बर्दाश्त करने की ताब नहीं है ।

मेरी ताक़त जाती रही, मैं इस दुःखभरी दुनियाँ से कूच कर रही हूँ । शेख़ बस अब रुख़सत होती हूँ ।

मैं मजबूर हूँ, मेरा भगड़ा ही ख़तम हो रहा है । इसलिये अब मुझे मुआफ़ करो ।

उस सुन्दरी ने यह कह कर अपना हाथ प्राण पर से खींच लिया । एक तो पहले ही से उसमें आधी जान शेष थी और अब वह भी उसने अपने प्रियतम पर न्यौछावर कर दी ।

प्राणों का त्याग करना कितने शोक की बात है और साथ ही कठिन भी । उसका सूर्य घन-बटाओं में विलीन हो गया ।

वह इस प्रकट जगत-रूपी सागर में एक बुलबुले के समान थी और अब वास्तविकता की तरफ़ चली गई ।

हम सभी वायु के समान इस संसार को छोड़कर चले जाते हैं । वह तो चली गई, परन्तु हम सभी किसी न किसी दिन इसी प्रकार चले जायेंगे ।

प्रणय-मार्ग में ऐसी बहुत सी बातें होती हैं, परन्तु उनके रहस्यों को वही समझ सकता है जो प्रणय के पेचों को समझता है ।

हर चे मी गोई चु दर रह मुमकिनस्त ।
 रहमतो नौमीद गिर्दे ऐमनस्त ॥
 नफ्स ई असरार न तवानद शुनूद ।
 बे नसीबा गूए न तवानद रबूद ॥
 ई बगोशे जौ जे दिल बायद शुनीद ।
 न जे नक्वे आवो गिल बायद शुनोद ॥
 जंग दिल बा नफ्स हरदम सख्त शुद ।
 नौहए दर्देह कि मातम सख्त शुद ॥
 दर चुनी रह चाबुके बायद शिगर्क ।
 बू कि बेतवाँ रफ़ अर्जी दरियाय शर्क ॥
 शेख रा अज रफ़्तने ऊ जौ बसोख ।
 दीदा अज बेरूए ऊ आलम बदोख ॥
 वा रफ़ोकाँ गुफ़ शेखे रामजदा ।
 खस्तओ सरगस्तओ मातम जदा ॥
 कै रफ़ीकाँ हाले मारा बिनगरेद ।
 ई चुनी अहवाल मारा बिनगरेद ॥

जो कुछ भी न कह रहा है वह इस मार्ग में सम्भव है। दया करना और निराश करना दोनों में किसी प्रकार का भय नहीं है।

नफ्स इन बातों को नहीं सुन सकता है और भाग्य की सहायता के बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है।

यह बात प्राणों पर भली प्रकार विदित होनी चाहिये। पानी और भिट्टी के इस प्रकट शरीर की इच्छाओं का इसके साथ सम्बन्ध न होना चाहिये।

मानवी इन्द्रियों और हृदय के साथ सदैव तुमुल युद्ध होता रहता है। इस शोक के विषय पर दुःख प्रकट कर।

इस मार्ग पर चलने के लिये एक बहुत चालाक और चुस्त मनुष्य होना चाहिये। तब आशा की जा सकती है कि वह इस अथाह नदी के पार जा सकता है।

शेख के प्राणों में उस प्रेमिका की मृत्यु से धकधक कर के अग्निजलने लगी और उस चन्द्रवदनी के न रहने से उसने भी संसार की तरफ से अपनी आँखें फेर लीं।

शेख बहुत ही उदासीन और दुःखी था। वह परेशान, दुखी और दुर्बल हो गया था।

उसने अपने साथियों से कहा कि मेरी इस अवस्था को देखो और विचार करो कि मुझ पर क्या बीती है।

बाशद ईं आगाज ईं अंजामे इश्क ।
 हरकि खाहद कू बरद दर दामे इश्क ॥
 मुर्ग दाम आमद गिरिफ्तम जेरे बाल ।
 मन नखाहम माँद बे ऊ देरे साल ॥
 अज जहाँ सूए जिनों खाहम शुदन ।
 वज पए जानों रबों खाहम शुदन ॥
 बामदादों दिलबर अज आलम बेरफ्त ।
 शेख अज पै नीमरोजे हम बेरफ्त ॥
 कब शेखो कबे दुखतर साखतन्द ।
 हर दो रा पहलूए हम परदाखतन्द ॥
 पेशवाए इश्के जानों खुतबा खाँद ।
 आशिके माशूक रा बाहम निराँद ॥
 चूँ दो आशिक दायमा मदहोश हम ।
 चूँ दो मौजूँ दस्त दर आरोश हम ॥
 जाँ दो कब्रे आँ दो यारे दर्दमंद ।
 दस्त अजाँ हसरत जदा सरवे बुलंद ॥
 वाँके आँजा ऐजिद अज लुत्को कमाल ।
 कर्द पैदा चशमए आव जलाल ॥

प्रेम की शुरुआत और खान्सा इसी प्रकार होता है। इश्क को कान्धू में लाना बहुत ही मुश्किल बात है।

चिड़िया जाल में फँस गई थी और मैंने उसे गोद में भी छिपा लिया। अब उसके बिना बहुत दिनों ज़िन्दा नहीं रह सकता।

मैं इस दुनियाँ से बहिश्त को चला जाऊँगा और अपनी प्रेमिका के पीछे रवाना हो जाऊँगा।

प्रातःकाल उस प्रेमिका के प्राण निकले थे और दोपहर के समय शेख भी इस संसार को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

लोगों ने शेख और उस लड़की की समाधियाँ एक ही जगह बनाईं और उन दोनों को एक दूसरे की बगल में समाधिस्थ कर दिया।

प्रेमिका के प्रेम रूपी क़ाज़ी ने विवाह का मन्त्रोच्चारण किया और प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से मिला दिया।

यह दो प्रेमी थे जो सदैव आनन्द में रहेंगे। दो मित्रों के समान एक दूसरे के गले मिलते रहेंगे।

उन दोनों की समाधियों से दो ऊँचे- ऊँचे सरो के वृत्त उत्पन्न हुये।

और इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने प्रभाव से एक मीठे जल का स्रोत भी पैदा कर दिया।

चंद फरसंग आँ चुनों खुर्रम बुवद ।
हम चुनों जाए बेगीती कम बुवद ॥
गर दरौं मंजिल तुरा बाशद करार ।
चार फस्त आँजा न वीनी जुज वहार ॥
हेच फस्तज मेवा खाली नेस्तन्द ।
ता न पिंदारी कि आली नेस्तन्द ॥
हर दो मी आरन्द बारे आशिकी ।
बुललजब कारेस्त कारे आशिकी ॥
दरमियाने कावाओ रूम आँ मुकाम ।
शुद जियारतगाहे खल्क अज खासा आम ॥
किस्सए “अत्तार” वर ईं माह नेस्त ।
सिरे साहब नज्द कस आगाह नेस्त ॥

उन समाधियों के आस पास थोड़ी दूर तक इतना हरा भरा और रमणीक स्थान है कि जैसा इस दुनियाँ में बहुत कम होगा ।

तुम अगर वहाँ जाओ तो वहाँ चारों ऋतुओं में मेवे फलते फूलते पाओगे ।

कोई ऋतु ऐसी नहीं कि जिसमें मेवा न होता हो । परन्तु यह न समझो कि वह मेवा स्वादिष्ट नहीं होता है ।

बात इसके विपरीत है । वही दोनों प्रेमी प्रेम के फल उत्पन्न करते हैं । यह प्रेम का कारखाना है ।

प्रणय का रहस्य भी निराला है । कावे और रूम के बीच में यह स्थान जन-साधारण के लिये तीर्थ-स्थान होगया है ।

“अत्तार” ने उस प्रेमिका की कहानी नहीं लिखी है । ईश्वर का भेद किसी ज्ञानी को भी विदित नहीं होता है ।

जवाब दादन हुदहुद ऊ रा

गुप्तए दर बन्द सूरत माँदा तू ।
 पाए ता सर दर कुदूरत माँदा तू ॥
 इश्के सूरत नेस्त इश्के मारफत ।
 इश्के शहवत बाज़िए हैवों सिकत ॥
 हर जमाले रा कि नुकसाने बुवद ।
 मर्द रा अज इश्क तावाने बुवद ॥
 हर जमाले रा कि बाशद बा ज़वाल ।
 कुफ़ बाशद मस्त गश्तन जाँ जमाल ॥
 सूरते अज खल्लो खूँ आरास्ता ।
 करदा नामे ऊ महे ना कासता ॥
 गर शवद आँ खल्लो आँ खूँ कम अजो ।
 ज़िस्त तर न बुवद दरीं आलम अजो ॥
 आँ कि हुस्ते ऊ ज़े खल्लो खूँ बुवद ।
 दानी आखिर कौं नकूई चूँ बुवद ॥

हुद हुद का सांसारिक प्रेमी को समझाना

हुद हुद ने कहा कि तू इस संसार का सेवक होगया है। सांसारिक वस्तुओं के प्रति तेरे हृदय में मोह उत्पन्न हो गया है। इसलिये अब तू सिर से पैर तक अपवित्र होगया है।

सांसारिक सौंदर्य पर मुग्ध हो जाना ईश्वर के प्रति प्रेम करना नहीं है वरन् जानवरों से सम्पर्क रखने के समान है। वासनामय प्रेम मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने से रोक देता है।

नाशवान् सौन्दर्य पर मुग्ध होना ईश्वर को न मानने के समान है।

जो वस्तु स्थायी नहीं है उस पर मर मिटना ठीक नहीं है।

रक्त और मौस से बने हुए मुख को प्रियतमा की उपाधि से भूषित किया जाता है।

उस रक्त और मौस के दूर होजाने पर तो संसार में उससे अधिक कुरूप वस्तु ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगो।

फिर विचार करो, वह रूप कैसा है, जिसका बनना और बिगड़ना केवल रक्त और मौस के ऊपर निर्भर है !

चन्द गरदी गिर्दे सूरत ऐब जो ।
 हुस्न दर गैबस्तो मन अज्ज ऐब जां ॥
 गर बर उफ़द परदा अज्ज पेशानेकार ।
 नै हमी दयार मानद नै देयार ॥
 मह्म गर्दद सूरते आफ़ाक़ कुल ।
 इज्जहा कुल्ली बदल गरदद बज्जुल ॥
 दोस्तीए सूरती ऐ मुखसग़ ।
 दुश्मनी गरदद हमा बा यक दिगर ॥
 आँ कि ऊरा दोस्तीए गैबीअम्त ।
 दोस्ती ईनम्त कज्ज बे ऐबीअस्त ॥
 हरचे जुज्ज ई दोस्ती रहगोरदत ।
 बम पशेमानी कि नागह गीरदत ॥

हिकायत बर दार शुदन मनसूर हल्लाज

चूँ शुदाँ हल्लाज बरदार आँ ज़माँ ।
 जुज्ज अनलहक़ मी न रफ़श बर ज़बाँ ॥

इस प्रकट रूप के चक्कर में पड़कर तू कब तक उसमें बुराइयाँ और भला-
 इयाँ निकालता रहेगा । वास्तविक रूप तो गुप्त है और मैं बुराइयाँ निकालने में
 व्यस्त हो रहा हूँ ।

यदि प्रेम के सामने से पर्दा हटा दिया जाय तो न तो वह संसार ही रहेगा
 और न उसमें रहने वाले सब के सब नाश को प्राप्त हो जायेंगे ।

इस पृथ्वी और आकाश का रूप ही नष्ट हो जायगा और समस्त आदर-
 मयी भावनाएँ बदनामी के रूप में परिणत हो जावेंगी ।

सूरत पर आशिक़ होने को अपने आप से दुश्मनी करना समझ ।

प्रकट मैत्री पारस्परिक वैरभाव की पोषक है । अदृश्य से मित्रता करना ही
 सच्ची मित्रता है ।

इस मैत्री के अतिरिक्त यदि कोई मनुष्य दूसरा मार्ग ग्रहण करेगा तो वह
 एकायक आपत्तियों में पड़ जायगा ।

मनसूर के शूली पर चढ़ने की कहानी

मनसूर जिस समय शूली पर चढ़े उस समय उनके मुख से “अनलहक़”
 के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं निकलता था ।

चूँ ज़बाने ऊ हमी न शिनाख़न्द ।
 चार दस्तो पाए ऊ अन्दाख़न्द ॥
 ज़र्द शुद चूँ खूँ बेरफ़ अज़ वै बसे ।
 सुख़ चूँ मानद दरोँ हालत कसे ॥
 ज़ुद दर मालीद ओँ ख़ुरशीद राह ।
 दस्त बबुरीदा बरूए हमचो माह ॥
 गुफ़ू चूँ गुलगूना मर्दस्त खूँ ।
 रूए रा गुलगूना ज़ौँ करदम कुनू ॥
 ता नबाशम ज़र्द दर चश्मे कसे ।
 सुख़रूई बाशदम ओँजा बसे ॥
 हर किरामन ज़र्द आयम दर नज़र ।
 ज़न बरद काँजा बेतरसीदम मगर ॥
 चूँ मरा अज़ तन सरे यकमूए नेस्त ।
 जुज़ चुनी गुलगूना ओँजा रूए नेस्त ॥
 मर्द खूनी सर नेहद चूँ ज़ेरे दार ।
 शेरे मरदश ओँ ज़माँ आयद बकार ॥

लोग उनको बातों को समझने में असमर्थ थे, इसलिये उनके होंथ-पाँव काट डाले ।

जब उनके शरीर का समस्त रक्त बह गया तब वह ज़र्द रंग के होगये । इस अवस्था में किपी के मुख पर लाली कैसे रह सकती है !

और तब वह सूर्य बहुत शीघ्र छिर गया (मरगये) । उनके हाथ पैर कटे हुए थे परन्तु मुख चन्द्रमा के समान चमक रहा था ।

उन्होंने कहा कि मनुष्य के लिए रक्त ही उबटन है और इसीलिए मैंने अपने मुख पर उबटन लगा लिया है,

कि किसी को मैं ज़र्द न ज़ूँ और उस दूसरे स्थान में मुझे बहुत प्रतिष्ठा मिले ।

जिस किसी को मैं ज़र्द दिखलाई पड़ूँगा वह कदाचित् यह अनुमान करेगा कि मैं वहाँ जाने से भय खा रहा हूँ ।

मेरे शरीर पर एक रोंआ भी शेष नहीं रह गया है अतएव उक्त स्थान के लिए मेरे मुख पर ऐसा ही उबटन होना चाहिये ।

जब रक्त में डूबा हुआ मनुष्य शूलों के सम्मुख सिर झुकाता है तो वह उस समय बहुत ही बहादुर हो जाता है ।

चूँ जहानम हल्क़ण मीमे बुवद ।
 कै चुनी जाए मरा बीमे बुवद ॥
 हरकि रा बा अजदहाण हफ़ सर ।
 दर तमूज़ उफ़ताद दायम खाबो ख़र ॥
 जीं चुनी बाज़ीश बिसयार ओफ़तद ।
 कमतरा चीज़श सरे दार ओफ़तद ॥

हिकायत मन्सूर

गुफ़त चूँ दर आतशे अफ़रोख़ता ।
 ग़शत औ हल्लाज कुल्ली सोख़ता ॥
 आशिक़े आमद मगर चोबे बदस्त ।
 बर सरे औ मुश्ते ख़ाकिस्तर नशस्त ॥
 पस ज़बाँ बकुशाद हमचूँ आतशे ।
 बाज़ मी शोगीद ख़ाक़मतर ख़शे ॥
 बंगहं मी गुफ़त बर गोएद रास्त ।
 काँ के मी ज़द ऊ अनलहक़ ऊ कुजाम्त ॥
 उंचे गुफ़म उंचे विशनीदी हमह ।
 उंचे दानिस्ती तूबो दीदी हमह ॥
 औ हमह ज़ज अव्वले अफ़माना नेस्त ।
 मह शुद जानत दरी वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे भय क्यों मालूम होने लगा !

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोने जागने हर वक्त सात सिर वाला अजदहा हो,

और सर उठाता रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेल खिलाने पड़ते हैं और उसके लिये शूली की नोंक बहुत छोटी-सी वस्तु है ।

मन्सूर की कहानी

जब धधकती हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया, और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया । उसके हाथ में एक डंडा था । उस भस्म को डंडे से कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला, कि अब तो तनिक सत्य बोलो, वह अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि) की पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पड़ा वह सब और जो कुछ नूने जाना व देखा,

यह सब भी अभी कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढ़कर नहीं हैं । इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस ऊजड़ शरीर को छोड़ गया ।

अस्ल बायद अस्ल मुसतगानी ब पाक ।
 गर बुबद फर्रो अगर न बुबद चे बाक ॥
 हस्त खुशीदि हक्कीकी बर दवाम ।
 गो नै ज़रा मों न साया वस्सलाम ॥

हिकायत शेख बसरा बर सरे गोर मुर्दा

दफन मी कर्दन्द मरदे रा बस्ताक ।
 शेखे बसरी शुद ब पेशे आँ मगाक ॥
 सूए आँ गोरो लहद मी बिनगरीस्त ।
 बर सरे आँ गोर बर खुद मी गिरीस्त ॥
 पस चुनी गुफता कि कारे मुशकिलस्त ।
 कीं जहाँ रा गोर आखिर मंजिलस्त ॥
 वों जहाँ रा अव्वलीं मंजिल हमीनस्त ।
 अव्वलीनो आखरीं जेरे जमीनस्त ॥
 दिल चो बन्दी बर जहाने जुम्ला रंग ।
 काखिरश ईनस्त यानी गोरे तंग ॥
 चूँ न तरसी अज़ जहाने साबनाक ।
 कव्वलश ईनस्त यानी जेरे खाक ।

ठीक भी है, उस मस्त तथा पवित्र सत्यता ही का होना आवश्यकिय है ।
 अब बालियों हों चाहे न हों, इस मूल की भी कोई चिन्ता नहीं है ।

वास्तविक सूर्य उज्ज्वलता तो सदैव उपस्थित है । यदि कण और छाया
 नहीं रहते तो जाने दो ।

शेख बसरा का मुर्दे को गड़ते हुए देखना

शेख हसीन बसरा कहीं जा रहे थे । मार्ग में उन्होंने देखा कि लोग एक
 मृतक को गाड़ रहे हैं ।

समाधि को देखकर वह वहीं बैठ गये और स्वयम् रोने लगे ।

उन्होंने अपने हृदय में सोचा कि यह तो बड़ो जटिल समस्या है । संसार
 का अन्त समाधि ही है ।

और फिर उस दूसरे संसार में पहुँचने की पहली मीढ़ी भी यही है ।
 अर्थात् पहली और अन्तिम दोनों मंजिलें इसी नाशवान् जगत में हैं ।

इस बहुरंगिनी दुनिया में क्यों लगन लगाता है, जिसका अन्त एक संकीर्ण
 समाधि है ?

और उस संसार में जाने से भय क्यों नहीं खाता जिसका सफर समा-
 धिस्थ होजाने के उपरान्त प्रारम्भ होता है ?

चंद अजीं चूं आखरीं खाहद बुदन ।
 वाये काँ अव्वल चुनीं खाहद बुदन ॥
 हेच कमरा दर पसे ईं पर्दा नेम्त ।
 बा कसे ऊ रा बजारी मुर्दा नेम्त ॥
 हर चिरागे रा कि बाशद बाद पेश ।
 चूं तवानी राह बुर्द आजाद वेश ॥
 कर्द मी खाही जदन दर पर्देग ।
 वा कसे जन कू न दागम मुर्देग ॥
 चूं तो सौदाई वदागे मी बरी ।
 मर सरे मारा चिरागे मी बरी ॥
 मी नतरमी चूं चिरागे जूद मीर ।
 जूद मीरो गर तवानी जूद मीर ॥
 गर बेमीरद ईं चिरागात नागहे ।
 रह वमर ना बुर्दा उफ्ती दर चहे ॥
 गर चिरागे मुर्दा रा जाई वये ।
 दर हमा आलम खवर नदेहद कसे ॥

इस संसार से कब तक सम्बन्ध रखेगा जिसका अन्त इस प्रकार है और जिसका प्रारम्भ समाधिस्थ होने के उपरान्त होता है। इसके विषय में हम कह ही क्या सकते हैं ?

बड़ी कठिनाता है। यह भेद किमी पर भी प्रकट नहीं है और न इसके प्रेम में किमी की मृत्यु होती है।

जिस दीपक के सामने से होकर वायु चल रही हो उसे तू स्वतंत्रता के साथ लेकर कैसे चल सकता है।

यदि तू पर्दे के अन्दर प्रवेश करना चाहता है तो किसी ऐसे मनुष्य से सम्बन्ध उत्पन्न कर जिसके यहाँ कोई मृतक नहीं है।

जब तू पागल है और संसार की विलक्षणता पर प्राण देता है तब तो तू एक आँधी हुआ जो हमारे दीपक को बुझा देती है।

अत्यन्त शीघ्र समाप्त हो जाने वाले दीपक को इस बात का डर लगना चाहिये कि वायु उसे शीघ्र ही बुझा देती है।

तू भी उसी दीपक के समान है। फिर तुझे भय क्यों नहीं मालूम होता ? तूने अपना मार्ग अभी समाप्त नहीं किया है।

यदि तेरे जीवन का यह दीप एकएक बुझ जाय तो तू अवश्य ही किसी गड्ढे में गिर पड़ेगा।

हर चिरागो रा कि बादे दर रबूद ।
 गर बसे बर सर जनी अज बै चे सूद ॥
 चूँ चिरागज जाए बेजाए रसीद ।
 चूँ बदजा बाज शुद शुद ना पेदीद ॥
 राहे बीना जौँ जहाँ ता आँ जहाँ ।
 वेश यकदम नेस्त जायज दरमियाँ ॥
 अज जहाँनत चूँ बर आयद जाँ दमे ।
 ईँ जहाँनत आँ जहाँ गरदद हमे ॥
 ईँ जहाँ ता आँ जहाँ बिसयार नेस्त ।
 जुज दमे अन्दर मियाँ दीवार नेस्त ॥
 चूँ बर आयद आँ दमत अज जाने पाक ।
 पस निगूँ सारत बेयनदाजत बखाक ॥
 मर्ग रा वर खल्क अजमे जाजिमस्त ।
 जुम्ला रा वर खाक खुस्तन लाजिमस्त ॥
 मर्ग न अहमक न खुसरद रा गुजाश्त ।
 न यके नेकी न यक बद रा गुजाश्त ॥

फिर उम तुम्हे हुए दीपक का पता तुम्हें संसार में कोई भी नहीं दे सकेगा । वह तुम्हें कहीं भी नहीं मिलेगा ।

जिम दीप के वायु का झोंका उड़ा ले गया, उमके पाने के लिये लाख प्रयत्न कर तब भी न मिलेगा ।

जब वह अपने स्थान से हट गया तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो गया ।

इस संसार से वह संसार बुद्धिमान् मनुष्य के लिये बहुत दूर नहीं है । इस जग से जैसे ही तेरी साँस निकली वैसे ही यह जगत दूसरे जगत के रूप में परिणत हो जाता है ।

यह संसार उम दृमरे में अधिक दूर नहीं है । वस एक साँस रूपी दीवाल बीच में स्थित है ।

जब तेरी मृत्यु आती है, तुम्हें औंधे मुख पृथ्वी पर गिरा देती है ।

सांसारिक मनुष्यों पर मृत्यु अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है और प्रत्येक को किसी न किसी दिन पृथ्वी पर सेना अवश्य ही होगा ।

मृत्यु ने न मूर्ख को छोड़ा और न बुद्धिमान् को । उसके लिये भले और बुरे समान हैं ।

गर तु जीं कौमी वगर जाँ दीगरी ।
 हमचो ईशाँ बुगुजरी ता बिनगरी ॥
 हर कि सुदोँ गश्त जेरे खाक पस्त ।
 हर कसश गोयद बेया सूदो बेरस्त ॥
 हर किरा अरजीं तेहमतन हस्त मर्ग ।
 देग रा सर बर गिरफ्तन नेस्त वर्ग ॥
 अलहकत दुनिया चु पुर वर्ग ओफताद ।
 कव्वलीं आसाइशो मर्ग ओफताद ॥
 खेज ता गामे बगरदूँ दर नेहेम ।
 पस सरे ईं मर्गे पुर खूँ बर नेहेम ॥
 मो रवम गिरयाँ चो मेग अज आमदन ।
 आह अज रफ्तन दरेग अज आमदन ॥

हिकायत गिरीसतन दीवाना दर दमे नज़ा

आँ यके दीवानए अज पहले राज ।
 गश्त वक्ते नज़ा जाँकन्दन दराज ॥
 अज सरे बेकूव्वतीयो इज्तेरार ।
 हमचो अत्रे खँ फिशौं बेगिरीस्त जार ॥

तू चाहे मूर्ख हो अथवा ज्ञानी, जिस प्रकार और सब यहाँ से चले गये, तुझे भी जाना है ।

परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी के अन्दर विलीन हो जाता है, लोग उसके विषय में कहते हैं कि चलो अब वह संसारिक भ्रमों से छूटकर सुखी हो गया ।

जब रुस्तम ऐसे पहलवान की मृत्यु आ जाती है तो वह हाँडी का ढक्कन खोलने तक का अवकाश नहीं पाता है ।

सत्य तो यह है कि यदि इस संसार में तेरा घर पूरा भरा है तो मृत्यु तेरे आनन्द की प्रथम सीढ़ी है ।

उठ, आकाश के ऊपर अपना कदम रख । इस रक्त से परिपूर्ण संसार का विचार ही मस्तिष्क से निकाल बाहर कर ।

जब हम इस संसार में उत्पन्न होते हैं तो खूब रोते हैं । (जाने का हाल पहले ही कह चुके) दोनों ही अवस्थाएँ खेदजनक हैं ।

एक पागल का दुःखित अवस्था में रोना

एक पागल जिसके हृदय में पीड़ा थी, जब मरने लगा तो प्राण निकलने का उसे बहुत कष्ट हुआ ।

व्याकुल होकर और कमजोरी से तड़प कर अश्रुपात करने लगा,

गुल्लू चूँ जौं ऐ खुदा आवरदई ।
 चूँ हमी बुदी चिरा आवरदई ॥
 गर नबूदे जाने मन आमूदमे ।
 जौं हमा जाँकन्दन ऐ मन बूदमे ॥
 नै मराअज जीस्तन मुरदन बुदे ।
 नै तुरा आवुर्दनो बुरदन बुदे ॥
 काश कै रंजे शुद आमद नेस्ते ।
 गर शदायद नस्त वद नेस्ते
 गर चे फर्ज उफ़ाद मुदेन पेशा कर्द ।
 मन नदारम जोहरा ई अवेशा कर्द ॥
 ईसिए मरियम कि बूदे शाद ऊ ।
 चूँ जे मर्गे खेश कर्दे याद ऊ ॥
 वा चुनौं बस्ते कि बूदा हासिलश ।
 आँ चुनौं बीमे फितादे दर दिलश ॥
 कज्र अरक़ आघशता गश्ते जाए ऊ ।
 वौं अरक़ खूँ बूद सर ता पाए ऊ ॥

और इस प्रकार कहने लगा कि हे ईश्वर तूने ही मुझे इस संसार में प्राण देकर उत्पन्न किया था । यदि इस प्राण को फिर ले जाना था तो इसे लाया ही क्यों था ?

यदि मेरे प्राण न होते तो मैं बड़े आनन्द से अपने दिन व्यतीत करता और फिर इस समय उनके निकलने के कष्ट से बचता ।

न मैं उत्पन्न ही होता और न मुझे मृत्यु के मुख में ही जाना पड़ता । तुझे भी मुझे यहाँ भेजकर फिर ले जाने की आवश्यकता न होती ।

सारांश यह कि यह कोई भी कष्ट उठाने न पड़ते । कष्ट न होने में किसी प्रकार की बुराई भी न थी ।

यद्यपि मरना अवश्यम्भावी है, परन्तु मैं इसका विचार भी नहीं कर सकता ।

महात्मा ईसा सदैव प्रमत्न रहा करते थे । परन्तु वह भी जब अपनी आनेवाली मृत्यु की सुध किया करते थे,

तो उन्हें उतना ही भय होता था और दिल उनका धबकाता था ।

और इसके कारण उनके शरीर से पसीना निकलने लगता था और यह पसीना क्या था ? उनके वदन का सम्पूर्ण रक्त ।

दर सिफ़त वादिए इश्क़ गोयद

कस दरीं वादी बजुज आतश मबाद ।
 जाँ के आतश नेस्त इश्क़श ख़श मबाद ॥
 इश्क़ आँ बाशद कि चूँ आतश बुवद ।
 गर्म रौ सोज़िदओ सरकश बुवद ॥
 आक्रबत अंदेश नबुवद यक ज़मों ।
 वर कुशद ख़ूनश बआतश सद जहाँ ॥
 लहज़ए न काफ़िरी दानद न दीं ।
 लहज़ए न शक शिनासद न यक्ती ॥
 नेको वद दर राहे ऊ यकसों बुवद ।
 खुद चो इश्क़ आमद न ईनो आँ बुवद ॥
 ऐ मुबाही ई सखुन आँने तो नीस्त ।
 मुरतदी दीं शौक़ दर जाने तो नीस्त ॥
 हरचे दारद जुमला दर बाज़द व नज़द ।
 वज़ विसाले दास्त मी नाज़द व नज़द ॥

प्रेम की विशेषताएँ

इम घाटी में बिना अग्नि के कोई प्रवेश न करे और जो आग के समान जलता न हो उससे उसका प्रेम ही प्रसन्न न हो ।

जिस मनुष्य में प्रणय की अग्नि दहकती हो वह कभी प्रसन्न चित्त न रहे । प्रेमी वही होता है जिसमें अग्नि की जलन हो और वह भी इतनी तीव्र कि दूसरों को जलादे ।

वह मस्त रहे । उसे अपना भी ज्ञान न रहे और क्षण भर के लिये भी फलाफल का विचार न करे ।

उसका रक्त सैकड़ों सांसारिक मानवों को अग्नि में डाल दे । उसको एक क्षण भर के लिये भी अपना अथवा अपने धर्म का ध्यान न आवे ।

अर्थात् उसके रक्त की गर्मी उन सब में आग लगा दे । इसी प्रकार विश्वास और सन्देह का भी उसे विचार न होना चाहिये और भलाई-बुराई उसकी दृष्टि में समान जचें ।

क्योंकि जब प्रणय का भूत उसके शिर पर सवार होता है तब उसे इन बातों की भिन्नता का ज्ञान ही नहीं रहता है ।

ऐ प्रत्येक वस्तु को उचित समझने वाले ! तब तू इन वस्तुओं के विषय में कुछ भी नहीं कह सकता है ।

दीगरों रा बादा दर फ़रदा बुवद ।
 आरिफ़ों रा नक्कद हम ईजा बुवद ॥
 ता नसोज़ी ख़ेश रा एक बारगी ।
 कै तवानी रस्त अज़ ग़मख़ारगी ॥
 ता बेरेशम दर दरुने खुद न सोख़ ।
 दर मुफ़र्रेह कै तवानी खुद फ़रोख़ ॥
 माही अज़ दरिया चु दर सेहरा फ़ितद ।
 मी तपद ता बाज़ दर दरिया फ़ितद ॥
 दिल तपद पैवस्ता दर सोजो गुदाज़ ।
 ता बजाए खुद रसद नागाह बाज़ ॥
 इश्क़े जानों आतशस्तो अक्ल दूद ।
 इश्क़ कामद दर गुरेज़द अक्ल ज़ूद ॥
 अक्ल दर सौदाए इश्क़ उस्ताद नेस्त ।
 इश्क़ कारे अक्ले मादरज़ाद नेस्त ॥
 गर ज़े ग़ैबत दीदए बख़शंद रास्त ।
 अस्ले इश्क़ आँजा बे बीनी कज़ कुजास्त ॥

अब तू धर्म से पृथक हो गया है। तेरे प्राणों का किसी से भी सम्बन्ध नहीं है। प्रेमी वही है जो अपने सर्वस्व को खो दे और केवल यार के मिलाप की लगन में मग्न रहे।

जब तक तू अपने आपको बिल्कुल ही न जला डालेगा तब तक तू दुखों से नहीं बच सकता।

जब तक रेशम का कोया अपने दिल को नहीं जला डालता तब तक उसके हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले घरे में नहीं लाया जा सकता है।

जब मछली पानी में से किसी प्रकार निकल कर ज़मीन पर आ पड़ती है तब तड़पने और उछलने-कूदने लगती है ताकि पुनः पानी में पहुँच जावे।

इसी प्रकार दिल सदैव छटपटाया करता है, ताकि फिर से किसी प्रकार अपने ठिकाने पर पहुँच जावे।

प्रेमिका का प्रेम अग्नि है और बुद्धि केवल धुआँ है। जैसे ही प्रेम प्रज्वलित हो उठता है, धुआँ विलीन हो जाता है।

प्रेम और ज्ञान में स्वभा वतः किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। अतएव ज्ञान प्रेम का पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता।

यदि तुझे एक आँख उस महान शक्ति की तरफ से प्रदान कर दी जावे तब तू समझ जावे कि प्रेम की जड़ कहाँ है।

मस्त यक यक ज़र्रा अज़ मस्तीए इश्क ।
 सर बुलूँ आवुर्द अज़ हस्तीए इश्क ॥
 गर तुरा ओँ चश्मे रौबी बाज़ शुद ।
 वा तो ज़र्राते जहाँ हमराज़ शुद ॥
 वर बचश्मे अक़ल बुकुशई नज़र ।
 इश्क रा हरगिज़ न बीनी पा व सर ॥
 मरदेकार उफ़ताद बायद इश्क रा ।
 मरदुमे आज़ाद बायद इश्क रा ॥
 न तू कार उफ़ादई न आशिकी ।
 मुर्देई तू इश्क रा नालाइकी ॥
 जिदां दिल बायद दर्री रह सद हज़ार ।
 ता कुनद दर हर नक़स सद जाँ निसार ॥

प्रेम की मस्ती में प्रत्येक परमाणु मतवाला हो रहा है और इन सबकी उत्पत्ति भी प्रेम से है ।

यदि तेरी वह दैवी आँख खुल जायगी तो संसार के समस्त परमाणु तुझसे रहस्य की बातें करेंगे ।

और यदि ज्ञान-चक्षु से तू देखेगा तो प्रणय का आदि और अन्त कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होगा ।

प्रणय के लिये एक अनुभवी मनुष्य की आवश्यकता है । उसको अत्यन्त साहसी होना भी आवश्यक है ।

तुझे न तो प्रणय से ही काम पड़ा है और न प्रणयी से । तू एक प्रकार से मृतक है । प्रेम करने योग्य नहीं है ।

इस मार्ग में सहस्रों साहसी पुरुषों की आवश्यकता है, जो हर घड़ी सैकड़ों जातें प्रेमिका पर न्योछावर करते रहें ।

रूमी

(जन्म सन् १३०७ ई०, मृत्यु सन् १३७३ ई०)

यह एशिया माइनर में रूमी के निवासी थे और इसी कारण इनका पूरा नाम जलालुद्दीन रूमी था। यह मौलवी पन्थ के साधुओं में से थे, जो नाचा भी करते थे। इस पन्थ को इन्होंने अपने गुरु शम्शतबरेज की मृत्यु के उपरान्त चलाया था। वास्तव में ईरान के सूफी कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। बहुधा लोग इन्हें सर्वश्रेष्ठ भी कहते हैं। इनकी मसनवी में जो कुशानी पहलवी भी कहलाती है, २६६०० दो पदी छंद हैं। यह पुस्तक संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिनी जाने योग्य है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के द्वारा हुई थी। इनके पिता तथा बादशाह का कुछ सम्बन्ध था। बादशाह के अत्याचारों के कारण उन्हें दूर दूर के सफर करने पड़े थे। इस कारण जलालुद्दीन का बचपन इधर उधर घूमने ही में व्यतीत हुआ। बगदाद, मक्का, मलाविया लारिन्दा, क़ुनिया इत्यादि का भ्रमण इन्होंने किया था। किम्बदन्ती प्रचलित है कि नीशापूर में इनकी भेंट अत्तार से हुई, जिन्होंने बताया कि बच्चे का भविष्य बहुत ही अच्छा होगा और इलाहीनामा की एक प्रति भी दी।

रूमी ने दो विवाह किये थे, जिनसे उसके दो लड़के और एक लड़की हुई थी। इन लड़कों में से एक के कारण रूमी के गुरु की मृत्यु हुई। जो निकल्सन का कहना है, “एक बहुत ही दुर्बल मनुष्य था। काले कपड़े से वह अपने शरीर को ढका रखता था। संसार के रगमंच पर आकर उसने कुछ दिनों तक दर्शकों को अपनी झलक दिखाई और फिर सबके हृदयों में करुण रस भरकर अन्तर्धान हो गया। उस समय उसका प्रभाव लोगों पर बहुत ही अधिक था। जिस प्रकार प्लेटो का अपने गुरु सोक्रेटीज के साथ शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध था, उसी प्रकार जलालुद्दीन रूमी का शम्शतबरेज के साथ, जिनके नाम पर उन्होंने अपनी पुस्तक की रचना की थी। शम्शतबरेज की मृत्यु के उपरान्त भी, मेरी समझ में, उन्हें मृत कहना भूल थी।”

विज्ञान के रूखेपन के कारण रूमी का चित्त रहस्यवाद की तरफ गया और इस विषय में उन्होंने आशातीत उन्नति की।

विनफ्रील्ड के कथनानुसार रूमी की समानता रहस्यवाद में कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी मनुष्य का इस विषय में सन्देह, केवल उनकी मसनवी, दीवान शम्शतबरेज के पढ़ने ही से, विश्वास में परिणत हो सकता है।

इन दोनों में कौनसी रचना अच्छी है, यह निश्चय करना कठिन है। इस विषय में निकल्सन के शब्दों को उद्धृत करता हूँ :—

“मसनवी में धार्मिक गीतों के सभी गुण वर्तमान हैं। पर्वत के गान गुलाब पुष्प के रंग तथा सुगन्ध, जंगल की हलचल इत्यादि से पद ओत

प्रोत हो रहे हैं। ईश्वर की व्यापकता सभी में दिखलाई गई है। यही नहीं, वरन् इसमें और भी अनेक विशेषताएँ हैं। रंग, रूप और गन्ध प्रियतम के दर्पण के समान हैं। सांसारिक प्रेम, और उस स्थान की यात्रा जहाँ उपवन में खिले हुए गुलाब पुष्प कभी मुर्झाते नहीं हैं, केवल उसी प्रियतम के लिये लिखे गये हैं।”

इसके उपरान्त :—

“एक बहुत बड़ी नदी है, जिसकी धार प्रशान्त है और जो बहुत ही गहरी है। भिन्न भिन्न और अनोखे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिवेष्टित स्थानों से बहती हुई, यह अनन्त सागर की ओर अपसर होती है। दूसरी गम्भीर गर्जन के साथ फेन उगलती हुई और अठखेलियाँ करती हुई पहाड़ियों में विलीन होजाती है।”

रूमी की कविता के विषय में वह लिखते हैं, “उनकी कविता को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द योजना, हृदय को हिलानेवाली और आनन्द प्रदायिनी है।”

उनकी प्रमुख रचनाएँ यह हैं :—

मसनवी,

दीवान शम्शतबरेज ।

सवाल करदने खलीफा अज लैला व जवाबे ऊ

गुफ़ लैला रा खलीफा काँ तुई ।
 कज तो मजनूँ शुद परीशानो रावी ॥
 अज दिगर खूबों तो अफ़जूँ नेस्ती ।
 गुफ़ खामुश चूँ तो मजनूँ नेस्ती ॥
 दीदए मजनूँ अगर बूदे तुरा ।
 हर दो आलम बेख़तर बूदे तुरा ॥
 बाख़ुदी तू लेक मजनूँ बेख़ुदस्त ।
 दर तरीके इश्क़ बेदारी बदस्त ।

सबब तर्क करदन इबराहीम अद्म तख़्तो ताज रा

खुशता बूद आँशह शबाना वर सरीर ।
 हारिसाँ वर वाम अन्दर दारो गीर ॥
 कस्दे शह अज हारिसाँ आँहम नबूद ।
 कि कुनद जाँ दफ़ए दुजदानों रनूद ॥

खलीफा का लैला से प्रश्न करना और उसका उत्तर

खलीफा ने लैला से प्रश्न किया, क्या तू ही वह स्त्री है जिसके कारण मजनूँ
 हैरान और मारा मारा फिरता है ?

दूसरी सुन्दर युवा स्त्रियों से तो तू बढ़कर (श्रेष्ठ) नहीं है । लैला ने उत्तर
 दिया बस आप शान्त रहिये ।

आप मजनूँ तो हैं नहीं; यदि आप को मजनूँ की आँख मिलती तो दोनों
 लोकों की प्रतिष्ठा आपकी दृष्टि में न रहती ।

आप होश में हैं और मजनूँ बेहोश है । प्रेम के मार्ग में चतुरता बहुत
 बुरी वस्तु है ।

इबराहीम अद्म का अकारण राज्य-सिंहासन व मुकुट

का त्याग करना

रात्रि में वह बादशाह सिंहासन पर सो रहा था और रक्तक सिपाही कोठे
 पर पहरा दे रहे थे ।

बादशाह का यह मन्तव्य न था कि वह रक्तकों को नियुक्त कर चोरों और
 दुष्ट पुरुषों को दूर रखे ।

ऊ हमी दानिस्त काँ कू आदिलस्त ।
 फारिगस्त अज वाक़ेया ऐमन दिलस्त ॥
 बर सरे तख्ते शुनीद आँ नेकनाम ।
 तक्तक़ेयो हाए हूए शब जे बाम ॥
 गामहाए तुन्द बर बामे सरा ।
 गुफ़ बाख़ुद ई चुनी ज़हरा केरा ॥
 बाँग ज़द बर रौज़ने क़स्त्र ऊ के कीस्त ।
 ई नवाशद आदमी माना परीस्त ॥
 सरफ़ेरो करदन्द क़ौमे बुलअजब ।
 मा हमी गरबेम शब बहरे तलब ॥
 हैं चे मी जोयेद गुफ़न्द उशतुराँ ।
 गुफ़ उशतर बाम बर के जुस्त हाँ ॥
 पस बग़ुप्तन्ददश कि तू बर तख्ते जा ।
 चं हमी जोई मुलाक़ाते इला ॥
 ख़ुद हमी बद दीगर ऊ रा कस नदीद ।
 चँ परी अज आदमी शुद ना पदीद ॥

क्योंकि उसको यह भले प्रकार से ज्ञात था कि जो बादशाह न्यायप्रिय है उसपर कोई भी कष्ट नहीं आता ।

परन्तु उस श्रेष्ठ पुरुष ने सिंहासन पर किसी के कुछ शब्द और ऊधम होने की आहट सुनी,

वह अपने दिल में विचारने लगा कि यह किसका साहस है कि इस प्रकार महल के कोठे पर धमाके से पैर रखे ।

उसने कोठे के झरोखे से झाँक कर कहा, कौन है ? यह तो पुरुष नहीं शायद परी है ।

कोठे पर से कुछ अचम्भित लोगों ने सिर झुकाकर कहा, रात्रि में हम ढूँढ़ने निकले हैं ।

बादशाह ने पूछा, क्या ढूँढ़ने निकले हो ? लोगों ने उत्तर दिया, उँटों को । बादशाह ने पुनः प्रश्न किया, क्या ऊँट उचक कर कोठे पर पहुँच गया ?

उन लोगों ने बादशाह को उत्तर दिया, फिर तू इस प्रतिष्ठित सिंहासन पर ईश्वर से मिलाप करने की इच्छा क्यों रखता है ?

बस यही हुआ कि इसके पश्चात् उस बादशाह को किसी ने नहीं देखा और परी के समान वह लोगों की दृष्टि से ओझल होगया ।

मानी अश पिनहाँ व ऊ दर पेशे खल्क ।
खल्क कै बीनन्द गैरे रीशो दल्क ॥
चू जे चश्मे खेश खलकों दूर शुद ।
हमचु अनका दर जहाँ मशहूर शुद ॥

इनकार मजनूँ अज़ फ़स्द

जिस्मे मजनूँ रा जे रंज दूरये ।
अन्दर आमद नागहाँ रंजूरये ॥
खू बजोश आमद जे शोलें इशतियाक ।
ता पदीद आमद बरौ मजनूँ फ़नाक ॥
पस तबीब आमद बदार्क कर्दनश ।
गुफ्त चारा नेस्त गैरज रग जनश ॥
रग ज़दन बायद बराए दफ़ए खू ।
रग ज़ने आमद बद आँजा ज़ फ़नूँ ।
बाज़ुवश वस्तो कुशादाँ नेशे ऊ ।
बाँग बर ज़द बरवे आँ माशूक जू ॥
मुज्दे खुद विसतांनो तर्के फ़स्द कुन ।
गर बेमीरम गो बेरो जिस्मे कोहन ।

उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी मूरत लोगों के समन थी ।
लोग दादी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं !

परन्तु जब वह अपनी प्रजा की आँखों से परे होगया तो इस संसार में
उन्का (एक विशेष पक्षी) की भाँति प्रसिद्ध होगया ।

मजनूँ का फ़स्द खुलवाने (रग से खून निकलवाने) से मना करना

मजनूँ को वियोग के कष्ट से सहसा एक शारीरिक बोमारो उत्पन्न होगई,
शाक की जलन से उसके खून में उबाल आगया जिसके कारण मजनूँ
के बदन पर दाने पड़ गये ।

वैद्य उसका इलाज करने को आया और कहा कि रग से खून निकालने
के अतिरिक्त इसका अन्य इलाज नहीं ।

खून को निकालने के लिये इसकी रग फाड़ देना चाहिये । इसको सुनने
के पश्चात् एक चतुर फ़स्द खोलने वाला आया ।

फ़स्द खोलने वाले ने मजनूँ के हाथ बाँध दिये और अपना नशतर (एक
यन्त्र) निकाल लिया । मजनूँ ने उसको डाँट कर पूछा, यह क्या है ?

तू अपना बेतन ले ले और मेरी फ़स्द न खोल । अगर मैं इस बीमारी में
मृत्यु को प्राप्त भी हो जाऊंगा तो क्या होगा पुराना शरीर न रहेगा ।

गुफ्त आखिर तू चे मी तरसी अर्जी ।
 चूँ नमो तरसी तो अज शेर अर्जी ॥
 शेरों गुर्गों खिसों बूजों हरददा ।
 गिर्द बर गिर्द तो शब गिर्द आमदा ॥
 गुफ्त मजनूँ मन नमी तरसम जे नेश ।
 सबे मन अज कोहे संगीं हस्त बेश ॥
 मुनबिलम बे जखम ना सायद तनम ।
 आशिकम बर जखमहा बर मे तनम ॥
 लेक अज लैला वजूदे मन पुरस्त ।
 ई' सदक पुर अज सिकाते आँ दुरस्त ॥
 ॥ तरसम ए फस्साद अगर फस्दम कुनी ।
 नेश रा नागाह बर लैला जनी ॥
 दानद आँ अकले कि ऊ दिल रौशानीस्त ।
 दरमियाने लैलए मन फर्क नोस्त ॥
 मन केअम लैला व लैला कीस्त मन ।
 मा यके रूहेम अन्दर दो बदन ॥

फस्द खोलने वाले ने कहा, भला तुम इस फस्द से क्यों डरते हो ? तुम तो वन के शेर से भी नहीं डरते ।

तुम्हें तो हर समय शेर, भेड़िये, रीछ, चीते, फाड़ खाने वाले जानवर हर तरफ से रातदिन घेरे रहते हैं ।

मजनूँ ने कहा, मैं नशतर से नहीं डरता; मैं तो पहाड़ से भी अधिक धैर्य में अटल हूँ ।

मैं वह तीर खाने वाला हूँ कि बेतीर लगं मेरे शरीर को चैन नहीं मिलता, मैं तो प्रेमी हूँ और जखम (घाव) खा खा कर अकड़ा करता हूँ ।

परन्तु मेरे सम्पूर्ण शरीर में तो लैला ही व्याप्त है और इस शरीर रूपी सीपी में उसी मोती की झलक भरी है ।

इसलिये ऐ फस्साद मुझे डर है कि यदि तू मेरी फस्द खोलेगा तो यह नशतर कहीं लैला के न लग जाय !

जिस पुरुष का हृदय शुद्ध है उसकी बुद्धि यह समझेगी कि मुझमें और लैला में कुछ अन्तर नहीं ।

“ मैं ” लैला हूँ और लैला “ मैं ” है । प्रत्यक्ष में दो शरीर दृष्टिगोचर है । परन्तु वास्तव में दोनों में प्राण एक ही है ।

हिकायत मजनूँ

दीद मजनूँ रा यके सहारा नवर्द ।
 दर बियाबाने खमुश बेनशिशता फर्द ॥
 रेग कागज़ करदा वंगुशतौ क़नम ।
 मी नबीसद नामा बहरे कस रक़म ॥
 गुफ़तश ए मजनूने शौदा कीम्त ई ॥
 मी नबीसी नामा बहरे कीम्त ई ॥
 गुफ़्त मश्के नामे लैली मी कुनम ।
 खातिरे खुद ग़ तमन्नी मी देहम ॥

इश्क़ मजाज़ी

हो ग़िहा कुन इश्क़हाये मूरनी ।
 यश्क़ बर मूरत न रूहाण्मनी ॥
 आँचे माशूक़म्त सूरत नेम्तौ ।
 खाह इश्के ई जहाँ खाह आँ जहाँ ॥
 आँचे बर मूरत तो आशिक़ ग़श्तई ।
 चू वरू शुद जाँ चेरायश हश्तई ॥

मजनूँ की एक कहानी

मरुभूमि के एक रास्तागीर ने मजनूँ को एक मैदान में चुपचाप (शान्त) और अकेला बैठा हुआ देखा ।

रेत को कागज़ और अपनी उँगलियों को लेखनी बनाकर किसी के लिये पत्र लिख रहा है ।

उसने मजनूँ से पूछा, ऐ प्रेमी मजनूँ ! यह क्या बात है ? तू पत्र लिखता है । यह किसके नाम लिखता है ?

मजनूँ ने उत्तर दिया कि मैं लैला के नाम की मश्क़ (अभ्यास) कर रहा हूँ ; अपने हृदय को इसी प्रकार से धैर्य देता हूँ ।

संसारी प्रेम

तू इन ऊपरी (बनावटी) प्रेमों को त्याग दे । रंगरूप और मुखों के ऊपर प्रेम नहीं होता ।

प्रेमिका सूरत (शरीर) नहीं है चाहे इस संसार का प्रेम हो या उस संसार का ।

तू जिस वस्तु की सूरत का प्रेमी है जब उसकी जान निकल जाती है तो उसको तू क्यों त्याग देता है ?

आँचे महसूसत अगर माशूका अस्त ।
 आशिकस्ते हर के ऊ रा हिस हस्त ॥
 चूँ वफा आँ इश्क अरु चूँ मी कुनद ।
 कै वफा सूरत दिगरगूँ मी कुनद ॥
 सूरतश हर जास्त ईं सेरी जे चीस्त ।
 आशिक़ा वा बीं कि माशूके तु कीस्त ॥
 परतवे खुशीद बर दीवार ताफ्त ।
 ताबिशो आरियी दीवार याफ्त ॥
 बर कलूखे दिन चे बन्दी ऐ सलीम ।
 वा तलब अस्ते कि पायद ऊ मुक्कीम ॥
 चूँ जरन्दूदस्त खूबीए बशर ।
 वरना चूँ शुद शाहिदे तू पीर खर ।

तालिव व मतलूब

हर्फ़ चे बूवद ता तू अन्देशी अजौं ।
 सौत चे बूवद खारे दीवारे रजौं ॥
 हर्फ़ो सौतो गुफ़त रा बरहम जनम ।
 ता के बे ईं हर से बा तो दम जनम ॥

अगर स्पर्श मात्र से ज्ञात होने वाली वस्तु तेरी प्रेमिका है तो हर एक मनुष्य जो छूने की ताकत रखता है, प्रेमी कहला सकता है । (यानी हर एक प्रेमी कहलाने योग्य नहीं) ।

जब प्रेम से वफा बढ़ती है तो वफा सूरत नहीं बदलती है !

प्रेमिका की सूरत तो प्रत्येक स्थान पर उपस्थित है फिर यह हृदय किम वस्तु से परिपूर्ण हो गया (मृतक शरीर को क्यों त्याग दिया) । ऐ प्रेमी ! ध्यान से देख कि तेरी प्रेमिका अब कौन हुई ।

सूरत की चमक (प्रकाश) दीवार पर पड़ी और वह दीवार क्षणमात्र के लिये बनावटी ढंग पर चमक पड़ी ।

ऐ भोले पुरुष तू एक मिट्टी के ढेले से क्यों दिल लगाता है ! उस वास्तविक वस्तु की खोज कर जो सदैव स्थिर रहने वाली है ।

मनुष्य की सुन्दरता सोने का मुलम्मा है । ऐसा न होता तो बुढ़ा गढ़ा तेरा माशूक (प्रेमी) कैसे होता ।

इच्छुक और इच्छित

अक्षर क्या वस्तु है जिसको तू सोचे, और स्वर क्या है ! यह दोनों अंगूर की बेल की दीवार में लगी हुई कीलें हैं ।

हम अक्षर, स्वर और बोलने को बिलकुल चूर चूर कर डालें । इन तीनों के रहित तुझसे बार्तालाप करे ।

ओँ दमे कज आदमश करदम निहाँ ।
 बा तो गोयम ऐ तू असरारे जहाँ ॥
 ओँ दमे रा के न गुप्तम बा खलील ।
 वौ दमे रा के नदानद जबरईल ॥
 ओँ दमे कज वै मसीहा दम न जद ।
 हक़ जे गैरत नीज बे मादम न जद ॥
 मा चे बाशद दर लुगत इसबाते नफी ।
 मन न इसबातम मनम बे जाते नफी ॥
 मन कसे दर ना कसी दरयाफ़म ।
 बस कसे दर ना कसी दर बाहतम ॥
 जुम्ला शाहाँ पस्त पस्ते कोश रा ।
 जुम्ला मस्ताँ मस्त मस्ते खेश रा ॥
 जुम्ला शाहाँ बरदए बरदै खुदन्द ।
 जुम्ला खलकाँ मुर्दए मुर्दै खुदन्द ॥
 मी शवद सैयाद मुर्गाँ रा शिकार ।
 ता कुन्द नागाह ऐशाँ रा शिकार ॥

वह बात जिसको मैंने आदम से भी गुप्त कर रक्खा था उसको (समस्त संसार के भेद) मैं तुझसे बतलाता हूँ ।

उस बात को मैंने खलील से नहीं कहा, उस बात को जबरईल भी नहीं जानता ।

वह बात जिसको मसीह ने भी नहीं कहा और ईश्वर ने भी संकोच से बिना हमारे उस बात को और किसी से नहीं कहा ।

‘मैं’ (अहम्) शब्द का क्या अर्थ है ? ‘मैं’ का अर्थ कोष में अस्तित्व का न रहना है ।

मैं संसारी पदार्थ नहीं हूँ बल्कि शरीर से परे अस्तित्व से शून्य हूँ । मैंने अहम् मिटा देने में कोई बहुत बड़ी वस्तु प्राप्त की है और बहुत सी वस्तुओं को अवास्तविक होने में नष्ट कर दिया है ।

अपने सेवक के लिये समस्त राजाओं को आज्ञाकारी बना दिया और अपने मतवाले पर सब मतवालों का मतवाला कर दिया ।

जितने राजा हैं सब मेरे सेवक के भी सेवक हैं और सब लोंग मरे हुये मे भी ज्यादा मरे हैं ।

बहेलिबा शिकारी जब चिड़ियों का शिकार बन जाता है तब सहसा उनका आखेट करता है ।

दिलबराँ वर बेदिलों फितना बजाँ ।
 जुमला माशूक़ाँ शिकारे आशिक़ाँ ॥
 हरकि आशिक़ दीदयश माशूक़ दाँ ।
 गो बनिस्बत हस्त हम ईनो हमाँ ॥
 तिशनगाँ गर आव जोयन्द अज जहाँ ।
 आव हम जोयद व आलम तिशनगाँ ॥
 गर मुरादत रा मजाक़े शक्करस्त ।
 बेमुरादी नै मुरादे दिल बरस्त ॥

असराते मोहब्बत

अज मोहब्बत तल्सहा शीरी शवद ।
 वज मोहब्बत मिस्सहा जरी शवद ॥
 अज मोहब्बत दुर्वहा साफी शवद ।
 वज मोहब्बत दर्दहा शाफी शवद ॥
 अज मोहब्बत खारहा गुल मी शवद ।
 वज मोहब्बत सिरकहा मुल मी शवद ॥
 अज मोहब्बत दार तरुते मी शवद ।
 वज मोहब्बत बार बरुते मी शवद ॥

प्रेमी लोग हृदय खोल देने वालों की जान पर ही मुग्ध हुये हैं और जितनी प्रेमिकायें हैं सब प्रेमियों की शिकार हैं ।

जिस पुरुष को तूने प्रेमी देखा बस समझ ले वही प्रेमिका है । यद्यपि सम्बन्ध में “ यह ” और “ वह ” दोनों हैं ।

तृपित पुरुष यदि संसार में जल की खोज करते हैं तो जल भी इस संसार में तृपितों की खोज में रहता है ।

यदि तेरी विनती शक्कर का स्वाद रखती है तो प्रेमिका की भी इच्छा विनती रहित रहने की नहीं है ।

प्रेम के प्रभाव

प्रेम के कारण कड़वी वस्तु ~~से~~ मीठी हो जाती है । प्रेम के स्वभाव के कारण ताँबा सोना (स्वर्ण) बन जाता है ।

प्रेम ही से तलछट स्वच्छ बन जाती है । प्रेम ही से समस्त रोग अच्छे मालूम पड़ते हैं (दुखों में चैन मिलता है) ।

प्रेम से कंटक पुष्प के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं और प्रेम ही से सिरके सुरा बन जाते हैं ।

प्रेम ही से शूलो का तरुता राज्य सिंहासन बन जाता है और प्रेम ही से भार सौभाग्य बन जाता है ।

अज मोहब्बत सिज्ज गुलशन मी शवद ।
 वे मोहब्बत रोज़ा गिलखन मी शवद ॥
 अज मोहब्बत नार नूरे मी शवद ।
 अज मोहब्बत देव हूरें मी शवद ॥
 अज मोहब्बत संग रौगन मी शवद ।
 वे मोहब्बत मोम आहन मी शवद ॥
 अज मोहब्बत हुज्ज शादी मी शवद ।
 वज मोहब्बत गोल हादी मी शवद ॥
 अज मोहब्बत नेश नोशे मी शवद ।
 वज मोहब्बत शेर मूशे मी शवद ॥
 अज मोहब्बत सुक़म सेहत मी शवद ।
 वज मोहब्बत क़ह रहमत मी शवद ॥
 अज मोहब्बत मुर्दा जिन्दा मी शवद ।
 वज मोहब्बत शाह बन्दा मी शवद ॥
 ईं मोहब्बत हम नतीजे दानिशस्त ।
 कै गज़ाफ़ा बर चुनीं तख़्ते नशिस्त ॥
 दानिशे नाक़िस कुजा ईं इश्क़ जाद ।
 इश्क़ जायद नाक़िम अम्मा बर जमाद ॥

प्रेम से कारागृह उद्यान बन जाता है । प्रेम के बिना उद्यान भाड़ बन जाता है ।

प्रेम ही से अग्नि प्रकाश बन जाती है । प्रेम ही से कुरूप सुन्दर प्रतीत होता है ।

प्रेम हां तो पत्थर घुलकर तेल बन जाता है । प्रेम न हो तो मोम लोहा बन जाता है ।

प्रेम के कारण रज्ज व दुख प्रसन्नता के रूप में पलट जाते हैं और प्रेम ही से भूतप्रेत मार्गदर्शक बन जाते हैं ।

प्रेम से कष्ट आराम बन जाते हैं । प्रेम के ही प्रभाव से सिंह एक मूसा बन जाता है ।

प्रेम से रोग स्वास्थ्य बन जाता है । प्रेम ही से क्रोध दया बन जाता है ।

प्रेम से मृतक जीवित हो जाता है और प्रेम से बादशाह गुलाम बन जाता है ।

यह प्रेम भी विद्या का फल है, वह व्यर्थ इस प्रकार के सिंहासन पर आरुढ़ नहीं हुआ ।

अधूरी विद्या ने ऐमा प्रेम कहाँ उत्पन्न किया ! प्रेम अधूरा पैदा होता है परन्तु बेजान पर (जो अपने प्राणों को प्राण नहीं समझते) ।

नवास्तन मजनूँ सगे कूए लैला रा

हमचू मजनूँ कूँ सगे रा मी नवास्त ।
 बोसाअश मीदादो पेशश मी कुदास्त ॥
 गिर्दे ऊ मी गस्त खाजे दर तबास्त ।
 हमचू हाजी गिर्दे काबा बे गजास्त ॥
 हम सरो पायश हमी बोमीदो नाफ ।
 हम जुलाबो शक्करश मीदाद साफ ॥
 बुलफजुले गुप्त कै मजनूने खाम ।
 ईचे शैदस्त ईके मी आरी मदाम ॥
 पूजे सग दायम पेलीदे मी खुरद ।
 मकअद खुरद रा बलब मी उस्तरद ॥
 एवहाए सग वसे ऊ मी शमुर्द ।
 ऐबदाँ अज गैबदाँ बूए नमुर्द ॥
 गुप्त मजनूँ तू हमी नकशी वतन ।
 अन्दर आ बिनिगर तू अज चश्माने मन ॥
 की तिलिस्मे बस्तए मौलास्त ई ।
 पासवाने कूचए लैलाम्त ई ॥

मजनूँ का लैला की गली के कुत्ते से प्रेम करना

मजनूँ एक कुत्ते को आधिक प्यार करता था । उसका अच्छी तरह चुम्बन किया करता था और उसके सामने लोट जाया करता था ।

उसके चारों ओर चक्फेरियों (चक्कर) लगाता था, जिस प्रकार हज्ज करने वाले हाजी लोग काबे के चारों ओर प्रसन्नता से फेरी लगाते हैं ।

उसके सिर, पैर और पेट का चुम्बन करता था और उसको गुलाब और शक्कर का स्वच्छ शर्बत पिलाता था ।

किसी अनभिज्ञ पुरुष ने उससे पूछा, ऐ बेवकूफ मजनूँ ! तू सदैव यह क्या ढोंग किया करता है ।

कुत्ता सदा अपवित्र वस्तुओं का भक्षण करता है और अपने अपवित्र स्थान को अपनी जिह्वा से चाटता है ।

वह पुरुष कुत्ते की अत्यन्त बुराईयों कर रहा था परन्तु बुराई देखने वाले को रहस्य देखने वाले की क्या खबर थी ।

मजनूँ ने उसको उत्तर दिया कि तू तो बाह्यरूप से सूरत और बदन देखता है । क्षणमात्र के लिये हृदय के अन्दर प्रवेश कर और मेरी आँखों से देख,

कि यह कुत्ता ईश्वर का बनाया हुआ जादू है, यह लैला की गली का चौकीदार है ; इसके साहस,

हिम्मतश बीनो दिलो जानो शिनाख्त ।
 कू कुजा बेगुजीदो मसकनगाह साख्त ॥
 ऊ सगे फरहख रुखे कहके मनस्त ।
 बलके ऊ हम दर्दो हम लहके मनस्त ॥
 आँ सगे कै गश्त दर कूयश मुक्कीम ।
 खाके पायश बेह जे शेराने अजीम ॥
 आँ सगे कै वाशद अन्दर कूर ऊ ।
 मन बशेराँ कैदेहम यकमूर ऊ ॥
 ऐ के शोग मर सगानश रा गुलाम ।
 गुफ्तन इसकोँ नेस्त खामुश वस्मलाम ॥
 गर जे मूरत वगुजरेद ऐ दोस्तो ।
 जन्नत अस्तो गुलसितोँ दर गुलमितोँ ॥

दीवान

(१)

चे तदवीर ऐ मुमलमाँ कि मन खूदरा नमी दानम ।
 न तर्मा न यहूदम् न मन गवरम न मुसलमानम ॥
 न शर्कीयम् न गार्बीयम् न बर्रीयम् न बहरीयम् ।
 न अज काने तबीईयम् न अज अफलाके गरदानम ॥

इसके हृदय, इसके जिगर और इसकी पहिवान को तो देखो कि किस स्थान को चुनकर अपने रहने का स्थान नियत किया है ।

यह “कहक” वालों के कुत्ते के समान धन्यवाद का पात्र है, यह मेरे दुखों का साथी और मित्र है ।

जो कुत्ता प्रेमिका की गली में रहता है उसके पाँवों की धूल बड़े बड़े मिहों से भी बढ़कर है ।

जो कुत्ता उस प्रेमिका की गली में रहता है, मैं उसके एक बाल बगवर भी सिंहों को नहीं समझता ।

चूंकि आम आदमों को बोलो में मिह उसके कुत्तों का गुलाम नहीं कह सकते इस लिये बस चुप रहो ।

मित्रो ! यदि तुम इस प्रत्यक्ष दुनियाँ से सम्बन्ध त्याग दो तो फिर स्वर्ग और आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं ।

दीवान

(१)

मुमलमानो ! मैं क्या कहूँ ? मैं तो यही नहीं समझता हूँ कि मैं क्या वस्तु हूँ । न तो मैं ईसाई हूँ, न यहूदी न पारसी, और न मुसलमान ।

न तो मैं पूर्व का रहने वाला हूँ, न पश्चिम का । न स्थल में रहता हूँ, न प्राकृतिक खान का जवाहर हूँ और न घूमने वाले आकाश का नक्षत्र ।

न अज ख़ाकम् न अज आवम् न अज बादम् न अज आतिश ।
 न अज अरशम् न अज फ़रशम् न अज कोनम् न अज कानम् ॥
 न अज हिन्दम् न अज चीनम् न अज बलग़ारो सकलीनम् ।
 न अज मुल्के इराक़ीनम् न अज ख़ाके ख़ुरासानम् ॥
 न अज दुनिया न अज उक़्बा न अज जन्नत न अज दोज़ख़ ।
 न अज आदम् न अज हव्वा न अज फिरदौसे रिज़वानम् ॥
 मकानम् लामकाँ बाशद निशानम् बेनिशाँ बाशद ।
 न तन बाशद न जाँ बाशद के मन अज जाने जानानम् ॥
 दुई अज खुद बदर करदम् यके दीदम् दो आलम रा ।
 यके ज़ोयम् यके दानम् यके बीनम् यके ख़ानम् ॥
 होवल अन्वल होवल आख़िर होवल ज़ाहिर होवल बातिन ।
 बज़ुज याहू व यामनहू कसे दीगर नमी दानम् ॥
 ज़े ज़ामे इश्क़ सर मस्तम् दो आलम रफ़ा अज दस्तम् ।
 बज़ुज रिन्दी व कल्लाशी न बाशद हेच सामानम् ॥
 अगर दर उम्र खुद रोज़े दमे बे तो बर आवुर्दम् ।
 अज़ाँ बक्तो अज़ाँ सायत ज़े उम्रे खुद पशमानम् ॥

न तो मैं मिट्टी ही से उत्पन्न हुआ हूँ और न वायु से । न तो जल से और न अग्नि से । मैं न तो आकाश से आया हूँ और न पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हूँ । न तो मैं संसार का ही परिमाण हूँ और न किसी खान ही से निकला हुआ जवाहर हूँ ।

न मैं भारतीय हूँ और न चीनी । न तो मैं बलगेरिया का निवासी हूँ और न सकलालतिया का । मैं ईराक़ देश का भी नहीं हूँ और न ख़ुरासान का ।

न तो मैं संसार का ही हूँ और न आकाश का । न स्वर्ग का ही जीव हूँ और न नर्क का । न तो मुझे आदम से ही सम्बन्ध है और न हौआ से । और न मैं फिरदोस से ही आया हूँ ।

मेरा स्थान वह है जो कोई स्थान ही नहीं है और मेरा पता, न पते में है । न मैं शरीर हूँ और न प्राण, अपितु प्राणों का प्राण हूँ ।

मैंने अपने मस्तिष्क तथा हृदय से द्वैत का विचार निकाल डाला है । एक ही का ढूँढता हूँ, उसी से परिचित हूँ, वही मेरी दृष्टि में है और उसी का नाम लेता हूँ ।

वही आदि है और वही अन्त । वही प्रकट है और वही लुप्त । मेरा सर्वस्व वही है । यह भी तू ही है और वह भी तू ही है । इसके अतिरिक्त और मैं किसी को नहीं जानता ।

मैं प्रेम की मदिरा पान कर मदमस्त हो रहा हूँ । दोनों जहाँ का त्याग चुका हूँ । भिन्ना और निर्धनता के अतिरिक्त मेरे पास कोई वस्तु नहीं है ।

यदि मैंने अपने जीवन में तुझे भूलकर एक सँत भी लो है तो उस समय और उस घड़ी के लिये अब पछता रहा हूँ ।

अगर दस्तम देहद गोज़े दमे बातों दर्रीं ख़िलवत ।
दो आलम ज़ोरें पा आरम हमी दमते बरफ़शानम ॥
इला ऐ “शम्से तबरेज़ी” चुनीं मस्तम दर्रीं आलम ।
कि जुज़ मस्ती व क़ल्लाशी नबाशद हेच दस्तानम ॥

(२)

व रोज़े मर्ग़ चु ताबूते मन रवाँ वाशद ।
गुमाँ मगर के मरा दिल दर्रीं जहाँ वाशद ॥
वराये मन मगरी व मगो दरेग़ा दरेग़ा ।
व दामे देर दर उफ़ती दरेग़ा आँ वाशद ॥
जनाज़ाअम चु बबीनी मगो किराक़ किराक़ ।
मरा बिमालो मुलाक़ात आँ ज़माँ वाशद ।
मग़ व गोर मग़री मगो बिदा बिदा ।
कि गोर परदग़ ज़मीअत जिताँ वाशद ॥
करो गुदन चु व दीदी बरामदत बिनगर ।
गरूबे शम्शो क़मर रा चेरा ज़ियाँ वाशद ॥

यदि इस अवस्था में तू मुझे क्षण भर के लिये भी मिल जावे तो मैं दोनों लोकों को पाँव से कुचल डालूँ और उनसे अपना सारा सम्बन्ध छोड़कर पृथक हो जाऊँ ।

ऐ मेरे शम्स तबरेज़ ! तुझे स्मरण रहे कि मैं इस संसार में इस प्रकार मस्त हूँ कि मस्ती और बेफ़िक्री के अतिरिक्त मेरे कोई कार्य नहीं हैं । इसी में मेरी ख़्याति है ।

(२)

मृत्यु के दिन जब लोग मुझे शमशान को ले चलेंगे यह मत सोचना कि मेरा हृदय इस संसार में होगा ।

मेरे मुख को मृत्यु की छाप से विवर्ण देखकर शोक मत प्रकट करना । शोक की बात तो यह होगी कि तू शैतान के पंजे में आजायगा ।

मेरी अर्थी निकलती देखकर इस बात पर दुःख मत प्रकट करना कि मैं संसार से बिदा हो रहा हूँ । नहीं, वही तो दिन होगा मेरे लिये प्रियतम से मिलने और उसके संसर्ग में बैठने का ।

मुझे समाधिस्थ करके यह मत कहना, जाओ बिदा हो, क्योंकि वह समाधि तो मेरे हार्दिक विश्वास के लिये पर्दों के समान होगी ।

सूर्य और चन्द्र का अस्त होना देखकर उनका उदय होना भी देख । उनका अस्त होना उनके लिये हानिकारक क्यों है ?

तुरा गुरुव नुमायद व लेक शर्क बुबद ।
लहद चु हवस नुमायद खलासे जौ वाशद ॥

(३)

ऐ आशिकौ ऐ आशिकौ हंगामे कूचस्त अज जहाँ ।
दर गोश जानम मी रसद तबले रहील अज आस्माँ ॥
निक मारेबौ बरखास्ता कत्तारहा आरास्ता ।
अज मा हलाली खास्ता चे खुफ़एद ऐ कारवाँ ॥
ई वाँगहा अज पेशो पस बाँगे रहील अस्तो जरस ।
हर लहज़ए नफ़सो नफ़स सरमी कुनद दर लामकाँ ॥
जीं शम्मा हाये सरनगूँ जीं परदहाये नीनगूँ ।
खल्के अजव आमद वरँ तारीबहा गरदद अर्यौ ॥
जीं चखँ दौलाबी तोरा आमद गिरौ खाबी तोरा ।
करयाद अजीं उम्मे मुबुक जिन्हार अजीं रुबावे गरौ ॥
॥ ऐ दिल सुए दिलदार शौ ऐ यार सुये यार शौ ।
ऐ पासवाँ वेदार शौ खुफ़ा न शायद पासवाँ ॥

जब तू उसको इकता हुआ देखना है तो वास्तव में वह उदय होता है ।
समाधि देखने में कारागार के समान ज्ञात होती है पर है वास्तव में वह प्राणों
के मोक्ष का मार्ग ।

(३)

आ प्रेमियों ! समार से चल देने का समय निकट है । मेरे प्राणों को
आकाश में बजने वाले कूच के नक्क़ारे का शब्द सुनाई पड़ रहा है ।

यह देखो कारवाँ पंक्तियों में चलने के लिये तैयार खड़ा है । हममें भी
तय्यारी के लिये कह दिया है । उठो, काकले के साथ चलने वालो ! क्या तुम्हें
नींद आ रही है ?

यह जो आगे और पीछे से शब्द सुनाई पड़ रहे हैं वह और कुछ नहीं
केवल चलने की और घरोटे की आवाज़ें हैं । प्रतिक्षण प्राण और माँस
स्थान रहित स्थान को जा रहे हैं ।

इन औंधे दीपकों से और इन नीले रंग के पर्दों से नाना भौंति की
विलक्षणताएँ इसलिये प्रकट हो रही हैं ताकि रहस्यों का पता लग जावे ।

इस ढंग के और ऐसे आस्मान से मुझको घोर निद्रा आगई है । इस
तीव्र-गामिनी अवस्था के हाथ से करियाद की जाती है और इस गम्भीर नींद
से दूर रहने का प्रयत्न किया जाता है ।

॥ ऐ दिल ! प्यारे की तरफ़ चल और हँ मित्र ! प्रियतम के पास चल ।
चौकीदार ! उठ जाग जा, तेरे लिये इस प्रकार सोना ठीक नहीं है ।

हर सूए बाँगे मशाला हर कूए शम्मो मशअला ।
 किम् शब जहाने हामिला जायद जहाने जावेदाँ ॥
 तू गिल बुदीओ दिल शुदी जाहिल बुदी आकिल शुदी ।
 आँ कू कशीदत ई चुनो आँ मू कुशादत आँ चुनाँ ॥
 अन्दर कशाकशाहाये ऊ नौशुस्त ना मुशहाये ऊ ।
 आवस्त आनिशहाय ऊ वरवै मकुन रूरा गिराँ ॥
 दर जॉ नशिस्तन कारे ऊ तौबा शकिस्तन कारे ऊ ।
 अज्र होलाए विस्यारे ऊ चूँ जर्हा लज्जाँ दिलौँ ॥
 ऐ रेशखन्दे रखता जेह यानी मनम साचारे दह ।
 ता कै जेही गरदन बेनेह वर नै कशन्दत चूँ कमाँ ॥
 तुखमे दगल मो काशती अकसोम हामी दाशती ।
 हक़रा अदम् पिदाशती अरुनू बेबीं ऐ किलतबाँ ॥
 ऐ खर्बगा औलातरी देगे सियाह औलातरी ।
 दर कारे चाह औलातरी ऐ नङ्ग खानो खानदाँ ॥

चारों तरफ़ से आनन्द और प्रमत्तता की आवाज़ें आ रही हैं। प्रत्येक गली में दीपकों और मशालों का उजाला फैला हुआ है। यह इसलिये कि यह नाशवान संसार आज एक अमर संसार का उत्पन्न करेगा और उसी के शुभागमन में आज इसने यह आनन्दित रूप धारण किया है।

तू मिट्टी था पर अब दिन के रूप में परिणत हो गया है। मूर्ख था परन्तु अब बुद्धिमान् हो गया है। जिसने तुझे ऐसा बना दिया है वही तुझे उस प्रकार उधर भी ले जायगा।

उसकी इस खींचतान में जो कष्ट मिलें उन्हें मधु की मिठास समझो। उसकी आग को पानी के समान शीतल समझो और उस पर क्रोध न करो।

इसके काम हैं प्राणों में समा जाना और शपथ को तोड़ डालना। अगणित कार्यों से सबके हृदय ऐसे काँपते हैं जैसे वायु में कण।

ए बेवकूफ़ ! तू कहता है कि मैं गाँव का मालिक हूँ। तू कब तक घमंड में इस तरह उचकता रहेगा ? अपना सर झुका दे नहीं तो कमान की तरह तुझे कमान पर चढ़ायेँगे।

तू सदैव मक्करी के बीज बोया करता था, और बहुत अफ़सोस किया करता था; भगवान को तूने समझा था कि वह है ही नहीं। अब, ए पागल ! अपनी करनी भोग।

ए धान के गधे और घर का नाम डुबानेवाले ! अच्छा होता यदि तू एक काली हाँड़ी के समान कुँवे की तह में पड़ा रहता।

दरमन कसे दीगर बुवद की चश्महा अज वै जेहद ।
 गर आव सोजानी कुनद जातश बुवद ईराबेदौ ॥
 दर कक न दारम संगे मन बाकस न दारम जंगे मन ।
 बर कस न गीरम तंगे मन जीरा खुशम चूँ गुलसिताँ ॥
 पम चश्मे मन जाँ सर बुवद वज आलमे दीगर बुवद ।
 ई'मू जहाँ आम्बू जहाँ बनशिस्ता मन बर आस्ताँ ॥
 बर आस्ताँ औँ कस बुवद कू नातिके अखरस बुवद ।
 ई' रम्जे गुफन बम बुवद दीगर मगो दर कश जवाँ ॥

(४)

बाँग जदम नीम शवाँ कोस्त दरी खानए दिल ।
 गुफ मनम, कज रुखे मन, शुद महो खुरशीद खजिल ॥
 गुफ के ई' खानए दिल पुर हमौ नकशमन चेरा ।
 गुफम की अक्से तू अस्त ए रुखे तौ शमा चेगिल ॥
 गुफ कि ई' नकशे दिगर चीम्त पुर अज खूने जिगर ।
 गुफम की नकशे मने खस्ता दिलो पाये बगिल ॥
 वस्तमे मन गरदने जाँ बुरहम पेशश वनिशाँ ।
 मुजरिमे इश्कस्त मकुन मुजरिमे खुदरा तु बहिल ॥

मेरे अंदर तो कोई और रहता है और यह साते उसी से जारो हैं । अगर पानी जलने लगता है तो समझ ले कि यह (मेरी) आग की वजह से है ।

न मैं किसी से लड़ता हूँ, न किसी को दबाता हूँ । मैं तो सदैव इसी कारण बाग के समान प्रसन्न रहता हूँ ।

यही कारण है कि मेरे नेत्र दूसरे के और दूसरे लोक के होते हैं । इस लोक और परलोक के बीच में चौखट की तरह बना बैठा हूँ ।

एक चौखट पर वही बैठा रह जाता है जो गुंगा होता है । बस मैं इतना ही इशारा देता हूँ तुम समझ जाओ (कि मेरा मतलब क्या है) और चुप साध लो ।

(४)

आधी रात को मैंने डपट कर पूछा, मेरे हृदय रूपी घर में कौन है ? उस प्रियतम ने उत्तर दिया, मैं हूँ जिसके मुख की आभा से सूर्य और चन्द्र प्रकाशित हो रहे हैं ।

उसने पूछा, इस घर में यह बहुत सी सूरतें क्यों दिखलाई पड़ रही हैं ? मैंने उत्तर दिया, ऐ चुगल (चीन देश का एक प्रान्त जहाँ के मनुष्य बहुत रूपवान होते हैं) ! इस दीपक पर तेरे मुख का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है ।

उसने पूछा, इसी घर में, भय से डूबी हुई यह दूसरी सूरत कैसी है ? मैंने उत्तर दिया, यह घायल और विपत्तियों में पड़े हुए दिल का चित्र है ।

मैंने प्राणों की गर्दन बाँधी और उसके सम्मुख ले गया, “ले, यह तुझमे प्रेम करने का अपग्राही है । इसको क्षमा न कर ।”

दाद सरे रिश्ता बमन रिश्ता पुर किन्ना ब फन ।
 गुफ़ बकश ता बकशम हम बकुशो हम मगसिल ॥
 ताफ़ अज्रों ख़रगए जों सूरते तुरकम बे अज्रों ।
 दस्त ब बुरदम सूए ऊ दस्ते मरा ज़द के बहिल ॥
 गुफ़म तू हम चों फ़लों तुरा शुदी गुफ़ बेदों ।
 मन तुरशे मसलहतम ना तुरशे कीनओ गिल ॥
 हर के दर आयद के मनम वर सरे शाख़श बेज़नम ।
 की हरमे इश्क़ बुबद ऐ हैबों नीस्त अग़ल ॥
 ॥ हस्त सलाह दिलो दीं सूरते आँ तकें यक़ीं ।
 चश्मे फ़रोमालो बर्बी सूरते दिल सूरते दिल ॥

(५)

मन आँ रोज़ बूदम कि अस्माँ न बूद ।
 निशाँ अज वजूदे मुसम्मा न बूद ॥
 जेमाँ शुद मुसम्मा ब अस्माँ पेदीद ।
 दग़ों रोज़ काँजा मनो माँ न बूद ॥
 निशाँ ग़श्त मज़हर सरे जुल्के यार ।
 हनोज़ाँ सरे जुल्क ज़ेबा न बूद ॥

उसने रस्सी का मिरा, जो कि चालाकियों और झुटाइयों से भरा था, मेरे हाथ में दे कर कहा कि इसे खींच जिससे मैं भी खिंचूँ, परन्तु इसे तोड़ना मत ।

उस प्राण के तन्मू से मेरे प्यारे का मुख और भी अधिक लावण्यमय प्रतीत हुआ । मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया । उसने हाथ हटाकर कहा, बस हाथ न लगाना ।

मैंने कहा कि अमुक पुरुष जिस प्रकार मुझसे रुष्ट हो गया था उसी प्रकार तू भी क्यों होने लगा है । वह बोला कि तुझे नहीं मालूम इस रूठने में भी एक खास भेद है । मैं शत्रुता और बैर से नहीं बिगड़ता हूँ ।

जो यहाँ अहंकार के साथ आता है उसकी जड़ मैं काट (उसे मैं पंगु बना) देता हूँ । यह प्रेम का तीर्थस्थान है, वासना रहित पवित्र है । जानवरों के चरने का स्थान नहीं है ।

उस प्रियतम का मुख ही इस हृदय की कोठरी की सजावट है । तनिक ॥ आँखें मलकर देख कि तेरे दिल में ही दिल किना चमत्कृत हो रहा है ।

(५)

मैं उस दिन, जबकि वस्तुओं का नामकरण नहीं हुआ था, प्रस्तुत था; तब न वह वस्तुएँ ही थीं जिनका नाम रक्खा गया है ।

मुझी से नाम रक्खी गई वस्तुएँ और सब नाम उत्पन्न हुए और वह भी उस दिन जब कि वहाँ “मैं” और “तू” का भेद भाव कुछ भी न था ।

यार की काली घुँघराली अलकों ने पथप्रदर्शक का कार्य किया पर अब-तक वह अलकें प्रकट नहीं हुई थीं ।

चलीपा व नसरानिया सर बसर ।
 व पैमूदम अन्दर चलीपा न बूद ॥
 बबुत्खाना रफूम् ब दैरे कोहन ।
 दरो हेच रंगे हवेदा न बूद ॥
 बकोहे हज्जों रफूनों कन्दहार ।
 व दीदम दराँ जेरो बाला न बूद ॥
 व अमदन शुदम् बर सरे कोहे काफ ।
 दराँ जाये जुज जाय उन्का न बूद ॥
 व काबा कशीदम् इनाने तलब ।
 दराँ मकसदे पीरो बरना न बूद ॥
 बपुरसीदम अज इब्नसीनाश हाल ।
 बर अन्दाजए इब्नसीना न बूद ॥
 सूए मन्जरे काबे कौसैं शुदम ।
 दराँ बारगाहं मोअल्ला न बूद ॥
 निगह करदम् अन्दर दिले खेशतन ।
 दराँ जाश दीदम् दिगर जा न बूद ॥

मैं ने समस्त चिन्ता और निसरानियों को भली प्रकार देखा परन्तु वह अलकें, वह घुँघराली लटें चिलेपा (सलीब पर चढ़ा हुआ मनुष्य । मिसरानियों का धार्मिक चिह्न) में नहीं दिखलाई पड़ी ।

एक बहुत ही प्राचीन मन्दिर में गया । देखूँ कदाचित् वहीं कुछ भेद मिले । पर वहाँ भी दृष्टि को उस इच्छित वस्तु का कोई निशान न मिला ।

हिरात के पर्वतों पर चढ़कर देखा, कन्दहार की पृथ्वी पर खोज की पर उस ऊँचाई और निचाई में भी उसका पता न पाया ।

विश्वास था कि काफ के पर्वतों में वह अवश्य मिलेगा । पर वहाँ पहुँचने पर उनके (अप्सराओं के) निवास स्थान के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई न दिया ।

फिर खोज की । काबे में पहुँचा परन्तु वहाँ भी वह वृद्ध और युवाओं का हृदय-वल्लभ न मिला ।

इब्नसीना (एक बहुत बड़े हकीम) से पूछा, आप उसके विषय में कुछ बतला सकते हैं ? पर उन्होंने भी सर हिलाकर अपनी मजबूरी प्रकट कर दी । फिर मैंने काबा और कौसैं के सुन्दर दृश्यों में उसकी खोज की परन्तु उम दिव्य स्थान में भी उसे न पाया ।

अन्त में मैंने अपने हृदय के कोने में दृष्टि डाली । देखता क्या हूँ कि वह वहीं पर उपस्थित है । दूसरे स्थानों में व्यर्थ भटकता फिरा ।

बजुज "शम्शतबरेज" पाकीजा जाँ ।
कसे मस्तो मखमूरो शौदा न बूद ॥

(६)

हर नकश रा के दीदी जिनसश जे ला मकानस्त ।
गर नकश रफ़ गम नेस्त अस्तलश चु जावेदानस्त ॥
हर सूरते कि दीदी हर तुक्ता के शुनीदी ।
बद दिल मशो के रफ़ताँ जीराना आँ चुनानस्त ॥
चूँ अस्ले चश्मा बाकीस्त करअश हमेशा साकीस्त ।
चूँ हर दो बे जवालन्द अज चेतुरा क़ग़ानस्त ॥
जौ रा चु चश्मये दां वीं सुनुअहा चु जू हा ।
ता चश्मा हस्त बाकी जू हा अजो खानस्त ॥
गम रा वरूँ कुन अज सर वीं आवेजू हमो ख़र ।
अज कौते आव मन्देश कीं आवे बेकरानस्त ॥
जाँ दम के आमदस्ती अन्दर जहाने हस्ती ।
पेशत के ता बरस्ती बिनहादा नर्दानस्त ॥
अवल जमाद बूदी आख़िर नवात गश्ती ।
आँ गह शुदी तो हैवाँ ईं वर नू चूँ निहानस्त ॥

मारांश यह कि शम्शतबरेज के अतिरिक्त कोई मस्त और मतवाला प्रेमिक न था ।

(६)

तुमको जो रूप दिवाई देता है उसको वास्तविकता किसी विशेष स्थान में नहीं है ! रूप के मिट जाने का क्या शोक जब कि उसका तत्त्व स्थायी है ।

अतएव जो रूप आँखों के समक्ष है और उसके विषय में जो रहस्य सुनाई पड़ता है, उसके खो जाने अथवा विलुप्त हो जाने पर खेद मन करो ।

वास्तव में वह मिटनी नहीं है । सोने में जब तक जलधारा प्रवाहित रहती है उसकी नालियाँ पानी देती रहती हैं और फिर जब कि सोता और उसकी नालियाँ चिरम्भायो हैं तो तुम्हें चिल्लाने की क्या आवश्यकता है ?

परमेश्वर एक सोते के सदृश है और उसके निर्मित रूप नालियों के समान हैं । जब तक चश्मा रहेगा, नालियाँ उस समय तक उसमें से निकलती रहेंगी ।

तू चिन्ता न कर और इन नालियों का जल पान करता रह । यह विचार मतकर कि पानी न रहेगा । चश्मे में अथाह पानी भरा हुआ है ।

तू जब से इस संसार में आया है तेरी उत्पत्ति के समय से ही तेरे सम्मुख उन्नति की सीढ़ी रक्खी हुई है ।

तू पहले पत्थर था, फिर पौधा हुआ और फिर पशु के रूप में परिणत हो गया । परन्तु तुझ पर यह भेद प्रगट क्यों नहीं हुआ ?

गश्ती अज्जाँ पल इन्सां बाइल्मो अक्कलो ईमों ।
 बिनगर चे गिल शुर्दों तन कू जुज्वे खाकदानस्त ॥
 जे इन्साँ चु सैर करदी बेशक फरिश्ता गरदी ।
 बे ई जमी अज्जाँ पस जायत बर आस्मानस्त ॥
 बाज्ज अज्ज फरिश्तगी हम बगुज्जर बरो दरायम ।
 ता क़तरये तो बहरे गरदद कि सद उमानस्त ॥
 बगुज्जर अज्जी बलद तू मीगो जे जाने अहदे तू ।
 गर पीर गश्त जिस्मत चे राम चु जाँ जवानस्त ॥

(७)

गुफ़ा के कीस्त बर दर, गुफ़म कमी गुलामत ।
 गुफ़ा चे कारदारी, गुफ़म महा सलामत ॥
 गुफ़ा के चन्द रानी, गुफ़म के ता बख़्तानी ।
 गुफ़ा के चन्द जोशी, गुफ़म के ता क़यामत ॥
 दावाए इश्क़ करदम सौगन्द हा वस्त्रुदम ।
 कज्ज इश्क़ या वा करदम मन मुल्कतो शहामत ॥

पशु से तुम्हें एक सत्यवादी और विद्वान मनुष्य का रूप मिला । देव,
 मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है ।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा
 और तेरा निवास आकाश में होगा । पृथ्वी छूट जायगी ।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त
 विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो
 सैकड़ों नदियों से बढ़कर है ।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और
 उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर ।
 जीव तो तेरा अभी युवक ही है ।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन हैं । मैंने उत्तर में कहा, “तेरा एक तुरुख
 सेवक ।” उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है । मैंने उत्तर दिया, “मन-मोहन !
 तेरी अभ्यर्थना करने ।”

उसने पूछा कब तक आबारा फिरता रहूँगा । मैंने उत्तर दिया, “जब तक तू
 न बुलायेगा ।” उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा । मैंने
 कहा, “प्रलय तक ।”

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत
 सी शपथें उठाईं । कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और
 राज पद का परित्याग कर दिया है ।

गुफ़ा बराये दावा काजी गवाह खाहद ।
 गुफ़म गवाह अरकम जरदीण रुख अलामत ॥
 गुफ़ा गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत ।
 गुफ़म बकरे अदलत अदलन्दो बेग़ामत ॥
 गुफ़ा चे अज़मदारी गुफ़म वफ़ावो यारी ।
 गुफ़ा ज़े मन चे खाही गुफ़म के लुत्के आमत ॥
 गुफ़ा के बूद हमराह गुफ़म ख्यालत ए शाह ।
 गुफ़ा के खादत ई जा गुफ़म के बूए जामत ॥
 गुफ़ा कुजाम्त खुशतर गुफ़म के क्रमे कैसर ।
 गुफ़ा चे दीदी औ जा गुफ़म के सद करामत ॥
 गुफ़ा चरास्त खाली गुफ़म ज़े बीम रहज़न ।
 गुफ़ा के कीस्त रहज़न गुफ़म के ई मलामत ॥
 गुफ़ा कुजास्त एमन गुफ़म बज़ोहदो तुक्वा ।
 गुफ़ा के जोहद चे बूवद गुफ़म रहे सलामत ॥

प्रियतम ने कहा, “न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।” मैंने उत्तर दिया, “मेरे अश्रु बिन्दु साक्षी हैं और मुख पर की जर्दी प्यार की निशानी है।”

उसने कहा, “साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।” मैंने उत्तर दिया, “तेरी न्याय-प्रियता से अब वह विश्वासी हैं। उनमें किसी प्रकार की कालिमा नहीं है।”

उसने कहा, “फिर किस बात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।” उसने पूछा, “यह सब कुछ है परन्तु मुझमें किस बात की आशा रखना है।” मैंने कहा, “केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरों के लिये भी है।”

उसने पूछा, “तेरे साथ में और कौन था ?” मैंने कहा, “हं सम्राट ! तेरा ध्यान।” उसने कहा, “तुझे यहाँ तक खींच कौन लाया है ?” मैंने कहा, “तेरे प्याले की कामना।”

उसने कहा, “सबसे अच्छा रमणीक स्थान कौन है ?” मैंने कहा, “सम्राट का भवन।” उसने पूछा, “तुझे वहाँ क्या प्राप्त हुआ है ?” मैंने उत्तर दिया, “सैकड़ों प्रतिष्ठाएँ।”

उसने पूछा, “तू खाली हाथ क्यों आया है ?” मैंने कहा, “चोर के भय से।” उसने कहा, “उस डाकू का नाम बतला सकते हो ?” मैंने उत्तर दिया, “उसका नाम है तेरे प्रणय में लोगों की बदनामी।”

उसने पूछा, “फिर वह स्थान कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।” मैंने कहा, “पवित्रता और विवेक।” उसने पूछा “विवेक क्या वस्तु है ?” मैंने कहा “कुशलत्व का मार्ग।”

गुफा कुजास्त आफत गुफम ब कूप इश्कत ।
 गुफा चे गूनी आँजा गुफम दर इस्तकामत ॥
 बिस्तार आजमूदम अम्मा न बूद सूदम ।
 “मन जररबल मुजरब हल्लत बोहन नदामत ” ॥
 खामांश गर बजोयम मन नुक्ताहाये ऊरा ।
 अज खेश तन बरा ई न दर कशद न बामत ॥
 (८)

आँ रुह रा के इश्के हकीकी शोआर नेस्त ।
 नाबूदा बेह के बूदने ऊ गैरे आर नेस्त ॥
 दर इश्क मस्त बाश कि इश्कस्त हर चे हस्त ।
 बेकारो बारे इश्क बरे यार बार नेस्त ॥
 गोयन्द इश्क चीस्त, बगो तर्के इश्तियार ।
 हर को जे इश्तियार न रस्त इश्तियार नेस्त ॥
 आशिक शहन्शेहस्त दो आलम वरो निसार ।
 हेच इल्तफाते शाह बमूये निसार नेस्त ॥
 इश्कस्तो आशिकस्त कि वाक्कीस्त ता अवद ।
 दिल जुज बरी मनेह कि बजुज मुस्तआर नेस्त ॥

उसने पूछा, “विपत्तियाँ कहाँ हैं ?” मैंने कहा, “तेरे प्रेम-पथ में ।” उसने पूछा, “तू वहाँ किस अवस्था में है ?” मैंने कहा, “बहुत ही दृढ़ और सावधान हूँ ।”

मैंने बहुत तरह से उसकी परीक्षा लेनी चाही । परन्तु मुझे कोई लाभ न हुआ । जो मनुष्य किसी ऐसे को परीक्षा लेना चाहता है जो उसमें उत्तीर्ण हो चुका है तो उसे केवल कष्ट ही प्राप्त होता है ।

बस अब यहीं ठहर जा । यदि मैं उसके रहस्यों का उद्घाटन करूँगा तो तू अपने आपको भूल जायगा और तुझे किसी वस्तु का ज्ञान न रहेगा ।

(८)

जो आत्मा सच्चा प्रेम ग्रहण न करे उसका नष्ट हो जाना ही अच्छा है । क्योंकि उसका जीवन लज्जा-जनक है ।

प्रेम में तन्मय हो जा । प्रेम सर्वस्व है । बिना इसमें लवलीन हुए प्यारे का सामीप्य प्राप्त न होगा ।

लोग पूछते हैं “प्रेम क्या वस्तु है ?” कह दे अपने अधिकार को त्याग देना । जिसने अपने अधिकार को त्यागा नहीं वह प्रेम के लिये बनाया ही नहीं गया ।

प्रेमी एक सम्राट है जिस पर दोनों संसार न्यूँछावर हैं । राजा को इस निछावर की कोई परवाह नहीं होती ।

प्रेमी और प्रेम अमर हैं । प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से प्रेम न कर । क्योंकि अन्य वस्तुओं का अस्तित्व अस्थायी है ।

ताकै किनारगीरी माशुके मुरदा रा ।
 जाँ रा किनारगीर कि ऊरा किनार नेस्त ॥
 आँ कज बहार जाद बमीरद गहे खिजाँ ।
 गुल्जारे इश्क रा मदद अज नौवहार नेस्त ॥
 आँ गुल कि अज बहार बुवद खार यारे ऊस्त ।
 वाँ मय कि अज अमीर बुवद बेखुमार नेस्त ॥
 नज्जारा गर मबाश दर्री राह मुन्तजिर ।
 बल्ला कि हेच मर्ग बनर्जे इन्नजार नेस्त ॥
 बर कल्वे नकद ज्ञान तु अगर कल्व नेम्ती ।
 ई' नुक्ता गोशदार गिरत गोशवार नेस्त ॥
 बर अस्पे तन मलरजा सुबुकतर पियादा शौ ।
 परश देहद खुदाए कि बर तन सवार नेस्त ॥
 अन्देशदा रेहा कुनो दिल शाद शौ तमाम ।
 चू रूये आईना के बनक्शो निगार नेम्त ॥
 चू मादा शुद जे नक्श हमा नक्शहा दुरुस्त ।
 जाँ सादा रू जे रूए कसे शर्मसार नेस्त ॥

मरी हुई प्रियतमा को कब तक गोद में लिये रहेगा ? वह तत्व नहीं रखती । गोद में लेना है तो प्राण को ले ।

जो वस्तु बहार से उत्पन्न होती है वह पतझड़ के समय मिट जाती है । परन्तु प्रेम की फुलवाड़ी बहार से सम्बन्ध नहीं रखती ।

वह स्वयं सदा बहार है । जो पुष्प बहार में उत्पन्न होता है पतझड़ में वह कण्टक बन जाता है और अंगूर के निचोड़े हुए पानी से जो शराब बनता है उसमें भी नशे के उतार के समय कष्ट अवश्य होता है ।

यदि तू खोटे सिक्के के सदृश नहीं है तो स्वच्छ हृदय प्राप्त कर । यदि तेरे कान में मोती नहीं हैं तो उस सिक्के को कान में धारण कर ले ।

प्रेमी इस मार्ग में इंतजार नहीं करता , जैसे कि मृत्यु किसी के लिये नहीं ठहरती ।

शरीर रूपी घोड़े पर काँपते हुए सवार के समान न बैठ । शीघ्र ही पैदल चलना प्रारम्भ कर । जो शरीर पर सवार नहीं होता उसे शीघ्र ही पंख मिल जाते हैं ।

सब चिन्ताओं का त्याग करके हृदय को प्रसन्न बनाले । उसे उस दर्पण के रूप में ले आ, जिसमें कोई बेल बूटा नहीं होता ।

जब तू ने दर्पण सा अपने चेहरे को नक्शों से खाली कर दिया तब सब नक्श मिट गये । ऐसा चेहरा फिर किसी के चेहरे से शरमिन्दा नहीं होता ।

आईना सादा खाही खुदरा दरु निगर ।
 कूरा जे रास्त गोई शरमो हज्जार नेस्त ॥
 चू रूप आहिनी जे तमीज ई मका बयाफ़ ।
 ता रूप दिल चे याबदे कू रा गुबार नेस्त ॥
 लेकिन मियाने आहनो दिल ई तफ़ावतसत ।
 की राज़ दार आमद व आँ राज़दार नेस्त ।

(९)

मन अज़ आलम तुरा तनहा गुज़ीनम ।
 रवादारी के मन रामगी नशीनम् ॥
 दिले मन चू क़लम अन्दर कफ़े तुस्त ।
 जे तुस्त इरशाद मानम व रहज़ीनम् ॥
 बजुज आँचे तू खाही मन चे खाहम् ।
 बजुज आँचे नुमाई मन चे बीनम् ॥
 गहे अज़ मन ख़ारे रू यानी गहे गुल ।
 गहे गुल बोयमो गह ख़ार चीनम् ॥
 मरा गर तू चुनादारी चुनानम् ।
 मरा गर तू चुनी खाही चुनीनम् ॥

यदि दर्पण को स्वच्छ तथा सादा रखना चाहता है तो अपना बदन उसमें देख । यह समझ ले कि उसे सत्य प्रकट करने में न लज्जा ही है और न भय ।

जब लोहे के तख्ते का ऊपरी भाग बुद्धि द्वारा इतना स्वच्छ हो गया है तो ध्यान दे कि हृदय जिसमें कोई गन्दापन नहीं होता कितना निर्मल हो जायगा ।

परन्तु लोहे और हृदय में अन्तर है । हृदय रहस्यमय है और लोहे में कोई रहस्य नहीं है ।

(९)

इस सारे संसार में मैं केवल तुम्हीं से प्यार करता हूँ । तेरी इच्छा है कि मैं अकेला बैठा हुआ कालक्षेप करूँ ।

मेरा दिल क़लम है और तेरे हाथ में है । मैं प्रसन्न हूँ अथवा दुखी, जो कुछ भी हूँ, हूँ तेरी ही तरफ़ से ।

जो कुछ भी तेरी इच्छा है उसके अतिरिक्त और मेरी इच्छा हो ही क्या सकती है ? जो कुछ भी तू दिखाता है, मैं उसके सिवा और क्या देखूँ ?

तू कभी तो मुझ में काँटे उत्पन्न करता है और कभी फूल । कभी मैं पुष्पों की सुगन्ध लेता हूँ और कभी काँटे चुनता हूँ ।

अगर तू वैसा रखे वैसा हूँ और ऐसा रखे ऐसा हूँ; जिस प्रकार तू मुझको रखना चाहता है मैं वैसा ही हूँ ।

दरों खुम्मे कि दिलरा रंग बखशी ।
 कि बाशम । मन चे बाशद मेहरो कीनम् ॥
 तू बदी अन्वलो आखिर तू बाशी ।
 तु वह कुन आखिरम् अज अव्वलीनम् ॥
 चु तू पिनहा शवी अज अहे कुफ़म् ।
 चु तू पैदा शवी अज अहे दीनम् ॥
 बजुज चीजे कि दादी मन चे दारम् ।
 चे मी जोई जे जेबो आस्तीनम् ॥

(१०)

बगीर दामने लुकश कि नागहों बगुरेजद ।
 वले मकश तु चूं तीरश कि अज कमाँ बगुरेजद ॥
 चे नक़शहा के बबाजद चे हीलहा कि बसाजद ।
 बनक़श हाज़िरे बाशद जे राहे जों बगुरेजद ॥
 दर आसमाँश बजोई चो मेह दर आव बेताबद ।
 दर आव चंकि दर आई ब आस्माँ ब गुरेजद ॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे । मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा प्यार तथा वैर क्या है ?

प्रथम तो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था । जो तू था वही मैं था । और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा । तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे ।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओभल हो जायगा उस समय मैं विधर्मी हो जाऊँगा । और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा, मैं धर्मात्मा हो जाऊँगा ।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है । तू मेरी जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है ?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अञ्चल को पकड़ ले । स्मरण रख वह वकायक भाग जात है । परन्तु उसे एक बाण के ममान अपनी तरफ़ खींच मत । खींचने से बाण धनुष को छोड़ देता है ।

वह कैसे निराले, विविध प्रकार के रंग दिखलाता है और बहाने करता है । चित्र के रूप में सदैव समस्त में वर्तमान रहता है पर प्राणों के मार्ग से अदृश्य हो जाता है ।

यदि तू आकाश में उसकी खोज करे तो वह चन्द्र बनकर नीचे, पानी में प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे वहाँ देखने आता है वह पुनः आकाश-चारी हो जाता है ।

जे लामकाँश ब जोई निशाँ दहेद बमकानत ।
 चु दर मकाँश ब जोई ब लामकाँ बगुरेजद ॥
 चु तीर मीं बेरवद अज कमाँ चु सुरों गुमानत ।
 यकीं बेदों के यकींदार अज गुमाँ बगुरेजद ॥
 अज ईनो आँ बगुरेजम जे तर्स नै जे मलूली ।
 के आँ निगारे लतीफम अजीनो आँ बगुरेजद ॥
 गुरेजे पाये चु बादम जे इश्के गुल चु सबा अम ।
 गुले जे बीमे खिजाने जे बोस्तां बगुरेजद ॥
 चुनौं गुरेजादे नामश चु क़स्द गुफ्तने बीनद ।
 कि गुफ्त नीज न ताबी कि आँ फ़लाँ बगुरेजद ॥
 चुना गुरेजद अज तु कि गर नबीसी नक्शश ।
 जे लौह नक्श बपरद जे दिल निशाँ बगुरेजद ॥

(११)

सूरतगरे नक्काशम् हर लहजा बुते साजम् ।
 वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगजाजम् ॥

तू जब उसकी खोज में बनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह बनों में भाग जाता है। यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी वाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इससे दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनो का प्राणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तखती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतिओं को तेरे सन्मुख पिघला डालता हूँ।

सद नक्श बर अंगेजम् बा रुह दरों मेजम् ।
 चूँ नक्शो तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाजम् ॥
 तू साक्रिए खुम्भारी या दुश्मने हुशियारी ।
 या आँ कि कुनी वीरों हर खाना किशर साजम् ॥
 जौ रेस्ता शुद बा तू आमरेस्ता शुद बा तू ।
 चूँ वृए तु दारद जौ जौरा हला ब नवाजम् ॥
 हर खूं के जमी रोयद बा खाक तु मी गोयद ।
 बा महरे तू हम रंगम बा इश्के तू अम्बाजम् ॥
 दर खानए आबो गिल बे तुस्त खराब ई दिल ।
 या खाना दर आ पे जौँ, या खाना ब परदाजम् ॥

शिकवए नै

बिश्नो अज नै चं हिकायत मी कुनद ।
 अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद ॥
 कज नेस्तौँ ता मरा बबुरीदाअन्द ।
 अज नफीरम मर्दे जन नालीदाअन्द ॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साक्री है अथवा चतुरता का बैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रिय-तम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

सीना छाहम शूरह शूरह अज किराक ।
 ता बेगोयम शरह देंद इरितयाक ॥
 हर कसे कू दूर मानदँ अज अस्ले खेश ।
 बाज जोयद रोजगारे वस्ले खेश ॥
 मन बहर जामीयते नालाँ शुदम ।
 जुफ्ते बदहालाँ व खुशहालाँ शुदम ॥
 हर कसे अज जन्ने खुदशुद यारे मन ।
 अज दरुने मन नजुस्त असरारे मन ॥
 सिरें मन अज नालए मन दूर नेस्त ।
 लेके चश्मो गोश रा आँ नूर नेस्त ।
 तन जे जानो जाँ जे तन मस्तूर नेस्त ।
 लेके कसरा दीदे जाँ दस्तूर नेस्त ॥
 आतिशस्त ईँ बाँगे नाबो नेस्त बाद ।
 हर के ईँ आतिश नदारद नेस्त बाद ॥
 आतिशे इश्कस्त कंदर नै फिताद ।
 जोशिशे इश्कस्त कंदर मै फिताद ॥

मेरा हृदय वियोग के शोक से विदीर्ण हो जाय तब मैं उसके टुकड़े दिखा कर अपने कष्टों को सुनाऊँ ।

जो पुरुष अपने मूल तत्व से विलग हो जाता है उसको पुनः उससे मिलने की चिन्ता रहती है ।

मैं प्रत्येक जलसे में अपना रुदन करती रही हूँ और अच्छे व बुरे पुरुषों से मेल भी रक्खा है ।

और प्रत्येक पुरुष ने भिन्न भिन्न प्रकार से सहायता की है परन्तु मेरे आंतरिक भेद को किसी ने भी नहीं टटोला ।

क्योंकि मेरा भेद मेरे रोने धोने से अलग नहीं है परन्तु आँख और कान में वह प्रकाश कहाँ जो उस भेद को जान सके ।

प्रत्येक पुरुष को इस बात का ज्ञान है कि शरीर और प्राण दो वस्तु हैं परन्तु कोई भी प्राण नहीं देखता ।

बाँसुरी का स्वर एक आग है हवा की फूँक नहीं है अगर किसी में यह भाग न हो तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय ।

बाँसुरी में जिस अग्नि का प्रकाश है वह प्रेमअग्नि है शराब में (सुरा) जो जोश है (उमङ्ग) वह प्रेम का जोश है ।

नै हरीक्रे हर कि अज्र यारे बुरीद ।
 पर्दाहायेश पर्दाहाये मा दरीद ॥
 हमचु नै जहे व तिर्याक्रे कि दीद ।
 हमचु नै दमसाज व मुशताक्रे कि दीद ॥
 नै हदीसे राह पुरखू मी कुनद ।
 क्रिस्ताहाये इश्क्रे मजनं मी कुनद ॥
 दोदहाँ दारेम गोया हमचो नै ।
 यक दहाँ पिनहाँस्त दर लबहाए बै ॥
 यक दहाँ नालाँ शुदा सूए शुमा ।
 हाए हूए दर फिगन्दा दर समा ॥
 लेके दानद हर के ऊ रा मंजरस्त ।
 कीं फुगाने ई सरी हमजाँ सर अस्त ॥
 दमदमा ई नाए अज्र दमहाय ओस्त ।
 हाए हूए रूहे अज्र हैहाय ओस्त ॥
 महरमे ई होरा जुज्र बेहोश नेस्त ।
 मर जबाँ रा मुशतरी जुज्र गोश नेस्त ॥

बाँसुरी उसकी सहायक है जिसका किसी मित्र से वियोग है ।

उसके पर्दों ने हमारे पर्दे विदीर्ण कर दिये हैं, सन् को प्रकट कर दिया है । बाँसुरी की तरह विष और जहरमोरा (एक प्रकार का विष) दोनों का स्वाद किसने लिया है और उसके समान दिल बहलाने वाला और प्रेमी दोनों को किसने देखा है ।

बाँसुरी एक शोक पूर्ण मार्ग की कहानी सुनाती है और प्रेम युक्त कहानियाँ मनुष्य को उन्मादी बना देती हैं (मजनूँ के प्रेम की कहानी कहती है ।)

हम भी बाँसुरी की तरह दो मुँह रखते हैं एक मुँह उसके ओष्ठों में लुप्त है ।

एक मुँह हमारे सम्मुख रुदन कर रहा है और उसने सम्पूर्ण अकाश को हाय हाय के शोर से परिपूर्ण कर दिया है ।

परन्तु जिसकी दृष्टि है वह भली प्रकार से जानता है कि इस सिरि की आवाज उस सिरि की आवाज है ।

इस बाँसुरी का सुर उस दूसरे मुँह की फूँकों से है और रूह (जान) का विलाप करना उसी के विलाप के कारण है ।

इस चतुराई को केवल प्रेमोन्मादी ही जान सकता है, अन्य नहीं । जिह्वा का भादक केवल कान है ।

गर नशूदे नालए नै रा समर ।
नै जहां रा पुर नकदें अज शकर ॥

लैला व मजनूँ

अबलहाँ गुप्ततन्द मजनूँ रा जे जेह ।
हुस्ने लैला नेस्त चन्दौ हस्त संह ॥
बेहतर अज वै सद हज्जारौ दिलरुबा ।
हस्त हम चूँ माह दर शहर ए केआ ॥
नाजनी तर जो हज्जारौ हूर वश ।
हस्त बंगुर्जी जाँ हमा यकबारे खश ॥
बारहाँ खुद रा व मारा नीज हम ।
अज चुनी सौदाए किशते मुत्तहम ॥
गुफ़ सूरत कूजास्त व हुस्न मै ।
मै खुदायम मी देहद अज जर्फे वै ॥
मर शुमा रा सिका दादज कूजा अश ।
ता नबाशद इश्के ऊ तौ गोश कश ॥
अजयके कूजा देहद जहरो असल ।
हरयके रा दस्ते हक्के अज्जो जल ॥

अगर बाँसुरी का रोदन निष्फल होता तो “नै” (बाँसुरी) संसार का धन्यवाद से न भर देती ।”

मजनूँ और लैला

मूर्ख लोगों ने मजनूँ से नादानी से पूछा कि लैला में क्या सुन्दरता है वह तो कुछ भी सुन्दर नहीं है ।

उससे श्रेष्ठ (उत्तम) लाखों प्रेमिकायें शहर में चन्द्र के समान उपस्थित हैं ।

हावभाव में उससे श्रेष्ठ सहस्रों युवतियाँ उपस्थित हैं, तुम उन सब में से जिसको चाहो चुन लो ।

और स्वयं हम सबको भी इस अप्रतिष्ठा के व्यापार से मुक्त करो ।

मजनूँ ने उत्तर दिया कि सूरत (चित्र) तो एक पात्र है और यौवन उसमें भरी हुई सुरा । ईश्वर मुझको उसी के प्याले से सुरा का पान कराता है ।

तुम लोगों को उसके पात्र से परे कर दिया है जिसके कारण उसका यौवन तुमको अपनी ओर आकर्षित न कर सके ।

एक ही पात्र से विष और शहद ईश्वर का पवित्र हाथ लोगों को दिया करता है ।

कूजा मी बीनीं व लेकिन आँ शराब ।
 रूप ननुमायद बचश्मे ना सबाब ॥
 कासरातुत्तर्फ बाशद जौके जौ ।
 जुज बखस्में खेश ननुमायद निशाँ ॥
 कासरातुत्तर्फ बाशद आँ मुदाम ।
 वीं हिजाबे जर्फहा हमच् खयाम ॥

सवाल करदन बाबत नमाज़

आँ यके पुसीद अज मुफ़ी बराज ।
 गर कसे गिर्यद बनौहा दर नमाज ॥
 आँ नमाजे ऊ अजब बातिल शवद ।
 या नमाजश जायजो कामिल बुवद ॥
 गुफ़ आबेदीदा नामश बहे चीस्त ।
 बिनगरी ता ऊ चे दीदस्तो गिरीस्त ॥
 आबे दीदा ता चे दीदा अस्त अज निहौं ।
 ता वदौं शुद ऊ जे चश्मेद खुद रवौं ॥

तुम लोग पात्र को देखते हो परन्तु वह सुरा निरञ्जी आँख में दिखाई नहीं देती ।

नीची दृष्टि देखने वाली स्वर्ग की देवियाँ प्राणों का आनन्द प्राप्त करती हैं और वह केवल अपने ही आखेट पर दृष्टि रूपी बाण का प्रयोग करती हैं ।

वह सुरा सदैव नीची दृष्टि रखने वाली है और प्यालों का आवरण तम्बू के समान है ।

नमाज़ की बाबत सवाल करना

मुफ़ी (फ़तवा देने वाला) से एक पुरुष ने चुपके से पूछा कि यदि कोई पुरुष नमाज़ में दहाड़ें मार २ कर रोये,

तो क्या वह नमाज़ उसकी भंग हो जायगी या पूर्ण होगी ?

फ़तवा देने वाले ने कहा कि अश्रुओं का नाम नेत्र जल है । अब तुम देखो कि उस पुरुष ने क्या देखा जिसके कारण वह रो पड़ा ।

नेत्र के जल को अन्दर (भीतर) से क्या देख पड़ा जिसके कारण वह नेत्रपट से प्रकट हो प्रवाहित हुआ ।

गर जे शोके हक्क कुनद गिर्या दराज ।
 या नदामत अज गुनाहे दर नयाज ॥
 खौफे हक्क गर बाशद आँ गिर्या खुशस्त ।
 जाँके आँ आवे तू दफे आतिशस्त ॥
 बेशके गिर्दे नमाजे ऊ कमाल ।
 कुर्ब याबद दर रहे हक्क ला महाल ॥
 आँ जहाँ गर दीदाअस्त आँ पुर नियाज ।
 रौनके याबद जे नौहा आं नमाज ॥
 वर्जे रंजे तन बुवद बज दर्दा सोग ।
 रेसमाँ बगुसस्त व हम बशिकस्त दोग ॥
 वर फुगाँ अज मातमे फरजन्द कर्द ।
 की दिलो जानश जे मातम कर्द दर्द ॥
 मे ने अरजद आं नमाजे ऊ दो जौ ।
 जाँके बा अगयार गरदद दिल गिरौ ॥
 पस नमाजश बेशके बातिल बुवद ।
 गिरये ऊ नीज बे हासिल बुवद ॥

यदि ईश्वर के चाव से कोई अति रुदन करता है या विनती करते समय अपने पापों से शर्मिन्दा होकर रोता है,

या यदि वह ईश्वरीय भय से रोया है तो उस रोदन का क्या कहना , क्योंकि तेरे इस जल से अग्नि शान्त होगी और वह ईश्वर का भक्त बन जायगा ।

क्योंकि उस समय उस पुरुष की अन्तरात्मा में सच्ची भक्ति उत्पन्न हो गई है । उसके रुदन करने से उसकी नमाज भी पूर्ण हो जायगी ।

और यदि वह किन्हीं अन्य कष्टों या सांसारिक दुःखों के कारण रोया तो समझ लो कि तागा भी टूटा और तकला भी ।

यदि वह अपने पुत्र शोक से रोया कि उसके दिल में शोक उत्पन्न हो गया ।

तो भी उसकी यह नमाज दो कौड़ी की भी नहीं हुई क्योंकि उसका दिल अन्य ईश्वर में लीन हो गया ।

इस कारण अवश्य उसकी नमाज भङ्ग हुई और उसका रोना भी व्यर्थ हुआ ।

क्योंकि नमाज की वास्तविकता यह है कि पुरुष अपने वदन को चूर कर दे ।

जाँके तर्के तन बुवद अस्ले नमाज ।
 तर्के खेशो तर्के फरजन्द अज नयाज ॥
 अज खलील आमोज कुर्बा कुन वलद ।
 तन बेनेह बर आतिशे नमरुद रद ॥
 हासिल आँके ता बेदानी ए केआ ।
 कज बुका फर्कस्त बेहद ता बुका ॥

मरतबेए इंसान

पस बसूरत आलमे असगार तुई ।
 पस बमानी आलमे अकबर तुई ॥
 जाहिरा आँ शाख अस्ले मेवअस्त ।
 बातिनन बहे समर शुद शाख हस्त ॥
 गर नबूदे मैलो उम्मीदे समर ।
 कै निशोदे बागबाँ बेखे शजर ॥
 पस बमानी आँ शजर अज मेवा जाद ।
 गर बसूरत अज शजर बूदश निहाद ॥

स्वयं अपना और पुत्र का भी उस विनती की अवस्था में ध्यान न करे ।

देख और खलील से शिक्षा ग्रहण कर कि अपना पुत्र भी बलिदान कर दिया और पुनः अपना शरीर नमरुद (एक बादशाह) को जलवाई अग्नि में डाल दिया अर्थात् उसको सौंप दिया ।

सारांश यह है कि ऐ विद्वान पुरुष ! तुझको यह मालूम रहना चाहिये कि रोने रोने में भी अधिक अन्तर है ।

मनुष्य की वास्तविकता

वैसे तो देखने में छोटा संसार है परन्तु वास्तव में बहुत बड़ी दुनिया है ।

प्रकट रूप में डाली से मेवा उत्पन्न है परन्तु वास्तव में मेवा फलने से पूर्व डाली निकलती है ।

यदि फल की उत्कंठा और अभिलाषा न होती तो माली वृत्त का पौधा क्यों लगाता ?

वास्तव में पेड़ मेवे से उत्पन्न है, परन्तु प्रकट रूप से पेड़ से मेवा निकलता है ।

गर बसूरत मन जे आदम जादा अम ।
मन बमानी जहे जद उफादा अम ॥
पस जे मन जाईदा दर माना पिदर ।
पस जे मेवा जाद दर माना शजर ॥

मरतबात राहे सादिक्

हर शराबे बन्दए आँ कदो खद ।
जुम्ला मस्तोंरा बुवद बर तो हसद ॥
हेच मोहताजे मए गुलगूँ नई ।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूनई ॥
जौहरस्त इंसों व चर्खे ऊ रा अर्ज ।
जुमला फर्रा व सायन्दो तू गर्ज ॥
इल्म जोई अज कुतुबहाए फसोस ।
औक जोई तू जे हलवाए सबोस ॥
ए गुलामत अत्रलो तदबीरातो हांश ।
तू चराई खेश रा अरजों फरोश ॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृत्त मेरे से उत्पन्न होता है ।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है । तमाम मतवालों को तुझ पर ईर्ष्या है ।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है । गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है ।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है । वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाई के समान हैं ।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या ढूँढ़ता है अर्थात् झिलकों के हलवे में आनन्द ढूँढ़ता है ।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है ।

ख़िदमते बर जुमला हस्ती मुफ़रज ।
जौहरे चूँ इज्ज दारद बा अरज ॥
बह इल्मे वर नमे पिनहौं शुदा ।
दर से गज तन आलमे पिनहौं शुदा ॥

एक हिकायत

कौदके दर पेशे ताबूते पिदर ।
ज़ार मी नालीदो वर मी कोषत सर ॥
कै पिदर आख़िर कुजायत मी बरन्द ।
ता तुरा दर जेर खाके वफ़शरन्द ॥
मी बरन्दत ख़ानए तंगो ज़हीर ।
नै दरो क़ाली व नै दर वै हसीर ॥
नै चिरागे दर शबो व नै रोज़े नान ।
नै दराँ बूए तआमो नै निशान ॥
नै दरे मामूर नै दर बाम राह ।
नै यके हमसाया कू वाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर “अर्ज” के सामने क्यों सर झुकाता है।

तू विद्या रूपी सागर है जो कि एक बूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक बच्चा पिता के मृतक शरीर के समीप फूट फूट कर रुदन करता हुआ सर पीटता था।

और पूछता था पिता जी को कहाँ लिये जाते हो ? फिर कहता था ऐ पिता तुमको मिट्टी के नीचे गाड़ आवेंगे।

एक कम चौड़े और अँधेरे घर में तुमको डाल देंगे, न उसमें क़ालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय प्रकाश है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है।

न उस घर का कोई खुला हुआ पट है और न उसकी छत पर जाने का मार्ग। न कोई पड़ोसी है कि जिससे सहारा मिले।

जिस्म तू कि बोसागाहे खल्क बूद ।
 चूँ खबद दर खानए कोरो कबूद ॥
 खानए बे जीनहारो जाय तंग ।
 की दरू नै रूए मी मानद न रंग ॥
 जीं नुसक औसाफे खाना मी शमुर्द ।
 वज्र दोदीदा अरक खूनीं मी फशर्द ॥
 गुफत जूजी बा पिदर ऐ अर्जमन्द ।
 वल्ला ईरा खानए मा मी बरन्द ॥
 गुफु जूजी रा पिदर अबला मशौ ।
 गुफु ऐ बाबा निशाने हा शुनो ॥
 ईं निशानेहा कि गुफु ऊ यक बयक ।
 खानए मारास्त बे तरदीदो शक ॥
 नै हसीरो नै चिरागो नै तुआम ।
 नै दरश मामूरो नै सहनो नै बाम ॥
 जीं नमत दारन्द बर खूद सद निशौं ।
 लेक कै बीनन्द औँरा तागयौं ॥

खेद है, तुम्हारे बदन को कभी लोग चुमकारा करते थे यह किस प्रकार अंधेरे और उजाड़ घर में जायगा ।

ऐसा घर जिसमें न कोई शरण है और न खुला स्थान । वहाँ बदन (चेहरे) को रंगत और चमक जाती रहती है ।

वह बच्चा इस प्रकार घर की अवस्थाओं का वर्णन कर रहा था और दोनों नेत्रों से लहू के अश्रु प्रवाहित थे ।

जोजी (छोटा बच्चा) ने अपने पिता से कहा कि पिता जी ! ईश्वर की सौगंध इसको तो हमारे घर में लिये जा रहे हैं ।

जोजी के पिता ने उत्तर दिया क्या नासमझ हुआ है । लड़के ने कहा बाबा, चिन्ह सुनलो ।

उसने जितने चिन्ह एक एक कर के वर्णन किये हैं यह सत्य हैं और अवश्य ही हमारे घर में हैं ।

वहाँ न चटाई है न प्रकाश है, न भोजन है, न उसमें पट लगे हुये द्वार हैं, न आँगन है और न कोठा ।

अपने पास इस प्रकार सहस्रों चिह्न पुरुष रखते हैं परन्तु मार्ग से भटक हुये उसको कब देखते हैं ।

खानए आँ दिल कि मानद बे जिया ।
 अज शुआये आकताबे किन्निया ॥
 तंगो तारकिस्त चू जाने जहूद ।
 बेनवा अज जौके सुलताने वदूद ॥
 गोर ख़शतर अज चुनीं दिल मरतरा ।
 आखिर अज गोरे दिले खुद बर तरा ॥

शिकवाहाय आशिक

आँ यके आशिक व पेशे यार खुद ।
 मे शमुर्द अज खिदमतो अजकारे खुद ॥
 कज बराए तू चुनीं करदम चुनीं ।
 तीरहा खुर्दम दरीं रज्मो सेनीं ॥
 माल रफ़ो जोर रफ़ो नाम रफ़ ।
 बर मनज इशक़त बसे नाकाम रफ़ ॥
 हेच सुबहम खुफ़ा या खनदाँ नयाफ़ ।
 हेच शामम बर सरो मामाँ न याफ़ ॥

ईश्वरीय सूर्य को किरण जिस दिल में प्रकाशवान नहीं हुई वह अंधकार मय घर है। वह इस प्रकार क्षुद्र व अंधकार मय है जिस प्रकार नास्तिक का दिल ।

कि वह दयावान राजा के माहम के स्वाद के आनन्द का लेशमात्र भी भागी नहीं बनता ।

मेरे लिये ऐसे दिल से क़ब्र अच्छी है। कभी तो अपने दिल की क़ब्र से ऊपर आ ।

प्रेमी की शिकायत

एक प्रेमी था जो अपनी प्रेमिका के समक्ष अपनी सेवाओं और कार्य का वर्णन कर रहा है,

कि मैंने तेरे लिये यह किया, वह किया, उस युद्ध में तीर और भालों के धाव सहन किये ।

मेरा धनमाल और ऐश्वर्य सब नष्ट होगया । मैंने तेरे प्रेम में अत्यन्त कष्ट सहन किया ।

किसी पुरुष ने भी कभी प्रातःकाल के समय भी सोता या हँसता नहीं पाया और कभी संध्याकाल को किसी ने मुझे प्रसन्नचित्त नहीं देखा ।

उंचे ऊ नौशीदा बूद अज तत्खो दुर्द ।
 ऊ बतकसीलश यकायक मी शमुर्द ॥
 नज बराये मिन्नते बल मी नमूद ।
 बर दुरस्तोए मोहब्बत सद शहूद ॥
 आक्रिलौं रा यक इशारत बस बुवद ।
 आशिकाँ रा तिश्नगो जाँ कै रवद ॥
 सद सखून मी गुफ़ु जाँ दर्दे कुहन ।
 दर शिकायत के न गुफ़तम यक सखून ॥
 आतिशे बूदस्त नमीदानिस्त चीस्त ।
 लेके चूँ शमा अज तफ़े ऊ मी गिरीस्त ॥
 बादे गिर्या गुफ़ु ईँ हा रफ़ु लेक ।
 ईँ ज़माँ इरशाद कुन तू यार नेक ॥
 हरचे फ़रमाई बजाँ इस्तादाअम् ।
 बर खते तो पा व सर बनिहादा अम् ॥
 गर दर आतिश रफ़ु बायद चूँ खलील ।
 वर चू येहिया मीकुनी खूनम सबील ॥

तात्पर्य यह कि उस प्रेमी ने जो जो कठिनाइयाँ सहन की थीं उनको बार बार सुना रहा था ।

परन्तु इससे वह प्रेमिका पर किसी प्रकार का कृतज्ञता का भार नहीं प्रकट करता था बल्कि अपना प्रेम सब्बा होने पर महसूसों सेपक दे रहा था ।

यह तो बुद्धिमानों के लिये है कि उन्हें एक संकेत से ही तुष्टि हो जाती है परन्तु मदमस्त प्रेमियों की पिपासामि इससे कब शान्त होती है ।

वह अपने भूतकाल के कष्टों की सहस्रों बातें कह रहा था पर अभी उसको शिकायत थी कि मैंने कुछ भी नहीं किया ।

उसके हृदय में अग्नि भभक रही थी परन्तु उसको यह पता न था कि क्या है; इस पर भी उसको उष्णता से मोम सम धुल रहा था ।

रुदन करने के पश्चात् कहा कि सब बातें तो सम्पूर्ण हो चुकीं अब आप कहिये कि क्या आज्ञा है, मैं उसको पूर्ण करने के लिये जी जान से प्रस्तुत हूँ ।

जो आज्ञा हो उसको हार्दिक भाव से पूर्ण करूँगा । मैं सर से पैर तक अर्थात् पूर्णतया आपका दास हूँ ।

यदि “खलीलअझाह” की तरह अग्नि में प्रवेश करने की आज्ञा हो या “यूहा” पैगम्बर के समान मेरा रुधिर बहा दीजिये,

वर जे गिर्या चूँ शोएब आमों शवम ।
 वर चू यूनस दर फ़मे माही रवम ॥
 वर चू यूसुफ़ चाहो ज़िन्दानम कुनी ।
 वर जे फ़करम ईसए मरयम कुनी ॥
 रुख़ न गरदानम नगरदम अज़ तो मन ।
 बहे फ़रमाँ तो दारम जानो तन ॥
 गुफ़ माशूक ई हमा कर्दी वलेक ।
 गोश बकुशा पेहनो अन्दरयाब नेक ॥
 काँचे असल असले इक्कस्त व विलास्त ।
 आँ न कर्दी उंचे कर्दी फ़रआहस्त ॥
 गुफ़श आँ आशिक़ बगो काँ अस्त चीस्त ।
 गुफ़ अस्तलश मरदनस्तो नीस्तीस्त ॥
 तू हमा करदी न मुरदी ज़िन्दई ।
 हीं बेमीर अर यारे जाँ बाज़िन्दई ॥
 गर बेमीरी ज़िन्दगी याबी तमाम ।
 नामे नीकूए तू मानद ता क़याम ॥
 चूँ शनूद आँ आशिक़े बे ख़ेशतन ।
 आहे सदे वरकशीद अज़ जानो तन ॥

“शोयब” पैग़म्बर के समान मैं अंधा होजाऊँ या “यूनिस” पैग़म्बर की तरह मछली (मत्स) के मुँह में प्रवेश कर जाऊँ ।

और या “यूसुफ़” की तरह मुझे कारागृह में डाल दे या “ईसा” के समान मुझे फ़क़ीर बना दे ।

मैं कभी मुंह न फेरूंगा और तेरी आज्ञा से कभी मुख न मोड़ूँगा । मेरा यह शरीर और प्राण दोनों तेरी आज्ञा को पूर्ण करने के लिये प्रति समय प्रस्तुत है ।

प्रेमिका ने उत्तर दिया कि श्रीमान् आपने सब किया परन्तु अब कान खोलकर ध्यानपूर्वक श्रवण करो,

कि प्रेम और प्यार का जो वास्तविक मूल है तुमने उसी को नहीं दिया और यह तो सब आडम्बर है ।

प्रेमी ने पूछा तो कृपया उसी वास्तविक मूल को प्रकट करिये । प्रेमिका ने उत्तर दिया कि वह वास्तविक मूल प्राण त्याग देना अर्थात् नष्ट हो जाना है ।

तुमने करने को सब कुछ किया परन्तु मरे नहीं और अबतक जीवित हो । यदि तुम सच्चे प्रेमी हो तो अभी मर जाओ ।

तुम मर जाओगे तो तुमको पूर्ण जीवन का आनन्द प्राप्त हो जायगा और प्रलय पर्यन्त तुम्हारा यश रहेगा ।

अभिमान रहित प्रेमी ने जब यह बात सुनी उसने हृदय से ठंडी साँस ली

ख़ शहीदों रा जे आब औला तर अस्त ।
 ई ख़ता अज सद सबाब औला तरस्त ॥
 दर दरुने काबा रस्मे क़िब्ला नीस्त ।
 चे ग़म अरग़ास रा बा चपला नीस्त ॥
 इल्लते इश्क़ज हमा दीहा जुदास्त ।
 आशिकाँ रा मजहबो मिल्लत ख़ुदास्त ॥

जाँके आशिक़ दर दमे नक़दस्त मस्त ।
 लाजरम अज कुफ़ो ईमाँ बरतग़स्त ॥
 कुफ़ो ईमाँ हर दो ख़ुद दरवाने ऊस्त ।
 कूस्त मरजो कुफ़ो दीं ऊ रा दो पोस्त ॥
 कुफ़ क़िश्रे ख़ुशक रू बर तापता ।
 बाज ईमाँ क़िश्रे लज्जत यापता ॥
 क़िश्रहाण ख़ुशक रा जा आतिशस्त ।
 क़िश्रहाण पैवस्ता मरजे जाँ ख़ुशस्त ॥
 मरजे ख़ुदज मर्वा ख़ुश बरतरस्त ।
 बरतरस्त अज ख़ुद कि लज्जन गुस्तरस्त ॥

शहीदों के लिये रक्त जल में श्रेष्ठतर है ; उनकी यह वृत्ति शत नेकियों से बढ़कर है ।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बड़े का कोई क़ायदा नहीं है । यदि डुबकी लगाने वालों के पास तेंवरा नहीं है तो क्या चिंता है ।

प्रेम का रोग समस्त मतां से निराला है । प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है ।

चूँकि प्रेमी नक़द माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया ।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नक़द के ड्योढ़ोबान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वहाँ नक़द है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं ।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया ।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है ।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण हैं क्योंकि वही स्वाद देने वाला है ।

शेख सादी

(जन्म १९८४ ई० : मृत्यु १९९९ ई०)

इनका पूरा नाम था मश्रफउद्दीन बिन मसीहउद्दीन अबदुल्ला । इनका जन्म शीराज में सन् ११८४ ई० में हुआ था और शरीरान्त सन् १२९१ ई० में । इन्होंने रहस्यवाद पर अधिक न लिखकर धर्म सम्बन्धी विषयों पर अपनी कलम चलाई थी । इनकी रचनाएँ भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य से ही सम्बन्ध रखती हैं ।

इन्होंने भी कई एक स्थानों तथा देशों में भ्रमण किया था, जिनमें से अरब, अबसीनियाँ, सीरिया, दमिश्क, उत्तरी अफ्रीका, एशिया माइनर, जेरू सलम और भारतवर्ष के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं । सिन्ध प्रान्त में, इन्हें कई एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी मिले थे । बगदाद में इनकी भेंट सूफ़ी शेख शहाबुद्दीन से हुई थी । इन्होंने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इनकी ख्याति गुलिस्तों तथा बोस्तों से अधिक है । गुलिस्तों में इन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन करके अपने अनुभवों को दर्शाया है । बोस्तों में (जिसमें के कई एक पद मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किये हैं) ईश्वरवाद की झलक है, जिससे यह प्रकट होता है कि वह रहस्यवादी थे और आध्यात्मिक विद्या से भी कुछ जानकारी रखते थे । भाषा की सरलता से इनको कविता में एक अनोखापन आ जाता है । इन्होंने कई विषयों पर कविताएँ लिखी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और जिनके कारण उनका स्थान कवियों में ऊँचा हो गया है । सादी ने कविता लिखना वृद्धावस्था में आरम्भ किया था । उन्होंने कई बार अपने समय के राजाओं के यहाँ राजकवि के रूप में रहने का प्रयत्न किया । परन्तु स्वीकार नहीं हुआ ।

इनके विचार बहुत ही पवित्र थे । इन्होंने कई एक नवीन विषयों पर लिखने का प्रयत्न किया था, जिनमें से शृङ्गार रस तथा भारतीय ढंग पर कविता लिखना भी थे । गज़ल लिखने में वह हाफ़ीज से कुछ ही कम होंगे । ब्राउन ने उनके विषय में लिखा है, “इनकी रचानाओं में पूर्वीय झलक पूर्णतयः वर्तमान है । सुन्दर से सुन्दर और रही से रही रचनाओं में भी यही बात जाती है । और फिर यह बात भी साधारण नहीं है कि जहाँ कहीं भी फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया जाता है, पढ़ने वाले के हाथ में पहले इनकी ही पुस्तक आती है । यह बात लगभग डेढ़ सौ वर्ष से चली आ रही है ।”

(लि० हि० अ० पर० जिल्द २ पृष्ठ ५३२)

प्रमुख रचनाएँ:—

गुलिस्तों ।

बोस्तों ।

दीवान ।

अखलाक़ी नासोन ।

ज़िजी सेखानी ।

इशक

खुशा बक्ते शोरीदगाने गमश ।
 अगर रेश बीनन्दो गर मरहमश ॥
 गदायाने अज पादशाही नफूर ।
 बउम्मीदश अंदर गदाई सवूर ॥
 दमादम शरावे अलम दर कशन्द ।
 बगर तल्ल बीनन्द दम दर कशन्द ॥
 बलाए खुमारस्त दर ऐशे मुल ।
 मिलहदार खारस्त बा शाखे गुल ॥
 न तल्लस्त सब्रके बर यादे ओस्त ।
 कि तल्लखी शकर वाशद अज दस्ते दोस्त ॥
 असीरश न खाहद रिहाई जे बन्द ।
 शिकारश न खाहद खलास अज कमन्द ॥
 सलार्तने उजलत गदायाने है ।
 मंजिल शनासाए गुम करदा पै ॥

प्रेम

उसके प्रेमियों के लिये क्या ही सुनहरा अवसर है ! वह घाव भी देखते हैं और औषधि भी ।

ऐसे प्रेमी सम्राट के पद को घृणा से ठुकरा देते हैं और उसकी आशा में रह कर निर्धनता पर सन्तोष करते हैं ।

वह सर्वदा प्रेम की मदिरा पान किया करते हैं और जो उसे कड़वी समझते हैं संसार के प्रलोभनों में पड़, नहीं पीते हैं ।

मदिरा-पान में आनन्द है परन्तु नशे के उतार में कष्ट हैं । प्रत्येक पुष्प की रखवाली के लिये टहनियों में कण्टक छिपे रहते हैं ।

उसकी स्मृति में जो सन्तोष है वह कड़वा नहीं है । मित्र के हाथ की दी हुई कड़वी वस्तु भी मीठी हो जाती है ।

उसका बन्दी, कारागार से मुक्त होने का इच्छुक नहीं है । जो उसके प्रेम-पाश में अवरुद्ध हो गया वह छूटना नहीं चाहता ।

उसके प्रणय के भिखारी भी संसार के सम्राटों से कम नहीं हैं । मंजिलों को पहचानने वाले (संसारी) रास्ता भूले हुए हैं ।

मलामत कशानन्द मस्ताने यार ।
 सबुक्तर बरद उश्तुरे मस्त बार ॥
 बसर बक्ते शौ खल्क कै रह बरन्द ।
 कि चू आवे हैवाँ बज्रुल्मत दरन्द ॥
 चू बैतुलमुकद्दस बरू पुर्जे ताव ।
 रिहा करदा दोबारे बरू खराब ॥
 चु परवाना आतश बखुद दर जनन्द ।
 न चूं किर्म पीला बखुद दर तनन्द ॥
 दिलाराम दरबर दिलाराम जूय ।
 लवज तिशनगी खुश्क बर तर्के जूय ॥
 नगोयम कि बर आव कादिर नयन्द ।
 कि बर साहिले नील मुसतसकी अन्द ॥

गुफ़ार अन्दर सबूत इश्क़े हक़ोको बदलीले मजाज़ो

तुरा इश्क़ हमचं खुदे जावो गिल ।
 रुबायद हमे सत्रो आरामे दिल ॥

हम उसके प्रणयी हैं जो सहन शील है और मनवाले ऊँट के समान शीघ्र अपनी लादी ले जाने हैं ।

संसार को उनकी ओर आकर्षित होने में क्या प्राप्त होगा जब कि अमृत के समान वह अन्धकार में छिपे हुए है ।

बेतुलमुकद्दस के समान उनका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है । उन्होंने इस ढाँचे को दुरावस्था में छोड़ रक्खा है । शरीर की तनिक भी चिन्ता नहीं है ।

पतंगे के समान प्रणय की अग्नि में अपने आप को जला रहे हैं । जिस प्रकार रेशम का क्रीड़ा अपने ही ऊपर ताना-बाना तान देता है, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने को भुला रक्खा है ।

उनका प्यारा गोद में है, परन्तु उसी को खोज में व्यस्त हैं । सामने पानी से भरा हुआ तालाब है परन्तु ओठ वहाँ तक पहुँचना नहीं चाहते ।

यह नहीं कि वह जान बूझ कर ऐसा कर रहे हैं । परन्तु उन्हें प्यास का रोग है । नीज़ नदी के तट पर बैठे हुए हैं परन्तु ओठ अब भी सूख रहे हैं ।

सांसारिक प्रेम के उदाहरण देकर, सच्ची लगन का वर्णन

जल और मिट्टी के संयोग से बने हुए, अपने ही समान मनुष्य का प्रेम व्याकुल कर देता है । जीवन की शान्ति और आनन्द दोनों विलुप्त हो जाते हैं ।

बबेदारेयश कितना बर खत्तो खाल ।
 बस्ताबन्दरश पाए बन्दे खयाल ॥
 बसिदकश चुनों सर नेही बर कदम ।
 कि बीनी जहां बावजूदश अदम ॥
 चो दर चश्मे शाहिद नुआयद जरत ।
 ज़रो खाक यकसां नुमायद बरत ॥
 गिर बा कसत दर न आयद नकस ।
 कि बा ऊ नमानद दिगर जाए कस ॥
 तू गोई वचश्म अन्दरश मंज़िलस्त ।
 बगर चश्म बरहम निही दर दिलस्त ॥
 न अन्देशा अज़ कस कि रुसबा शवी ।
 न क़वत कि यकदम शिकेबा शवी ॥
 गरत जां बेस्लाहद बकफ़ बर निही ।
 वरत तेग बर सर नेहद सर निही ॥
 चु इश्क़े कि वुनियादे ऊ बर हवास्त ।
 चुनी कितना अंगेजो फ़रमां रवास्त ॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं ।

तुम्हको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे ।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ़ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख ।

फिर किसी दूसरे की तरफ़ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो ।

उसके प्रणय में इस प्रकार रँग जा कि वह तेरी आँख में ही सर्वदा विद्यमान रहे और आँख मूँद लेने पर हृदय में दिखलाई दे ।

तू सदैव उसके लिये व्यग्र रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर । कारण कि जब वह सर्वदा तुम्हीं में है तब तुम्हसे पृथक् किस प्रकार हो सकता है ! उसके प्रेम में अपने को मतवाला बना डाल ।

यदि वह तेरे प्राण चाहता है तो हथेली पर रखकर उसके सामने कर दे । यदि वह तलवार तेरी गर्दन पर रखता है तो अपना सिर ही उसे दे डाल ।

जब वासनाओं से परिपूर्ण प्रेम में, प्रणयी की यह अवस्था हो जाती है तो उन प्रेमियों पर क्यों आश्चर्य होता है, जो ईश्वर से मिलने के लिये मतवाले हो रहे हैं ।

अजब दारी अज सलिकाने तरीक ।
 कि बाशान्द दग् बहे माना गरीक ॥
 बसौदाए जानों जे जों मुश्तगिल ।
 बज्रिके हबीब अज जहां मुश्तगिल ॥
 बयादे हक अज खल्क बगुरेकता ।
 चुनां मस्त साक्री कि मै रेकता ॥
 नेशायद ब दारु दवा कर्द शां ।
 कि कस मुत्तिला नेस्त बर दर्द शां ॥
 “अलस्त” अज अजल हमचुनों शां बगोश ।
 बफर्यादे “कालूबला” दर खरोश ॥
 गरोहे अमलदार उजलत नशी ।
 क्रदमहाए खाकी दमे आतशी ॥
 बयक नारा कोहे जे जाबरकनन्द ।
 बयक नाला मुल्के वहम बर कुनन्द ॥
 चो बादन्द पिनहाँ ब चालाक पूए ।
 चु मुशकन्द खामोशो तसबीह गूए ॥

जो सत्य की नदी में अपने आप को डुबा चुके हैं, ईश्वर की स्मृति में जान की भी चिन्ता छोड़ बैठे हैं ।

और उसके लिये संसार से मुख मोड़ बैठे हैं । संसार के बन्धनों को तोड़ कर उसके लिये माग निकले हैं ।

उसके प्रणय की मदिरा में इस प्रकार मस्त हो रहे हैं कि कुछ सूझता नहीं है ।

औषधि देकर उनके रोग को दूर करने की चेष्टा व्यर्थ है । उनकी पीड़ा को कोई नहीं समझता ।

मृत्यु के समय ईश्वर ने उनसे पूछा, “क्या मैं तुम्हारा पालन कर्त्ता नहीं हूँ ?” उन्होंने अपने उत्तर में इस प्रश्न की पुष्टि की ।

एक प्रेमी किसी एक कोने में बैठा हुआ है । शरीर की सुध नहीं है । पैरों पर धूल जम रही है । और मुख से गरम श्वासें निकल रही हैं ।

उसकी चिल्लाहट में वह शक्ति है कि पहाड़ को जड़ से उखाड़ दे और सारे देश को मिटा डाले ।

वह वायु के समान व्याप्त और शीघ्र गामी है । वह मुश्क के समान गुप्त तथा माला फेरने वाला है ।

सहरहा बेगिर्यंद चंदोंकि आब ।
 फेरोशोयद अज दीदा शां कोहले खाब ॥
 फरस कुरता अज बसके शब रौंदा अन्द ।
 सहर गह खरोसां कि बा माँदा अन्द ॥
 शबो रोज दर बहरे सूदो व सोज ।
 नदानन्द अज आशुफुगी शबज रोज ॥
 चुनों फिला बर हुस्ने सूरत निगार ।
 कि बा हुस्ने सूरत नदारन्द कार ॥
 नदादन्द साहबदिलौ दिल बपोस्त ।
 बगर अबलहे दाद बेमरजो गोस्त ॥
 मए सिर्फे वहदत कसे नोश कर्द ।
 कि दुनिया व उक्कवा फरामोश कर्द ॥

हिकायत गदाज़ादा बा पादशाहज़ादा

शुनीदम कि वक्ते गदा जादए ।
 नजर दाश्त बा पादशा जादए ॥

प्रभात होते ही उसके नेत्रों से आँसुओं की वह धारा प्रवाहित होती है कि सुर्मा बिल्कुल धुल जाता है ।

अहर्निश उसकी स्मृति रूपी पीड़ा में अपने आपको जलाया करता है । उसकी याद में पागल बना रहता है ।

यह भी ध्यान नहीं है कि कब दिन समाप्त होता है, रात कब आरम्भ होती है ।

ईश्वर के मुखारविन्द ने कुछ ऐसा जादू डाला है कि उसे संसार के किसी अन्य मुख से किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रह गया है ।

उसने अपने आप को सांसारिक प्रेम में नहीं डाल रक्खा है । यदि किसी ने अपने आपको मानवी प्रेम में फँसा दिया तो वह बहुत बड़ा मूर्ख तथा मन्द बुद्धि है ।

ईश्वर के प्रेम में मग्न वास्तव में उसी को समझना चाहिये जिसने अपने अस्तित्व तथा संसार दोनों को भुला दिया हो ।

फ़कीर के लड़के का शाहज़ादे पर आसक्त होना

मैंने सुना है कि किसी समय एक भिखारी एक शाहज़ादे पर आसक्त हो गया ।

कसे गुलशे शेख दीवाना रंग ।
 अजब सभ्रदारी तू बर चोबो संग ॥
 बगुल ई जफा बर मनज दस्ते ओस्त ।
 न शर्तस्त नालीदन अजब दस्ते दोस्त ॥
 मन ईनक दमे दोस्ती मी जनम ।
 गर ऊ दोस्त दारद बगर दुश्मनम ॥
 जे मन सब बे ऊ तवक्को मदार ।
 कि बा ऊ हम इमकों नदारद करार ॥
 न नैरुए सबरम न जाए सितेज ॥
 न इम्काने बूदन न पाए गुरेज ॥
 मगो जी दरबारगह सर बेताब ।
 बगर सर चु मेखम कशद दरतनाव ॥
 न परवाना जाँदादा दर पाए दोस्त ।
 बेह अजब जिन्दा दर कुंजे तारीके ओस्त ॥
 बगुलर खुरी जलमे चौगाने ऊ ।
 बेगुला वपायश दर उलूम चो गू ॥

किसी ने उससे कहा, “ऐ मूर्ख ! इतना पागल क्यों हो गया है कि कोड़ों और डण्डों की मार खाकर भी सन्तुष्ट दिखलाई पड़ता है ! मुख से आवाज नहीं निकलती है !”

उसने उत्तर दिया कि यह कठोरता मेरे प्यारे की तरफ से है और प्यारे के मारने पर मुख से आवाज निकालना उचित नहीं है ।

मैं अभी तक उसका प्रेमी होने का दावा करता हूँ । वह चाहे मुझे अपना मित्र समझे अथवा शत्रु ।

उसके बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती अथवा उसके साथ भी धैर्य न होगा । न तो मुझे चैन ही मिलता है और न लड़ाई ही करने की इच्छा होती है ।

न तो एक स्थान पर स्थिर होकर बैठा ही जाता है और न भागने ही के लिये पैर आगे बढ़ते हैं ।

मुझे उसके दर्बार से—उसके सम्मुख से हट जाने के लिये मत कहो । यदि मेरा शिर भी मेख (खूँटे) की तरह रस्सी में खिंचे तब भी मैं वहाँ से नहीं हट सकता ।

मैं तो अब अपने प्यारे के पास से हट नहीं सकता हूँ । क्या पतंगे ने अपने प्यारे के चरणों पर निज को न्योछावर नहीं कर दिया ? वह जीवन से बढ़कर उस अँधेरे कोने में है ।

यदि उसके चौगान से तू घायल होकर, उसके चरणों पर गेंद के समान जा कर गिर पड़े,

बगुल्ला सरत गर बेबुरद बतेरा ।
 बगुल्ल ई क्रदर न बूबद अज वै दरेरा ॥
 यके रा कि माशूक बाशद यके ।
 नयाज़ारद अज वै बहर अन्दके ॥
 मरा खुद जे सर नेस्त चन्दौं खबर ।
 कि ताजस्त बर तारकम या तबर ॥
 मकुन बा मने नाशिकेबा इतेब ।
 कि दर इश्क सूरत न बन्दद शिकेब ॥
 चु याकूबम अर दीदा गर्दद सुपीद ।
 नबुरम जे दीदारे यूसुफ उमीद ॥

और यदि तलवार से वह तेरे शिर को काट डाले तो भी उसके प्रति तनिक भी बेरुखी प्रकट मत कर ।

यदि किसी का कोई प्यारा हो तो उसे प्रत्येक बात सहने के लिये सदैव उद्यत् रहना चाहिये । मुझे अपनी तनिक भी सुध नहीं है ।

मुझे क्या दण्ड मिल रहा है ? यह भी नहीं ज्ञात हो रहा है । न मालूम मेरे शिर पर छत्र रक्खा हुआ है अथवा कुल्हाड़ी ।

मैं व्याकुल हूँ ; मुझ पर क्रोध मत कर । इस आसक्ति में मैंने अपनी शान्ति खो दी है ।

यदि हज़रत याकूब के समान मैं अन्धा हो जाऊँ तब भी यूसुफ के दर्शनों की अभिलाषा हृदय में बनाए रखूँ ।

शब्दसतरो

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

इनका नाम सईदुद्दीन महमूद था। आपका जन्म स्थान शम्सतर जो तबरेज के निकट स्थित है, बतलाया जाता है। आपका जन्म लगभग १२५० ईस्वी में और मृत्यु १३२० ई० में हुई थी। आप एक ऊँचे दर्जे के सूफी थे। इन्होंने लिखा कम है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है बहुत ही उत्तम है। आपकी पुस्तक “गुल्शन राज” के विषय में प्रोफेसर ब्राउन का

“सूफी धर्म ग्रन्थों में इस का स्थान बहुत ही ऊँचा है।”

(लि० हि० आ० पा० जिल्द ३ पृष्ठ १४८)

यह पुस्तक खूबमान के अमीर हुसेनी के पन्द्रह प्रश्नों के उत्तर में लिखी गई है। लेखी इसके विषय में लिखते हैं :—

“प्रश्नों के उत्तर जो कि छोटे छोटे उदाहरणों तथा गूढ़ बातों में दिये गये हैं इस प्रकार के रहस्यवाद को और भी उत्तम बना देते हैं। सुन्दर भावों को यह एक नवीन आभा प्रदान करते हैं।”

(प० वि० लेखी० पृष्ठ ७३)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन तथा अंग्रेजी भाषा में हो गया था। और वहाँ पर इसकी प्रशंसा भी बहुत हुई। इसकी सहायता से गुणों की उत्पत्ति पूर्णतः समझ में आ जाती है। जामी ने इस पुस्तक के विषय में कई बार लिखा है। अपनी लवायह नामी पुस्तक में उन्होंने बड़ी तारीफ की है। आपके जीवन में कोई घटना नहीं हुई। इतने वर्ष बड़ी शान्ति के साथ व्यतीत हो गये।

प्रमुख रचनाएँ :—

गुल्शन राज ।

हज़क़ुल यकीन ।

रिसाला शहीद ।

रहे दूरो दराजस्त ईं रिहा कुन ।
 चो मूसा यक जमाँ तर्के असा कुन ॥
 दरा दर वादीए ऐमन जमाने ।
 शुनो इन्नी अनल्लाह बेगुमाने ॥
 माहक्कि रा कि बर वहदत शुहूदस्त ।
 नखुस्तीं नजरत बरनूरे वजूदस्त ॥
 दिले कज मारफत नेरे सका दीद ।
 जे हर चीजे कि दीद अन्वल खुदा दीद ॥
 युवद फिके निकू रा शर्त तजरीद ।
 पसंगा लमअए अज बर्के ताईद ॥
 हराँ कस रा कि ऐजिद राह ननमूद ।
 जे इस्तेमाले मंतिक् हेच न कुशूद ॥
 हकीमे फलसफी चँ हस्त हैरौं ।
 नमी वीनद जे अशया गैरे इमकौं ॥
 जे इमकौं मो कुनद इमवाते वाजिब ।
 अजाँ हैरां शुद अंदर जाते वाजिब ॥

प्रेम का मार्ग एक बहुत ही विमृष्ट मार्ग है। उसको नू छोड़ दे और शान्ति के साथ अपनी लाठी को पृथ्वी पर टेक दे ।

कुछ समय के लिये तू उस प्रेममयी घाटी में चला जा और वहाँ बिना किसी कष्ट अपना उद्देश्य कि "मैं ही ईश्वर हूँ" सुनले ।

जिस निरीक्षक के सम्मुख अद्वैत पूर्णतया प्रकट है उसकी पहली दृष्टि अस्तित्व की चमक पर ही पड़ती है ।

जिस साधु पुरुष ने परमेश्वर से साक्षात् कर उसकी आभा को देखा है, उसे प्रत्येक वस्तु में उमी का जन्म दिखनाई पड़ता है ।

ईश्वर की ग्राज में निकलने वालों के लिये सब से पहले त्याग की आवश्यकता है, इसके उपरान्त उसकी सहायता रूपी भिजली की ।

जिस मनुष्य को परमात्मा ने ही मार्ग नहीं दिखलाया उसको तर्क वितर्क से क्या लाभ हुआ ।

एक दार्शनिक, जो कि हैरान हो रहा है, इन सांसारिक वस्तुओं में क्षण-भंगुरता के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखता है ।

वह इस क्षणभंगुरता से अमरत्व को मिद्ध करता है। इस कारण वह ईश्वरीय अस्तित्व के चक्कर में पड़ गया है ।

गहे अज दौर दारद सैरे मा कूस ।
 गहे अंदर तसल्लुल गश्ता महबूस ॥
 चो अक्लश कर्द दर हस्ती तवरगुल ।
 कियो पेचीद फायश दर तसल्लुल ॥
 जहूरे जुम्लए अशया वजिहस्त ।
 बले हक रा नमानिंदो न निहस्त ॥
 चो न बुवद जाते हक रा जिहो हम ता ।
 नदानम ता चे गूना दानी ऊ रा ॥
 नदारद वाजिव अज मुमकिन नमूना ।
 चे गूना दानियश आखिर चे गूना ॥
 जेहे नादाँ कि ऊ खुरशीदे तावों ।
 वनूरे शमआ जोयद दर बियावाँ ॥

तमसील

कसे कू अक्ले दूरंदेश दारद ।
 वसे सरगश्तगी दर पेश दारद ॥
 जे दूरंदेशिए अक्ले कुजूली ।
 यके शुद फलसकी दीगर हतूली

कभी वह दूर से उलटी चाल चलता हुआ दृष्टिगोचर होता है और कभी भिन्न भिन्न सम्बन्धों के बन्धनों में बँध जाता है ।

जब उसको बुद्धि—उसका मस्तिष्क—इस अस्तित्व के सोच में पूर्णतया लगजाता है, उस समय उसके पैरों में भ्रम के बन्धन पड़ जाते हैं ।

सारी वस्तुओं का प्रकट होना केवल ईश्वर पर निर्भर है—सब उसी के प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, परन्तु उनमें किसी का भी प्रकाश नहीं है ।

वह लासानी है । जब ईश्वर की समानता करने वाला कोई नहीं है और न उसका विरोध करने वाला ही कोई है, तो न मात्तूम तू उसका पता किस प्रकार लगा सकेगा !

उसके अस्तित्व के विषय में कोई बात निर्णयात्मक रूप से कही ही नहीं जा सकती, तब तू उसका ज्ञान किस प्रकार प्राप्त करेगा ?

तू भी कैसा सूर्य है जो प्रकाशित सूर्य के प्रकाश को, दीपक लेकर मैदान में खोज रहा है ।

उदाहरण

जिसमें बहुत दूर तक सोचने की शक्ति वर्तमान है, उसके सम्मुख सैकड़ों पेचीदा प्रश्न उपस्थित रहते हैं ।

इस बुद्धि की व्यर्थ दौड़ के ही कारण एक दार्शनिक बन गया और दूसरा अवतार में विश्वास करने वाला, प्रकृति के उस विकास सूर्य आदि में प्रेम तथा विश्वास मानने वाला ।

खिरद रा नेस्त तावे नूरे आँ रूए ।
 बरै अज्र वहे ऊ चश्मे दिगर जूए ॥
 दो चश्मे फलसफी चू बूद अहवल ।
 जे वहदत दीदने हक़ शुद माअत्तल ॥
 जि नाबोनाई आमद राए तशवीह ।
 जे यक चश्मीस्त इदराकाते तंजीह ॥
 तनासुख जाँ सवव शुद कुफ़ो वातिल ।
 कि आँ अज्र तंग चश्मी गश्त हासिल ॥
 अगर ख्वाही दीना चशमए ख़ुर ।
 तुरा हाजत फ़ितद वा जिस्मे दिगर ॥
 चु चश्मे मर न दारद ताक़तो नाव ।
 तबो ख़ुरशीदे तावो दीद दर आव ॥
 अजो चू रोशनी कमतर नुमायद ।
 दर इदराके तो हाली मे फ़िज़ायद ॥
 अदम आईनए हम्नीस्त मुतलक़ ।
 अजो पैदास्त यक्से ताविशे हक़ ॥

बुद्धि उस मुख के प्रकाश को देखने की सामर्थ्य नहीं रखती । इस कारण उस प्रकाश को देखने के लिये एक दूसरी ही आँख की खोज कर ।

दार्शनिक की दोनों आँखों में से एक ईश्वर की सर्वव्यापकता देखते देखते व्यर्थ हो गई ।

जब वह अन्धा हो गया तब उसे उपमान और उपमेय का ध्यान आया और एक आँख होने के कारण उसमें सोचने विचारने की शक्ति का विकास हुआ ।

आवागमन का ज्ञान लोगों को पूर्णरूप से प्राप्त नहीं हुआ है और जो हुआ भी है वह भी संकीर्ण दृष्टि द्वारा । इसी कारण वह सारहीन और व्यर्थ कहा जाता है ।

यदि तू सूर्य के प्रकाश को देखने का इच्छुक है तो तुझको एक दूसरे शरीर की आवश्यकता होगी ।

जब तेरे शिर के नेत्रों में उम्र प्रकाश के सम्मुख देखने की शक्ति नहीं है तब तू उसे पानी में देख सकता है ।

उस सूर्य का प्रकाश जल में बहुत कम पड़ता है, इसलिये तेरी विचार शक्ति में वह तत्क्षण अधिक हो जाता है ।

यह शरीर, अस्तित्व के दर्पण के समान है । इसी शरीर के द्वारा ईश्वरीय प्रकाश तुझमें से प्रकाशित होता है ।

अदम चूँ गश्त हस्ती रा मुक्ताविल ।
 दरो अक्से शुद अंदर हाल हासिल ॥
 शुदाँ बहदत अजी कसरत पिदीदार ।
 यके रा चूँ शमुदी गश्त विसयार ॥
 अदद गरचे यके दारद विदायत ।
 वलेकिन हरगिजश न वुवद निहायत ॥
 अदम दर जाते खुद चूँ वूद माफी ।
 अजो वा जाहिर आमद गंजे मखफी ॥
 हदीसे कुन्तो कन जन रा फिरोखौ ।
 कि ता पैदा बेबीनी सिरें पिनहाँ ॥
 अदम आईना आलम अक्से इन्साँ ।
 चो चश्मे अक्स दर वै शरूत पिन्हाँ ॥
 अगर मरदी वुरूँ आ व नजर कुन ।
 हर चआयद व पेशद जाँ गुजर कुन ॥
 मियाने रोजों शव अंदर मराहिल ।
 मशो मौकफ हमराह रवाहिल ॥

जब शरीर सन् के समान उत्स्थित हुआ तो उसी क्षण उसके अन्दर एक प्रतिबिम्ब आ पड़ा ।

और फिर वही प्रकाश इतनी अधिकता के साथ प्रकट हुआ । जब तू एक को गिनेगा वही बहुत हो जायगा ।

गोकि गिनती का आरम्भ इकाई में ही होता है, परन्तु उसकी कोई सीमा नहीं है ।

उसे जितना चाहो बढ़ाओ । मनुष्य एक अत्यन्त पवित्र जीव था । इसलिये उसके द्वारा गुप्त कोष प्रकट हो गया ।

“मैं एक गुप्त कोष था ” इस बात को पढ़, ताकि गुप्त रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे ।

ईश्वर एक दर्पण है, जिसका प्रतिबिम्ब यह संसार है । मनुष्य उस प्रतिबिम्ब की आँख है, जिसके भीतर एक मनुष्य छिपा हुआ है ।

यदि तू मनुष्य है तो मैदान में आकर देख, जो कुछ बाधाएँ तेरे सम्मुख आती हैं उन्हें पार कर जा ।

अहर्निश अपने मार्ग में, बिना विराम-विश्राम के आगे बढ़ता जा । साथ चलने वालों की तरह थक कर बीच में मत बैठ जा और न किसी सवारी पर बैठ ।

खलील आसा बरो हक्र रा तलब कुन ।
 शबे रा रोजो रोजे रा बशब कुन ॥
 सितारा वा महो खुरशीदे अकबर ।
 बुवद हिस्सो खयालो अक्ले अनवर ॥
 बेगिर्दा जी हमाँ ऐ राहरौ रूप ।
 हमेशा लाओह्वुल ओफलीं गोए ॥
 चो पुश्त आईना बाशद मुकदर ।

नुमायद रूप शरस अज रूप दीगर ॥
 शुआये आकताव अज चारुम अफलाक ।
 नगर्दद मुनअकिस जुज वर सरे खाक ॥
 तू बूदी अक्से माबूदे मलायक ।
 अजाँ गश्ती तू मसजूदे मलायक ॥
 बुवद अज हर तने पेशे तो जाने ।
 वजो दर वस्ता वा तो रेसमाने ॥
 अजाँ गश्तंद अमरन रा मुसल्लर ।
 कि जाने हर यके दर तुस्त मुजम्मर ॥
 तु मरजे आलमा जाँ दर मियानी ।
 बेदाँ खुद रा कि तू जाने जहानी ॥

खलील के समान जाकर ईश्वर की खोज कर। दिन से लेकर रात तक और रात से लेकर दिन तक बराबर समान रूप से लगा रह।

यह बड़ा सा सूर्य, यह नक्षत्र और यह चन्द्रमा सब सुन्दर हैं, विचारों और ध्यान के योग्य हैं।

तू इन सब के फेर में न पड़। और सदैव यही कहता रह कि मैं नाशवान् वस्तुओं को नहीं चाहता।

जब दर्पण की पुश्त मैली होती है, तब किसी देखने वाले का मुख दूसरी तरफ से दिखलाई पड़ता है।

सूर्य का किरणों का प्रतिबिम्ब चौथे आकाश से जब पड़ता है तब मिट्टी पर ही पड़ता है।

तू स्वर्गीय दूतों के तेज का प्रतिबिम्ब था और इसी कारण उनसे तेरी अभ्यर्थना कराई गई।

तेरे पास प्रत्येक शरीर का एक प्राण वर्तमान है। और उस शरीर से लेकर तेरे प्राणों के अन्दर तक एक डोरी बंधी रहती है।

हर एक के प्राण तुझ में गुप्त हैं इसीलिए सब तेरे सेवक हैं।

तू इस संसार का सार है और इसी कारण बीच में है, अपने आपको समझ ले। तू इस संसार का प्राण है।

सवाल

कि बाशम मन मरा अज मन खबर कुन ।
चे मानी दारद अन्दर खुद सफर कुन ?

जवाब

दिगर करदी सवाल अज मन कि मन चीस्त ?
मरा अज मन खबर कुन ता कि मन कीस्त ॥
चो हस्ती मुतलक आमद दर इशारत ।
बलपजे मन कुनन्द अज वै इवारत ॥
हकीकत कज ताआगुन शुद मोअय्यन ।
तो ऊ रा दर इवारत गुफई मन ॥
मनो तू आरिजे जाने वजूदेम ।
मुशव्वकहाय मिशकाते वजूदेम ॥
हमा यक नूर दाँ अश्वाहा अरवाह ।
गह अज आईना पैदा गह जे मिसवाह ॥
तु गोई लपजे मन दर हर इवारत ।
बमूए रुह मी बाशद इशारत ॥

प्रश्न

मैं कौन हूँ ? मुझे अपने आप पर प्रगट कर दे । “तू स्वयम् अपने अन्दर यात्रा कर” इसका क्या आशय है ?

उत्तर

तूने फिर यही प्रश्न किया कि “मैं” क्या वस्तु है ? मुझको बता दे कि यह “मैं” कौन है ?

जब इस जीवन की तरफ स्वाभाविक ढंग से इशारा किया जाता है तब “मैं” शब्द के साथ उसका वर्णन करते हैं ।

जो रहस्य वास्तविकता के रूप में परिणिन हो गया है तूने शब्दों में उसको “मैं” कहा है ।

“मैं” और “तू” सब उर्मी अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और अस्तित्व के दीपक की जालियाँ हैं ।

यह सारी सूरतें और रूढ़ें एक ही प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, जो कभी दर्पण से प्रगट होती हैं और कभी दीपक से ।

तू जिस प्रकार से भी “मैं” शब्द को कहेगा, उससे केवल आत्मा की ओर संकेत होगा ।

चो कदी पेशवाए खुद खिरद रा ।
 नमी दानो जे जुडे खेश खुद रा ॥
 बेरौ ऐ खाजा खुद रा नेक बेशनास ।
 कि न बुवद फरविही मानिन्दे आमास ॥
 मनो तू बरतरज जानो तन आमद ।
 कि ई हर दो जे अजजाए मन आमद ॥
 बलप्रजे मन न इनसानस्त मखसूम ।
 कि ता गोई बंदो जानस्त मखसूम ॥
 यके रह बरतर अज कौनो मकाँ शौ ।
 जहाँ बेगुजारो खुद दर खुद जहाँ शौ ॥
 जे खत्ते बड़मिए हाए हुवीयत ।
 दु चश्मी मी शवद दर वक्ते रोयत ॥
 न मानद दरमियाना रहरवे राह ।
 चो हाए हू शवद मलहक व अल्लाह ॥
 बुवद हस्ती बहिश्त इमकाँ चो दोजख ।
 मनो तू दरमियाँ मानिन्दे बरजख ॥

जब तू बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक मानना है, उस समय तू यह नहीं विचार करता कि तुझ में और बुद्धि में अन्तर है—दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं ।

अपने आपको अच्छी तरह पहचान ले । सृजन और मुटापा एक ही वस्तु को नहीं कहते हैं ।

“ मैं ” और “ तू ” दोनों प्राण और शरीर से बहुत बड़े चढ़े हैं, क्योंकि यह दोनों अहम् अंश हैं ।

अहं के शब्द से केवल मनुष्य का बोध नहीं होता है जिससे तू यह समझ ले कि केवल प्राणी के कारण यह शब्द आता है ।

एक बार तू इस क्षणिक जगत से ऊपर चला जा और अपने अन्दर एक दूसरे ही जग का निर्माण कर ।

इस जीवन में अद्वैत के भ्रम से भी अपने आपको पृथक् कर ले । देखने के समय मन दो आँख वाली वस्तु बन जाता है ।

उस समय पथिक बीच से विलुप्त हो जाता है और वह हवा के समान ईश्वर से जा मिलता है ।

अस्तित्व स्वर्ग के समान है और यह संसार नर्क के तुल्य है । इन दोनों के मध्य में “ मैं ” और “ तू ” एक निर्दिष्ट सीमा के समान खड़े हुए हैं ।

चो बरखेज्जद तोरा ईं परदा अज पेश ।
 न मानद नीज हुक्मे मजहबो केश ॥
 हमा हुक्मे शरीयत अज मनो तुस्त ।
 कि ओ वर वस्तए जानो तने तुस्त ॥
 मनो तू चूँ न मानद दरमियाना ।
 चे मसजिद चे कनिश्त चे दैरखाना ॥
 ताअय्युन नुक्तए वहमीस्त दर ऐन ।
 चो साफी गश्त ऐनत गैन शुद ऐन ॥
 दो खुतबा बेश न बुवद राहे सालिक ।
 अगरचे दारद ऊ चंदीं महालिक ॥
 यक अज हाए हुयत दर गुज्जश्तन ।
 दोवम सह्राए हस्ती दर नवश्तन ॥
 दरीं मशहद यके शुद जम्हो अफराद ।
 चो वाहिद सारी अन्दर ऐने आदाद ॥
 तु ओ जमई कि ऐने वहदत आमद ।
 तु ओ वाहिद कि ऐने कसरत आमद ॥

जब यह भेद भाव मिट जायगा उस समय धर्म और दीन की आज्ञाएँ भी शेष न रहेंगी ।

धर्म ग्रन्थों की सारी बातें केवल तेरे अहंकार पर निर्भर हैं । तू समझता है कि अहं तेरे प्राणों और शरीर के साथ बँधा हुआ है ।

जब “ मैं ” और “ तू ” तेरे बीच में न रह जायेंगे उस समय मन्दिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिये समान हो जायेंगे ।

तेरे मन में केवल यही भ्रम “ मैं ” और “ तू ” घुसा हुआ है । जिस समय यह भ्रम मिट जायगा, तू निर्मल हो जायगा ।

पथिक को बहुत दूर नहीं चलना है । हां, उसके मार्ग में विघ्न बाधाएँ अवश्य बहुत हैं ।

तुझे केवल दो बातों का स्मरण रखना उचित है । एक तो यह कि तू ममत्व की बाधा को दूर कर दे और दूसरी अस्तित्व के मैदान को पार कर जा ।

इस स्थान में मूल और शाखाएँ सब एक ही दिखलाई पड़ रही हैं । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि इकाई के अंक में सभी सम्मिलित हैं ।

तू मूल है अथवा इकाई । तू ही मुख्य वस्तु है । तुम्हीं में से सब की उत्पत्ति है ।

कसे ई' सिर शिनासद कू गुजर कर्द ।
 जे जुजवी सूए कुल्लो यक सफ़र कर्द ॥
 बेदाँ अग़ल कि ता चूँ ग़शत मौजूद ।
 कि ता इन्साने कामिब ग़शत मौलूद ॥
 दर अतवारे जमादी बूद पैदा ।
 पसज रूहे इज़ाफ़ी ग़शत दाना ॥
 पसंगह ज़विश कर्द ऊ जे क़दरत ।
 पसज वै शुद जे हक़ साहब इरादत ॥
 बतिग़ली कर्द बाज़ एहसासे आलम ।
 दरो बिलक़ेज शुद वसवासे आलम ॥
 चो जज़ज़र्यात शुद बर वै मुरत्तब ।
 बकुलीयात रह बुर्द अज़ मुरक़ब ॥
 ग़ज़ब ग़शत अन्दरो पैदा व शहवत ।
 वज़ीशां खास्त बुल्लो हिर्सा नख़वत ॥
 बक़ेल आमद सिफ़न हाए ज़मीमा ।
 बतर शुद अज़ ददो देवो बहीमा ॥

वही मनुष्य इस रहस्य को समझ सकता है जो मार्ग को पार कर गया है और अपनत्व को भूलकर इकाई तक पहुँच गया है ।

पहले तू इस संसार की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर । और फिर यह देख कि मनुष्य किस प्रकार उत्पन्न हुआ ।

पहले वह पत्थर-मिट्टी के रूप में प्रकट हुआ और उसके उपरान्त आत्मा के रूप में प्रकट होकर एक संसार बन गया ।

तब उसको रचना का कौशल प्रगट हुआ और वह माँ के पेट में आकर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ ।

बचपन में उसने इस संसार की खूबी को दिखलाया और उसके भीतर यहाँ की वस्तुएँ उत्पन्न हो गईं ।

जब उसके आकर संसार की समस्त वस्तुएँ यथोचित रूप से विद्यमान हो गईं तब वह मिश्रण से पूर्णता पर पहुँच गया ।

फिर उसमें क्रोध और इच्छाएँ उत्पन्न हुईं और इन दोनों में सम्पर्क से अभिमान, कृपणता ,

और लालच इत्यादि दुर्भावनाओं का आविर्भाव हुआ । हिंसक पशुओं और राक्षसों से भो आगे बढ़ गया ।

तनज्जुल रा बुवद ईं नुक्ता असफल ।
 कि शुद बा नुक्ताए बहदत मुक्ताबिल ॥
 शुद अज्ज अफअल कसरत बे निहायत ।
 मुक्ताबिल गश्त अज्जीं रु बा बिदायत ॥
 अजर गरदद मुक्कय्यद अन्दरीं दाम ।
 बरुमराही बुवद कमतर जे अनआम ॥
 बगर नूरे रसद अज्ज आलमे जाँ ।
 जे फ़ैजे जज्बा या अज्ज अक्से बुरहाँ ॥
 दिलश बा लुफ़े हक हमराज गर्दद ।
 अज्जीं राहे कि आमद बाज गर्दद ॥
 जे जज्बा या जे बुरहाने यक्कोनी ।
 रहे यावद बईमाने यक्कोनी ॥
 कुनद यक रजअत अज्ज सिज्जीने फ़ज्जार ।
 रुख आरद सूए इल्ली ईने अबरार ॥
 बतौया मुत्तससिफ़ गरदद दरौं दम ।
 शवद दर इसतिफ़ा जौलादे आदम ॥

उच्च पद से नीचे गिरने के लिये यह सबसे छोटा शब्द है जो कि वहदत शब्दकी समानता रखता है ।

साँसारिक कार्यों और मंझटों की अधिकता से वह इस संसार में बिलकुल घुल मिल गया । उसे यह भी ज्ञान न रहा कि उसका उत्पन्न कर्ता कौन है ।

यदि वह इसी जाल में फँसकर रह गया तो अज्ञानी पशुओं से भी अधिक उसकी अवस्था शोचनीय हो जायगी ।

यदि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अथवा ईश प्रदत्त प्रकाश से जो कि सभी कार्यों से प्रकट होता है ,

उसका हृदय उस महान् के प्रति प्रेम बन्धनों में बँध जावे तब तो वास्तव में वह जिस मार्ग से आता है उसी से लौट जाता है, अन्यथा नहीं ।

ईश्वर की कृपा से अथवा प्रकट दलीलों से वह सच्चाई तक पहुँचाने वाला मार्ग पा जाता है ।

वह पापात्माओं और बुरे काम करने वालों को छोड़ कर पुण्यात्माओं की ओर अग्रसर होता है ।

नर्क को त्याग कर स्वर्ग में पहुँचता है । वह उसी समय साँसारिक बासनाओं को त्याग कर ईश्वर की एक पवित्र तथा सच्ची सन्तान बन जाता है ।

जो अफ़आले निकोहीदा शवद पाक ।
 जो इदरीसे नबी दर चारुम अफ़लाक ॥
 जो यावद अज सिकाते वद नजाते ।
 शवद चूँ नूह अजौँ साहब हयाते ॥
 नमानद क़द्रते जुजुगीश दर कुल ।
 खलील आसा शवद साहब तवकुल ॥
 इरादत बा रज़ाए हक़ शवद ज़म ।
 रवद चूँ मूसा अन्दर बाबे आज़म ॥
 जो इल्मे ख़ेशतन यावद रिहाई ।
 चु ईसीये नबी गरदद समाई ॥
 देहद यक बारा हस्ती रा बताराज ।
 दर आयद अज पए अहमद बमेराज ॥
 रसद चूँ नुक्तए आख़िर बअव्वल ।
 दरौजा ना मलक गुंचद न मुरसल ॥
 कसे मर्दे तमामस्त कज तमामी ।
 कुनद बा खाजगी कारे गुलामी ॥

वह अपकर्मों को छोड़कर, नबी के समान चौथे आकाश पर पहुँच जाता है ।

जब वह कुभावनाओं और कुकर्मों से छुटकारा पा जाता है तब उसका जीवन नूह से भी अधिक हो जाता है ।

उस समय सुकर्मों के प्रभाव से उसका बुरा स्वभाव मिट जाता है और वह खलील पैगम्बर के समान ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो जाता है ।

उसको इच्छायें बिलकुल ईश्वर के रँग में रँग जायँगी और वह हज़रत मूसा के समान नदी के बड़े दर्वाजे में प्रविष्ट हो जायगा ।

उसमें जो अहंकार वर्त्तमान रहता है उसे भूलकर वह ईसा नबी के समान आकाशवत् हो जाता है ।

वह अपने अस्तित्व को बिलकुल मिटा देता है और अहमद के पीछे पीछे चलकर स्वर्गीय सीढ़ियों तक पहुँच जाता है ।

वह वहाँ इस प्रकार पहुँच जाता है, जिस प्रकार वृत्त का अन्तिम बिन्दु सबसे पहले बिन्दु तक पहुँच जाता है । उस स्थान पर न स्वर्गीय दूत ही पहुँच सकता है और न रसूल ही ।

पूर्ण मनुष्य वही है जो पूर्ण होने पर और बड़ा होने पर भी नम्र रहता हो और सेवा में निमग्न रहता हो ।

पसोंगाहे कि बे बुराद ऊ मसाफत ।
 नेहद हक़ बर सरश ताजे खिलाफत ॥
 बक्राए यावदो बादज़ फना बाज़ ।
 रवद अंजामे ऊ दीगर बाआगाज़ ॥
 शरीअत रा शआरे खेश साज़द ।
 तरीक़त रा दिसारे खेश साज़द ॥
 हक़ीक़त ख़ुद मक़ामे जाते ऊ दाँ ।
 बुवद दायम मियाने कुफ़ो ईमाँ ॥
 बअस्ल्लाक़े हमीदा ग़ता मौसूफ़ ।
 बइल्मो जोहदो तक्रवा बूदा मारूफ़ ॥
 हमा बा ऊ वले ऊ जी हमा दूर ।
 बजरे कुब्बाहाए सित्र मस्तूर ॥

तमसील

तबह गरदद सरासर मरज़े बादाम ।
 गरश अज़ पोस्त बेख़राशी गहे ख़ाम ॥
 वले चू पुस्ता शुद बा पोस्त नीकोस्त ।
 अगर मरज़श बरारी बर कुनी पोस्त ॥

जिस समय वह मार्ग पार कर लेता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर अपनी राज्य मुकुट रख देता है ।

वह अमर हो जाता है और विनाश के उपरान्त वह पुनः सत की ओर लौट जाता है ।

उस समय वह धर्मग्रन्थों को अपने वस्त्र बना लेता है और शिश्ता-दीक्षा को भी अपना वस्त्र बना लेता है ।

वह स्वयम् सत का निवास स्थान बन जाता है जो कि सदैव नारितकता और ईमान के मध्य में है ।

वह जितने भी प्रसिद्ध गुण हैं उनसे विभूषित होता है । विद्या पवित्रता और सद्गुणों में ख्याति लाभ करता है ।

उसके सभी मित्र बन जाते हैं और वह सारे संसार से परदों के क़नातों के नीचे छुपा रहता है ।

उदाहरण

यदि कच्चे बादाम का, छिलका खुरच कर गूदा निकालना चाहो तो वह बिलकुल बर्बाद हो जाता है ।

जब छिलका गूदे के साथ पक जाता है, उसे तोड़ कर गूदा निकाला जा सकता है ।

शरीअत पोस्त मरज आमद हकीकत ।
 मियाने ई व आँ बाशद तरीकत ॥
 खलल दर राहे सालिक नक्से मरजस्त ।
 चो मरजश पुखता शुब बे पोस्त मरजस्त ॥
 चो आरिफ बा यकीने खेश पैवस्त ।
 रसीदा गश्त मरजो पोस्त बशिकस्त ॥
 वजूदश अन्दरी आलम न आयद ।
 बुरू रफत ऊ दिगर हरगिज न आयद ॥
 वगर बापोस्त याबद ताविशे खर ।
 दरीं नशअत कुनद यक दौरे दीगरे ॥
 दरखते गरदद ऊ अज आवो अज खाक ।
 कि शाखश बेगुजरद अज हप्तुम अफलाक ॥
 हमा दाना बुरू आरद दिगर बार ।
 यके सद गश्ता अज तक्रदौरे जव्वार ॥
 चु सैरे हव्वा दर खत्ते शजर शुद ।
 जे नुक्ता खत जे खत दौरे दिगर शुद ॥

धार्मिक ग्रन्थ और बातें झिल्लके के समान हैं और सत गूदा है । इस गूदे और झिल्लके के बीच में मध्यम वस्तु व्यवहार है ।

पथिक के मार्ग में तभी बाधा पड़ सकती है जब गूदे में कुछ खराबी हो, जब उसका गूदा पक गया, वह बिना झिल्लके के अच्छा है ।

जब जिज्ञासु पर यह वास्तविकता प्रकट हो जाती है, उस समय झिल्ला टूट जाता है और गूदा पक जाता है ।

जब इस अवस्था में वह पहुँच जाता है उस समय संसार के बन्धनों को तोड़ कर वह उसे पार कर जाता है और फिर लौट कर नहीं आता ।

परन्तु यदि झिल्लके के साथ गूदे को सूर्य की तपन मिले तो वह एक दूसरे ही रूप में परिवर्तित हो जाता है ।

पानी और मिट्टी के संसर्ग से वह एक वृत्त के रूप में उत्पन्न होता है और इतना विशाल हो जाता है कि उसकी टहनियाँ सातवें आकाश तक पहुँच जाती हैं ।

और उससे ऊपर भी उठ जाती हैं । वही बीज पुनः फलकर दिखाई देता है और इस प्रकार ईश्वरीय शक्ति से एक का सौ हो जाता है ।

जब बीज से अंकुर उत्पन्न हुआ तब ऐसा हुआ जैसे एक बिन्दु से एक रेखा बन गई हो और रेखा से दूसरा रूप बन गया ।

जो शुद्ध दर दायरहै सालिक मुकम्मल ।
 रसद हम नुक्तए आखिर बअव्वल ॥
 दिगर बारह शवद मानिन्दे परकार ।
 बराँ कारे कि अव्वल बूद दरकार ॥
 जो कर्द ऊ क़तआ यक बारा मसाफ़त ।
 नेहद हक़ बर सरश ताजे ख़िलाफ़त ॥
 तनासुख़ न बुवद ई कज़ रूप माना ।
 अहूरा तस्त दर ऐने तजस्ला ॥
 “वक्रद सालू व क़ालू मन निहायद” ॥
 “क़क़ीला हियर रुजूओ इलल बिदाहा” ॥

सवाल

कि शुद्ध बर सिरेँ वहदत वाक़िफ़ आखिर ?
 शिनासाए चे आमद आरिफ़ आखिर ?

जवाब

कसै बर सिरेँ वहदत ग़श्त वाक़िफ़ ।
 के ऊ वाक़िफ़ न शुद्ध अन्दर मवाक़िफ़ ॥

जब पथिक ने वृत्त के अन्दर अपना मार्ग पूर्णकर लिया तो फिर वह वहीं चला जायगा जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई थी ।

उस समय वह पुनः परकार की भाँति वही कार्य करने लगेगा जो पहले करता था ।

जिस समय वह एक बार अपना पथ पार कर चुकता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर साम्राज्य का मुकुट रख देता है ।

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है । क्योंकि अर्थानुसार वह बहुत से प्रकाश हैं जो उसी के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं ।

लोगों ने प्रश्न किया कि अन्त क्या है ? उनको उत्तर दिया गया कि आदि को लौटना ही अन्त का नाम है ।

प्रश्न

अद्वैत का रहस्य कौन जानता है ? ज्ञानी ने किस गुप्त भेद को पहचाना है ?

उत्तर

अद्वैत के रहस्य को वही मनुष्य जान सका है, जो अपने मार्ग में कहीं ठहरा नहीं है । जो अविभ्रान्त रूप से आगे ही बढ़ता गया है ।

वले आरिफ शिनासाए बजूदस्त ।
 वजूदे मुतलक ऊरा दर शहूदस्त ॥
 बजुज हस्ती हक्रीक्री हस्त न शनास्त ।
 व बा हस्ती जे हस्ती पाक दर बास्त ॥
 वजूदे तू हमा खारस्तो खाशाक ।
 बुरूँ अन्दाज अज खुद जुस्ता रा पाक ॥
 बरी तू खानए दिल रा फेरो रोब ।
 मोहैया कुन मुकामे जाय महबूब ॥
 चो तू बेरूँ शुदी ऊ अन्दर आयद ।
 बतो बेतो जमाले खुद नुमायद ॥
 कसे कू अज नवाफिल गश्त महबूब ।
 बलाए नकी कर्द ऊ खाना चारुब ॥
 दरूने जाए महमूद ऊ मकाँ याफ़ ।
 जे बी “वबी सिर व बी यसमा” निशाँ याफ़ ॥
 जे हस्तौ ता बुधद बाक्री बरोशैन ।
 नेआयद इस्मे आरिफ सूरते ऐन ॥

परन्तु ज्ञानी वह है जो सत् को समझता है । उसे सत् सदैव साफ दिखलाई पड़ता है ।

ब्रह्म के सिवाय उसने किसी को सत् नहीं पाया और उसने अपने अस्तित्व को उसी सत् में मिला दिया ।

तेरा अस्तित्व बिलकुल गन्दा, कूड़े कर्कट से परेपूर्ण है । अपने अन्दर से इस कूड़े को भाड़ कर साफ कर दे ।

बस तू केवल यार के विश्राम करने के स्थान को अपने हृदय-मंदिर को भाड़कर स्वच्छ करले ।

जब तेरे हृदय से अहंकार निकल गया उस समय वह अन्दर आजायगा और उस समय वह अपना जलवा दिखलावेगा ।

जिस मनुष्य ने अपना घर इन्कार रूपी भाड़ू से साफ कर लिया है वह नेक और अच्छे कार्य करके उसका स्नेह पात्र बनेगा ।

उसका निवास उसी स्थान में होगा जिसकी प्रशंसा की गई है । और उसे यह पद मिल जाता है कि वह मेरी ही आँखों से देखता है और मेरे ही कानों से सुनता है ।

जब तक जीवन का एक धब्बा भी शेष रहता है तब तक ज्ञानी का ज्ञान वास्तविक नहीं कहा जा सकता है ।

मवाने ता न गरदानी जे खुद दूर ।
 दूरने खानए दिल नायदत नूर ॥
 मवाने चूँ दरिं आलम चहारस्त ।
 तहारत करदन अज वै हम चहारस्त ॥
 न खुस्तीं पाकी अज अहदासो अनजास ।
 दोअम अज मासियत वज शेरें वसवास ॥
 सेउम पाकी अज अखलाक़े जमीमस्त ।
 कि बा वे आदमी हम चूँ बहीमस्त ॥
 चहारम पाकिए सिरस्त अज गैर !
 कि ईं जा मुन्तही मी गरददश सैर ॥
 हराँ कू कर्दे हासिल ईं तहारात ।
 शवद बेशक सज्जावारे मुनाजात ॥
 तू ता खुद रा बकुल्ली दर न बाजी ।
 नमाजद कै शवद हरगिज नमाजी ॥
 चो जातत पाक गरदद अज हमाँ शैन ।
 नमाजद गरदद अंगह कर्तुलएन ॥

जब तक तू सौंसारिक बाधाओं को दूर न करेगा तब तक तेरे हृदय में प्रकाश न आवेगा ।

इस संसार में रुकावट डालने वाली चार वस्तुएँ हैं और उनसे पृथक होने के भी चार उपाय हैं ।

सब से पृथक गन्दी और हानि पहुँचाने वाली वस्तुओं से बचना है ।
 दूसरा—अपकर्मों और बुरी इच्छाओं के जाल से पृथक रहना है ।

तीसरा—ऐसी बुरी आदतों से अपने आपको बचाना है, जिनके कारण मनुष्य पशु हो जाता है ।

चौथा—अपने रहस्य को दूसरों के हस्ताक्षेप से बिल्कुल पवित्र रखना है ।
 यहाँ पर उसकी चाल समाप्त हो जाती है ।

जिस मनुष्य ने उपर्युक्त ढङ्ग से कार्य करके अपने आपको पवित्र बना लिया है, वह निस्सन्देह ईश्वर से वार्त्तालाप करने योग्य हो जायगा ।

ऐ प्रार्थी ! तेरी प्रार्थना उस समय तक प्रार्थना न होगी, जिस समय तक अहङ्कार तेरे हृदय से बिल्कुल न मिट जायगा ।

जब तू सब प्रकार की मलीनता से रहित हो जायगा, तब तेरी प्रार्थना सुनी जायगी ।

नमानद दरमियाना हेच तमीज ।
 शबद मारुफो आरिफ जुमला यक चीज ॥
 वराए अक़ल तौरे दारद इन्साँ ।
 कि विश्वासद बदाँ असरारे पिन्हों ॥
 बसाने आतश अन्दर संगो आहन ।
 निहादस्त ऐ जिद अन्दर जानो दर तन ॥
 चो बरहम ओक्तादो संगो आहन ।
 जे नूरश हर दो आलम गश्त रोशन ॥
 अजाँ मजमू पैदा गरदद ई' राज ।
 चो बे शुनीदी बेरौ बाख़्द वा परदाज ॥
 तुई तू नुस्ख़ए नक्शो इलाही ।
 बेजो अज ख़ेश हर चीजे के खाही ॥

सवाल

कुदामी नुक्ता रा नुक्तास्त अनलहक ।
 चे गोई हर ज़ए बूद आँ मुजब्वक ॥

उस समय मार्ग में कोई रोड़ा न रह जायगा । उपासक तथा उपास्य में कोई अन्तर न रहेगा ।

बुद्धि के अतिरिक्त मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा वह रहस्यों का उद्घाटन करता है ।

जिस प्रकार ईश्वर ने पत्थर और लोहे के भीतर अग्नि को छिपाकर रक्खा है, उसी प्रकार उस शक्ति को भी मनुष्य के अन्दर छिपा दिया है ।

जब वह पाषाण और लोहा दोनों आपस में टकराए तब उनसे अग्नि उत्पन्न हुई, जिसके प्रकाश से दोनों जहान प्रकाशित हो गये ।

उन दोनों के टकराने से (मिलाप से) रहस्य प्रगट होता है, जिस प्रकार अग्नि प्रगट हो जाती है ।

जब तूने यह समझ लिया तो अब जाकर अपना विचार कर । ईश्वर के भेद सब तुम्हीं में गुप्त हैं । जो कुछ तू चाहे स्वयम् अपने ही भीतर खोज कर देख ले ।

प्रश्न

अहं ब्रह्मास्मि (मैं ही ब्रह्म हूँ) यह किसका कथन है ? यह तू कैसे कह रहा है कि वह टूटी जवान वाला मूर्खता की बातें कर रहा था ?

जवाब

अनलहक कश्के असरारस्त मुतलक ।
 बजुज हक कीस्त ता गोयद अनलहक ॥
 हमाँ जरीति आलम हम चो मंसूर ।
 तु खाही मस्तगीरो खाह मखमूर ॥
 दरीं तसबीहो तहलीलन्द दायम ।
 बदीं मानी हमीं बाशन्द कायम ॥
 अगर खाही कि बर तो गरदद आसाँ ।
 ब इस्मिन शै अरा यक रह फेरोखाँ ॥
 चो करदी खेशतन रा पंवा कारी ।
 तु हम हल्लाज वार ईं दम बरारी ॥
 बराबर पंवा पिदारत अज गोश ।
 निदाए वाहेदुल कहआरे बे न्योश ॥
 निदा मी आयद अज हक बर दवामत ।
 चेरा गश्ती तु मौकूके कयामत ॥
 दरादर वादिए ऐमन कि नागाह ।
 दरख्ते गोएदत इन्नी अनल्लाह ॥

उत्तर

अहं ब्रह्मास्मि (मैं सत्य हूँ) यह कहना, सारे रहस्यों को बिन्कुल खोल देना है। ईश्वर के अतिरिक्त यह शब्द किसके मुख से निकल सकते हैं ?

इस संसार के सम्पूर्ण कण मन्सूर ही के समान हैं। उन्हें चाहे मतवाला समझ ले अथवा नशे में चूर।

वे सदैव इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते हैं और इन्हीं शब्दों पर उनका जीवन निर्भर है।

यदि तू यह चाहता है कि इस बात का समझना तेरे लिये सरल हो जावे, तो उनमें लिखे हुए इन वाक्यों का अध्ययन कर डाल।

जब तू अपने आप को रुई के समान धुन डालेगा तब धुना के समान यही शब्द जोर जोर से तुझ में से निकलेंगे।

अभिमान को रुई को अपने कान से निकाल डाल और अद्वैत की आवाज को सुन।

ईश्वर की ओर से तेरे लिये सदैव यही आवाज आ रही है कि तू प्रलय को बाट क्यों जोह रहा है।

तू ऐमन की घाटी में चला आ। वहाँ प्रत्येक वृक्ष तुझसे यही कहेगा
 "तू 'मन्सूर' ही तू ही है।"

रवा बाशद अनलाह अज दरखते ।
 चिरा न बुवद रवा अज नेक बखते ॥
 हर ओँ कस रा कि अन्दर दिल शके नेस्त ।
 यकीं दानद के हस्ती जुज यके नेस्त ॥
 अनानीयत बुवद हक रा सजावार ।
 के हू गैवस्तो गायब बहो पिन्दार ॥
 जनाबे हजरते हक रा दुई नेस्त ।
 दरो हजरत मनो माओ तुई नेस्त ॥
 मनो माओ तुओ ऊ हस्त यक चीज ।
 कि दर वहदत न बाशद हेच तमीज ॥
 हरा कू खाली अज चूनो चेरा शुद ।
 अनलहक अंदरो सौतो सदा शुद ॥
 शवद वा वजे वाकी गैर हालिक ।
 यके गर्द सुलोको सैरो मालिक ॥
 हुलोलो इत्तेहाद अज गैर खेजद ।
 बले वहदत हमाँ अज सैर खेजद ॥

एक वृत्त का जब यह कहना कि “ईश्वर मैं ही हूँ,” ठीक है तब एक पवित्रात्मा का कथन क्यों न सत्य हो ।

जिस मनुष्य के हृदय में कोई सन्देह नहीं है वह यह बात पूर्ण रूप से समझ लेगा कि सत् वास्तव में एक ही है ।

अपने आप को ‘आप’ कहना ईश्वर को ही शोभा देता है । इसके भीतर ‘वह’ का शब्द गुप्त है । परन्तु सन्देह और घमंड का चिह्न भी नहीं दिखलाई पड़ता ।

ईश्वर के सामने द्वैत का चिह्न भी नहीं पाया जाता । उसके सर्कार में, मैं, “हम” और “तू” इत्यादि कुछ भी नहीं है ।

मैं और तू इत्यादि में कोई भेद नहीं है । इकताई में किसी प्रकार का अन्तर होता ही नहीं है ।

जिस मनुष्य के हृदय से यह बातें दूर हो गईं, उसकी अन्तरात्मा से ‘अहम् ब्रह्मास्मि’ की आवाज निकलने लगती है ।

वह सदैव रहने वाली सूरत से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसके प्रति अपने तथा पराए सब एक ही हो जाते हैं ।

उसमें मिल जाने अथवा अन्तर्हित हो जाने का प्रश्न तब उठता है जब हृदय में अहंकार रहता है ।

ताअग्र्युन बूद कज हस्ती जुदा शुद ।
 न हक बन्दा न बन्दा बा खुदा शुद ॥
 हुलोलो इत्तेहाद ईजा मोहालस्त ।
 कि दर वहदत दुई ऐने जलालस्त ॥
 वजूदे खल्को कसरत दर नमूदस्त ।
 न हर जां मी नुमायद ऐने बूदस्त ॥

तमसील

बेनेह आईनए अन्दर बराबर ।
 दरो बेनिगर वे बाँ आँ शख्से दीगर ॥
 यके रह वाज बाँ ता चीस्त आँ अक्स ।
 न ईनस्तो न आँ पस कीस्त आँ अक्स ॥
 चो मन हस्तम बजाते खुद ताअग्र्युन ।
 नमी दानम चे बाशद मायए मन ॥
 अदम बा हस्ती आखिर चूँ शवद ज़म ।
 न बाशद नूरो ज़ुल्मत हर दो बाहम ॥
 चो माजी नेस्त मुस्तक़विल महो साल ।
 चे बाशद गैर अज़ीं यक नुक्तए हाल ॥

परन्तु अहंकार को त्याग देने से बिल्कुल ईश्वर से साक्षात् होता है ।
 एक मनुष्य था जो जीवन से पृथक् हो गया । न तो ईश्वर ही मनुष्य बना
 और न मनुष्य ही ईश्वर में मिला ।

यहाँ पर उसमें लीन हो जाने का विचार करना ही पथ से विचलित होना
 है । क्योंकि इकताई में दूसरी बात सोचना अनुचित है ।

सांसारिक मनुष्यों और जीवों का अस्तित्व दिखावे में है । यह सोचना
 कि जो वस्तु दिखलाई पड़ती है वही जीवन है, ठीक नहीं है ।

उदाहरण

तू अपने सम्मुख दर्पण रख ले और उसमें अपने को निरख, तुझे एक
 दूसरा ही मनुष्य दिखलाई पड़ेगा ।

पुनः एक बार ध्यान से देख और विचार कि यह प्रतिबिम्ब क्या वस्तु है ।
 न यह है और न वह है ।

फिर यह प्रतिबिम्ब है क्या ? जब मैं अपने आप में मिला हूँ, मुझे नहीं
 ज्ञात होता कि मेरी छाया कैसी होगी ।

मृत्यु, जीवन के साथ मिलकर एक कैसे हो जावे । प्रकाश और अन्धकार
 कभी साथ साथ नहीं रहते ।

जब भूत काल नहीं है तब भविष्य के महीने और वर्ष क्या होंगे ? जो
 कुछ है सो यही वर्तमान है ।

यके तुक्तस्त वहमी गशता सारी ।
 तु ऊ रा नाम कर्दा महरें जारी ॥
 जुज अज मन अन्दरीं सहरा दिगर नीस्त ।
 बेगो बा मन कि ता सौतो सदा चीस्त ॥
 अरज फ़ानोस्त चो हर जो मुरक्कब ।
 बेगो कै वूद या खुद कू मुरक्कब ॥
 जे तूलो अर्ज वज्र उमक़स्त अजसाम ।
 वजूदे चँ पिदीद आयद जे पेदाम ॥
 अर्जी जिन्सस्त अस्ले जुम्ला आलम ।
 चो दानिस्ती बे यार ईमाँ फ़अलजम ॥
 जुज अज हक़ नेस्त दीगर हस्ती अलहक़ ।
 हुवलहक़ गोयो गर खाही अनलहक़ ॥
 नमूदे वहमी अज हस्ती जुदा कुन ।
 न बेगाना ख़द रा आशना कुन ॥

सवाल

चेंरा मख़लूक़ रा गोयन्द वासिल ।
 सुलोकाँ सैरे ऊ चँ ग़शत हासिल ॥

एक सन्देह ही तेरे साथ बराबर लगा हुआ है । तूने उसी का नाम बहती हुई नदी रक्खा है ।

मेरे अतिरिक्त इस वन में कोई दूसरा नहीं है । फिर यह आवाज़ और ध्वनि क्या है ?

इच्छा एक मिट जाने वाली वस्तु है और कार्य उसी से मिलकर बना है । फिर यह बतला कि वह इच्छा कहाँ थी और वह उत्पन्न किस प्रकार हुई ?

जितने भी शरीर हैं जितने भी आकार हैं, वह सब लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से मिलकर बने हैं ।

इनके मिटा देने से किसी प्रकार के अस्तित्व का बोध किस प्रकार होगा ? सारे संसार में केवल यही एक सार वस्तु है ।

जब तू इसे समझ गया तो बस इसी के ऊपर अमल कर । चाहे तुम अपने को ईश्वर कहो चाहे परमेश्वर को ईश्वर, परन्तु वास्तविक बात यह है कि इस संसार में ईश्वर के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं है ।

तू अपने संशय को हृदय से दूर कर दे और अपने आप को मित्र बना ले, तू कोई दूसरा नहीं है ।

प्रश्न

मनुष्यों के लिये यह क्यों कहा जाता है कि वे लवलीन हो गये ? और फिर उन्हें मार्ग और संतोष, दोनों क्यों कर प्राप्त हुए ?

जवाब

विसाले हक जे खल्कीयत जुदाईस्त ।
 जे खुद बेगाना गश्तन आशनाईस्त ॥
 चो मुमकिन गरदे इमकाँ बर फिशानद ।
 वजुजा वाजिब दिगर चीजो नमानद ॥
 वजूदे हर दो आलम चू खयालस्त ।
 कि दर वक्ते बक्ता ऐने जावालस्त ॥
 न मखलूकस्त आँ कू गश्त वासिल ।
 न गोयद ई सखुन रा मर्दे कामिल ॥
 अदम कै राह याबद अन्दरी बाब ।
 चे निस्वत खाक रा बा रब्बे अरबाब ॥
 अदम चे बुवद कि बा हक वासिल आयद ।
 वजो सैरो सुलूके हासिल आयद ॥
 अगर जानत शवद जी माआनी आगाह ।
 बेगोई दर जमों असतराफर उल्लाह ॥
 तु मादूमो अदम पैवस्ता साकिन ।
 व वाजिब कै रसद मादूमे मुमकिन ॥

उत्तर

ईश्वर से मिलना संसार से पृथक् हो जाना है और अपने आप से कोई दूसरा ही हो जाना, यह उसकी पहचान है ।

जब सम्भव इस संसार की गर्द को भाड़ देता है तो सत् के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता है ।

दोनों लोक और परलोक का अस्तित्व एक विचार मात्र है, जो कि मृत्यु के समय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है ।

जिसने ईश्वर को पा लिया वह सांसारिक मनुष्यों में नहीं रह जाता है । पूर्ण इस बात को कभी भी नहीं कहेगा कि मैं मनुष्य हूँ ।

मनुष्य को इस दर्वाजे से उस पार निकल जाने का मार्ग कब मिलेगा ? उस महान् परमेश्वर के साथ मिट्टी का क्या सम्बन्ध है ?

मनुष्य क्या वस्तु है जो वह ब्रह्म के साथ जा मिले और उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करे ।

यदि यह बात तेरी समझ में आजावे, तो निस्सन्देह उसी क्षण तू यह कहेगा कि मैं ईश्वर हूँ ।

तू नाशवान है और तू इसी रूप में सदैव एक स्थान पर ठहरा हुआ है । यह नाशवान कब सन् तक पहुँच सकेगा ।

न दारद हेच जौहर बे अरज ऐन ।
 अरज चे बुवद कि ला यबकी जमानेन ॥
 हकीमे कंदरी रह कर्द तसनीफ ।
 बतूलो अर्जो उमकश कर्द तारीफ ॥
 हयूला चीस्त जुज मादूमे मुतलक ।
 कि मी गर्दद बदो सूरत मोहकक ॥
 चे सूरत बे हयूला जुज अदम नेस्त ।
 हयूला नीज बे ऊ जुज अदम नेस्त ॥
 शुदा अजसामे आलम जी दो मादूम ।
 कि जुज मादूम अजीशाँ नेस्त मालूम ॥
 बेबी माहीयते रा बे कमो बेश ।
 न मादूमो न मौजूदस्त दर खेश ॥
 नजर कुन दर हकीकत सूए इमकाँ ।
 कि बे ऊ हस्ती आमद ऐने नुकसाँ ॥
 बजूद अन्दर कमाल खेश सारीस्त ।
 ताआयुनहा उमूरे एतबारीस्त ॥
 उमूरे एतबारी नेस्त मौजूद ।
 अदद बिसयारो यक चीजस्त मादूद ॥

कोई जवाहर बिना परीक्षा के सच्चा (पूर्ण) नहीं कहा जा सकता है ।
 और सत् है क्या वस्तु ? वह, जो दो जमानों तक शेष न रहे ।

जिस विद्वान ने इस विषय में कोई पुस्तक लिखी है उसने क्षणिक की
 परिभाषा लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से की है ।

जिस अस्तित्व के द्वारा आकार सूरत उत्पन्न होती है वह क्षणभंगुरता के
 अतिरिक्त और क्या वस्तु है ? जब आकार बिना पंचभूतों के कुछ भी नहीं है
 तो वह भी आकार विहीन कुछ भी नहीं है ।

इस संसार के जितने भी मांस पिण्ड हैं वे इन्हीं दो वस्तुओं से बने हैं ।

उनके विषय में नाश के अतिरिक्त और कोई बात ज्ञात नहीं है ।

एक अद्वैत को देखो, जिसमें भाव अभाव तथा उत्पत्ति और लय कुछ
 भी नहीं है ।

देखो, इस क्षणभंगुर संसार की तरफ ध्यान से, कारण, कि उसके बिना
 यह जीवन बिल्कुल अधूरा है ।

अस्तित्व अपनी विशेषताओं के वृत्त के भीतर चक्कर लगा रहा है ।
 वास्तविकताएँ जितनी भी हैं वह सब विश्वासी बातें हैं ।

विश्वासी बातें यहाँ पर नहीं हैं । गिनतियाँ बहुत सी हैं परन्तु गिननेवाला
 एक ही है ।

जहाँरा नेस्त हस्ती जुझ मजाजी ।
सगासर हाले ऊ लह वस्तो बाजी ॥

तमसील दर अतवारें वजूद

बुखारें मुर्तफा गर्द जे दरिया ।
व अमरे हक फिरो आयद बसेहरा ॥
शुआये आफताव अज चखें चारुम ।
फेरो बारद शवद तरकीव बाहम ॥
कुनद गरमी दिगर रह अजमे बाला ।
दरावेजद बंदो आँ आवे दरिया ॥
चु वाईशों शवद खाको हवाजिम ।
बरूँ आयद नबाते सबजो खुर्रम ॥
गिजाये जानवर गरदद तबदील ।
खुर्द इनसों व याबद बाज तहलील ॥
शवद यक नुक्ता वगरदद दर अतवार ।
वजों इन्सों शवद पैदा दिगर बार ॥
चु नूरें नपस गोया दर तन आमद ।
यकें जिस्मे लतीफो रौशन आमद ॥

इस संसार में जीवन स्थायी नहीं है। उसकी तमाम बातें खेल कूद के समान हैं।

जीवन में उलटफेर

ईश्वर की आज्ञा से एक वाष्प नदी में उठती है और समतल भूमि में आकर नीचे गिर पड़ती है।

चौथे आकाश खण्ड से सूर्य की किरणें उम मैदान में आकर पड़ती हैं और फिर आपस में गुथ जाती हैं।

धूप पड़ने पर ताप उत्पन्न होता है और फिर वह गर्मी ऊपर को जाना चाहती है। उस समय नदी का जल उसमें सम्मिलित हो जाता है और उससे लिपट जाता है।

जब उस ताप और जल के साथ मिट्टी और वायु भी मिल जाती हैं तब वह एक हरी-भरी घास के रूप में परिणत हो जाती है।

वही पशुओं की आशा हो जाती है। मनुष्य खाता है और फिर वह पच जाता है।

वही एक बिन्दु के रूप में परिणत हो जाता है और जन्म मरण के चक्र में पड़कर पुनः मनुष्य के रूप में उत्पन्न होता है।

जब बोलने वाला मनुष्य के अन्दर एक चिनगारी के समान प्रवेश करता है तब शरीर के अन्दर से एक सुन्दर प्रभा प्रस्फुटित होती है।

शवद तिल्लो जवानो कोहो कम पोर ।
 वदानद इल्मो राये कहमो तदबीर ॥
 रसद अंगह अजल अज हजरते पाक ।
 रवद पाकी बेवाको खाक वा खाक ॥
 हमा अजजाए आलम चो नवातन्द ।
 कि यक कत्रा जे दरयाये हयातन्द ॥
 जमाँ चूबगुजरद बरूये शवद बाज ।
 हमह अंजाम ईशाँ हमचु आगाज ॥
 रवद हर यक अजी शौँ सूए मरकज ।
 कि न गुजारद तबीयत जूए मरकज ॥
 चु दरियायन्त वहदत लंक पुर खूँ ।
 कजो खजद हजाराँ मौजे मजन् ॥
 नगर ता कत्रए वाराँ जे दरिया ।
 चगूना याफ़ु चन्दी शक्लो अस्मा ॥
 बुखारो आवो वाराँ व नमो गिल ।
 नवातो जानवरो इनमाने कामिल ॥

वह बालक, युवा और वृद्ध होता है और विद्या, ज्ञान और प्रयत्न के मूल्य को समझने लगता है ।

उस समय ईश्वर के द्वार से मृत्यु का आगमन होता है । पवित्रता, पवित्रात्मा के पास चली जाती है और मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है ।

संसार के जितने भी परमाणु हैं वह सब इसी जीवन रूपी सरिता को बूँदों के समान हैं ।

जब उसपर संसार का भार आ पड़ता है तब उसका समस्त फल, उसका अन्त आदि के समान खुल जाता है ।

उन बिन्दुओं में से प्रत्येक अपने कन्द्र की तरफ आकर्षित होने लगता है । कारण कि मानवी इच्छा उसकी तरफ सदैव लगी रहती है ।

अद्वैत एक नदी के समान है, परन्तु वह नदी ऐसी है जो रक्त में भरी हुई है । उसमें से सहस्रों लहरें मजन् के समान निकलती हैं ।

यह तो देखो कि वर्षा के एक बिन्दु ने उस नदी में से निकल कर कितने नाम पाए और कितने रूप धारण किए ।

वाष्प, जल, वर्षा, नमी और गोली मिट्टी और इसके उग्रान्त वृक्ष, जानवर और पूर्ण मनुष्य ।

हमा यक कत्रा बूद आखिर दर अन्वल ।
 कजो शुदीं हमा अशया मुमस्सिल ॥
 जहों अज अक्कलो नप्सो चखों अजराम ।
 चु ओँ यक कत्रा वों जा आगाजो अंजाम ॥
 अजल चूँ दर रसद दर चखों अनजम ।
 शबद हस्ती हमह दर नेस्ती गुम ॥
 चु मौजे बर जनद गर्दद जहाने तमस ।
 यकीं गरबद कि ईं लम तरान बाला लमस ॥
 खयाल अज पेश बर खेजद बयक बार ।
 नमानद गौर हक दर दारे दय्यार ॥
 तुरा कुरबे शबद ओँ लहजा हासिल ।
 शबे बे तू तूई बा दोस्त बाधिल ॥
 विसाल ईं जायगह रफा खयालस्त ।
 चु गौरज पेश बर खेजद विसालस्त ॥
 मगो मुमकिन जे हहे खेश बगुज्जस्त ।
 न ऊ वाजिव शुदो न वाजिव ऊ गश्त ॥

यह सब प्रारम्भ में एक ही बिन्दु थे, परन्तु फिर उसी बिन्दु ने इतने रूप धारण कर लिये ।

बुद्धि, इच्छा, आकाश, शरीर इत्यादि संसार की यह समस्त वस्तुएँ आदि से लेकर अन्त तक सब उसी बिन्दु के समान हैं ।

जब आकाश और तारों की मृत्यु आ उपस्थित होगी तब इनका अस्तित्व नाश रूपी गहरे गर्त में विलीन हो जायगा ।

जब एक लहर आक्रमण करती है तब सारा संसार मिट जाता है और यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ भी था वह स्वप्न था ।

ऐसे विश्वास के उपरान्त समस्त विचार यकायक सामने से विलीन हो जाते हैं और फिर इस सूने घर में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा ।

तुम्हको उस समय ऐसा सुयोग प्राप्त होगा कि तू बिना ही किसी साधना के अपने मित्र से जा मिलेगा ।

इस स्थात पर एक दूसरे के बीच में आजाने के कारण मिलने और अलग होने का विचार हृदय से जाता रहता है ।

जब यह अदकाव मिट जाता है, मिलन सहज हो जाता है ।

हराँको दर मअ्यानी गश्त फायक ।
निगोयद कीं बुबद कल्बे हक्कायक ॥
हप्पारों निशाहे दारी खाजा दर पेश ।
बरो आमद शुद खुद रा बीनदेश ॥
जे बहसे जुजो कुल व निश इन्साँ ।
बगोयम यकबयक पैदा व पिन्हाँ ॥

सवाल

विसाल वाजिबो मुमकिन वहम चीस्त ।
हदोसे कुर्बो बादो वेशो कम चीस्त ॥

जवाब

जे मन बिशनो हदीसे बे कम वेश ।
जे नजदीकी तो दूर उक्तादी अज खेश ॥
चु हस्ती रा जहूरे दर अदम शुद ।
अप्तांजा कुर्बो बादो वेशो कम शुद ॥

तू यह न समझ कि मनुष्य अपनी सीमा से आगे बढ़ जायगा । न तो वह सत् हुआ ही है और न होवेगा ही ।

जो मनुष्य आत्मज्ञान से पूर्ण हो गया है, वह यह बात नहीं कहेगा कि ऐसा होना सत् का उलट जाना है ।

मित्र ! तुम्हारे ही सम्मुख सहस्रों जीवधारी उत्पन्न हुए हैं और मृत्यु के प्रास बने हैं । इस बात को छोड़ कर तनिक अपने ही आवागमन पर विचार करो ।

मनुष्य के जीवन-मरण के इन रहस्यों को एक एक करके खोलकर तथा छिपा कर देखो । उसका वर्णन करूँगा ।

प्रश्न

ईश्वर और मनुष्य का आपस में मिल जाना क्या वस्तु है ? निकट, दूर, अधिक और कम से क्या आशय है ?

उत्तर

मैं बिना किसी प्रकार के घटाव-बढ़ाव के तुझ से कहता हूँ, उसे सुन । तू स्वयम् निकट होने के ही कारण अपने आप से दूर जा पड़ा है ।

जब इस संसार में किसी जीव का जन्म हुआ, उसी स्थान से समीपता, दूरी, अधिकता और कमी का आविर्भाव हुआ है ।

करीव आनस्त कूरा रश नूरस्त ।
 बईदौ नेस्ती कज हस्त दूरस्त ॥
 अगर नूरे जे खुर दरे तो रसानद ।
 तुरा अज हस्तिग खूद वा रहानद ॥
 चे हासिल मर तुरा जीं बूदो नाबूद ।
 कजो गाहत खौफो गह रिजा बूद ॥
 नतरसंद जू कसे कूरा शनासद ।
 कि तिफ्लज सायग खुद मी ह्रासद ॥
 नमानद खौफ अगर गरदी रवाना ।
 नखाहद अम्पे ताजी ताजयाना ॥
 तुरा अज आतिशे दोजख चे बाकस्त ।
 कि अज हस्तीग तनो जाँ तो पाकस्त ॥
 जे आतिश जर खालिस बर करोजद ।
 चु गौशै नै बुवद अन्दर वै चे सोजद ॥
 तोरा गेरज तो चीजे नेस्त दर पेश ।
 वलेकिन अज वजूदे खुद बीन्देश ॥

निकट वह है जिम पर प्रकाश की वर्षा होती रहती है । और दूर वह वस्तु है जो ईश्वर से बहुत दूर नाशवान् जगन के एक कोने में पड़ी हुई है ।

यदि उस प्रकाश की कुछ किरणें तुम्ह तक पहुँच जावें तो तू अपने जीवन के बन्धनों से मुक्त हो जावे ।

तुम्हको अपने इस अस्तित्व से क्या प्राप्त होता है ? केवल भय और निराशा ।

जो मनुष्य उसके भेद को जानता है, वह उमसे कभी भय नहीं खाता । अपनी छाया से बच्चे ही डरा करते हैं ।

यदि तू अपने मार्ग पर चल खड़ा हो तो फिर तुम्हें किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा । तू अरब-अश्व के समान शीघ्र गामी है । तुझे कोड़े की क्या आवश्यकता है ।

तुम्हें नर्क की अग्नि से बिल्कुल ही डरना न चाहिये । तेरा शरीर और तेरे प्राण संसार की मलिनता से स्वयं पवित्र हैं ।

अग्नि में पड़ने से स्वर्ण निखर जाता है । परन्तु जिस सोने में किसी प्रकार की मिलावट अथवा खराबी न हो उसे अग्नि में डाला ही क्यों जावे ? वह जलेगा ही नहीं ।

तेरे सम्मुख तुम्हें छोड़कर और कोई भी वस्तु नहीं है, किन्तु तू आप ही सोच कि वास्तव में तू है कैसा ।

अगर दर खेशतन गर्दी गिरफ्तार ।
 हिजाबे तो शवद आलम बयक बार ॥
 तुई दर दौरे हम्ती जुब्बे असफल ।
 तुई वा नुक्तए वहदत मुक्ताबिल ॥
 ताअय्युनहाय आलम वर तो तारीस्त ।
 अजाँ गोई चो शैतां हमचो मन कीस्त ॥
 अजाँ गोई मरा खुद इख्तयारस्त ।
 तने मन मुरक्कबो जानम सवारस्त ॥
 जमामे तन वदस्ते जौं निहादंद ॥
 हमाँ तकलीफ वर मन जाँ निहादंद ॥
 न दानी की हमाँ आतिशपरस्तीस्त ।
 हमाँ ई आफतो शोखी जे हस्तीस्त ॥
 कुदामी इख्तयार पे मर्दे आक्रिल ।
 कसे रा कू बुवद बिज्जात वातिल ॥
 चो वूदे तुस्त यकसर हम चो नाबूद ।
 बंगोई केख्तयारत अज कुजा वूद ॥
 कसे कूरा वजूद अज खुद न वाशद ।
 बजाते खेश नेको वद न वाशद ॥

तुझमें यदि किसी प्रकार का पर्दा है, तो वह केवल तेरा अभिमान है ।

इस जन्म मरण के चक्र में—इस मर्त्य-लोक में तू सब से नीचा है ।
 और अद्वैत प्राप्त करने का अधिकारी भी तू ही है ।

तू इस संसार के बंधनों में विश्वास रखता है, इसी कारण तू शैतान के समान कहा करता है कि यह मेरा निवास स्थान है ।

और मैं स्वतंत्र हूँ । मेरा शरीर अश्व है और मेरी आत्मा इसका सवार है ।

शरीर की लगाम आत्मा के हाथ में दे दी है । इसी कारण मुझ पर यह सब बन्धन डाले गये हैं ।

तू नहीं जानता कि यह सब कुछ अग्नि की पूजा करने के समान है । यह सारी विपत्तियाँ और ठिठाइयाँ केवल इसी जीवन के कारण हैं ।

हे ज्ञानवान् ! तेरा जीवन क्षणिक है । इस पर भी तू अपने अधिकार प्रकट करता है ।

बता, तेरे वह अधिकार किस काम के हैं और उनका अस्तित्व भी क्या है ? और वह तुझे कहाँ प्राप्त हुआ था ?

जिस मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता उसे अपने में भलाई अथवा बुराई किस प्रकार ज्ञात हो सकती है ?

के रा दीदी तू अन्दर हर दो आलम ।
 कि यकदम शादमानी याफ्त बेगम ॥
 कि रा शुद हासिल आखिर जुम्ला उम्मीद ।
 कि मौद अन्दर कमाले ता बजावीद ॥
 मरातिब बाक्रियो अहले मरातिब ।
 बजरे अम्ने हक वलाहो गालिब ॥
 मो अस्सिर हक शनास अन्दर हमा जाय ।
 जे हदे खेशतन बेरू मनेह पाय ॥
 जे हाले खेशतन पुरेसीं कदर चीस्त ।
 वजीं जा बाज्जदौ कहले कदर कीस्त ॥
 हरौं कस रा कि मज्जहब गैरे जब्रस्त ।
 नबी फरमूद कू मानिन्दे गब्रस्त ॥
 चुनौं काँ गब्र यज्जदौ अहमन गुफ़ ।
 हर्मीं नादाने अहमक मा व मन गुफ़ ॥
 बमा अकआल रा निस्बत मजाजीस्त ।
 निसब खद दर हकीकत लहओ बाजीस्त ॥

इन दोनों जहानों में तूने कभी किसी को क्षण भर के लिये भी सुखी होते देखा है ?

किस मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हुई हैं ? और कौन सदैव एक ही समान रहा है ?

ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार चलने वाले ही लोग शेष हैं और उसका भय सभी को लगता है ।

सभी स्थानों में ईश्वर को ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता मान और निर्धारित सीमा से आगे मत बढ़ ।

तू अपना हाल देख ले और फिर अपने हृदय से पूछ कि प्रतिष्ठा क्या वस्तु है ।

फिर यह सोच कि प्रतिष्ठा किस प्राप्त होनी चाहिये ।

और कौन ऐसे मनुष्य हैं जो प्रतिष्ठित होने योग्य हैं । जिस मनुष्य का धर्म बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई और वस्तु है, नबी के कथनानुसार वह अग्नि पूजक है ।

इसी प्रकार मूर्ख ने “मैं” और “हम” को समझ लिया है । कार्यों के सम्बन्ध में हमारे यहाँ कह दिया गया है ।

निबूदी तू कि फ़ैलत आफ़रीदन्द ।
 तुरा अज़ बहे कारे बरगुज़ीदन्द ॥
 बकुदरत बेसवत्र दानाए बर हक़ ।
 बइल्मे ख़ेश हुक्मे करदा मुतलक़ ॥
 मुक़दर ग़स्ता पेश अज़ जानो अज़ तन ।
 बराए हर यके कारे मोअज़्यन ॥
 यके हप्तसद हज़ारों साल ताअत ।
 बजा आवुर्दा गरदन तौके लानत ॥
 दिगर अज़ मामियत नूरो सफ़ादीद ।
 चो तावह कर्द नामे इस्तिफ़ा दीद ॥
 अज़बतर आँके ई अज़ तर्के मामूर ।
 शुदज़ अलनाफ़े हक़ मरहूमो मराफ़ूर ॥
 मरां दीगर जे मनहा ग़स्ता मतऊँ ।
 जेहे फ़ैले तांबे चन्दो चे वो चूँ ॥
 जनावे किब्रेआई ला उबालीस्त ।
 मुनज़ज़ह अज़ क्रयामाते ख़ियालीस्त ॥

और वास्तव में मनुष्य के सभी प्रयत्न सारहीन विलवाड़ के समान हैं ।

जिस समय तू नहीं था उसी समय तेरे कार्यों को उत्पन्न कर दिया था और तुझे एक विशेष काम के लिये चुन लिया था ।

बिना किसी कारण के परमेश्वर ने अपने आप एक आज्ञा दे डाली ।

शरीर और प्राणों से पहले ही प्रत्येक मनुष्य के लिये एक न एक कार्य निर्धारित कर दिया जाता है ।

एक मनुष्य ने सात लाख वर्ष तपस्या की पर उस पर भी उसके गले में धर्महीनता का तौक पड़ गया ।

दूसरे ने पाप और अपकर्म करके भी पवित्रता और ईश्वरीय प्रकाश को प्राप्त किया ।

जब उसने अपने इन कर्मों को त्याग देने की प्रतिज्ञा की तब उसने ईश्वर के प्रिय मनुष्यों की सूची में अपना नाम पाया ।

सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह हुई कि यह दूसरा, ईश्वरीय आज्ञा को न मानने पर भी क्षमा कर दिया गया, परन्तु वह पहिला केवल मना कर देने ही के कारण क्षमा नहीं किया गया ।

तेरे कार्यों का कहना ही क्या है, जो न तो वर्णन ही में आ सकते हैं और न उनकी गणना ही की जा सकती है । ईश्वर बिल्कुल लापर्वाह है । वह विचारों की बुराइयों से परे है ।

चं बूद अन्दर अजल ऐ मदे ना
 कि ई गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह ॥
 कसे कू बा खुदा चूनो चरा गुफ़ ॥
 जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़ ॥
 वरा जेबद के पुरसद अज चै व चू ॥
 न वाशद एतराज अज बन्द मौजू ॥
 खुदाबन्दी हमाँ दर कियार्इस्त ॥
 न इल्लत लायके फ़ेले खुदाईस्त ॥
 सज़ावारे खुदाई लुफ़ो कहस्त ॥
 वलेकिन बन्दगी दर शुको सब्रस्त ॥
 करामत आदमी रा जे इज़तरागीस्त ॥
 न आँ कूरा नसीबे इस्तरागीस्त ॥
 न बूदा हेच खैरश हरगिज अज खुद ॥
 परमगाह पुर्मदश अज नेको अज बद ॥
 नदारद इस्तरागे गश्ता सामूर ॥
 जहे मिसकी कि शुद मुखतारो मजदूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उम्मी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होता है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बंचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त ।
 न जौरस्ती कि महजे लुत्फो फजलस्त ॥
 व शरअत जाँ सबव तकलीफ करदन्द ।
 कि अज जाते खुदन तारीफ करदन्द ॥
 चो अज तकाफे हक आजिज शर्वा तू ।
 वयकवार अज भियाँ वरूँ रबी तू ॥
 वकुल्लीयत रेहाई याबी अज खेश ।
 गनी गर्दी वहक ऐ मर्द दुरवेश ॥
 बेरो जाने पिदर तन दर कजा देह ।
 वतकदीराते यजदानी रजा देह ॥

तमसोल

शुनीदम मन कि अन्दर माह नैम्ताँ ।
 मदक वाला खद अज बहे अम्माँ ॥
 जे शीवे कार वह आयद बरकराज ।
 वरूण वह बनशीनद दहन वाज ॥

इसको अन्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और जान कह सकते हैं। यद् जयर्दम्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुम्हें इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अहंकार को विल्कुल छोड़ देगा। हे त्यागी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जा ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करना आरम्भ कर दे। अपना शरीर उसके अर्पण कर दे और वह जो कुछ करता है उसमें प्रसन्न रह।

उदाहरण

मैंने सुना है कि खाती में सीपियाँ पानी के अन्दर से नदी के गम्भीर गर्त में से निकल कर उसकी सतह पर आ जाती हैं।

इसके उपरान्त मुँह खोलकर फिर पानी के ऊपर बैठ जाती हैं।

बुखारे मुरतफा गरदद जे दरिया ।
 करो बारद बा मेहे हक़ तआला ॥
 चकद अन्दर दहानश क़त्रए चन्द ।
 शवद वस्ता दहाँ ऊ बसद बन्द ॥
 रवद बा क़ारे दरिया बादले पुर ।
 शवद आँ क़त्रए वाराँ यके दर ॥
 बक़ार अन्दर रवद ग़व्वासे दरिया ।
 वज़ो आरद बरूँ लख़ लह लाला ॥
 तने तू साहिलो हस्ती चु दरियास्त ।
 बुखारश फ़ैज़ो वाराँ इल्मे इस्मास्त ॥
 ख़रद ग़व्वासे ई' बहे अज़ीमस्त ।
 कि ऊरा सद जवाहिर दर गलीमस्त ॥
 दिल आमद इल्म रा मानिन्द यक़ ज़र्क़ ।
 सदफ़ वर इल्मे दिल मोतस्त व हर्फ़ ॥
 नक़स गर्दद रवाँ चूँ बक़े लामा ।
 रसद ज़ हरफ़हा बरगोशे मामा ॥

नदी से भाप ऊपर उठती है और फिर नीचे ही बरस जाती है । ईश्वर की कृपा से सीप के मुख में कुछ बूँदें टपक जाती हैं ।

बस उसका मुख फिर इस प्रकार बन्द हो जाता है जैसे उसमें सैकड़ों ताले डाल दिये गये हों ।

प्रसन्नता के साथ सीप पुनः नदी की तह में चली जाती है और वह बूँदें एक बड़े मोती के रूप में परिणित हो जाती हैं ।

पनडुब्बा—डुबकी लगाकर तह में पहुँचता है और उस उज्ज्वल मोती को बाहर ले आता है ।

तेरा शरीर तट है और जीवन सरिता के समान है । उस सरिता की भाप ईश्वर है और उसके नामों का ज्ञान वर्षा है ।

बुद्धि इस बड़ी नदी में डुबकी लगाने वाली है । सहस्रों मोती उसकी भोली में आ जाते हैं ।

हृदय, ज्ञान के लिये एक वर्तन के समान है । शब्द और अक्षर, हृदय की ज्ञान शक्ति के सीप हैं ।

श्वास इस प्रकार चलती है, जैसे चपला—चपल गति से । और उससे बातें सुनने वाले के कानों तक पहुँचती हैं ।

सदफ बशिकन बरूँ कुन दुर शहवार ।
 बैकिगन पोस्त मरजे नरज बरदार ॥
 लुगत बा इशितकाको नह बा सर्फ ।
 हमी गरदद हमा पैरामन हर्फ ॥
 हराँको जुम्ला उम्र खुद दरीं कर्द ।
 बहर जेह सर्फ उम्र नाजनीं कर्द ॥
 ज जोजिश कशर खुरक उपताद दरोस्त ।
 वयाबद मरज हर कू पोस्त बशकस्त ॥
 बले बे पोस्त ना पुख्तस्त हर मरज ।
 जे इल्म जाहिर आमद इल्मे दीं नरज ॥
 जे मन जाँ विरादर पन्द बेनोश ।
 वजानो दिल बरो दर इल्मे दीं कोश ॥
 कि आलम दर दो आलम सरबरे याप्त ।
 अगर कमतर बुदज वै मेहतरी याप्त ॥
 अमल काँ अज सरे अहवाल वाशद ।
 वसे बेहतर जे इल्मे काल वाशद ॥

सीप को तोड़ डाल और उसके अन्दर से मन्नाटों के यांग्य मोती को बाहर निकाल ले । स्मरण रहे कि छिलके से कोई लाभ नहीं होगा । उसके गूदे को ले ले ।

भाषा और उसके ज्ञान के स्पर्श में और वाक्य विश्लेषण के साथ यह सब वस्तुएँ शब्द के आस पास चक्कर लगाती रहती हैं ।

जिस मनुष्य ने अपने सम्पूर्ण जीवन को इसी कार्य में लगा दिया, उसने अपनी प्यारी अवस्था को व्यर्थ में ही खो दिया ।

अखरोट में से केवल छिलका उसके हाथ आया । गूदे को उसी ने प्राप्त कर पाया जिसने छिलके को तोड़ कर पृथक कर दिया ।

यह सत्य है कि छिलके के बिना अन्दर का गूदा कड़ा नहीं होता । इसी प्रकार धर्म का ज्ञान प्रकट विद्या के ही कारण अच्छा होता है ।

प्रिय भाई ! मेरी एक शिक्षा मान ले । तू अपने मन और प्राण दोनों से धर्म-शिक्षा को प्राप्त करने में लग जा ।

स्मरण रख विद्वान की प्रतिष्ठा दोनों जहानों में होती है । यदि वह एक साधारण स्थिति का पुरुष है, तब भी 'बुजुर्गी' का पद उसको अवश्य मिलता है ।

मौखिक ज्ञान से अनुभव द्वारा प्राप्त हुआ ज्ञान कहीं उत्तम होता है ।

बले कारी कि अज आबो गिल आमद ।
 न चूँ इत्मस्त काँ कारे दिल आमद ॥
 मियाने जिस्मो जाँ वनिगर चे फर्कस्त ।
 कि ई' रा गर्व गीरो आँ चु शरकोयत ॥
 अर्जीजा बाजदाँ अहवाले आमाल ।
 बनिस्वत वा उलूमे कालो वामा हाल ॥
 न इत्मस्त आँके दारद मेलं दुनयई ।
 कि सूरत दारद आला नीम्त मानयई ॥
 नगरदद जमा हरगिज इत्म वा आज ।
 मलक खाही मगज खुद दूर आँगज ॥
 उलूमे दीं जे इखलाक फरिश्तत ।
 नवाशद दर दिले कू सग सरिश्तत ॥
 हदीसे मुसतफा आखिर हमीनम्त ।
 नेको बशुना कि अलवत्ता चुनीनम्त ॥
 दुख खानए चूँ हम्त सूरत ।
 फरिश्ता नयाबद अन्दरूप जरूरत ॥

परन्तु यह मिट्टी और जल के मिश्रण का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जो हृदय से प्राप्त होता है ।

तनिक ध्यान से देख कि शरीर और प्राण में कितना अन्तर है । यदि एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम ।

यहाँ से तू इस बात की पहचान कर कि कौन सा कार्य तुझे किम ओग लिये जा रहा है । मौखिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान के अन्तर पर दृष्टि डाल ।

जो ज्ञान संसार की ओर ले जाता है, उसे ज्ञान के नाम से कदापि सम्बोधित नहीं कर सकते हैं । कारण कि उसका अस्तित्व अवश्य है, परन्तु उसमें किसी प्रकार का आशय नहीं पाया जाता ।

ज्ञान लालच और इच्छा से परे है । यदि तू देवता बनना चाहता है तो कुत्ते को (इच्छाओं को) अपने पास से हटा दे ।

धार्मिक ज्ञान—देवताओं का ज्ञान है । यह उस मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता है, जो कुत्ते के समान स्वभाव रखता है ।

धर्म का यही सार है । धार्मिक ग्रन्थों की अन्तिम शिक्षा यही है । इसको ध्यान से सुन कर समझ ले कि निस्सन्देह ऐसा ही है ।

किसी घर में—जहाँ इस ज्ञान का अभाव है, देवता आ ही नहीं सकते ।

बरो नवरदाए रूप तरुनए दिल ।
 कि ता साजद मुल्क पेशे तू मंजिल ॥
 अजो तहसील कुन इन्मे बिरासत ।
 जे बह आखिरत मीकुन हिरासत ॥
 कितावे हक बखौ अज नफसो आफाक ।
 मुर्जी शो वामल जुमला अखलाक ॥

तमसील

अगर्चे खुश बचखे चार मीनस्त ।
 शुआअश नरे तदवीरे जमीनस्त ॥
 तबीयतहाय अनसुर नइद खुश नीनस्त ।
 कर्वाह्व गरमो मरदो खुशको तर नीनस्त ॥
 अनामिर जुम्ला अज नै गरमो मरदस्त ।
 सफेदो मुग्धो मज्जा आलो जरदस्त ॥
 वृवद हुमश रनौ चू शादे आदिल ।
 कि न स्वागिज तुम शुक्र न दाखिल ॥
 चु अन तादील गश्न अरका मुवाफिक ।
 जे हुसनश नकम गोया गश्न आशिक ॥

अतएव अपनी हृदय-रूपी तरुनी को साध करने का प्रयत्न कर । जिससे उस मर्याद दत्त का सम्मंग तुझे प्राप्त हो ।

दिखावटी ज्ञान के स्थान पर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न कर और फिर अपने अन्तिम समय के लिये इसका संग्रह करता रह ।

शांतिरिक्त और आध्यात्मिक शक्तियाँ का अध्ययन कर और अपनी इन्द्रियों की गति का ज्ञान प्राप्त कर ले ।

उदाहरण

यद्यपि सूर्य चौथे आकाश पर स्थित है, परन्तु उसकी किरणें पृथ्वी पर पड़कर उसे उज्ज्वलता प्रदान करती हैं ।

सूर्य के समान लोगों की पहुँच नहीं है । कारण प्रहों में ताप, शुष्कता ठण्डक और ज्वेता इत्यादि नहीं है ।

सम्पूर्ण पदार्थ उर्मा सूर्य के प्रभाव से ऊष्ण अथवा शीतल होते हैं और उसी के कारण श्वेत, हरित और पीत वर्ण के हैं ।

उसकी आज्ञा इसी प्रकार चलती है जिस प्रकार एक न्यायी सम्राट की आज्ञा, जिससे कोई कर्मी बच ही नहीं सकता ।

जब समानता के विचार से सभी भीतरी बातें एक सी कर दी गईं तो उनके सौन्दर्य पर प्राण आसक्त हो गये ।

निकाहे मानवी उपताद दर दीं ।
 जहाँरा नपसे कुली दाद कार्बी ॥
 अजीशौ मे पिदीद आयद फसाहत ।
 उद्धमो नुक्को एखलासो सबाहत ॥
 मलाहत अज्ज जहाने बेमिसाली ।
 दर आमद हमचो रिन्दे ला उवाली ॥
 बशहीरस्तानेश नेकोई अलम जद ।
 हमह तरतीब आलम रा बहमजद ॥
 गहे बर रस्श हुस्न ऊ शहसवारस्त ।
 गहे बा तेरो नुक्के आवदारस्त ॥
 चु दर शख्सस्त खानन्दश मलाहत ।
 चु दर नुक्कस्त गोयन्दश फसाहत ॥
 वलीआं शाहो दुरवेशो पयम्बर ।
 हमह दर तहते हुक्म ऊ मसरख्तर ॥
 दरूने हुस्न रूप नीकू आँ चीस्त ।
 न आँ हुस्नस्त तनहाई गो आँ चीस्त ॥
 जुज्ज अज्ज हक मी न आयद दिलरवाई ।
 कि शिरकत नेस्त कस रा दर ख़ुदाई ॥

उनका सम्बन्ध आन्तरिक रूप से धर्मानुसार हो गया और इन्द्रियों ने सारे संसार को मेहर में दे दिया ।

उन्हीं से आनन्द प्रदायिनी बातें, सुन्दर स्वभाव तथा गुण उत्पन्न होते हैं ।

इसके उपरान्त इस विलक्षण संसार से लावण्य एक मस्त और मतवाले के समान प्रकट हुआ ।

उसने सौन्दर्य-प्रदेश में अपनी विजय-पताका फहरा दी और संसार के सम्पूर्ण ज्ञान को मुला दिया ।

कभी तो वह घोड़े पर आसन जमाए हुए दिखलाई देता है और कभी सुन्दर और मनोमोहक वार्त्तालाप की तीक्ष्ण तलवार हाथ में लिए हुए दृष्टिगोचर होता है ।

यदि वह किसी मनुष्य में है तो उसे मधुरता कहते हैं ।

सिद्ध, सम्राट साधु और सन्यासी सब उसी की आज्ञानुसार चलते हैं ।

सुन्दर मुख में कौनसी बात है ? यदि वह केवल सौन्दर्य ही नहीं है तो और क्या वस्तु है ?

ईश्वर के पास से यदि वह नहीं आया है तो उसमें मादकता कहाँ से आती है । वह केवल उसी की देन है । उसकी सम्पत्ति में कोई हिस्सेदार नहीं है ।

कुजा शहवत दिले मरदुम रुबायद ।
 कि हक गह गह जे बातिल मे नुमायद ॥
 मोअस्सिर हक शनास अन्दर हमा जाए ।
 जे हदे खेशतन बेरू मनहे पाए ॥
 हक अन्दर किसवते हक दीन हक दौं ।
 हक अन्दर बातिल आमंद कारे शेताँ ॥
 नदारद कुल वजूदे दर हक्रीकत ।
 कि ऊ चू आरिजे शुद वर हक्रीकत ॥
 वजूदे कुल कसीरे वाहिद आयद ।
 कसीर अज रूप कसरत मी नुमायद ॥
 अरज शुद हस्तिए कँ इजतमाईस्त ।
 अरज सूए अदम बिज्जात साईस्त ॥
 बहर जुज्वे जे कुल काँ नेस्त गर्दद ।
 कुल अन्दर दम जेइस्काँ नेस्त गर्दद ॥
 जहाँ कुलस्त व दर हर तुर्कतुलएन ।
 अदम गर्दद वला चबक्री जमानैन ॥

इच्छाएँ मनुष्य का हृदय छीन नहीं सकतीं । कभी कभी भूट से भी ईश्वर का जलवा प्रकट होता है ।

स्मरण रख कि प्रत्येक बात ईश्वर के ही संकेत से होती है । इसलिये अपनी सीमा से बाहर पैर न बढ़ा ।

सत्य में ईश्वर विद्यमान रहता है । इसके अतिरिक्त यदि भूट में सत्य समावेश हो तो यह शैतान का कार्य होता है ।

वास्तव में उस सर्वश का कोई दूसरा आधार नहीं है । क्योंकि अस्तित्व वास्तविकता में एक काल्पनिक वस्तु के समान है ।

वह कार्य और कारण दोनों ही स्वयं है और वह शक्ति (माया) के कारण इस रूप में दिखलाई देता है ।

यह बात सभी लोगों ने स्वीकार की है कि सृष्टि क्षणभंगुर है । यह क्षण-भंगुरता अपने में से मृत्यु की ओर दौड़ रही है ।

कुल का प्रत्येक भाग जो कि नाशवान है, क्षण भर में सारे संसार से मिट जाता है ।

संसार ही कुल है और पलक झपकते ही नाश को प्राप्त हो जाता है और दोनों जमानों में इसका लेश मात्र भी शेष नहीं रह जाता ।

दिगर बारा शवद पैदा जहाने ।
 बहर लहजा जमीनो आसमाने ॥
 बहर लहजा जबों ईं कोहना पीरस्त ।
 बहरदम अन्दरो ब हशरो बशीरस्त ॥
 दरो चीजे दो सायत मनीआयद ।
 दरो लहजा कि मी मीरद बे जायद ॥
 वलेकिन तामुतुलकुबरा न ईनस्त ।
 कि ईं बूमे अमल बाँ योम हीनस्त ॥
 अज्राँ ताईं बसे फुरकत चीनहार ।
 बनादानी मकुन खुद राजे कुषहार ॥
 नजर बकुशाय दर तफसीलो जमाल ।
 निगर दर सायतो रोजो महो साल ॥

तमसील

अगर खाही कि ईं माती बेदानी ।
 तोरा हम हस्त मरकब जिन्दगानी ॥
 जे हर चे अन्दर जहाँ अज शेबो बाला अस्त ।
 मिसालश दर तनो जाने तो पैदास्त ॥

इसके उपरान्त, दूसरी बार फिर एक संसार उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक क्षण में एक पृथ्वी और एक आकाश उत्पन्न होता है ।

क्षण भर में यह वृद्ध युवक हो जाता है । और प्रतिक्षण उसमें नवीनता की लहर दौड़ती रहती है ।

एक ही वस्तु अधिक समय तक उसमें नहीं रह सकती । जैसे ही उसकी मृत्यु होती है, वैसे ही उत्पत्ति भी हो जाती है ।

परन्तु इसको प्रलय नहीं कह सकते । इस दिन सर्कार के सम्मुख अपने कार्यों का विवरण नहीं देना पड़ता है ।

वरन् यह वह समय है जब कि कार्य किया जाता है । उस प्रलय में और इस संसार के जीवन तथा मरण में बहुत अन्तर है ।

सावधान्, मूर्खता में पड़कर ईश्वर से विमुख मत होना । तू थोड़े समय में बहुत करने पर अपनी दृष्टि लगा ले और घन्टों, महानों और वर्षों की अवस्था को देख ।

उदाहरण

यदि तू इस जन्म-मृत्यु सम्बन्धी रहस्य को समझना चाहता है तो अपने ही मृत्यु और जन्म को देख ।

इस संसार में ऊपर और नीचे की जो वस्तु है, उसका उदाहरण तेरे ही शरीर में वर्तमान है ।

जहाँ चूँ तुस्त यक शख्से मोअय्यन ।
 तू ऊ रा गश्ता चूँ जौँ ऊ तुरा तन ॥
 सेगूना नौये इन्साँ रा ममातस्त ।
 यके हर लहजा वौँ बर हस्वे जातस्त ॥
 दो वीगर वाँ ममाते इस्तिyारीस्त ।
 शियुम मुरदन मरू रा इज्जीरारीस्त ॥
 चु मगौँ जिन्दगी वाशद मुक्काबिल ।
 से नौ आमद हयातश दर सेह मंजिल ॥
 जहाँ रा नेस्त मगौँ इस्तिyारी ।
 कि ईं रा अज्र हमा आलम तो दारी ॥
 वले हर लहजा मी गर्दद मुबदल ।
 दर आखिर हम शवद मानिन्दे अव्वल ॥
 हरआँचे आँ गर्दद अन्दर हश्न पैदा ।
 चे तो दर नजआ मी हवेदा ॥
 तने तो चूँ जमीँ सर आसमानस्त ।
 हवासत अंजुमो खुरशीद जानस्त ॥

संसार तेरे ही समान एक शरीर धारी मनुष्य है। तू ही उसका प्राण है और तू ही शरीर।

मनुष्यों की मृत्यु तीन प्रकार की होती है। पहली वह है जो प्रतिक्षण होती रहती है और वह है उसकी जानि के अनुसार।

दूसरी मृत्यु वह है जो अपने अधिकार की कही जा सकती है। परन्तु तीसरी मृत्यु लाचारी की मृत्यु है।

जब मृत्यु और जीवन एक दूसरे के सम्मुख आते हैं, उस समय मनुष्य का जीवन तीन भागों में विभाजित हो जाता है।

संसार स्वयम् अपनी इच्छा से ही मृत्यु का आवाहन नहीं करता है। यह अधिकार केवल तुम्हे ही प्राप्त है।

परन्तु संसार प्रति क्षण बदला करता है और अन्तिम क्षण में भी पहले ही के समान रहता है।

जो वस्तु जन्म लेते समय तुझमें उत्पन्न हो जाती है, वह प्राण निकलने की अवस्था में तुझसे पृथक् हो जाती है।

तेरा शरीर पृथ्वी के समान है और शिर आकाश की तरह। तेरी इन्द्रियाँ और इच्छायें तारागणों के समान हैं और तेरी आत्मा सूर्य के समान है।

चु कोहस्त उस्तुखाँहाये कि सख्तस्त ।
 नबातस्त मूयो अतराफत दरख्तस्त ॥
 तनत वर बक्त मुर्वन अज नदामत ।
 बेलजद चू जमी रोके क्रयामत ॥
 दिमारा आशुफाओ जौ तीरा गर्दद ।
 हवासत हमचो अंजुम खीरा गर्दद ॥
 मसामत गर्दद अज खवै हमचो दरिया ।
 तू दरवै राक्ता गश्ता बे सरोपा ॥
 शबद अज जौ कनिश ऐ मर्द मिसर्की ।
 जे सुस्ती उस्तखाँहा चू पश्मे रंगी ॥
 बहम पेचीदा गर्दद साक्र बा साक्र ।
 हमा जुफ़ शबद अज जुफ़े खुद ताक्र ॥
 चो रुह अज तन बकुलीयत जुदा शुद ।
 जमीनत क्राए सरुसक ला तुरा शुद ॥
 बदाँ मिनवाल बाशद कारे आलम ।
 कि तू दर खेश मे बीनी दरानाँदम ॥

तेरी मजबूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे वाल घास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी काँपेगी।

इस समय तेरा मस्तिष्क घबड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान झिलझिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य ! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती हैं और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

बक्का हक्कस्तो बाक्की जुम्ला फ़ानीस्त ।
 बयानश जुम्ला दर सबउल मसानीस्त ॥
 चु कुछो मन अलैहा फ़ाँ बयौँ कर्द ।
 लफ़ी खल्क इन जदीद हम अयौँ कर्द ॥
 बुवद ईजादो एदामे दो आलम ।
 चु खल्को वासे नक्से इन्ने आदम ॥
 हमेशा खल्के दर खल्के जदीदस्त ।
 अगर्चे मुइते उमरश मदीदस्त ॥
 हमेशा फ़ैजे फ़जल हक़ तआला ।
 बुवद दर शाने खुद अन्दर तजल्ला ॥
 अजौँ जानिब बुवद ईजादो तकमील ।
 वजौँ जानिब बुवद हर लहज़ा तबदील ॥
 वलेकिन चू गुज़रते ई तौरे दुनिया ।
 बक्काए कुल बुवद दर रोज़े उक्रया ॥
 कि हर चीज़े कि बीनी बिज्ज़रूरत ।
 दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत ॥
 विसाले अन्वलीं ऐने फ़िराक़स्त ।
 मरौँ दीगर जे इन्दलाह वाक़स्त ॥

इस संसार में सन् के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। क़ुरआन में यही दिखलाया गया है।

संसार की सभी वस्तुयें क्षणिक हैं। परन्तु उन सबका सम्बन्ध नवीन जीवन से है।

दोनों जहानों का उत्पन्न करना और नाश करना, एक मनुष्य के चित्र बनाने और उसको मिटा देने के समान है।

संसार में जीव सदैव जन्म धारण किया करते हैं, गोकि उनका जीवन विस्तृत होता है।

ईश्वरीय कृपा, उसकी दान शीलता सदैव अपने जलवे दिखलाया करती है।

ईश्वर सदैव बनाने और रचना करने में व्यस्त रहता है और संसार सदैव परिवर्तनशील है।

परन्तु जब इस संसार का यह ढंग व्यतीत होगया, तो अन्तिम दिन ही क़ायम रहने वाला ठहरा।

जो वस्तु तू देखता है, उसके वास्तव में दो रूप होते हैं।

एक तो वह रूप जो क्षणिक है, जो लोगों को मिटता हुआ दिखलाई देता है और दूसरा वह रूप जो सदैव रहता है अर्थात् आत्मा।

बक्रा इस्मे वजूद आमद व लेकिन ।
 बजाये कू बुबद सायर चु साकिन ॥
 मजाहिर चू फितद बरबपक्रे जाहिर ।
 दर अन्वल मी नुमायद ऐने आखिर ॥
 हर उंचे हस्त बिलकूवत दर्री दार ।
 बफेल आमद दर्री आलम बयकवार ॥

कायदा

जै तो हर फेल कन्वल गश्त जाहिर ।
 बर्री गर्दी बबारे चन्द कादिर ॥
 व हरबारे अगर नरुअस्तो गर जर ।
 शवद दर नफसे तो चीजे मुदख्जर ॥
 बआदत हालहा वा खूए गर्दद ।
 बमुदत मेवहा खुशबूए गर्दद ॥

मृत्यु वास्तव में जीवन को ही कहते हैं । परन्तु उस स्थान में जहाँ किमी प्रकार का रूपान्तर नहीं होता है परिवर्तन का नाम भी नहीं है ।

वहाँ पर प्रत्येक वस्तु आदि में भी ऐसी ही दिखलाई देती है, जैसी अन्त तक रहती है ।

और वहाँ पर ईश्वर की महिमा प्रकट रूप से दृष्टिगोचर होती है । वह ऐसा स्थान है, जहाँ पर संसार की सम्पूर्ण गुप्त वस्तुएँ प्रकट दिखलाई पड़ती है ।

कायदा

जिस कार्य को तू पहले करता है वह कुछ कठिन-सा ज्ञात होता है । परन्तु बार बार करने से वही कार्य सरल हो जाता है ।

उस क्लृप्त के बार बार करने में लाभ हो अथवा हानि परन्तु तरे मस्तिष्क में एक वस्तु पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती है । अर्थात् उस कार्य के करने में जितनी भी वस्तुओं को तुझे आवश्यकता पड़ती है वे सब ज्ञान में आ जाती हैं ।

यहाँ तक कि जिस प्रकार समय व्यतीत होने पर फलों में सुगन्ध आने लगती है उसी प्रकार उस कार्य के करने का स्वभाव पड़ जाता है ।

अज्रॉ आमोखत इंसॉ पेशहारा ।
 वजॉ तरफीब कर्द अन्देशहारा ॥
 हमा अफआलो अक़वाले मुदख़र ।
 हवेदा गर्दद अन्दर रोज़े महशर ॥
 चु उरियोँ गरदी अज्र पैराहने तन ।
 शवद ऐबो हुनर यकबारा रौशन ॥
 तनत बाशद व ज़ेकिन बे कुदूरत ।
 कि बिनुभायद अज्रो चू आव सूरत ॥
 हमा पैदा शवद आँजा ज़मायर ।
 फ़ेरो रवाँ आयते तुबलसरायर ॥
 दिगर वारा बवफ़्फ़े आलमे खास ।
 शवद अख़लाक़े तो अजसामो अशखास ॥
 चुनॉ कज़ कुव्वते उनसुर दर्रीजा ।
 मवालीदे से गाना ग़श्त पैदा ॥
 हमा अख़लाक़े तां दर आलमे जाँ ।
 गहे अनवार गरदद गाहे नीरॉ ॥

इसी ढंग से मनुष्यों ने पेशों को सीखा है और इसी प्रकार उनकी गुत्थियों को सुलझाया है—उनकी बारीकियों को निकाला है ।

यह सब बातें जो तुममें इकट्ठी हो रही हैं मृत्यु के समय सामने आ जायँगी ।

जब तू इस शरीर रूपी वस्त्र को पृथक् करके नग्न हो जावेगा उस समय सम्पूर्ण भलाइयाँ और बुराइयाँ प्रकट हो जावेंगी ।

तेरा शरीर तो रहेगा परन्तु उसमें मलीनता न होगी । उससे जल के समान सूरत दिखलाई देगी ।

वहाँ दृश्य के भीतर छिपी हुई सभी बातें प्रकट हो जायँगी । पर्दा दूर कर दिया जायगा । इस परम मंत्र को पढ़ ले ।

दूसरी बार तेरी अच्छाइयाँ तेरे शरीर और मनुष्यत्व के रूप में प्रकट होंगी ।

ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्रकृति के अनुसार संसार में वनस्पतियाँ, जानवर और मनुष्य उत्पन्न होते हैं ।

तेरे स्वभाव में जितनी भी बातें हैं वे उस अध्यात्मिक जगत में कभी तो उज्ज्वल होकर दिखलाई देंगी और कभी अग्नि (नर्क) के रूप में प्रकट होंगी ।

तच्चायुन मुरतफा गरदद जं हस्ती ।
 नमानंद दर नजर बाला व पस्ती ॥
 नमानद मर्गे तन दर दारे हैवों ।
 बयक रँगी बरायद कालिबो जों ॥
 बुवद पा व सरे तो जुमला चूँ दिल ।
 शबद साफ़ी जे जुल्मत सूरते गिल ॥
 बे बीनी बे जहत हक़ रा तआला ।
 कुनद अज नूर हक़ बर तो तजल्ला ॥
 नदानम ता चे मस्तीहा कुनी तू ।
 दो आलम रा हमा बरहम जनी तू ॥
 सकाहुम जबोहुम चे बुवद बेअन्देश ।
 तहूरन चीस्त साफ़ी गश्तन अज खेश ॥
 जेहे लज्जत जेहे दौलत जेहे जौक़ ।
 जेहे हैरत जेहे हालत जेहे शौक़ ॥
 खुशाआँदम कि मा बेखेश बाशेम ।
 गनीए मुतलक़ो दुर्वेश बाशेम ॥

उस समय वर्तमान संसार से तेरा विश्वास उठ जायगा । बड़ाई और छुटाई का विचार जाता रहेगा ।

उस लोक में शरीर की मृत्यु न होगी और शरीर तथा आत्मा दोनों का एक ही रंग हो जायगा ।

तू शिर से लेकर पैर तक दिल के ही समान हो जायगा और इस मिट्टी की मूर्ति के सामने का अन्धकार मिट जायगा ।

उस समय तुझे बड़ी सरलता के साथ उस महान् परमेश्वर के दर्शन होंगे । वह अपने प्रकार से तुझे प्रकाशित कर देगा ।

मैं नहीं कह सकता उस समय तुझे कैसी प्रसन्नता होगी और कैसे कैसे विचार तेरे हृदय में उठेंगे । उस समय तुझमें दोनों जहानों को उलट डालने की शक्ति विद्यमान होगी ।

उस समय तू यही सोचेगा आह ! ईश्वर ने कैसा अमृत पिला दिया । इस प्रकार पवित्रता प्रदान करने वाली क्या वस्तु है ? इस अहंकार को छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है ।

अहा ! किस मुख से उस आनन्द का और उस वैभव का वर्णन करूँ ?

वह कौनसी आश्चर्यमय घड़ी होगी, वह कौन सी सुखद अवस्था होगी अज्ञ-इम, भिस्कुल अपने को भूल जायेंगे, चिन्ता से रहित होकर मतवाले बन जायेंगे ।

न दीं न अङ्गल न तक्रवा न इवराक ।
 फितादा मस्तो हैरौं वर सरे खाक ॥
 बहिश्तो खुल्दो हूर आँजा चे संजद ।
 कि बेगाना दरौं खिलवत न गुंजद ॥
 चु रूयत दीदमो खुरदम अजौं मै ।
 नदानम ता चे खाहद शुद पस अजवै ॥
 पए हर मस्तिए बाशद खुमारे ।
 दरौं अन्देशा दिल खूँ गश्तबारे ॥

सवाल

कदीमो मोहदिस अज हम चूँ जुदा शुद ।
 कि ई' आलम शुद औदीगर खुदा शुद ॥

जवाब

कदीमो मोहदिस अज हम खुद जुदा नेस्त ।
 कि अज हस्तस्त बाक्री दायमानेस्त ॥
 हमा आनस्तो ई' मानिन्दे अनक्रास्त ।
 जुज अज हक जुम्ला इस्मे बे मुसम्मास्त ॥

वह कौन सी शुभ घड़ी होगी जब हमारे पास धर्म, परहेजगारी और ज्ञान के नाम से कुछ भी न होगा और हम इस पृथ्वी पर मस्त पड़े हुए लोटते होंगे ?

स्वर्ग—वह सदैव आनन्द देने वाला जगत और अप्सराओं की वहाँ क्या गणना होगी ? उस स्थान पर किसी दूसरे का जाना हो ही नहीं सकता ।

जब मैंने तेरा मुखड़ा देख लिया और उस मदिरा का घूँट ले लिया तब मैं नहीं कह सकता कि आगे क्या होगा ।

मदिरा में मस्ती होती है, वह मतवाला बना देती है, परन्तु उसके उपरान्त नशा उतरता भी है और खुमार आता है । मेरे हृदय में सदैव यही चिन्ता व्याप्त है कि कहीं इस मस्ती के उपरान्त भी खुमार न आ जावे ।

प्रश्न

शाश्वत् और नाशवान एक दूसरे से पृथक् क्यों हुए और यह संसार तथा वह ईश्वर क्यों होगया ?

उत्तर

शाश्वत् तथा नाशवान दोनों एक दूसरे से पृथक् नहीं है, क्योंकि मृत्यु जीवन से ही उत्पन्न है ।

शाश्वत् सब कुछ है और यह नाशवान सदैव नष्ट होने वाली वस्तु है । ईश्वर के अतिरिक्त जितने नाम रूप हैं सब नष्ट होने वाले हैं ।

अदम मौजूद गर्दद ईं मुहालस्त ।
 बजूद अज रूप हस्ती लायजालस्त ॥
 ज आँ ईं गर्ददो न ईं शवद आँ ।
 हमा इश्काल गर्दद बर तो आसों ॥
 जहाँ खुद जुम्ला अमरे एतबारीस्त ।
 चे आँ यक नुक्तता कंदर दौर सारीस्त ॥
 बेरौ बयक नुक्तए आतश बेगर्दां ।
 कि बीनी दायरा अज सुरअत आँ ॥
 यके गर्दद शुमार आयद बनाचार ।
 नगर्दद वाहिद अज आदाद बिसयार ॥
 हदीसे मा से वल्लाहारा रहा कुन ।
 बअक्कले खेश आँरा जीं जुदा कुन ॥
 चु शकदारी दरों कीं चू खयालस्त ।
 कि बा वहदत दुई ऐने जलालस्त ॥
 अदम मानिन्दे हस्ती बूवद यकना ।
 हमा कसरत जे निस्वत गशन पैदा ॥
 जहरे इस्तिलाफो कसरते शों ।
 शुदो पैदा जे वू कल्मूने इमकों ॥

सृष्टि की उत्पत्ति से सत् में किसी प्रकार का विकार नहीं आता । सत् से यह जगत उत्पन्न होता है, परन्तु इसमें और उसमें अन्तर है ।

सारी कठिनाइयों तेरे सम्मुख सरल हो जाती हैं । एक बिन्दु के समान जो घुमाने पर बराबर घूमता रहता है यह संसार भी एक विश्वास के योग्य विषय है ।

एक आग की चिनगारी को लेकर घुमा । उसकी तीव्रता से एक वृक्ष बन जायगा ।

यदि एक गणना में आजाए तो फिर यह न हो सकेगा कि उसको बहुत सी संख्याओं में से निकाल दिया जावे ।

ईश्वर के अतिरिक्त और जितनी वस्तुएँ हैं, उन सबको पृथक् कर दे । अपनी बुद्धि द्वारा उसे अलग कर ।

यदि तुम्हें उसमें सन्देह है, तो यही तेरे मार्ग का रोड़ा है । अद्वैत में दो का विचार करना ही पथ से विचलित हो जाना है ।

मृत्यु भी जीवन के समान एक ही है और यह सारे भेद भाव केवल एक दूसरे का मिलान करने ही से उत्पन्न हुए हैं ।

मनुष्य रंग विरंग संसार में आकर चौकड़ी भूल जाता है । इसी से यह सम्पूर्ण भिन्नता उत्पन्न होती है ।

बजूदे हर यके चू यूद बाहिद ।
ब वहदानीयते हक गश्त शाहिद ॥

सवाल

चे खाहद मर्द मअानी जौं इबारत ।
कि दारद सूए चश्मो लब इशारत ॥
चे जोयद अज रुखो जल्फो खतो खाल ।
कसे कंदर मक्कामातस्तो अहवाल ॥

जवाब

हर आँ चीजो कि दर आलम अयानस्त ।
चु अक्से जाफताबेआँ जहानस्त ॥
जहाँ चू जल्फो खतो खालो अबरुस्त ।
कि हर चीजो बजाये खेश नेकूस्त ॥
तजल्ली गह जमालो गह जलालस्त ।
रुखो जल्फाँ मअानी रा मिसालस्त ॥
सिफाते हक तआला लुफो कर्हस्त ।
रुखो जल्फे बुतारा जौं दो बहरस्त ॥

जब कि प्रत्येक का अस्तित्व समान था तो फिर ईश्वर के एक होने का साक्षी और कौन हो सकता है ?

प्रश्न

आध्यात्मिक जगत में स्थित पुरुष उन शब्दों का क्या आशय समझता जो नेत्रों और ओठों की ओर संकेत करते हैं ?

और जो मनुष्य संसारो कार्यों में फंसा हुआ है वह मुख और बाल भौंह और तिल से क्या समझता है ?

उत्तर

इस संसार में जो वस्तु आँख से देखी जाती है, वह उस संसार के सूर्य की एक किरण के समान है ।

यह संसार अलकों और भृकुटियों के समान है । क्योंकि अपने अपने समय पर यहाँ की सभी वस्तुएँ भली हैं ।

ईश्वर का प्रकाश कभी चमत्कार है और कभी संसार है । मुख तथा अलकें उसके उदाहरण के समान हैं ।

भगवान् कभी आनन्द मय होते हैं और कभी क्रोधित होकर वज्र गिराते हैं । प्रियतमाओं की भलकों और उनके सुन्दर मुखों के भी इसी प्रकार दो भाग किए जाते हैं ।

चु महसूस आमदीं अल्फाजे मसमू ।
 नखुस्तज बहरे महसूसन्द मौजू ॥
 नदारद आलमे माना निहायत ।
 कुजा बीनद मरूरा लपज गायत ॥
 हरीं मानी कि शुद बर जौक पैदा ।
 कुजा ताबीरे लपजी या बद ऊरा ॥
 चु अहले दिल कुनद तफसीरे मानी ।
 बमानिन्दे कुनद ताबीरे मानी ॥
 कि महसूसात अजाँ आलम चु सायस्त ।
 कि ईं चूँ तिफलो आँ मानिन्दे दायस्त ॥
 बनउदे मन खुद अल्फाजे मोअव्वल ।
 बरीं मआनी फिताद अज वजेर अव्वल ॥
 बमहसूसात ख़ासु अज उर्फे आमस्त ।
 चे दानए आम कदाँ मानी कुदामस्त ॥
 नज़र चूँ दर जहाँ अव्वत करदन्द ।
 अजाँजा लफ़्जहारा नक़ल करदन्द ॥

यही शब्द सौन्दर्य में भी सम्मिलित हैं और उसके साथ ही साथ इनकी भी प्रशंसा की जाती है ।

अध्यात्मिक जगत की कोई निर्धारित सीमा नहीं है । कोरी बातों से निर्बल प्रतिज्ञाओं से वहाँ तक किस प्रकार पहुँच हो सकती है !

उस संसार के गुप्त रहस्यों का वर्णन शब्दों द्वारा किस प्रकार किया जा सकता है !

जब कोई साधु उन रहस्यों का वर्णन करता है तो उदाहरण द्वारा उनको समझाने का प्रयत्न करता है ।

उस संसार की वे वस्तुएँ, जिनका हम अपनी इन्द्रियों द्वारा अनुभव करते हैं, छाया के समान हैं । कारण कि उसकी उपमा यदि हम छाया से देते हैं तो यह बच्चे के समान हैं और वही बच्चे को पालने वाली दाई है ।

मैं विश्वास करता हूँ कि, उस जगत को विवेचना करने वाले शब्द पहले ही से निर्धारित कर लिये गये होंगे ।

जिससे कि उनके द्वारा रहस्यों का उद्घाटन किया जा सके । जो शब्द साधारणतया बाद में निर्धारित किये गए हैं, उनसे रहस्यों की विवेचना उचित रूप से नहीं की जा सकती ।

साधारण शब्द भला वहाँ तक किस प्रकार पहुँच सकते हैं ? और साधारण लोग उन बातों की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हैं ।

तनासुब रा रियायत कर्द आक्रिल ।
 चु सूए लगओ मानी गश्त नाज़िल ॥
 वले तशबीह कुल्ली नेस्त मुमकिन ।
 जे जुस्तो जूए ओं मे बाश साकिन ॥
 दरीं मानी कसे रा बरतो दिर्क नेस्त ।
 कि साहब मजहब ईजों गैरे हक नेस्त ॥
 वले ता बा खुदी जिनहार जिनहार ।
 इबाराते शरीयत रा निगहदार ॥
 कि रुस्तत अहले दिल रा दर से हालस्त ।
 फनाओ सुको पस दीगर दलालस्त ॥
 तुरा चू नेस्त अहवाले मवाजीद ।
 मशो काफिर बनादानी व तकलीद ॥
 हराँकस कू शनासद ई से हालत ।
 बदानद वजो अलफाजो दलालत ॥
 मजाज़ी नेस्त अहवाले हकीकत ।
 न हर कस याबद असरारे हकीकत ॥

बुद्धिमानों ने बुद्धि द्वारा शब्दों को ढूँढ़ निकाला और उनके अर्थ का विचार करके उनको उचित रूप में रक्खा ।

परन्तु इस पर भी पूर्ण विवेचना उन्होंने भी नहीं कर पाई । उन रहस्यों का स्पष्ट वर्णन करने में वह भी समर्थ न हो सके । इस पूर्णता तक पहुँचने का प्रयत्न तुम भी न करो ।

इस विषय में यहाँ पर तुम्हारे ऊपर कोई शंका भी नहीं कर सकता है । कारण कि ईश्वर के अतिरिक्त यहाँ पर धर्म का स्वामी कोई अन्य नहीं है ।

परन्तु जब तक तू अपने आप में है, तब तक सावधान, धर्म ग्रन्थों की पंक्तियों का ध्यान रख ।

सन्यासियों के लिये केवल तीन बातों में कुछ सुगमता कर दी गई है । नाश, मस्ती और तदुपरान्त पूर्णता ।

जब तेरे पास धार्मिक विषयों का पूरा मसाला नहीं है तो व्यर्थ की बातें बनाकर और अपने आपको धर्म का ज्ञाता जताकर विधर्मी बनने का प्रयत्न मत कर ।

जो मनुष्य इन उपर्युक्त तीन बातों का ज्ञान रखता है, वह शब्दों, उनके व्यवहार और तर्क इत्यादि को समझता है ।

ईश्वरीय सत्ता कोई सांसारिक वस्तु नहीं है और प्रत्येक मनुष्य सत् के रहस्यों को नहीं समझ सकता है ।

गजाफ़ ऐ दोस्त नायद जहले तहकीक़ ।
 मरीरौ कश्क याबद या कि तसदीक़ ॥
 बेगुप्तम वज्रए अलफ़ाजौ मानी ।
 तुरा सरबस्ता गर दारी बदानी ॥
 नज़र कुन दर मआनी सूए गायत ।
 लवाज़िम रा यकायक कुन रियायत ॥
 ववज़हे ख़ास अज़ौ तशबीह भी कुन ।
 ज़े दीगर बज़हा तनज़ीह मीकुन ॥
 चु शुदई क़ायदा यकसर मुक़रर ।
 नुमायम ज़ौ मिसाले चन्द दीगर ॥

इशारत बचश्मो लब

निगर कज़ चश्मे शाहिद चीम्त पैदा ।
 रियायत कुन लवाज़िम रा वदौजा ॥
 ज़े चश्मश ख़ास्त वीमारी व मस्ती ।
 ज़े लालश ग़श्त पैदा ऐने हस्ती ॥
 ज़े चश्मे ऊ हमा दिलहा ज़िगर ख़ार ।
 लवे लालश शफ़ाए जाने बीमार ॥

ऐ मित्र ! खोज करने वालों से व्यर्थ की बातें नहीं आतीं, इन बातों को समझने के लिए पूरी जांच या अनुभव की आवश्यकता है ।

मैंने तुम्हें शब्दों और उनके अर्थों का भेद बतला दिया है । अब यदि तुम्हमें बुद्धि होगी तो सब बातों को समझ जायगा ।

तू अर्थ के भीतर झिपी हुई उसकी असलियत को देख और फिर जिस असलियत के वास्ते जिस वस्तु की आवश्यकता पड़े उसका ध्यान रख ।

किसी एक ख़ास ढंग से तू उन अर्थों की व्याख्या करता जा और दूसरे ढंगों से उन व्याख्याओं की काट-झाँट करता जा ।

जब इस ढंग को तू बिल्कुल समझ गया है, अतएव मैं थोड़े से उदाहरण और भी तेरे सम्मुख रखता हूँ ।

नेत्रों और ओठों के प्रति

ध्यान से देख, प्रियतमा की आँख से कौनसी वस्तु प्रकट हो रही है । और उस वस्तु की आवश्यक बातों का विचार कर ।

उसके नेत्र से पीड़ा और मस्ती उत्पन्न हुई और उसके होठ से जीवन-प्रद धारा प्रकट हुई ।

उसकी आँख के कारण सभी अपने हृदयों को थामे हुए बैठे हैं और होठों के कारण सब जानें मस्त हैं ।

जे चश्मे ऊस्त दिलहा मस्तो मस्खमूर ।
 जे लाले ऊस्त जौहा जुम्ला मसरूर ॥
 बचश्मश गर चे आलम दर नयायद ।
 लबश हर सायते लुत्के नुमायद ॥
 दमे अज मरदुमी दिलहा नवाजद ।
 दमे बेचारगौ रा चार साजद ॥
 बशोखी जौ देहद दर आवो दर खाक ।
 बदम दादन जनद आतिश बर अकलाक ॥
 अजो हर गम्जा दामो दानए शुद ।
 बजो हर गोशए मैखानए शुद ॥
 जे गम्जा मी देहद हस्ती बगारत ।
 बबोसा मी कुनद बाजश इमारत ॥
 जे चश्मश खूने मा दर जोश दायम ।
 जे लालश जाने मा बेहोश दायम ॥
 बगम्जा चश्मे ऊ दिल मी रुबायद ।
 बअशवा लाले ऊ जौ मी रुबायद ॥

उनमें एक पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं और उसके अहणारे अधर पीड़ित हृदय के लिये, प्रेम-रोगी के लिये अमृत हो रहे हैं ।

उन अधरों से सभी के प्राण प्रसन्न हो रहे हैं । उसकी दृष्टि में यद्यपि संसार समाता नहीं है, परन्तु उसका होठ सदैव आनन्द प्रदान किया करता है ।

किसी समय प्रेम से व्यक्ति हृदयों को मान्द्वना प्रदान किया करता है, और कभी दोनों की सुध लिया करना है । भटकता को मार्ग बतलाया करता है ।

वह अपनी चुलबुलाहट से बेजान में भी जान डालता है और फूँक मारकर आकाश में अग्नि उत्पन्न कर देता है ।

उस आँख का प्रत्येक कटाक्ष, एक जाल और एक दाने के रूप में परिणत हो गया और उस होठ से प्रत्येक कोना एक मदिरा-गृह बन गया ।

शोखी और मान से वह जीवन को वर्बाद कर देता है, परन्तु चुम्बन देकर पुनः उसे जीवन प्रदान करता है ।

हमारा रक्त उसकी आँख के कारण सदैव खौलता रहता है और हमारा प्राण उसके होठ के कारण सदैव संज्ञाहीन रहता है ।

उसकी आँख, शोखी से हृदय को मुट्ठी में कर लेती है और उसका होठ हिल करके प्राण को आकर्षित कर लेता है ।

चो अज चश्मो लबश खाही कनारे ।
 मरी गोयद न आँ गोयद कि आरे ॥
 जे राम्जा आलमे रा कार साज्जद ।
 बबोसा हर जमों जों मी नवाज्जद ॥
 अजो यक राम्जओ जों दादन अज मा ।
 वजो यक बोसओ इसतादन अज मा ॥
 कलमहिन बिलबसर शुद हश्रे आलम ।
 जे नफहे रूह पैदा गश्त आदम ॥
 चु अज चश्मो लबश अन्देशा करदन्द ।
 जहाने मै परस्ती पेशा करदन्द ॥
 नयायदु दर्दो चश्मश जुम्ला हस्ती ।
 दरो चू आयद आखिर स्नाबे मस्ती ॥
 वजूदे मा हमा मस्तीस्त या स्नाब ।
 चे निस्बत स्नाक रा बा रब्बे अरबाब ॥
 खिरद दारद अजी सद गूना आशुफ़ ।
 कि वल्लसना अला ऐनी चरा गुफ़ ॥

यदि तू एक बार उस आँख से और उस ओठ से मिलने की इच्छा प्रकट करेगा तो आँख कहेगी 'न' और ओठ कहेगा 'हाँ' ।

शोखी दिखला कर आँख संसार की भलाई करती है और ओठ प्राणों को प्रसन्न रखता है ।

उस आँख की एक तिरछी चितवन ऐसी है जिससे हमारे प्राण निकलने लगते हैं और उसका एक चुम्बन हमें प्राण दान देकर, जीवित कर देता है ।

इस संसार का अन्त उस आँख के एक पलक मारने में हो जायगा जैसे आत्मा की फूँक से आदम उत्पन्न हो गया ।

उसकी उस आँख और उस रसीले ओठ का विचार करके सारे संसार ने मदिरा पान करना स्वीकार कर लिया ।

जब सम्पूर्ण जगत उसके दोनों नेत्रों में नहीं आता तो फिर मस्ती की निद्रा उसे किस प्रकार प्राप्त हो ।

हमारा यह अस्तित्व या तो मस्ती है अथवा स्वप्न । मिट्टी को ईश्वर से क्या सम्बन्ध है ?

उसने मेरी आँखों में बैठ कर क्या कहा ? इस बात को सोचने में बुद्धि के सम्मुख सैकड़ों कठिनाइयाँ उपस्थित हैं ।

सवाल

शराबो शमओ शाहिद रा चे मानीस्त ।
खराबाती शुदन आखिर चे दाबीस्त ॥

जवाब

शराबो शमओ शाहिद ऐन मानीस्त ।
कि दर हर सूरते ऊ रा तजल्लीस्त ॥
शराबो शमा नूरो जौके इरफौ ।
बे बीं शाहिद कि अज कस नेस्त पिनहौ ॥
शराब ईजा जुजाजह शमा मिसबाह ।
बुवद शाहिद फुरूगे नूरे अरबाह ॥
जो शाहिद बर दिले मूसा शरर शुद ।
शराबश आतिशो शमश शजर शुद ॥
शराबो शमा जौ आँ नूरे असरास्त ।
बले शाहिद हमा आयाते कुबरास्त ॥

प्रश्न

मदिरा, दीपक, और प्रियतमा से क्या आशय है ? मतवाला हो जाना किस प्रकार के अधिकार का द्योतक है ?

उत्तर

मदिरा, दीपक और प्रियतमा, ये सब मुख्य अंतरङ्ग वस्तुएं हैं, जिसकी भलक इन सभी सूरतों में दिखलाई पड़ती है ।

ऐ देखने वाले ! देख, मदिरा, दीपक और प्रियतमा में कौनसा आनन्द छिपा हुआ है । यह एक ऐसा रहस्य है जिसको सभी जानते हैं ।

इस स्थान में मदिरा फ्रान्स के समान है और शमअ दीपक है । और साक्षी क्या है ? आत्माओं के प्रकाश की चमक ।

उसी प्रियतमा की तरफ से हजरत मूसा के हृदय पर एक चिनगारो बड़कर पहुँची, जिसके कारण वह उसकी चाह में लवलीन हो गये ।

मुहम्मद साहब, इन प्राणों के लिये दीपक और मतवाला बना देने वाली मदिरा है । और वह बड़े बड़े चिन्ह ही साक्षी हैं ।

शराबो शमओ शाहिद जुम्ला हाजिर ।
 मशो गाफिल जे शाहिद बाजी आखिर ॥
 शराबे बेखुदी दर कश जमाने ।
 मगर अज दस्ते खुद याबी अमाने ॥
 बेखुर मै ता जे खेशत व रिहानद ।
 वजूदे कतरा दर दरिया रसानद ॥
 शराबे खुर कि जामश रूए थारस्त ।
 पियाला चश्मे मस्ते बाद खारस्त ॥
 शराबे रा तलब बे सारारो जाम ।
 शराबे बाद खारो साक्री आसाम ॥
 शराबे खुर जे जामे बज्दे बाक्री ।
 सक्राहुम रबहुम ऊ रास्त साक्री ॥
 तहूरन भी बुवद कज लौसे हस्ती ।
 तुरा पाकी देहद दर वक्ते मस्ती ॥
 बेखुर मै वारेहौं खुद रा जे सदी ।
 कि बदमस्तो बेहस्त अज नेक मदी ॥

मदिरा, दीपक और साक्षी सभी वस्तुएँ तेरे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इस अवस्था में तुझे प्रणय-मार्ग में बढ़ते रहना उचित है।

कुछ समय के लिये तू वह मदिरा पी ले जिससे तू अपने आप को भूल जावे। कदाचित् तू अपने आप ही अपनी शरण पाजावे।

तू वह मदिरा पान कर, जिससे अहंकार को भूल जावे और समझने लग कि एक बूंद का अस्तित्व उस महासागर के अस्तित्व से सम्बन्ध रखता है।

तू वह मदिरा पी, जिसका बड़ा प्याला तेरे प्यारे का मुख है और छोटा प्याला शराब पीने वालों के मतवाले नेत्र हैं।

उस मदिरा की खोज कर, जो छोटे और बड़े प्याले के बिना ही पी जाती हो। वह ऐसी मदिरा है जो साक्षी भी है और अपने आपको स्वयम् पी जाती है।

तू उस अमर मुख के प्याले से शराब पी, जिसका साक्षी ईश्वर है। और वह लोगों को पिलाया करता है।

वह अत्यन्त पवित्र और जीवन की बुराइयों को दूर करने वाली है। वह मस्ती के समय तुझे पवित्र बना देगी।

मदिरा पान कर, निज को इस शीत से बचाने का प्रयत्न कर। मतवाला होना, धार्मिक मनुष्य बनने से बढ़कर है।

कसे कू उपतद अज दरगाहे हक वूर ।
 हिजाबे जुल्मत ऊरा बेहतर अज नूर ॥
 चु आदम रा जे जुल्मत सद मदद शुद ।
 जे नूर इबलीस मलऊने अबद शुद ॥
 अगर आईनए दिल रा ज दूदस्त ।
 चु खुद रा बीनद अन्दर वै चे सूदस्त ॥
 जे रूयश परतवे चू बर मै उपताद ।
 बसे शक्ले हुबाबी बरवे उपताद ॥
 जहानो जौ दरो शक्ले हबाबस्त ।
 हबाबश औलियाई रा कबाबस्त ॥
 शुदाजो अक्ले कुल हेरानो मदहोश ।
 फितादा नमसे कुल रा हल्का दर गोश ॥
 हमा आलम चु यक खुस्त्रानए उस्त ।
 दिले हर ज़रए पैमानए उस्त ॥

जो मनुष्य ईश्वर के मन्दिर से निकाल दिया जाता है उसके लिये प्रकाश से बढ़कर अंधेरा होता है ।

जब आदम को अंधेरे में रहते हुए बहुत समय लग गया तो इबलीस (शैतान) उस प्रकाश से सदैव के लिये पृथक कर दिया गया ।

किसी ने अपने हृदय-दर्पण को स्वच्छ कर लिया है—उसके धब्बे मिटा डाले हैं । परन्तु उसमें यदि अपना ही मुख देखता है तो क्या लाभ हो सकता है ? इतनी स्वच्छता के उपरान्त भी यदि तुझमें अहंकार शेष रह गया है, तो तेरे प्रयत्नों से क्या लाभ हुआ ?

उसके मुख की एक झलक जब मदिरा पर पड़ गई तो उसमें बहुत से बुलबुले उत्पन्न हो गये ।

यह संसार और आत्माएँ उन्हीं बुलबुलों के रूपान्तर मात्र हैं । वह बुल-बुला भटके हुआओं के लिये एक आश्रय देने वाला स्थान है ।

संसार की बुद्धि उसके रहस्य को पाने के लिये आकुल हो रही है और सम्पूर्ण इन्द्रियों उसी की तरफ लगी हुई हैं ।

सम्पूर्ण जगत उसके कोष के समान है और प्रत्येक परमाणु उसकी प्रेम-मदिरा में मतबाला हो रहा है ।

स्त्रिरद मस्तो मलायक मस्तो जाँ मस्त ।
 हवा मस्तो जमीँ मस्त आस्माँ मस्त ॥
 फलक सरगस्ता अज वै दर तगापूए ।
 हवा दर दिल व उमीदे यके बूए ॥
 मलायक खुर्दा साफ अज कूजए पाक ।
 बजुरआ रेखता दुर्दी बरीँ खाक ॥
 अनासिर गस्ता जाँ यक जुरआ सरखश ।
 फितादा गह दरआबो गह दर आतश ॥
 जेबूए जुरए कुफ़ाद बर खाक ।
 बरामद आदमी ता शुद बर अफलाक ॥
 जे अक्से ऊतने पजमुर्दा जाँ गस्त ।
 जे ताबश जाने अफमुर्दा रवाँ गस्त ॥
 जहाने खल्क अजो सरगस्ता दायम ।
 जे खानो माने खुद बरगस्ता दायम ॥
 यके अज बूए दुर्दश आकिल आमद ।
 यके अज रंगे साफश नाकिल आमद ॥

बुद्धि, स्वर्गीय दूत, और प्राण सभी उसके कारण मतवाले हो रहे हैं ।
 यही नहीं बरन् वायु, पृथ्वी और आकाश तक सब उसी मस्ती का राग अलाप
 रहे हैं ।

आकाश उसी के कारण चक्कर लगा रहा है और वायु उसकी सुगन्ध
 की एक लहर पाने के लिये उत्सुक हो रही है ।

स्वर्गीय दूतों ने पवित्र घट में से स्वच्छ मदिरा के घूँट ले लिये हैं और
 इस मिट्टी पर एक चुल्हू तलछट ढाल दिया है ।

उसी एक चुल्हू से सब के सब मस्त हो गये और कभी पानी और कभी
 अग्नि में जा पड़े ।

जो घंट (चुल्हू) पृथ्वी पर गिरा उसकी सुगन्ध से मनुष्य उत्पन्न हुआ
 और वह आकाश तक जा पहुँचा ।

उसकी आभा से कुम्हलाए हुए शरीर में प्राण आगये और उसकी मस्ती
 की लहर से मुस्त आत्मा में एक नवीन जीवन का संचार हुआ ।

उससे संसार भर के लोग मतवाले हो रहे हैं और सदैव अपने घर और
 कुटुम्ब से पृथक उदासीन फिरा करते हैं ।

एक मनुष्य उसकी तलछट की सुगन्ध से ही बुद्धिमान हो गया और
 दूसरा उसके साफ रंग का वर्णन करने में व्यस्त होगया ।

यके अज नीम जुरआ गश्ता सादिक ।
 यके अज यक सुराही गश्ता आशिक ॥
 यके दीगर करो बुर्दा बयकवार ।
 खुमो खुमखानओ साक्रीओ मैखार ॥
 कशीदा जुम्लओ माँदा दहन बाज ।
 जेहे दरिया दिले रिन्दे सरफराज ॥
 दरा शम्मीदा हस्ती रा बयकवार ।
 फरागत याफा जे इकरारो इन्कार ॥
 शुदा फारिग जे जोहदे खुशको तामात ।
 गिरिफा दामने पीरे खराबात ॥

इशारत ब खराबातियान

खराबाती शुदन अज खुद रिहाईस्त ।
 खुदी कुफ्त अजर खुद पारसाईस्त ॥
 निशाने दादा अन्दत अज खराबात ।
 कि अत्तोहीदो इस्कातुल इजाफात ॥
 खराबात अज जहाने बेमिसालीस्त ।
 मुकामे आशिकाने ला उबालीस्त ॥

कोई केवल आधे ही घूँट के पीने से उसकी लगन में मतवाला हो गया और दूसरे ने एक सुराही पीली तब उसके प्रेम में पड़ा ।

एक और भी मनुष्य है । उसने एक ही बार में मदिरा के मटके, मदिरा-गृह, साक्री और पीने वाले को अपने मुख में रख लिया ।

परन्तु फिर भी उसकी पिपासा शान्ति नहीं हुई है । वाह ! वह कितना विशाल हृदय साहसी और मतवाला है ।

जो जीवन को ही एक बार में निगल गया है वह मानने और न मानने दोनों से छुटकारा पा गया है, कर्म और अकर्म के बन्धनों से निकल गया है ।

दोनों से किनारा कर बैठा और मदिरागृह के पुजारी का दामन पकड़े हुए उपस्थित है ।

मदिरापान करने वालों के प्रति

मदिरापान करना अपने आप से छुटकारा पाने के समान है । अहंकार चाहे कितना ही पवित्र क्यों न हो परन्तु फिर भी नास्तिकता ही का एक रूप है ।

मदिरागृह का तुम्हको एक पता बतला दिया है । वह है अपने सम्बन्ध के सम्पूर्ण बन्धनों का तोड़ डालना । मदिरागृह एक ऐसी वस्तु है, जहाँ किसी प्रकार के बन्धन नहीं हैं ।

मदिरागृह एक विलक्षण स्थान है । और मस्त प्रेमियों का स्थान है ।

खराबात आशयाने मुरों जानस्त ।
 खराबात आसताने लामकानस्त ॥
 खराबाती खराब अन्दर खराबस्त ।
 कि दर सहराए ऊ आलम सुराबस्त ॥
 खराबातिस्त बे हरो निहायत ।
 न आगाज्जश कसे दीदा न गायत ॥
 अगर सद साल दर वै मी शिताबी ।
 न खुद रा ओ न कस रा बाज्जयाबी ॥
 गरोहे अन्दरो बे पाओ बे सिर ।
 हमा ना मोमिनो ना नीज काफिर ॥
 शराबे बेखुदी दर सर गिरिफ़ा ।
 बतके जुम्ला खैरो शर गिरिफ़ा ॥
 शराबे खुरद हर यक बे लवो काम ।
 फ़रागत याफ़ता अज नंगो अज नाम ॥
 हदोसे माजराये शतहो तामात ।
 खयाले खिलवतो नूरो करामात ॥

मदिरागृह प्राण रूपी पक्षी के लिये एक धोंसले के समान है और इस संसार के दर्वाजे की चौखट के समान है ।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है । उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है ।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है ।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा ।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं । उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी ।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है । संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं ।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है । अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का ।

छल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

बबूए दुर्दिए अज दस्त दादा ।
 जे जौके नेस्ती मस्त ओफतादा ॥
 असाओ रिकबाओ तसबीहो मिसवाक ।
 गिरौ करदा बडुर्दा जुम्ला रा पाक ॥
 मियाने आबो गिल उफतौ व खेजौ ।
 बजाए अशक खूँ अज दीदा रेजौ ॥
 दमे अज सर खुशी दर आलमे नाज ।
 शुदा चूँ शातिराने गरदन अकराज ॥
 गहे अज रुसियाही रू वदीवार ।
 गहे अज सुखरूई बर सरेदार ॥
 गहे अन्दर समाए शोके जानौ ।
 शुदा बेपा व सर चूँ चखे गरदौ ॥
 वहर नरामा कि अज मुतरिब शुनीदा ।
 बदो वज्दे अजौ आलम रसीदा ॥
 समाए जाँ न आखिर सौतो हरफस्त ।
 कि दर हर पर्दे सिरें शिप्रफस्त ॥

एक तनिक सी तलछट के कारण छोड़ दिया है। वह इस मिट जाने वाले जीवन के मद में मतवाले होकर पड़े हुए हैं।

उन्होंने प्याला कमण्डुल और माला इत्यादि, सभी को उस तनिकसी तलछट के ऊपर न्यौछावर कर दिया है।

वह कीचड़ में सने हुए हैं। मिट्टी में गिर रहे हैं। आँसुओं के स्थान में नेत्रों से रक्त बहा रहे हैं।

कुछ समय के लिये, नशे की अवस्था में, उनकी हालत ऐसी हो गई है जैसी घमण्डी चालबाजों की होती है।

कभी तो वह लज्जा और शर्म के कारण, जो अपकृत्यों से उत्पन्न होती हैं, एक कोने में अपना मुँह छिपाकर बैठ जाते हैं और कभी अपने आपको पापों से परे समझकर—बड़ा जान करके आनन्द मनाते फिरते हैं।

कभी अपनी प्रणयिनी की प्रशंसा के गीत सुनने में तल्लीन हो रहे हैं।

गायक के मुख से निकले हुए प्रत्येक राग के साथ, उन्हें उस स्थान से एक प्रकार की मस्ती और भी प्राप्त हुई है।

प्राणों का राग सुनना, शब्द अथवा अक्षर के समान नहीं है। उस राग के प्रत्येक स्वर में प्रत्येक पंक्ति और पर्दे में एक विलक्षण रहस्य छिपा हुआ है।

जे सर बेरूँ कशीदा दलके दह तूय ।
 मुजरद गश्ता अज हर रंगो हर बूय ॥
 फरोशुस्ता बढौँ साफे मुरब्बक ।
 हमा रंगे सियाहो सब्बो अजरक ॥
 यके पैमाना खुर्दा अज मए साफ ।
 शुदा जौँ सूफिए साफी जे औसाफ ॥
 बजाँ खाके मज्जाबिल पाक रुफता ।
 जे हरचौँ दीदा अज सद यक न गुफा ॥
 गिरफ़ा दामने रिन्दाने खम्मार ।
 जे शेखीओ मुरीदी गश्ता बेजार ॥
 चे जाए जोहदो तक्रवा ई' चे क़ैदस्त ।
 चे शैखीयो मुरीदे ई' चे शैदस्त ॥
 अगर रुप तू बाशद बर केहो मेह ।
 बुतो जुन्नारो तरसाई तुरा बेह ॥

सवाल

बुतो जुन्नारो तरसाई दरि कूप ।
 हमा कुफ़स्त वगर न चीस्त वर गूप ॥

इन लोगों ने दस पर्व की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं ।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को भिटा डाला है । उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बों को धोकर साफ़ कर दिया है ।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है ।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ़ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है ।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है । साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है ।

परहेजगारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है ? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है ?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन । जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले ।

प्रश्न

मूर्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अभिपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं ?

जवाब

बुत ईजा मजहरे इश्कस्तो बहदत ।
 बुवद जुआर बस्तने अकदे खिदमत ॥
 चु कुफो दीं बुवद कायम बहस्ती ।
 शवद तौहीद ऐने बुतपरस्ती ॥
 चु अशया हस्त हस्ती रा मजाहिर ।
 अजाँ जुम्ला यके बुत बाशद आखिर ॥
 निको अन्देशा कुन ऐ मर्दे आकिल ।
 कि बुत अज रूप हस्ती नेस्त बातिल ॥
 बेदाँ के जिद तआला खालिके उस्त ।
 जे नीको हर्चे सादिर गश्त नीकूस्त ॥
 वजूद आँजा कि बाशद महज खैरस्त ।
 अगर शरैस्त दर वे आँ जे गैरस्त ॥
 मुसलमाँ गर वदानिस्ती कि बुत चीस्त ।
 वदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त ॥
 अगर मुशरिक जे बुत आगाह गश्ते ।
 कुजा दर दीने खुद गुमराह गश्ते ॥

उत्तर

मूर्ति यहाँ पर प्रेम और अद्वैत के प्रकट होने का स्थान है । जटा बाँधना और जनेऊ पहनने से सेवा करना समझा जाता है ।

जब इस जीवन के साथ नास्तिकता और आस्तिकता दोनों ही उपस्थित हैं तो फिर अद्वैत ठीक मूर्ति पूजा हो जाता है ।

जब कि सभी वस्तुएँ सत को प्रकट करती हैं तो मूर्ति भी उन्हीं में से एक होगी ।

ऐ बुद्धिमान् मनुष्य ! तू इस बात को खूब ध्यान से देख ले कि मूर्ति सब से बिलकुल पृथक् है या नहीं ।

तुझे यह समझ लेना चाहिये कि ईश्वर ने ही उसे उत्पन्न किया है और अच्छे आदमियों द्वारा सम्पादित कार्य भले ही हुआ करते हैं ।

अस्तित्व जहाँ भी कहाँ हो उसे अच्छा ही समझना चाहिये । यदि उसमें किसी प्रकार की बुराई होती है तो वह केवल दूसरों के कारण ।

मुसल्मान यदि मूर्ति के रहस्य का समझ पाता तो उसके ध्यान में यह बात आजाती कि धर्म केवल मूर्ति-पूजा ही में है ।

यदि मतवाले मनुष्य इस भेद से परिचित होते तो धर्मान्ध होकर वह धर्म की दुहाई न देते ।

नदीद ऊ दर बुत इल्ला खल्के जाहिर ।
 बदौ इल्लत शुद अन्दर शर्रा काफिर ॥
 तो हम गर जो न बीनी हक्के पिनहाँ ।
 बशर्रा अन्दर न खानन्दत मुसलमाँ ॥
 ब तसबीहो नमाजो खत्मे क्रूरआँ ।
 नगर्दद हरगिज ई काफिर मुसलमाँ ॥
 जे इसलामे मजाजी गश्ता बेजार ।
 किरा कुफ़े हक्कीकी शुद पिदीदार ॥
 दरूने हर तने जानेस्त पिन्हौं ।
 बजेरे कुफ़ ईमानेस्त पिन्हौं ॥
 हमेशा कुफ़ अज तसबीहे हक्कस्त ।
 “ व इममिन शै ” गुरू ईजा चे दक्कस्त ॥
 चे मी गोयम कि दूर उफ़ादम अज राह ।
 फ़जरहुम बअदमाजाअत कुल इल्लाह ॥
 बदौ खूबी रुखे बुत रा कि आरास्त ।
 कि गश्ते बुतपरस्त अर हक्क नमीखास्त ॥

उसने मूर्ति के केवल काट-छाँट को उसके प्रकट आकार को ही देखा है ।
 इसी कारण धर्म ग्रन्थों के अनुसार वह विधर्मी बन गया ।

तू भी, यदि मूर्ति के छिपे हुए रहस्य को न समझेगा तो तू भी धर्म ग्रन्थ में सच्चा धर्म वाला न कहलायेगा ।

माला फेरने, पूजा करने और धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लेने ही से एक विधर्मी धर्मात्मा नहीं हो सकता है ।

जिस मनुष्य ने नास्तिकता के वास्तविक रूप को समझ लिया है वह मजहब से बिल्कुल पृथक् हो गया है ।

प्रत्येक शरीर में एक प्राण छिपा हुआ है और नास्तिकता के पर्दे में एक प्रकार की आस्तिकता अन्तर्हित हो रही है ।

ईश्वरीय पवित्रता उसके गुणों का बखान करना ही सच्चा धर्म है, आस्तिकता है । उसके विरुद्ध करना ही नास्तिकता है ।

क्या कोई ऐसी भी वस्तु है जो ईश्वर का गुणानुवाद न करती हो ? तू कहाँ आगया है अपना मार्ग छान्दकर ? ईश्वर के लिये अब उन मूर्तियों को छोड़ दे ।

पाषाण प्रतिमा के मुख को इतना सुन्दर किसने बनाया ? यदि भगवान् की इच्छा न होती तो मूर्तिपूजक होता ही कौन ?

हमू कर्दों हमू गुस्तो हमू बूद ।
 निको कर्दों निको गुस्तो निको बूद ॥
 यके बीनो यके गोयो यके दाँ ।
 बर्दी खत्म आमद अस्तो फरे ईमाँ ॥
 न मन मीगोयम ईं बिशनो जे कुरआँ ।
 तफाउत नेस्त अन्दर खल्के रहमाँ ॥

इशारत बजुन्नार

निशाने खिदमत आमद अन्नदे जुन्नार ।
 नज़र करदम बदोदम अस्तो हरकार ॥
 नबाशद अह्ले दानिश रा मुअव्वल ।
 जे हर चीजे मगर बर वज्रए अव्वल ॥
 मियाँ दर बन्द चूँ मरदाँ बमरदी ।
 दरआ दर जुमरए औफू बे अहदी ॥
 बरख़ो इल्मो चौगाने इबादत ।
 जेमैदाँ दर रुवा गूए सआदत ॥

वही कहने वाला और वही करने वाला था। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे का हाथ इसमें नहीं था। वह अच्छा है। उसने कहा, सो भी अच्छा है और किया वह भी बुरा नहीं है।

एक ही को सदैव अपनी दृष्टि के सम्मुख रख एक ही से बोल और एक ही को अपने हृदय में धारण कर। धर्म की सब शिक्षाओं का मूल यही है।

मैं ही इस बात को नहीं कह रहा हूँ, अपितु धार्मिक ग्रन्थ भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि ईश्वर के रूपों में किसी प्रकार का अधिक अन्तर नहीं है।

जनेऊ के विषय में

मैंने ध्यान पूर्वक प्रत्येक बात के तत्व को समझ लिया है। जनेऊ पहन लेना धर्म का चिन्ह धारण कर लेना, सेवा करने की निशानी है।

ज्ञानी पुरुष इस बात पर सभी जगह विश्वास करते हैं। क्योंकि इस बात से प्रकट होता है कि तू सेवा के लिए कमर बाँधे हुए उद्यत है।

बीर मनुष्यों के समान साहसी होकर फेंट बाँध ले और उसके बन्दों में, जो अपने वचन के सच्चे हैं, सम्मिलित हो जा।

तूने बिद्या प्रदान की है और तू ईश-प्रार्थना का मूल्य समझता है। इन्हीं दोनों की सहायता लेकर रणक्षेत्र में आगे बढ़ और उसकी कृपा पर उसके समीप रहने का अधिकार जमा ले।

तुरा अज बहरकार आफरीदन्द ।
 अगर चे खलक विस्तार आफरीदन्द ॥
 पिदर चू इल्मो मादर हस्त आमाल ।
 बिसाने कुरतुलऐनस्त अहवाल ॥
 नवाशद बे पिदर इन्सॉ शके नेस्त ।
 मसीह अन्दर जहाँ बेश अज यके नेस्त ॥
 रिहा कुन तरहातो शतहो तामात ।
 खयाले नूरो असबाबे करामात ॥
 करामाते तो अन्दर हक परस्तीस्त ।
 जुज्जॉ किअो रियाअो उज्जे हम्तीस्त ॥
 दरीं हर चीज कानजे बाबे फकस्त ।
 हमा असबाबे इस्तिदराजो मकस्त ॥
 जे इबलीसे लानते बेशहादत ।
 शवद सादिर हज्जारों खर्क आदत ॥
 गह अज दीवारत आयद गाह अज वाम ।
 गह दर दिल नशीनद गाह दरन्दाम ॥
 हमी दानद जे तो अहवाले पिनहाँ ।
 दर आरद दर तोकिरको कुफो इसर्यो ॥

तुम्हें इस संसार में इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया गया है। और तू ही क्या, बहुतों का जन्म इसी लिये हुआ है।

तेरा पिता विद्या और माँ तेरे कार्य हैं। यह सब तुम्हें प्रिय होने चाहियें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बिना पिता के मनुष्य उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान् ईसा मसीह के भी पिता थे।

और वह भी एक से बढ़कर नहीं थे। छल-कपट, मिथ्या और बनावटी बातों से मुख मोड़ ले। चमत्कारों का विचार हृदय से निकाल दे।

तेरा बढ़पन तो ईश्वर के भजन में है, बस यही एक बात तत्वमय है। इसके अतिरिक्त सभी बातें छल-कपट और जीवन के अहङ्कार से परिपूर्ण हैं।

यह बातें साधुओं के योग्य नहीं हैं और इसी कारण छल-छद्म से शून्य नहीं हैं।

तू देख नहीं सकेगा परन्तु शैतान तेरे सम्मुख सैकड़ों बातें ऐसी उपस्थित करेगा जो इन उपयुक्त-भावनाओं के नितान्त विरुद्ध होंगी।

वह चारों तरफ से तेरे सम्मुख सौंसारिक प्रलोभन लेकर उपस्थित होगा। कभी वह तेरे हृदय में घुस जायगा और कभी शरीर में प्रविष्ट हो जायगा।

तेरी गुप्त बातों को, तेरे छिपे हुए कार्यों को वह जान जाता है और तेरे हृदय में बुरे और पापमय विचारों को उत्पन्न कर देता है।

खुद इबलीसत इमामो दर पसी तू ।
 बदो लेकिन बर्दीहा कै रसी तू ॥
 करामाते तो गर दर खुद नुमाईस्त ।
 तू किरअौनी व ईं दावा खुदाईस्त ॥
 कसे कू रास्त बा हक आशनाई ।
 नआयद हरगिज अजबै खुद नुमाई ॥
 हमा रूप तो दर खलकस्त जिन्हार ।
 मकुन खुद रा दर्ी इत्लत गिरिफ्तार ॥
 चूँ बा आमा नशीनी मस्ख गर्दी ।
 चे जाये मस्ख यक रह फस्ख गर्दी ॥
 मबादत हेच वाआमत सरोकार ।
 कि अज फितरत शवी नागाह निगूँसार ॥
 तलफ कर्दी बहरजा नाजनी उम्र ।
 नगोई दर चे कारस्त ईंचुनी उम्र ॥
 बजमईयत लकव करदन्द तशवीश ॥
 खरेरा पेशवा कदी जेहे रीश ॥

इस समय शैतान तेरा गुरु हो जाता है और तू उसके पीछे उसका अनुयायी बनकर चल देता है । परन्तु इन वस्तुओं के द्वारा तू उस तक कदापि नहीं पहुँच सकता ।

तेरा चमत्कार दिखाने में यदि अहंकार प्रगट होता है तो तू विरोधी है और तेरा यह दावा ईश्वरीय दावा है (जैसा फरऊन का था) ।

जिसको ईश्वर से प्रेम है उससे यह मिथ्या अभिमान कभी भी नहीं हो सकेगा ।

तू सदैव इस संसार के ध्यान में ही लिप्त रहता है । सावधान् अपने आप को इस जाल में न फँसा ।

जिस समय तू जन साधारण की सङ्गति में बैठेगा, उस समय तू बिगड़ जायगा और तेरा बिगड़ना ही तेरा एक प्रकार से ढेर हो जाना है ।

सावधान, साधारण मनुष्यों (संसारी पुरुषों) से कोई सम्बन्ध न रखना यदि ऐसा करेगा तो तू अपने उच्चासन से गिर जायगा ।

ऐसा करके तू एक दिन पछतायगा और कहेगा कि मैंने अपने प्रिय जीवन को व्यर्थ में ही गँवा दिया । यह जीवन किस काम आया ।

समूह के स्त्रिताब की उन्होंने जाँच की । क्या ही अच्छी बात है, अपना मुखिया उन्होंने एक ऐसे को बनाया है जो बिल्कुल ही मूर्ख है ।

कितादा सरबरी अकनू बजुहाल ।
 अर्जी गश्तन्द मरदुम जुम्ला बद् हाल ॥
 निगर दज्जाले आवर ता चे गूना ।
 फिरस्तादस्त दर आलम नमूना ॥
 नमूना बाजबीं ऐ मर्दे हस्सास ।
 खर ऊरा दौं कि नामश हस्त जस्सास ॥
 खरौंरा ईं हमा हम नंग आँ खर ।
 शुदा अज जेह पेश आहँग आँ खर ॥
 चु ख्वाजा किस्सए आखिर जमा कर्द ।
 बचंदीं जाँ अजी मानी निशा कर्द ॥
 बेबीं अकनू कि कोरो कर शबों शुद ।
 उलूमे दीं हमा बर आसमों शुद ॥
 नमानंद अन्दर मियाना रिफ्तो आजर्म ।
 नमीदारद कसे अज जाहिली शर्म ॥
 हमा अहवाले आलम बाजगूनस्त ।
 अगर तू आक्रिली बेनिगर कि चू नस्त ॥

इस काल में मूर्खों को ही सर्दारी मिल गई है और इसी कारण सभी मनुष्यों की दशा बुरी हो गई है ।

यह देख कि मक्कार ने अपना किस प्रकार का एक नमूना संसार में भेजा है ।

तुम्हें संसार का अधिक अनुभव है । तू वस्तुओं के अवगुणों और गुणों को अति शीघ्र समझ जाता है । तू ही उस गधे को देख और गधा उसे समझ जिसका नाम है ।

वह मूर्ख उन सभी मूर्खों के लिये अपयश का कारण है और नादानी के कारण सब के आगे चल रहा है ।

जब पैगम्बर साहब ने अन्तिम काल का इतिहास सुनाया तो कई स्थानों पर यह भी कहा,

कि इसी काल में मूर्खाधिराजों ने लोगों के गुरुओं की पदवी धारण की और जितनी भी धार्मिक विद्यार्थे थीं, संसार से किनारा कर गईं,

नम्रता, दया और लज्जा विलुप्त हो गई और किसी भी मनुष्य को निरुद्योगी अथवा मूर्ख होने के कारण लज्जा नहीं आती । संसार की सभी बातें, पलट गई हैं ।

पहले जो होता था अब उसके नितान्त विपरीत कार्य होने लगे हैं । तुम्हें यदि बुद्धि है तो उन्हें देख और समझ ।

कसे कज बाबे लानो तर्दो मन्नतस्त ।
 पिदर नीको बुद अकनू शोखे बक्तस्त ॥
 खिजिर मीकुरत आँ फरजन्दे तालेह ।
 कि ऊरा बुद पिदर बा जद सालेह ॥
 कनू बा शोखे खुद कर्दी तु ऐ खर ।
 खरे रा कज खरी हस्त अज तो खरतर ॥
 चु उला यारुफलहरम मिनलउबिर ।
 चेगूना पाक गरदानद तुरा सिर ॥
 अगर दारद निशाने बाबे खुद पूर ।
 चेगोयम चू बुवद नूरन अला नूर ॥
 पिसर कू नेक रायो नेक बस्तस्त ।
 चु मेवा जू बदए सिरें दरस्तस्त ॥
 वलेकिन शोखे दीं कै गर्दद आँकू ।
 नदानद नेक अज बद, बद अज नीकू ॥
 मुरीदी इल्मे दीं आमोख्तन बूद ।
 चिरामो दीं जे नूर अफरोख्तन बूद ॥

उस मनुष्य का बाप, जो लानत-मलामत, फटकार और नापसन्दी का कारण हो रहा है, बहुत ही बुरा था ; परन्तु अब वह इन दिनों अच्छा समझा जाता है ।

हजरत खिज्र ने उस मूर्ख लड़के का वध किया था, जिसका पिता और पितामह दोनों धार्मिक थे ।

अब तूने अपने गुरु के साथ, ओ गधे ! एक ऐसे गधे को कर दिया है, जो तुमसे भी कई पग बढ़ा हुआ है ।

जब कि वह मूर्ख पाप और पुण्य, भलाई और बुराई को नहीं समझता है, उनके अन्तर को नहीं समझता है तो वह तेरे रहस्य को, तेरे हृदय को किस प्रकार पवित्र कर सकेगा ?

यदि पुत्र के पास पिता का कोई चिन्ह है तो वह संसार में खूब ही ख्याति प्राप्त करेगा ।

जो पुत्र बुद्धिमान और पवित्र आचरणों वाला है वह इस संसार में एक अत्यन्त उत्तम वस्तु है । वह अपने पिता के नाम को बढ़ायगा ।

परन्तु वह मनुष्य, जो भले और बुरे का ज्ञान नहीं रखता, धर्माधिकारी किस प्रकार हो सकता है ?

शिष्य होना, धार्मिक विद्या को सीखना था और धर्म के दीपक को प्रकाश से प्रकाशित करना ।

कसे अज मुर्दा इल्म आमोखत हरगिज ।
 जे स्नाकिस्तर बिरास अफरोखत हरगिज ॥
 मरा दर दिल हमी गर्दद बर्दी कार ।
 बबन्दम दरमियाने खेश जुआर ॥
 न जाँ मानी कि मन शोहरत नदारम ।
 बले दारम बले जाँ हस्त आरम ॥
 शरीकम चूँ खसीस आमद दर्री कार ।
 खमूलम बेहतर अज शोहरत बिस्तार ॥
 दिगर बारा रसीद इल्हामे अज हक ।
 कि बर हिकमत मगीर अज अबलही दक ॥
 अगर कनास नबूवद दर मुमालिक ।
 हमा खलक ओफतन्द अन्दर महालिक ॥
 बुवद जिनसियत आखिर इल्लते जम ।
 चुनी आमद जहाँ वल्लाहो आलम ॥
 बलेक अज सोहबते ना अह बगुरेज ।
 इबादत खाही अज आदत बेपरहेज ॥
 नगर्दद जमा आदत बा इबादत ।
 इबादत मी कुनी बेगुजर जे आदत ॥

परन्तु एक मृतक से विद्या कौन प्राप्त कर सकता है ? राख से दीपक कौन जला सकता है ?

इस कार्य के कारण मेरे हृदय में बार बार यही विचार उठता है कि मैं अपनी कमर जनेऊ से कस लूँ । धर्म की दीक्षा लेकर उसमें आगे बढ़ चलूँ ।

यह विचार अपने आपको बिख्यात करने के लिये नहीं उठता है । मैं बिख्यात तो हूँ, परन्तु यह विचार इसलिये होता है कि इस झूठी ख्याति से मैं लज्जित हूँ ।

मेरा साथी जब इस काम में निष्फल रहा, उसने अपना ओछापन प्रकट किया, तो मेरा गुप्त रहना ही उत्तम है ।

तदुपरान्त ईश्वर की ओर से एक दूसरी ही बात सुनाई दी कि तू अपनी मूर्खता के कारण ईश्वरीय कार्यों में मीन-मेष न निकाल ।

यदि इस संसार में, कूड़ा कर्कट साफ करने वाले न हों तो सभी घातक रोगों के शिकार बन जायँ ।

एक भौति का होना ही, एक जाति का होना ही आपस में मिलने का कारण है । संसार को यही दशा है । आगे ईश्वरेच्छा ।

परन्तु तू दुष्टों की संगति से अपने आपको बचाए रख । यदि तुझे ईश्वर-भजन में निमग्न रहना है तो अपने स्वभाव से बच ।

भक्ति और आदत एक साथ नहीं रह सकती हैं । यदि तू भक्ति करता है तो आदत का त्याग कर दे ।

इशारत ब तरसाई

जे तरसाई गरज तजरीद दीदम ।
 खलास अज रबक्रए तक्रलीद दीदम ॥
 जनाबे कुदसे वहदत दैरे जानस्त ।
 कि सीमुर्गे बक्रा रा आशयानस्त ॥
 जे रुहुल्ला पैदा गश्तई कार ।
 कि अज रुहुल्कुदुस आमद पदीदार ॥
 हमज अल्लाह दर पेशे तो जानेस्त ।
 कि अज रुहुल्कुदुस दर बै निशानेस्त ॥
 अगर यात्री खलास अज नक्से नामूत ।
 दराई दर हयाते कुदसे लाहूत ॥
 हराँ कस कू मुजर्रद चूँ मलक शुद ।
 चु रुहल्लाह बर चारुम फलक शुद ॥

तमसील

बुवद महबूस तिषले शीरखारा ।
 बनजदे मादर अन्दर गाहवारा ॥

परमेश्वर से डरना

ईश्वर से भय खाना, मेरी समझ में नया होने का आशय रखता है ।
 उसके प्रेम में रंगना नंगा होने के समान है । इससे मेरा मतलब यह है कि जो
 कोई ऐसा करता है वह संसार के बोझ से पृथक् हो जाता है ।

प्राणों का पूजा-गृह, ईश्वर का पवित्र स्थान है । जो जीवन रूपी मुर्ग
 के घोंसले के समान है ।

भगवान् ईसा, स्वयम् ईश्वर की आत्मा के अंश थे, और यह कार्य स्वयम्
 भगवान् ईसा से ही उत्पन्न हुआ है ।

तेरे पास भी एक प्राण है, जिसमें ईश्वरीय अंश वर्तमान है ।

यदि तू वासनाओं से छुटकारा पा जावे, तो तेरी भी आत्मा पवित्र हो
 जावे ।

जो मनुष्य स्वर्गीय दूतों के समान बन्धनों से मुक्त हो गया, वह ईश्वरीय
 आत्मा के समान चौथे आकाश पर पहुँच गया ।

उदाहरण

दूध पीने वाला शिशु माँ की गोद में उसके अंचल के भीतर बन्दी बना
 हुआ रहता है ।

चु गश्त ऊ बालिगो मर्दे सफर शुद ।
 अगर मर्दस्त हमराहे पिदर शुद ॥
 अनासिर मर तुरा चु उम्मे सिकलीस्त ।
 तू फरजन्दो पिदर आबाए उलबीस्त ॥
 अजौ गुफ्तस्त ईसा गाहे असरा ।
 कि आहंगे पिदर दारम बबाला ॥
 तो हम जाने पिदर सूए पिदर शौ ।
 पिदर रफ्तन्द हमराहौ पिदर शौ ॥
 अगर खाही कि गर्दी मुर्गे परबाज ।
 जहाने जीका पेशे करगस अन्दाज ॥
 बदूना देह मरई दुनियाए गहार ।
 कि जुज सग रा नशायद दाद मुर्दार ॥
 निसब चे बुवद मुनासिब रा तलब कुन ।
 बहक़ रू आवरो तर्के निसब कुन ॥
 बबहे नेस्ती हर कू फ़िरोशुद ।
 फ़ला अनसाबा नक्रदे वक्ते ऊ शुद ॥
 हराँ निस्वत कि पैदा शुद जे शहवत ।
 नदारद हासिले जुज किओ निस्वत ॥

जब वह तनिक बढ़ा हो जाता है और चलने लगता है, तब यदि वह लड़का है तो पिता के साथ जाने लगता है ।

तेरे शरीर के यह भाग, अंग-प्रत्यंग, तेरे लिये पवित्र प्राणों के समान हैं । तू वह शिशु है, जिसका पिता ऊपर आकाश में निवास करने वाला है ।

इसीलिये ईसा ने पवित्र रात में यह कहा था कि मैं ऊपर इसलिये आया हूँ कि मैं अपने पिता के पास पहुँचने का इच्छुक हूँ ।

तू भी, ऐ पिता के प्राण, अपने पिता के पास चल । तेरे सब साथी पिता बन के चले गये, तू भी, उन्हीं की तरह चल ।

यदि तू यह चाहता है कि उड़ान भरने वाला पक्षी बन जाये, तो इस जीवन से वंचित जगत को गिद्ध के सम्मुख फेंक कर उड़ जा !

यह संसार छल-छिद्र से परिपूर्ण है । इसमें वही स्वार्थी जीव रहने योग्य हैं जो कपटी हैं । अतएव इसका त्याग कर देना ही उचित है ।

जीवन क्या वस्तु है ? उस जीवनदाता को ढूँढ़ । ईश्वर की ओर मुख कर और सांसारिक भगदों से अपना हाथ खींच ले ।

जो मनुष्य मृत्यु-सागर में डूब गया, उसका समय व्यर्थ ही गया ।

इच्छाओं के सम्पर्क से उसे अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं हुआ ।

बगर शहवत न बूदे दरमियाना ।
 नसबहा जुमला मी गश्ती कसाना ॥
 चु शहवत दरमियाना कारगर शुद ।
 यके मादर शुदाँ दीगर पिदर शुद ॥
 नमीगोयम कि मादर या पिदर कीस्त ।
 कि बा ईशाँ बइज्जत बायदत जीस्त ॥
 निहादा नाकिस रा नाम खाहर ।
 हसूदी रा लक़बक़र्द विरादर ॥
 अदूए खीश रा फ़रजन्द ख्वानी ।
 ज़े खुद बेगाना ख़ेशावन्द ख्वानी ॥
 मरा बारे बेगो ता ख़ालओ अम कीस्त ।
 अजीशाँ हासिले जुज्ज दर्दो ग़म चीस्त ॥
 रफीक़ाने कि बा तो दर तरीक़न्द ।
 पए हज़ल ए विरादर हम रफीक़न्द ॥
 बकूए जद अग़र यकदम नशीनी ।
 अजीशाँ मन चे गोयम ता चे बीनी ॥
 हमा अफ़साना व अफ़सूनो बन्दस्त ।
 बजाने ख़ाजा कीँहा रीशाख़न्दस्त ॥

यदि अभिलाषायें और इच्छायें बीच में न आतीं तो सांसारिक नस्लों का कोई अस्तित्व ही न रह जाता ।

जब इच्छाओं ने आकर अपना प्रभाव दिखलाया, तब एक माँ बन गई और दूसरा उत्पन्नकर्ता पिता ।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि इनमें माँ कौन है और पिता कौन है,

अपूर्णता, बुराई, डाह और बैरी इत्यादि को तूने अपना सम्बन्धी बना रक्खा है ।

तू दूसरों को अपना प्रिय बनाता है । अपनों को बुरा समझता है ।

तनिक यह भी तो बता कि तूने मामा और चाचा का सम्बन्ध किससे स्थापित कर रक्खा है ? और उनकी तरफ़ से तुझे दुःख और चिन्ता के अतिरिक्त क्या प्राप्त होता है ?

मित्र ! इस मार्ग में जो तेरे साथी हैं, वे केवल हँसी-दिल्लगी के लिये हैं ।

यदि तू एक बार भी सीधे मार्ग पर आ जावे तो न जाने उनकी क्या दशा होगी ।

संसार की सम्पूर्ण बातें छल, कपट और हँसी मात्र हैं । यह ईश्वर के पीछे लगे हुए हैं ।

बमर्दी बारहाँ खुद रा खो मर्दां ।
 बलेकिन हक्क के कस जाये मगर्दां ॥
 जे शरओ अरयक दक्कीका भाँद मोहमल ।
 शवी दर हर दो कौन अज दीँ मोअत्तल ॥
 हक्क के शरआरा जिनहार मगुजार ।
 बलेकिन खेशतन रा हम निगहदार ॥
 जे सोजन नेस्त इत्ला मायए गम ।
 बजा बेगुजार चूं ईसाए मरयम ॥
 हनीफी शौ जे हर कैदे मजाहिब ।
 दर आ दर दैरे दीँ मानिन्द राहिब ॥
 तुरा ता दर नजर अगयारो गैरस्त ।
 अगर दर मसजिदो आँ ऐने दैरस्त ॥
 चु बरखेजद जे पेशत किस्वते गैर ।
 शबद बहे तो मसजिद सूरते दैर ॥
 नमीदानम बहर हाले कि हस्ती ।
 खिलाके नफस बेरूँ कुन कि रस्ती ॥

मनुष्य के समान बीरता और साहस से अपने आपको इन फन्दों से छुटा ले । परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी के अधिकार में हस्ताक्षेप न होने पावे ।

यदि धर्म से सम्बन्ध रखने वाली यह तनिक सी बात छूट गई तो दोनों जहानों में तू विधर्मी बन जायगा ।

तू धर्म का पालन कर परन्तु साथ ही अपने स्वरूप को न भूल ।

सुई से दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न होगा । अतएव मरियम के पुत्र ईसा के समान उसे जहाँ का तहाँ छोड़ दे ।

समस्त धार्मिक बन्धनों से सम्बन्ध छोड़ दे । और एक उदासीन के समान धर्म-मन्दिर में आ जा ।

जब तक तेरे सामने गैर लोग रहेंगे, तब तक तुझमें समानता के भाव उदय नहीं होंगे; तब तक मस्जिद भी तेरे लिए मूर्ति-गृह के समान है ।

जब तेरे हृदय में समानता के भाव अपना अस्तित्व जमा लेंगे तब मन्दिर (मूर्तिस्थान) भी तेरे लिये मस्जिद बन जायगा ।

मैं केवल यही जानता हूँ कि जिस दशा में भी तू है, तेरा उद्धार हो जायगा, यदि तू इन्द्रियों के विरोध को मिटा दे ।

बुतो जुन्नारो तरसाईव नाक्रूस ।
 इशारत शुद हमा वा तरेक नामूस ॥
 अगर खाही कि गर्दी बन्दए खास ।
 मोहैया शो बराए सिद्को इखलास ॥
 बरो खुद रा जे राहे खेश धर गीर ।
 बहरयक लहजा ईमाने जे सर गीर ॥
 बवातिन नशसे तू चं हस्त काफिर ।
 मशौ राजी बदी इस्लामे जाहिर ॥
 जे नौ हर लहजा ईमाँ ताजा गरदौ ।
 मुसलमाँ शौ मुसलमाँ शौ मुसलमाँ ॥
 बसे ईमाँ बुवद कज कुफ्र जायद ।
 न कुफ्रस्त आँ कजो ईमाँ किजायद ॥
 रियाओ समअतो नामूस बगुजार ।
 बेयकगन खिरकओ वरबन्द जुन्नार ॥
 चु पीरे मा शो अन्दर कुफ्र फदे ।
 अगर मर्दी वदेह दिल रा बमर्दे ॥
 मुजरद शौ जे हर इकरारो इन्कार ।
 बतरसा जादा देह दिल रा बयकवार ॥

मूर्ति, जनेऊ, अग्नि-पूजा और शंख इत्यादि सांसारिक दृष्टि में तुम्हें ऊँचा बनाते हैं । इस दिखावटी प्रतिष्ठा से अपने आप को बचा ले ।

यदि तू ईश्वर का प्यारा सेवक होना चाहता है तो सत्य पर चलने के लिये और अपने हृदय को स्वच्छ बनाने के लिये उद्यत हो जा ।

तू अहंकार को अपने हृदय से मिटा डाल, वस धार्मिक पथ में तू दिनों दिन बढ़ता ही जायगा ।

जब तेरी हार्दिक इच्छायें तेरे अधिकार में नहीं हैं, तो इस दिखावटी धर्म पर कभी आनन्दित न हो ।

प्रति क्षण अपने धर्म में आगे बढ़ता रह और सच्चा धार्मिक बन जा । बहुत से ऐसे भी धर्म हैं जो नास्तिकता से उत्पन्न होते हैं और जिस चीज से धर्म में उन्नति होती है वह नास्तिकता हो नहीं सकती ।

छल-कपट, प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा और दिखावटी यश की लालसा को छोड़ दे । गुदड़ी को उतार कर फेंक दे और जनेऊ को धारण कर ले ।

हमारे गुरु के समान तू भी सत्य में अनुपम बन जा और यदि तू मर्द है मनुष्यता रखता है तो किसी मनुष्य का मित्र बन जा ।

स्वीकृति और अस्वीकृति के प्रश्न को कभी उठने ही न दे और प्रभु को अपने हृदय का अधिकारी बना ले ।

इशारत बुबुतो तरसा बच्चा

बुतो तरसा बच्चा नूरेस्त जाहिर ।
 कि अज रूप बुताँ दारद मजाहिर ॥
 कुनद ऊ जुम्ला दिलहा रा व साक्री ।
 गहे गर्दद मुगानी गाह साक्री ॥
 जेहे मुतरिब कि ऊ अज नगमए खस ।
 जनद दर खिरमने सद जाहिद आतश ॥
 जेहे साक्री कि ऊ अज यक पियाला ।
 कुनद बेखुद दोसदहफताद साला ॥
 अगर दर मसजिद आयद दर सहरगाह ।
 न बेगुजारद दरो यक मरदे आगाह ॥
 रवद दर खानकाह मस्ते शब्बाना ।
 कुनद अफजूं सूफी रा किसाना ॥
 शवद दर मदरसा चूँ मस्त मस्तूर ।
 फकीह अज वै शवद बेचारा मस्त्रमूर ॥
 जे इश्कश जाहिदाँ बेचारा गश्ता ।
 जे खानो माने खद आवारा गश्ता ॥

मूर्ति और अग्नि-पूजक के प्रति

मूर्ति और अग्नि से उत्पन्न हुई आभा एक ऐसी दिखावटी आभा है जो प्रेमिकाओं के मुख से अपना जलवा दिखलाती है ।

वह आभा सभी दिलों को अपने प्रेम-जाल में फँसा लेती है । कभी वह एक गायक का रूप धारण कर लेती है और कभी मदिरा-वाहक का ।

वह गायक कैसा है ? ऐसा जो एक ही राग से सहस्रों परहेजगारों के दिलों में आग उत्पन्न कर देता है ।

वह साक्री कैसा है ? ऐसा जो एक ही प्याले में दो सौ सत्तर वर्ष के वृद्ध को मतवाला बना देता है ।

यदि प्रातःकाल उठकर वह साक्री मस्जिद में चला जाय, तो वहाँ के सभी लोग खुदा को भूल जावें ।

यदि वही साक्री रात्रि के समय किसी साधु की कुटी में चला जावे, तो साधु का जप-तप सब हवा हो जावे ।

जब वह मतवाला, पाठशाला में पहुँचता है, तो शिक्षक, शिष्या देना भूल कर नशे में चूर हो जाता है ।

जो मनुष्य परहेजगार थे, वह उससे प्रेम करने के लिये बाध्य होकर अपने घरों से बाहर निकल आए हैं ।

यके मोमिन दिगर रा काफिर ऊ कर्द ।
हमा आलम पुर अज शोरो शर ऊ कर्द ॥
खराबात अज लबश मामूर गश्ता ।
मसाजिद अज रुखश पुर नूर गश्ता ॥
हमा कारे मन अज वै शुद मअस्सर ।
बदो दीदम खलासज नपसे काफिर ॥
दिलम अज दानिशो खुद सद हुजुब दाश्त ।
जे उजबो निखवतो तलबीसो पिन्दाश्त ॥
दरामद अज दरम आँ बुत सहरगाह ।
मरा अज खाबे गफलत कर्द आगाह ॥
जे रूयश खिलवते जाँगश्त रौशान ।
बदो दीदम कि ता खुद चीस्तम मन ॥
चु कर्दम दर रुखे खूबश निगाहे ।
बरामद अज मियाने जानम आहे ॥
मरा गुफ़ा कि शईयादो साल्स ।
बसर शुद उमरत अन्दर नामो नामूस ॥

उसी ने एक को आस्तिक और दूसरे को नास्तिक बनाया है और सारे संसार में एक कुहराम मचा दिया है ।

मदिरा-गृह उसी के ओठों से बसा हुआ है और मस्जिदों में उसी का उजाला है ।

मेरे जितने भी कार्य हैं सब उसी की सहायता से पूर्ण होते हैं और मैंने अपनी अत्याचारिणी इन्द्रियों से उसी की सहायता से छुटकारा पाया है ।

मेरा हृदय, छल-कपट से परिपूर्ण हो रहा था । दर्प और अहङ्कार ने उसमें घर कर रक्खा था । मैं अपने और अपनी इस विद्या के सामने किसी को कुछ समझता ही न था ।

वह यार, प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में मेरे द्वार से होकर अन्दर आया और मेरे आलस्य को दूर कर गया ।

उसके मुख की आभा से मेरी आत्मा प्रकाशित हो उठी और इसी प्रकाश में मैंने देखा कि मैं क्या था ।

उसके सुन्दर मुख पर पहली दृष्टि पड़ते ही मेरे हृदय से एक आह निकल गई ।

उसने मुझसे कहा कि ओ खलिया ! तेरा सारा जीवन इसी व्यर्थ के जप-तप में व्यतीत हो गया ।

बर्बाँ ता इल्मो जोहदो किन्नो पिन्दाश्त ।
 तुरा ऐ ना रसीदा अज के वादाश्त ॥
 नज़र कर्दम बरूयम नीम सायत ।
 हमी अरज़द हज़ाराँ साला ताअत ॥
 अलल जुम्ला रुख़े औँ आलम आराए ।
 मरा बामन नमूद अन्दर सरो पाए ॥
 सियह शुद रूप जानम अज खिजालत ।
 जे कौते उओ ऐयामे बतालत ॥
 चु दीदौ माह कज रूप चु खुर्शीद ।
 कि बेबुरीदम मन अज जाने खुद उम्मीद ॥
 यके पैमाना पुर कर्दो बमन दाद ।
 कि अज आबे वै आतश दर मन उक्ताद ॥
 कनूँ गुफ़ अज मए बेरंगो बे बूए ।
 नक़्शे तख़्तए हस्ती फ़ेरो शोए ॥
 चु अशामीदम औँ पैमाना रा पाक ।
 दर उफ़तादम जे मस्ती बर सरे खाक ॥

मुख, ध्यान से देख कि तेरी इसी विद्या और घमंड ने तथा परहेज़गारी ने तुझे तेरे अभीष्ट स्थान तक पहुँचने से रोक दिया ।

आधी घड़ी के लिये मेरे मुख पर दृष्टि डाल ले, वह हज़ारों वर्षों की पूजा और भजन के समान है ।

सारांश कि परलोक को सँभाल देने वाले यार के मुखड़े ने मुझे यह दिखा दिया कि मैं क्या था ।

यह समझ कर कि मेरे जीवन के इतने दिन व्यर्थ की बातों ही में चले गये, मेरा मुख लज्जा से नीचा हो गया ।

उस यार ने यह समझ कर कि उसके सूर्य के समान मुख को अप्राप्त समझ कर मैं अपने जीवन से निराश हो गया हूँ,

एक प्याला भर के मुझे दे दिया । उसे पीते ही मेरे शरीर में बिजली सी

उसने कहा कि उस मदिरा से, जिसमें न तो सुगन्ध ही है और न रंग, तू अपने अस्तित्व के अक्षरों को धोकर मिटा दे । मतवाला होकर अपने अस्तित्व को भूल जा ।

मैंने उस प्याले को बिल्कुल खाली कर डाला । मदिरा ने वह रंग दिखला दिया कि मस्त होकर पृथ्वी पर लोट गया ।

कनू न नेस्तम दर खुद न हस्तम ।
न हुशयारम न मखमूरम न मस्तम ॥
गहे चू चश्मे ऊ दारम सरे खश ।
गहे चू ज़ुल्फे ऊ बाशम दर आतश ॥
गहे अज़ खूए खुद दर गिलखनम मन ।
गहे अज़ रूप ऊ दर गुलशनम मन ॥

स्वातमा

अज़ौ गुलशन गिरिफ़्तम शम्मे बाज़ ।
निहादम नाम ऊ रा गुलशाने राज़ ॥
दरो अज़ राज़हा गुलहा शगुफ़्त ।
कि ता अकनं कसे दीगर नगुफ़्त ॥
जवाने सौसने ऊ जुम्ला गोयास्त ।
अयूने नरगिसे ऊ जुम्ला बीनास्त ॥
ताआमुल कुन बचश्मे दिल यकायक ।
कि ता बर खेजद अज़ पेशे तू ईशक ॥
बर्बी मनक़लो माक़लो हक़ायक ।
मुसफ़का कर्दा दर इल्मे दक़ायक ॥

अब देखता क्या हूँ कि मैं कोई दूसरा ही हूँ । न मुझमें जीवन है और न विनाश । न तो मैं बुद्धिमान ही हूँ और न मदिरा के मद में मतवाला ।

कभी उसकी आँख का नशा मुझमें आ जाता है और कभी उसकी काली लटों के समान आग में बल खा रहा हूँ ।

कभी अपनी आदतों के कारण नर्क की अग्नि में जल रहा हूँ और कभी उसका मुख देखकर, स्वर्ग के उपवन में भ्रमण कर रहा हूँ ।

समाप्ति

उस उपवन का कुछ वर्णन करना ठीक होगा । इसका नाम मैंने रहस्यों का उपवन रक्खा है ।

इसमें रहस्यों के ऐसे पुष्प खिले हुए हैं कि जिनका अभी तक कोई पता नहीं लगा पाया ।

इस उपवन का सौसन सभी भाषा में बोलता है । नर्गिस के पुष्प में जितनी भी आँखें हैं सब देखने वाली हैं ।

तू तनिक अपने भीतरी नेत्रों से इस उपवन को देख, ताकि सन्देह का पर्दा तेरी दृष्टि के सामने से हट जावे ।

देख पर्दों, वास्तविकताओं और दलीलों की समस्त कठिनाइयों को यहाँ पर किस प्रकार हल कर दिया गया है ।

बचशमे मुनकरी मनिगर दरो खार ।
 कि गुलहा गरदद अन्दर चरमे तो खार ॥
 निशाने नाशनासी ना सिपासीस्त ।
 शिनासाईए हक़ दर हक़ शिनासीस्त ॥
 गरज्ज जीं जुम्ला औं ता गर कुनद याद ।
 अजीजे गोयदम रहमत बरो बाद ॥
 बनामे खेश करदम खत्मो पायौं ।
 इलाही आक्रबत महमूद गर्दा ॥

पर उनकी तरफ़ सन्देहात्मक दृष्टि से न देख । इन रहस्यों में टीका टिप्पणी करने का विचार न कर । नहीं तो जितने भी पुष्प हैं सब तेरी दृष्टि में शूल हो जायेंगे ।

यह कहना कि मैं इन्हें जानता नहीं हूँ, कृतघ्नता प्रकट करना है । कृतज्ञता दर्शाने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है ।

इस सब का आशय यह है कि यदि कोई महाशय किमी समय मुझे स्मरण करें, तो उनके मुख से यही निकले कि ईश्वर उस पर कृपा करे ।

मैंने अपने नाम पर ही इसे समाप्त कर दिया है । हे ईश्वर मुझ “महमूद” को फल अच्छा देना ।

हाफ़िज़

[मृत्यु १३९० ई०]

इनके जन्मकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, इनकी मृत्यु सन् १३९० ईस्वी में हुई थी। इनका नाम शम्शुद्दीन मुहम्मद था। इन्हें लोग बहुधा लिसातुलगौब (अदृश्य की तलवार) तथा तर्जुमानुल असरार (रहस्य के अनुवादक) भी कहा करते थे। ब्राउन ने इनका जीवन-वृत्तान्त लगभग पचास पृष्ठों में लिखा है। उसके कथनानुसार शिबली की लिखी हुई पुस्तक इस विषय में सर्वोत्तम तथा विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास है। फ़ारस के उन कवियों में जिन्होंने गान संबंधी पद लिखा है, हाफ़िज़ सर्वश्रेष्ठ हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। लेवी का कथन है कि भाषा, भाव और कल्पना के अनुसार, फ़ारस के कवियों में इनका स्थान सबसे ऊँचा है (Persian Literature P. 77)।

यह तो सभी मानते हैं कि हाफ़िज़ रहस्यवादी थे। प्रकट रूप में यह कहा जा सकता है कि हाफ़िज़ ने मदिरा तथा स्त्रियों की प्रशंसा में अधिक लिखा है। परन्तु इनके अन्दर छिपी हुई “गूढ़ रहस्यवाद की बातों” को सभी मानते हैं। जिन बातों को उन्होंने प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जिस रहस्य को उद्घाटन करने का विचार किया है, वह सभी पूर्णतया उचित रूप में लोगों के सम्मुख रखी गई हैं। इस विषय में उन्हें सदैव सफलता प्राप्त हुई है। “हाफ़िज़ की मदिरा आन्तरिक प्रसन्नता, सराय पूजा गृह और फ़ारस का पुराना पुजारी आत्मिक गुरु है।” मुसलमानों में हाफ़िज़ के दीवान से शकुन उठाने की प्रथा प्रचलित है। यहाँ तक की भारतवर्ष के बादशाह भी उससे शकुन उठाया करते थे। जहाँगीर के विषय में ऐसा ही कहा जाता है।

हाफ़िज़ को मदिरा बहुत प्रिय थी। कुछ समय उपरान्त वह उसी मदिरा से आन्तरिक प्रसन्नता का आशय निकालने लगे। हाफ़िज़ की इच्छा इस प्रकार थी :—

“यदि अधिक मदिरापान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी समाधि तक एक शराबी के ही भेष में लाना। ऐसे स्थान पर जहाँ चारों ओर अंगूर की बेलें हों, और जो किसी सराय की बराल में हो, मेरी कब्र बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियों के कन्धों पर ही मेरी अर्थी भी ले जाई जावे। मेरी मिट्टी भी लाल मदिरा से नम की जावे और मेरा शोक मनाने के लिये वही तीन तारों वाली सितार बजायी जावे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है—वसीयत है। मेरी मृत्यु का शोक मनाने वालों में केवल फ़ारस के अभिनेता तथा गानेवाले हों। हाफ़िज़ को मदिरा से पृथक् मत करना। शराबियों के साथ बादशाहों को भी सख्ती नहीं करनी चाहिये।”

मिस गार्ड्रेड बेल ने भी कुछ पंक्तियाँ हाफ़िज़ के सम्बन्ध में लिखी हैं। कदाचित् यह हाफ़िज़ का अनुभव हो :—

“हाफिज ने बहुत से राजाओं—महाराजाओं को देखा। उन्होंने शक्ति-सम्पन्न की—ख्याति प्राप्त की। और फिर एक एक करके मरुभूमि की सतह पर जमी हुई बर्ष के समान विलीन हो गये।”

अपने जीवन-काल में ही हाफिज को पूर्ण ख्याति प्राप्त हो गई थी। जिसके कारण उनके पास खुरासान, तुर्किस्तान और मैसोपोटामियों से निमंत्रण आये थे। मुहम्मद शाह बहमनी ने भी उन्हें दक्षिण भारत में, निमंत्रण देकर बुलाया था। हाफिज ने चलने की तय्यारी भी कर ली थी। परन्तु दुर्भाग्य से जहाज पर चढ़ने से पहले ही एक ऐसी दुर्घटना होगई, जिससे उन्हें रुक जाना पड़ा। घर पर भी हाफिज को शाही दरबार से बहुत कुछ मिलता था।

इनकी रचनाओं के अगणित अनुवाद हो चुके हैं। केवल इंग्लैण्ड में ही छः अनुवाद हो चुके हैं, जिनमें से मिस बेल तथा मिस्टर ओन्सले के सर्वोत्तम समझे जाते हैं। मिस्टर ओन्सले ने उनके विषय में लिखा है :—

“इनकी भाषा मुहाविरेदार, सुन्दर तथा बनावट से रहित है। शैली को देखने से ही पता चल जाता है कि लेबक उरुच कोटि का विद्वान है और उसे प्रकट तथा अप्रकट वस्तुओं का पर्याप्त ज्ञान है। इसके अतिरिक्त भाषा में एक ऐसा आकर्षण है जो अन्य कवियों की रचनाओं में नहीं पाया जाता।”

जन साधारण में तैमूर लंग और हाफिज की कहानी अधिक प्रसिद्ध है।

लंग ने जब हाफिज के मुख से यह शब्द सुने :

“अगर औं तुर्के शीराजी बदस्त आरद दिले मारा।

बखाले हिदवश बखश्म समरक्रंते बुखारा ॥”

तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हें बुलाकर पूछा कि तुम इन मुल्कों के विषय में ऐसी मामूली बातें क्यों कहते हो जिनके जीतने के लिये मुझे इतना खून बहाना पड़ा। हाफिज का उत्तर बड़ा ही विलक्षण था :

“हे शाहनशाह ! अपने इन्हीं उच्च विचारों के कारण मैं आजकल इतना कंगाल हूँ।”

रचनायें :-

दीवान

(१) .

अला या अईयो हसूसाक्री इदर कासावना दिलहा ।
 कि इश्क आसौं नमूद अव्वल वले उक्ताद मुश्किल हा ॥
 बबूए नाका काखिर सबा जाँ तुरा बकुशायद ।
 जे ताबे जुल्के मिशकीनश चे खं उक्ताद दर दिलहा ॥
 ब मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरेमुगाँ गोयद ।
 कि सालिक बे खबर न बूद जे राहो रस्मे मंजिलहा ॥
 मरा दर मंजिले जानों चे अमनो ऐश चूं हरदम ।
 जरस फरियाद मोदारत कि बरबन्देद महमिलहा ॥
 शबे तारीको बीमे मौजो गिरदाबी चुनी हामल ।
 कुजा दानन्द हाले माँ सुबक साराने साहिल हा ॥
 हमा कारम जे खुद कामी ब बदनामी कशीद आखिर ।
 निह्दां कै माँदों कारे कज्जों साजन्दो महफिलहा ॥
 हज्जरी गरहमी खाही अजो गाफिल मशो हाफिज ।
 मता मा तल्के मन तहबा दउद दुनियाँ ब अहमिलहा ॥

(१)

ऐ शराब पिलाने वाले ! प्याले को, मुझे भी दे । क्योंकि प्रणय आरम्भ में सहल ज्ञात होता था परन्तु आगे चलकर इस समय बहुत सी कठिनाइयाँ आ पड़ी हैं ।

उसकी काली अलकों में लगी हुई कस्तूरी की सुगन्ध से जो कि हवा द्वारा इधर-उधर फैल गई है और उसकी धुंधराली लटाँ से हृदय में प्रेम समा गया है ।

यदि तुझसे मदिरा-गृह का स्वामी, आसन मदिरा में रंग लेने के लिये कहे तो ऐसा कर डाल । क्योंकि पथिक मार्ग के तरीकों से अनजान नहीं होता है ।

मुझे प्रियतमा के मार्ग में आराम करने का क्या विश्वास है जबकि क्राफले का घन्टा सदैव बजता रहता है और लोगों को अपनी अपनी लादी लादने के लिये सचेत करता रहता है ।

रात काली है, लहरें उठ रही हैं और भयानक भँवर उठ रहे हैं । तटों पर बैठे हुए चिन्ताहीन मनुष्य हमारी दशा को कैसे समझ सकते हैं ।

स्वार्थ के कारण मैं अपने कार्यों में बदनाम हो चुका हूँ । जो काम सब लोगों के सम्मुख किया जाता है वह गुप्त कैसे रह सकता है ।

ऐ हाफिज ! यदि तू प्रियतमा के दर्बार में रहना चाहता है, उसे देखना चाहता है तो उसके सामने से दूर मत हो । जिससे तू जिसको स्नेह की दृष्टि से देखता है उसकी दुनिया को छोड़ दे और उसका विचार न कर ।

(२)

ऐ नसीमे सहर आराम गहे यार कुजाअस्त ।
 मंजिले आँ महे आशिके कुशे आय्यार कुजाअस्त ॥
 शबे तारस्तो रहे वादिए ऐमन दर पेश ।
 आतिशे तूर कुजा मौअदे दीदार कुजाअस्त ॥
 हर कि आमद ब जहां नक्शे खराबी दारद ।
 दर खराबात मपुरसेद कि हुशयार कुजाअस्त ॥
 आँ कसस्त अहे बशारत कि इशारत दानद ।
 नुक़ताहाहस्त बसे महरमे असरार कुजाअस्त ॥
 हर सरे मूए मरा वा तू हज़ारों कारस्त ।
 मा कुजाएमो मलामत गरे बैकार कुजाअस्त ॥
 अक़ल दीवाना शुद आं सिलसिले मिशकॉ कू ।
 दिल जे मा गोशा गिरिफ़्त अत्रए दिलदार कुजाअस्त ॥
 आशिके खस्ता जे दर्दगमे हिअे तो ब सोख्त ।
 ख़ुद न पुरसी तु कि आँ आशिके गमख़ार कुजाअस्त ॥

(२)

ऐ प्रभात के शीतल पवन ! प्यारे के शयन करने का स्थान कौनसा है और उस प्रणयी को बंध करने वाले उस दशाबाज चन्द्रमा का घर कहाँ है ।

रात अँधेरी है और ऐमन घाटी का मार्ग सामने ही है (वह स्थान जहाँ मूसा को खुदाई जलवा दिखाई दिया था) नूर की अभि कहाँ चली गई है और मिलन-मन्दिर किधर है ?

संसार में जो मनुष्य आया है, वह नष्ट कर देने वाले चित्रों को लेकर आया है । इसलिये मदिरा-गृह में जाकर यह न पूछो कि कहाँ है ।

शुभ समाचारों वाला वही मनुष्य है जिसे अन्य लोगों की तरफ से इशारा मिल गया है कि भीतर चले आओ । टीका-टिप्पणी करने के लिये तो बहुत स्थान हैं परन्तु रहस्य का जानने वाला कौन है ? उसका होना भी आवश्यक है ।

तेरे एक एक बाल में हमारे अगणित स्वार्थ छिपे हुए हैं । हम कहाँ आ पड़े हैं और व्यर्थ में खरी-खोटी कहने वाला कहाँ हैं ?

हमारी समझ में पागलपन समा गया है । वह मुखी रंग की अलकें न मालूम किधर छिप गई हैं । हमारा दिल एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ है । प्रियतमा की वह भौँँ कहाँ हैं ।

वेचारा प्रेमी तेरे प्रेम और विरह में जल रहा है और तू यह भी नहीं पूछता है कि वह दुखिया कहाँ है ।

दिलम अज्ज सोमआ सोहबते शेखस्त मल्ल ।
 यार तरसा बच्चओ खानुए खुमार कुजाअस्त ॥
 वादाओ मुतरिबो मुल जुम्ला मुहैयास्त बले ।
 ऐशे बे यार मुहैया न शवद यार कुजाअस्त ॥
 हाफिज अज्ज बादे खिजां दर चमने दह मरंज ।
 फिक्रे माकूल ब-करमों गुले बेखार कुजाअस्त ॥

(३)

इमरोज शाहे अंजुमने दिल बरों यकेस्त ।
 दिलबर अगर हज्जार बुवद दिल बरों यकेस्त ॥
 मन बहे ओं यके दो जहाँ दादाअम बबाद ।
 ऐवम मकुन कि हासिले हर दो जहाँ यकेस्त ॥
 सौदाइयोंने आलमे पिनदार रा बुगो ।
 सरमाय कम कुनेद कि सूदो जेयों यकेस्त ॥
 खल्के ज़बों बदावये इश्कश कुशादा अंद ।
 ऐ मन गुलाम ओं कि दिलश बाजबों यकेस्त ॥
 हाफिज बर आस्तानऐ दौलत निहादा सर ।
 दौलत दरों सरस्त के बाआस्तों यकेस्त ॥

मेरा दिल उपदेशों को सुनकर और उदासीनों के साथ रह कर ऊब उठा है । वह मेरा सुन्दर प्रियतम और उस शराब विक्रेता का घर कहाँ है ?

मदिरा पिलाने वाला और फूल सभी वस्तुएँ उपस्थित हैं, परन्तु जीवन का आनन्द बिना यार के नहीं मिलता । वह यार है कहाँ ?

ऐ हाफिज ! इस समय रूपी उपवन में पतझड़ की हवा पर खेद मत करो । तनिक ध्यान से विचार करो कि कराक-हीन पुष्प कहाँ है ।

(३)

आज माशूकों के जमाव में, सम्राट एक ही है । गिनती में वे हजारों हैं मगर उनके दिल को चुराने वाला एक ही है ।

मैंने उसी एक को पाने की आशा में दोनों जहानों को मिटा डाला । इसके लिये मुझे दोष मत दो । दोनों जहानों का अन्त एक यही है ।

इस संसार के अहंकारियों से कह दो कि अपनी पूँजी को कम कर दें । हानि और लाभ यहाँ समान हैं ।

बहुत से लोग कहते हैं कि हम उसे प्यार करते हैं । परन्तु मैं उस मनुष्य का सेवक होने के लिये उद्यत हूँ जो उसे हृदय से भी प्यार करता हो ।

हाफिज ने तो उसी प्रतिष्ठा की चौखट पर अपना सिर रख दिया है और वही सर प्रतिष्ठित भी है जो उस चौखट से मिलकर एक हो गया है ।

(४)

बदामे जल्ले तू दिख मुन्तिखाए खेशतनस्त ।
 बकुश बराम्बा कि ईनश सज्जाए खेशतनस्त ॥
 गरत जे दस्त बर आवद मुरादे खातिरे मा ।
 बदस्त बाश कि खैरे बजाए खेशतनस्त ॥
 बेजानत ऐ खुते शीरीने मन कि हमषु शमा ।
 शबाने तीरा मरा दमे फनाए खेशतनस्त ॥
 चुराए इश्क जदी धातू गुफ़म ऐ बुलबुल ।
 मकुन कि आँ गुले खुद रौ बराए खेशतनस्त ॥
 बमिशके चीनो चिमिल नेस्त बूए गुल मोहताज ।
 कि नाफहारा जे बंदे क्रबाए खेशतनस्त ॥
 मरो ब खानए अरबाब बे-मुरव्वते दह ।
 कि कुंजे आफियस्तन् दर सराए खेशतनस्त ॥
 बसोस्त हाकिमो देर शते इश्को जौबाजो ।
 हनोज़ बर सरे अहदो वफ़ाए खेशतनस्त ॥

(४)

तेरी काली अलकों के जाल में यह हृदय अपने आप ही जाकर फँस गया है। अपनी तिरछी चितवन से तू उसे मार डाल। उसका यही दराह है।

यदि मेरी इच्छाएँ—हृदय की आकाँक्षाएँ तेरे द्वारा पूर्ण हो जायँ तो तेरा बोलबाला हो। यह अपने साथ भलाई करने के समान है।

ऐ सुन्दरी, प्रियतमा, तेरे प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रत्येक अंधेरी रात को मैं इसी विचार में रहता हूँ कि तेरे दीपक के समान रूप पर, पतंगा बनकर मैं अपने आप को न्यूँछावर कर दूँ।

जब तूने प्रणय का उपदेश लिया था, मैंने तभी कह दिया था कि ऐ बुलबुल तू प्रेम न कर। वह पुष्प जो अपने आप उत्पन्न हुआ है वह स्वयम् अपने ही लिये उगा है।

फूल अपनी सुगन्धि किसी दूसरे से उधार नहीं लेता है वह स्वयं सुगन्धि का भंडार है। और उसके पदों के अन्दर कस्तूरी के बहुत से टुकड़े छिपे हैं।

जो लोग रुखे स्वभाव के हैं, जिन्हें दूसरों से स्नेह नहीं है उनके पास मत जाओ। तुम्हारे निजी घर में ही बिभ्राम करने के लिये कोना मौजूद है।

हाकिम, जल कर मर गया परन्तु उसने जो श्रेष्ठ और प्राणों पर खेल जाने की प्रतिज्ञा की थी उस पर अब तक दृढ़ है।

(५)

बेरौ ऐ जाहिदो दावत मकुन्म सूए बहिश्त ।
 कि खुदा दर अजल अजलह बहिश्तम बसरिश्त ॥
 यक जौ अज खिरमने हरती न तवानद बरदाश्त ।
 हर के दर कूर फना दर रहे हक दाना नकिश्त ॥
 तू वो तसबीहो मुसल्ला वो रहे जुहदो सलाह ।
 मनो मैखाना वो जुन्नारो रहे दैरो कनिश्त ॥
 मन अम अज मै मकुने सूफिए साफी कि हकीम ।
 दर अजल तीनते मारा ब मए नाव सरिश्त ॥
 सूफिए साफ बहिश्ती न बुवद हर कि चोमन ।
 खिरका दर मैकदहा दर गिरे बादा बहिश्त ॥
 राहत अज ऐशे बहिश्तो लबे हूरश न बुवद ।
 हर कि ऊ दामने दिलदार खुद अज दस्त बहिश्त ॥
 'हाफिजा' लुफे हक अरशातू इनायत दारद ।
 बाश फारिया जे रामे दोजखो शादी व बहिश्त ॥

(५)

ऐ परहेजगार तू मुझे स्वर्ग की ओर मत बुला । मैं नाशवान् हूँ । ईश्वर ने मुझे आरंभ में अमरलोक के लिये उत्पन्न नहीं किया ।

जिस मनुष्य ने मृत्यु की गली में और ईश्वर की राह में एक दाना तक नहीं बोया है, वह इस सांसारिक जीवन के खलिहान से एक जौ का दाना भी प्राप्त नहीं कर सकेगा ।

यह नेकी, सच्चाई और पवित्रता का मार्ग तुम्हारे ही लिये मुबारक रहे । मैं मदिरागृह, जनेऊ और मन्दिर तक पहुँचाने वाला मार्ग हूँ ।

ऐ पवित्र हृदय साधु ! मुझे मदिरा पान से न रोक । जिस समय मैं उत्पन्न हुआ था, उस समय स्रष्टा ने मेरी मिट्टी को मदिरा ही से गूँथा था ।

चाहे जितना पवित्र मनुष्य क्यों न हो लेकिन तब तक वह स्वर्ग में नहीं जा सकता जब तक कि मेरे समान वह अपने वस्त्रों को शराब खाने में शराब के लिये रेहन नहीं कर देना ।

जिस मनुष्य को, स्वर्ग के भोग-विलास और अप्सराओं के ओठों से भी आनन्द प्राप्त न होगा, जिसने अपनी प्रियतमा का अंचल हाथ से छोड़ दिया है ।

ये "हाफिज" ! यदि मेरा सहायक ईश्वर है तो मुझे स्वर्ग का आनन्द और नर्क की चिन्ता समान हैं ।

(६)

बरौ बकारे खुद ऐ' बाइज ई' चे फर्यादस्त ।
 मरा कित्तादा दिल अज कफ तुरा चे उफ़ादस्त ॥
 बकाम ता न रसानद मरा खबश चुंनाय ।
 नसीहतें हमा आलम बगोरो मन बादस्त ॥
 गदाए कूए तु अज हशत खुल्द मुस्तरानास्त ।
 असीरे बंद तू अज हर दो आलम आजादस्त ॥
 मियाने ऊ कि खुदा आफरीदास्त हेचस्त ।
 दक्तीका एस्त कि हेच आफरीदर न कुशादस्त ॥
 अगचें मस्तिए इश्क खराब कर्द बले ।
 असास हस्तिए मन जौ खराब आबादस्त ॥
 दिला मनाल जे बेदादो जौरे यार के यार ।
 तुरा नसीब हमीं करदास्त व ई' दादस्त ॥
 बरौ किसानो मखानो किसँ मद्म "हाफिज" ।
 कर्ची किसान अफ़सं मरा बसे यादस्त ॥

(६)

ऐ उपदेशक ! क्या तेरे लिये और कोई काम नहीं रह गया है । मुझे इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है । मेरा तो दिल चला गया है, तेरा क्या बिगड़ गया है ।

जब तक उस प्रेमिका के ओठ मुझे बीणा के समान अपने बीच में नहीं ले लेंगे तब तक सारे संसार की शिक्षा मुझपर कोई असर नहीं कर सकती ।

जो तेरी गली में धूनी रमाये बैठा है उसके लिये आठों स्वर्ग भी कोई चीज नहीं है और जिसके तेरी बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं वह दोनों जहानों से स्वतंत्र है ।

जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है वह नाशवान है । यह एक ऐसी उलझन है जिसे किसी मनुष्य ने आज तक सुलझा नहीं पाया है ।

यद्यपि मैं प्रणय की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ परन्तु यह मैं भली प्रकार समझता हूँ कि मेरे जीवन की नींव उसी बीहड़ स्थान से है ।

तेरा बार अगर तेरे ऊपर अत्याचार करे और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करे तो उसके विषय में किसी से शिकायत न कर । उस बार ने तेरे भाग्य का निर्णय इसी प्रकार किया है और इसी को न्याय भी समझो ।

ऐ "हाफिज," जा । मुझसे यह बनावटी बातें न कर । ऐसी मुलाका देने वाली बहुत सी बातें मुझे मालूम हैं ।

(७)

बकूए मैकदा हर सालिके कि रह दानिस्त ।
दरे दिगर जदन अंदेशए तबह दानिस्त ॥
बर आस्तानए मैखाना हर कि याफ़ रहे ।
जे फ़ैज जामे मै असरारे खानकह दानिस्त ॥
जमाना अफ़सरे रिंदी नदाद जुज्ज बकसे ।
कि सरफ़राज़िए आलम दरी कुलह दानिस्त ॥
हरआँ कि राजे दो आलम जे सत्ते साक़ी खाँद ।
रमूजे जामे जम अज नक़्शे खाके रह दानिस्त ॥
बराए तायते दीवानग़ों जेमा मतलब ।
कि शैख़ मज्जहबे मा आक्रिली गुनह दानिस्त ॥
दिलम जे नरगिसे साक़ी अमौं नखास्त बजाँ ।
चेरा कि शेबेए आँ तर्के दिल सियह दानिस्त ॥
जे जौरे कोकबे ताले सहरगहाँ चश्मम् ।
चुनौं गिरीस्त कि नाहीद दीदो मह दानिस्त ॥
ख़शाँ नज़र के लबे जामो रूए साक़ी रा ।
हिलाले यक शबे माहे चार दह दानिस्त ॥

(७)

जिस मतवाले को मदिरा-गृह का पता लग गया उसने फिर किसी दूसरे दर्वाजे पर जाना उचित नहीं समझा ।

जिसने उस दर्वाजे को एक बार भी देख लिया उसने मदिरा के प्याले की कृपा से सराय का रहस्य मालूम कर लिया ।

इस संसार ने साधु (जीवनमुक्त) की पदवी उसी को दी है जिसने उस पहनावे में ही सारी दुनियाँ की प्रतिष्ठा को समझ लिया ।

जिसने शराब पिलाने वाले के पत्र से ही दोनों जहानों के रहस्य को समझ लिया है उसने बिना प्रयास के ही अपने मार्ग में जामे जम का पता लगा लिया ।

हम पूजा और पाठ पागलों का सा ही जानते हैं । और किसी प्रकार की आशा रखना भूल है । हमारे धर्म-गुरु ने बुद्धिमान होने को पाप समझा है ।

मेरे हृदय ने साक़ी से शान्ति प्राप्त कर लेने के लिये प्रार्थना नहीं की । वह उसके अत्याचार के ढंग को पहले ही से जानता था ।

जब मैं हज़ को गया तो उसी समय मेरे भाग्य-नक्षत्र के विपरीत हो जाने से आँख में से इतने आँसू गिरे कि बृहस्पति ने भी उसे देख लिया और चाँद भी सब कुछ समझ गया ।

मैं उस दृष्टि की बलिहारी जाता हूँ और उसकी श्रेष्ठता को समझता हूँ, जिसने प्याले से लगे हुए ओठों को पहली रात का चाँद और साक़ी के मुख को चौदहवीं रात का चाँद समझा ।

बलद मर्तबा शाही कि न खाके सिपहर ।
नमूनए रुखम ताके बारगह दानिस्त ॥
हदीसे हाफिजो सासार कि भी जनद पिनहीं ।
चे जाए मोहसिसिओ शाहना पादशह दानिस्त ॥

(८)

बया के कल्ले अमल सख्त मुस्त बुनियादस्त ।
बयार बादा के बुनियाद उअर बर्बादस्त ॥
गुलाम हिस्मते आनम कि जेर चखे कयूद ।
जे हचे रंग तअल्लुक पजीरद आजादस्त ॥
चे गोएमत कि बमैखाना दोश मस्तो खराब ।
सरोशे आलमे गैबम चे मुज्जदहा दादस्त ॥
के ऐ बुलन्दे नजर शाहबाजे सिद्र नशी ।
नशेमेने तू न ई कुंजे मेहनत आबादस्त ॥
तुरा जे कंगुरए अर्श भी जनन्द सफीर ।
नदानमत कि दरीं दामगहे चे उफ़ादस्त ॥
नसीहते कुन्मत यादगीरे व दर अमल आर ।
कि ई हदीस जे पीरे तरीक़तम यादस्त ॥

वह सफ़ाट कितना महान् है । वह आकाशों को अपने मन्दिर के महाराजों के समान समझता है ।

(८)

हाफिज छिपकर मदिरा पान करता है । यह बात अब गुप्त नहीं है । इसे ढ़ँच और नोच सभी जान गये हैं ।

आशाओं के भवन की नींव बहुत कमजोर है । उसकी दीवारें क्षल-भर में गिर सकती हैं । और मदिरा ला । जीवन का कोई भरोसा नहीं है ।

मैं उस मनुष्य के साहस का क़ायल हूँ जो गीले आकाश के नीचे प्राप्त होने वाली वस्तुओं में से किसी से भी सम्बन्ध नहीं रखता और न किसी की चिन्ता रखता है ।

कल रात को जब मैं शराब खाने में, मदिरा के नशे में मस्तवाला हो रहा था, उस समय आकाशवाणी ने मुझे बहुत से शुभ समाचार दिये थे । वह इतने आनन्द दायक हैं कि उनका वर्णन करना मेरी शक्ति से परे है ।

ऐ स्वर्गीय वृत्तों (कल्प वृक्ष) पर भ्रमण करने वाले जोव यह संसार छोड़े रखते योग्य स्थान नहीं है । यहाँ अभ्यवसाय की आवश्यकता है ।

तेरे लिये आकाश से बुलावा आ रहा है, फिर न मालूम किस लिये इन कण्ठों में यहाँ बैठा हुआ पड़ा है ।

मैं भी तुम्हें एक उपदेश दे रहा हूँ । इसे स्मरण रखकर काम में लगना । बुद्धिमानों की एक बात मैंने भी याद रखली है ।

मैंजो दुरुस्तीए अहद अज्ज जहानेसुस्त निहाद ।
 कि ई अजूआ ठरुसे हज्जार दामादस्त ॥
 ग्रमे जहां मखुरो पन्दे मन मबर अज्ज बार ।
 के ई खतीफा नगाज्जम ओ रहरवे बादस्त ॥
 रजा बेदाद बदह वज्ज जर्बी गिरह बकुशा ।
 के बर मनो तू दरे इस्तियार न कुशारस्त ॥
 निशाने अहदो वफा नेस्त दर तबस्सुमे गुल ।
 बेनाल बुलबुले आशिक के जाए फरियादस्त ॥
 हसद चे मीं बरी ऐ सुस्ते नज्म बरहाफिज्ज ।
 कबूले खातिरो छुत्के सखुन ख्दा दादस्त ॥

(९)

हासिले कारगहे कौनो मकों ईहमा नेस्त ।
 बाद पेश आर कि असबाबे जहाँ ईहमानेस्त ॥
 अज्जदिलो जौं शरफे सोहबते जानाँ गरजस्त ।
 हमाआनस्त बगर न दिलो जौं ईहमानेस्त ॥

वह यह है कि इस नाशवान् जगत के जीवों से यह आशा मत रख कि वह अपने वादों को पूरा करेंगे। वह हजारों वादे करते हैं।

फिर उनका पूरा करना उनके लिये किस प्रकार सम्भव हो सकता है। संसार की चिन्ता मत कर और मेरी शिक्षा को भी न भूल।

यह एक मजेदार बात मैंने एक ज्ञानी से सीखी थी। जो कुछ तुम्हें मिल गया है उसी पर सन्न कर और सदैव प्रसन्न रहने की चेष्टा करता रह। यहाँ पर मेरी और तेरी का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है।

पुष्प में बादा पूरा करने और अपने वचनों पर चलने का कोई भी लक्षण नहीं है। ऐ प्रेमी बुलबुल, तू इस बात की शिकायत कर सकता है और इसी के लिये यह जगह भी है।

ऐ कवि ! तू अच्छी कविता नहीं लिख सकता; फिर इसके लिये हज़फिज से द्वेष क्यों रखता है। लोगों के दिलों में चुभना और पदों में रस होना इस दुनिया की दृष्टि पर निर्भर है।

(९)

इस संसार की समस्त वस्तुएँ नाशवान् हैं। ला, मेरे सामने यदि रा रख चाकि इस क्षणभंगुर जीवन का कुछ आनन्द ले सकूँ।

इस हृदय और इन प्राणों का उद्देश्य यही है कि प्रियतमा के स्पर्श रहने की प्रतिष्ठा प्राप्त हो। यदि यह नहीं है तो हृदय और प्राणों का कोई अस्तित्व नहीं है। उनका होना और न होना समान है।

भिन्नते सिद्धा व तूबा ज पये साया मकरा ।
 के चो खुश बिनगरो ऐ सरबेरबाँ ईं हमा नेस्त ॥
 अज तहत्तुक मकुन अन्देशा वच्नू गुल खुशबाश ।
 जाँ कि तमकीने जहाने गुजरा ईं हमा नेस्त ॥
 दौलत आनस्त कि बे खूने दिल उरुद बकिनार ।
 वरना बासइये अमल बारो जिनाँ ईं हमा नेस्त ॥
 जाहिद ऐ मन मशौ अज बाणिये रौरत खिनहार ।
 कि रह अज सौमआ ता दैरे मुगाँ ईं हमा नेस्त ॥
 पंज रोजे कि दरीं मरहला मोहलतदारी ।
 खुश बे आसाए जमाने कि जमाँ ईं हमा नेस्त ॥
 वर लबे बहे फना मुंतखिरेम ऐ साक्की ।
 फुरसते दाँ कि जे लब ताब दहाँ ईं हमा नेस्त ॥
 दर्दमंदोए मने सोखतए जारो निजार ।
 जाहिरा हाजते तक्ररीरो बयाँ ईं हमा नेस्त ॥
 नमे हाफिज रकमे नेक पञ्जीरकु बले ।
 पेशे रिदाँ रजमे सूदो जियाँ ईं हमा नेस्त ॥

केवल छाया के लिये इन स्वर्गीय वृत्तों का अहसान अपने सर पर न लो। यदि तुम भले प्रकार विचार करोगे तो इन वस्तुओं को नाशवान् पाओगे।

रहस्य प्रकट हो जाने का कोई शोक न करो और पुष्प के समान सदैव आनन्द से खिले रहो। इस बहुरूपिणी दुनियां में पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटने वाले हैं।

बैभव और सम्पत्ति उसी को कहना चाहिये जो बिना परिश्रम के, बिना हृदय का रक्त बहाए हुए प्राप्त हो जावे। अन्यथा प्रयास और प्रयत्न से तो स्वर्ग का उपवन भी प्राप्त किया जा सकता है।

ऐ पवित्र मनुष्य, विधाता के खेलों को सदैव अपने ध्यान में रख। पूजा-गृह से, मदिरा-गृह कुछ अधिक दूरी पर नहीं है।

इस मार्ग में तुम्हें केवल पाँच दिवस का अवकाश प्राप्त हुआ है। याद रख यह बहुत कम है। इसलिये यदि विश्राम करना चाहता है तो शीघ्रता कर।

हम इस सर्वभक्षक दरिया के तट पर साक्री की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं। तनिक अवसर का भी विचार रख। पीने के लिये कुछ प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। और जीवन भी स्थायी नहीं है।

मुझ दुखिया और प्रणय-प्रसित की अवस्था प्रकट में थोड़े ही शब्दों में कही जा सकती है। इसके लिये अधिक शब्दों की और वर्णन की आवश्य-

क्याति दूर दूर तक फैल गई है परन्तु जीवनमुक्त पुस्तकों के निकट इसका कुछ भी मूल्य नहीं है।

(१०)

दर्दा के यार दर गमो दर्दम बर्माँदो रक्त ।
 मारा चो दूद बर सरे आतिश निशाँदो रक्त ॥
 झखमूर बादए तरबअंगेज इश्क रा ।
 जामी न दाद जहे जुदाई चशाँद रक्त ।
 चूँ सैदे ऊ शुदम मने मजरूहो खस्ता रा ।
 दर बहरे गम बर्माँदो जनीबत बरौंदो रक्त ॥
 गुफ्तम मगर बहीला बक़ैदश दर आवरदम ।
 अज मन रमीदो तौसने बख़तम रमाँदोरक्त ॥
 खूने दिलम चो दर दिले मन जाए तंग याफ़्त ।
 गुलगँ जे राह दीद बसहरा दवाँदो रक्त ॥
 चूँ बंदा रा सआदते ख़िदमत न दाद दस्त ।
 बोसीद आसतानओ ख़िदमत रिसाँदो रक्त ॥
 गुल दर हिजाब वूद कि सुर्यो सहरगहे ।
 आमद बयागे हाफ़िजो फ़रयाद ख़वाँदो रक्त ।

(१०)

खेद है कि मित्र मुझ इस दुखित और पीड़ित अवस्था में डालकर चला गया है और हमको धूनी रमाने वालों के समान आग के ऊपर बिठाकर स्वयम् न मालूम किधर चला गया हैं ।

उस मतवाले को प्रणय की मदिरा उसकी प्रसन्नता को और भी बढ़ा देती परन्तु उस मदिरा का प्याला न देकर जुदाई का प्याला उसके हाथ में दिया गया । उसने वह पी लिया और चला गया है ।

जब मैं उसका शिकार हो गया तब मुझ आहत हृदय घायल को शोक रूपी समुद्र में छोड़ कर न मालूम वह अश्वारोही कहाँ विलीन हो गया है ।

मैंने सोचा था कि किसी न किसी बहाने से क्रिस्मत को अपने फन्दे में फँसा लूँगा । लेकिन वह भी मुझसे दूर रहती है ।

मेरे हृदय के रक्त ने जब मेरे हृदय में कम स्थान पाया तो वह अपना गुलाबी घोड़ा मेरे नेत्रों से निकाल कर बाहर आया और उसे कुदाता फँदाता हुआ चला गया है ।

जब उस सेवक को स्वामी के सन्मुख पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ तब उसने उसकी चौखट को ही चूमना और सर झुकाना पर्याप्त समझा और यही करके वह चला गया है ।

अभी पुण्य परदे के अन्दर से निकला भी नहीं था कि प्रभात-काल का पक्षी उपवन में आ उपस्थित हुआ । अर्थात् हाफ़िज आया और रोता बिस्ताता हुआ चला गया है ।

(११)

दिल सरा पर्दे मुहब्बते ओस्त ।
 दीदा आईना दार तलअते ओस्त ॥
 मन कि सर दर नयावरम बद व कोन ।
 गरदनम् जेर बार मिन्नते ओस्त ॥
 गर मन आलुदा दामनम् चे अजब ।
 हमा आलम गवाहे असमते ओस्त ॥
 मन कि बाशम् दरो हरम कि सबा ।
 परदादारे हरोमे हुरमते ओस्त ॥
 मुलकते आशिकी व गंजे तरब ।
 हर्चे दारम जे चमन दौलते ओस्त ॥
 बे खयालश मबाद मंजरे चश्म ।
 जौ कि ई गोशा खासे खिलकते ओस्त ॥
 दौरे मजनू गुजश्तो नौबते मास्त ।
 हर कसे पंज रोज नौबते ओस्त ॥
 मन व दिल गर फिदा शुदेम चे शुद ।
 गरज अन्दर मियो सलामते ओस्त ॥

(११)

हृदय उसके प्रेम का स्थान है और नेत्र उसकी सूरत का दर्पण है ।
 मैं दोनों जहानों में किसी को सर नहीं सुकाता हूँ । परन्तु उसके
 एहसान के भार से यह सर झुक जाता है ।

मैं पापी हूँ तो इसमें अश्चर्य ही क्या है । परन्तु उसकी पवित्रता का तो
 सारा संसार साक्षी है ।

मैं उस रँगमहल में कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता हूँ जहाँ की वायु
 उसकी प्रतिष्ठा की रक्षक है ।

प्रणय की जागीर और आनन्द का कोष जितना भी मेरे पास है वह
 सब उसी की अनुकम्पा और विशाल हृदयता का फल है ।

मैं यह चाहता हूँ कि मेरे नेत्रों में उसकी शोभा के अतिरिक्त और किसी
 वस्तु के लिये स्थान न रहे । यही एक ऐसा कोना है जो कि उत्तम पूजागृह
 कहा जा सकता है ।

मजनू का जमाना बीत गया अब उसके स्थान पर मैं हूँ । प्रत्येक मनुष्य
 की बारी केवल पाँच दिन की होती है ।

मैं यदि अपने हृदय के साथ न्योछावर हो गया तो क्या हुआ । उसका
 प्रसन्न और सफुराल रहना आवश्यक है ।

तू व तोबा व मा व क्लामते यार ।
 फिक्र हर कस बक्रद हिम्मत ओस्त ॥
 हर गुले नौ कि शुद चमन आरा ।
 असरे रंगों बूये सोहबते ओस्त ॥
 फर्के जाहिर मर्बी कि हाफिजरा ।
 सोना गंजीनये मुहब्बते ओस्त ॥

(१२)

दिलम मलाल गिरफ़ अज्र जहाँ व हर चे दरूस्त ।
 दर्दने खातिरे मन कस न गुंजद इला दूस्त ॥
 अगर जे गुलशने वसलत बमा रसद बोए ।
 दिलम चो गुंचा जे शादी न गुंजद अन्दर पूस्त ॥
 नसीहते मने दीवाना दर तरीकते इश्क ।
 हमाँ हिकायते दीवानओ संगो सोबूस्त ॥
 बुगो व जाहिदे खिलवतनशीं कि ऐब मकुन ।
 अज्राँ कि गोशए मेहराबे मा खुमे अबरूस्त ॥
 मियाने काबओ मैखाना हेच फर्के नेस्त ।
 बहर तरफ़ कि नजर मी कुनी वरावर उस्त ॥

ऐ पवित्र हृदय मनुष्य ! तू अपने मित्र और प्याले का ख्याल रख । प्रत्येक मनुष्य को अपने साहस के ही अनुसार कार्य करना चाहिये ।

जिस नवीन पुष्प ने खिल कर उपवन की शोभा को बढ़ाया यह उसी के सम्पर्क की सुगन्धि और रँग का परिणाम है ।

जो कुछ तुम प्रगट रूप में देख रहे हो केवल उसी से उसकी फक्करी का अनुमान मत करो । हाफिज का हृदय उसके स्नेह का आगार है ।

(१२)

मैंने दुनियाँ की सभी वस्तुओं से अपना मुख मोड़ लिया है । यदि मेरे ध्यान में कोई वस्तु समाई हुई है तो वह है मेरे यार का मुखड़ा ।

यदि तेरे मिलन की तनिक सी सुगन्धि भी मुझे मिल जाय तो मेरा हृदय प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो जाये ।

मुझ पागल को प्रणय-मार्ग में उपदेश करना एक पागल, पत्थर और बड़े की कहानी से उपमा देना है ।

उसके ध्यान में मग्न बैठे हुये साधु से कह दो कि वह मुझे यह कह कर कि मैंने उसकी भृकुटियों के भुकाव को ही अपनी कुटिया की महराब बना रक्खा है, बदनाम न करे ।

काबों में और शराबखाने में कोई अन्तर नहीं है । जिस तरफ़ भी तुम्हारी दृष्टि जायगी वह सामने आ जायगा ।

कलंदरी न बरेशस्तो मूए या अबरू ।
 हिसाबे राहे कलंदर बर्दों के मूए बमूस्त ॥
 गुजश्तन अज सरे मू दर कलंदरी सहलस्त ।
 चो हाकिम आँ के जे सर बगुजरद कलंदरूस्त ॥

(१३)

राहेस्त राहे इश्क कि हेचश किनारा नेस्त ।
 आँजा जुज अंगाह जौ बसिपारंद चारा नेस्त ॥
 हरगह कि दिल बइश्क दिही खुश दमे बुवद ।
 दर कारे खैर हाजते हेच इस्तखारा नेस्त ॥
 मारा बमने अकल मतरसौं दमे बयार ।
 कौं शहना दर विलायते मा हेचकारा नेस्त ॥
 अज चरमे खुद बे पुर्स कि मारा कि मी कुशद ।
 जानाँ गुनाह तालओ जुमें सितारा नेस्त ॥
 फुरसत शुमार तरीकये रिन्दी कि ई तरीक ।
 चूँ राहे गंज बरहमा कस आशकारा नेस्त ॥
 ऊरा बचरमे पाक तवाँदीद चूँ हिलाल ।
 हर दीदा जाए जल्बये आँ माहपारा नेस्त ॥

शिर मुड़ाने अथवा दाढ़ी रखाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता । इस मार्ग पर जो कि बाल के समान पतला है, चलना बहुत ही कठिन है ।

बालों का विचार करना तो इस मार्ग में एक बहुत ही साधारण बात है । परन्तु वास्तव में उदासी वही है जो इन बातों का विचार छोड़ कर भी “हाकिम” के समान अपने आप को मिटा डाले ।

(१३)

प्रणय मार्ग अनन्त है । उस मार्ग में अपने आपको मिटा डालने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है ।

जिस समय किसी के प्रेम में तू अपने हृदय को खो बैठे तो उस समय को बहुत ही शुभ समझना चाहिये । भले काम में किसी प्रकार के सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं है ।

ज्ञान के उपदेश करने की धमकी मुझे मत दे और मेरे लिये मदिरा ला । क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ मदिरा के ऊपर निगरानी रखना व्यर्थ है ।

प्रियतम ! इसमें मेरे भाग्य अथवा ग्रहों को दोष देना व्यर्थ है । अपनी ही आंखों से क्यों नहीं पूछती कि मुझपर अत्याचार का पहाड़ क्यों ढारही हैं ?

यह भी ठीक है कि फकीरी का मार्ग कोष के मार्ग के समान किसी पर विदित नहीं है ।

इस प्रियतमा को पहिली रात के चन्द्रमा के समान पवित्र और वासना-रहित दृष्टि से ही देखना उचित है । और इसीलिये प्रत्येक आँख इस कार्य के लिये अनुचित है ।

नगिरकु दरतो गिरियए “हाफिज” बहेच रूप ।
हैराने आँ दिलम कि कमअज संगेखारा नेस्त ॥

(१४)

रोजगारेस्त कि सौदाये बुलाँ दीने मन अस्त ।
गमे ईं कार निशाते दिले गमगीने मन अस्त ॥
दीदने रूपे तुरा दीदये जाँ वी वायद ।
वीं कुजा मरतवण चश्मे जहाँ बीनेमन अस्त ॥
ता मरा इश्के तू तालीमे सुअन गुफन दाद ।
खल्क रा विदे जुवाँ मदहतो तहसीने मन अस्त ॥
दौलते फ़क़ खुदाया बमन अरजानीदार ।
कीं करामत सबवे हश्मतो तमकीने मन अस्त ॥
यारे मन वाश कि जेबे फ़लको जीनते दह ।
अज महे रूपे तूओ अश्क चो परवीने मन अस्त ॥
वाइजे शहना शनास ईं अजमत गो मफ़रोश ।
जाँ के मंज़िल गहे सुस्ताने दिले मिसकीने मनस्त ॥
यारब ईं कावण मक़मूदो तमाशा गहे कीस्त ।
के मुगीलाँ तरीक़श ग़लो नम्नीने मनस्त ॥

“हाफिज” के रंगे का कोई भी असर तेरे हृदय पर नहीं हुआ । मैं ऐसे हृदय से हैरान हो गया हूँ जो कि कठोर पत्थर से भी कठोर है ।

(१४)

बहुत समय से प्रियतमाओं से प्रेम करना ही मेरा धर्म हो गया है । और यह काम मेरे दुखी हृदय को आनन्द प्रदान करता है ।

तेरा मुख देखने के लिये प्राणों के अस्तित्व को समझने वाली आँख चाहिये । मेरी आँख जो कि संसार की वास्तविकता को समझने में असमर्थ है, यह पद किस प्रकार प्राप्त कर सकती है !

जब से तेरे प्रणय ने मुझे कविता लिखना सिखाया है, सभी लोग मेरी बड़ाई करते हैं और मुझे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं ।

भगवन् कृपा करके मुझे संन्यासी बना दे । इसी में मेरी प्रतिष्ठा और ख्याति है । मेरी इच्छा है कि तुम मेरे साथ ही साथ चलो ।

कारण, कि आकाश और पृथ्वी दोनों की शोभा तुम्हारे चन्द्रमा से मुख और मेरे प्रवीन से आँसुओं से है ।

यह जो नाना प्रकार के उपदेश दे रहा है उस सुधारक से कह दो कि वह अधिक शान न दिखावे । यह मेरा दीन हीन हृदय जिसे वह उपदेश दे रहा है, सम्राट का निवास स्थान है । हे ईश !

यह लोगों का तीर्थ-स्थान काबा किसके सैर करने की जगह है ? इसके माग के कांटे मेरे लिये गुलाब और चमेली के पुष्पों के समान हैं ।

“हाफिज” अज्र हश्मते परवेज दिगर क्रिस्ता मखाँ ।
कि लबश जुर्ग कशे खुस्रवे शीरीने मनस्त ॥

(१५)

रौशन अज्र परतवे रूयत नजरे नेस्त कि नेस्त ।
मिन्नते ख्वाके दरत बर बसरे नेस्त कि नेस्त ॥
नाजिरे रूए तु साहब नजरानंद आरे ।
सिरेँ गेसूए तु दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥
अशके शम्माजे मन अर सुख बर आमद चे अजब ।
खजिल अज्र कर्दए खुद परदा दरे नेस्त कि नेस्त ॥
मन अर्जी तालए शोरीदा बरजम वरना ।
बहरमंद अज्र सरे कूयत दिगरे नेस्त कि नेस्त ॥
तू खुद ऐ शोलए रस्शिदा चे दारी दर सर ।
के कबाब अज्र हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त ॥
ता दम अज्र शामे सरे जुल्के तू हर जा न जनद ।
बा सबा गुफो शुनीदम सहरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ “ हाफिज ” परवेज बादशाह के ठाट बाट का बर्णन न करो, क्योंकि उसकी ख्याति भी तो मेरे खुसरू और शीरी के प्याले को ओठों से लगाने ही से थी ।

(१५)

तेरे मुख के प्रकाश से सभी निगाहें प्रकाशित हो रही हैं और तेरे दर्वाजे की धूल का अहसान सभी के ऊपर है ।

तेरे मुख को बड़े बड़े नजर लड़ाने वाले लोग देखते हैं और कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसका दिल तेरी काली अलकों में न उलझा हो ।

मेरे यह चुगली खाने वाले अश्रुबिन्दु यदि लाल रंग के होकर निकल रहे हैं तो उसमें आश्चर्य की कौन सी बात है । क्योंकि रहस्य को खोजने वाला कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने इस कार्य से लज्जित न हो ।

मैं अपने इस दुर्भाग्य से ही विपत्तियों में आ पड़ा हूँ, नहीं तो संसार के सारे वैभव केवल तेरी गली में ही प्राप्त हो सकते हैं ।

ऐ चमकीली अग्नि-शिखा तेरे मस्तिष्क में क्या क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं ! तेरी शरारतों से कोई भी कलेजा खासी नहीं है ।

सभी तेरी इन शरारतों से आरी आ रहे हैं । मैं प्रभात-वायु से प्रत्येक दिन यही बातचीत करता रहता हूँ कि वह तेरी लटों का कहीं दूसरी जगह चर्चा न कर बैठे ।

अज्र हयाये लबे शीरीने तू ऐ चश्मए नोश ।
 शक़े आबो अरक़ अकनू शक़रे नेस्त कि नेस्त ॥
 मसलेहत नेस्त कि अज्र पर्दा बरूँ उफ़तद राज़ ।
 बरना दर मजलिसे रिंदाँ ख़बरे नेस्त कि नेस्त ॥
 अज्र बजुर्दी क़दरम् नामो निशां हस्त कि हस्त ।
 बरना अज्र जोफ़ दर आँजा असरे नेस्त कि नेस्त ॥
 शेर दर बादियए इश्क़े तू रुबाह शवद ।
 आह अर्जी राह कि दर बे ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥
 नाजुर्कारा सफ़रे इश्क़ हुरामस्त हुराम ।
 कि बहरगाम दर्ी रह ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥
 आबे चश्मम कि बरू मिन्नते खाके दरे तुस्त ।
 ज़ेर सद मिन्नते ऊ खाके दरे नेस्त कि नेस्त ॥
 ता बदामन न नशीनद ज़े नसीमत गर्दे ।
 सैले अश्क़ज मिज़ाअम बर गुज़रे नेस्त कि नेस्त ॥
 न मने दिल शुदा अज्र दस्ते तु ख़ुनीं जिग़रम् ।
 कज़ ग़मे इश्क़े तु पुर ख़ूँ जिग़रे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ मिठास के सोते, तेरे मीठे ओठों की स्पर्धा में सभी प्रकार की शक्करें पानी में डूब चुकी हैं अर्थात् लज्जित हो चुकी हैं ।

यह ठीक नहीं है कि किसी प्रकार रहस्य प्रकट हो जावे अन्यथा साधुओं के जमाव में सभी प्रकार के आनन्द उपस्थित हैं ।

मुझे अपने जीवन का केवल इतना ही पता है कि वह है । गोकि उसमें सभी प्रकार की दुर्बलताएँ पाई जाती हैं ।

तेरे प्रणय के वन में सिंह भी लोमड़ी बन जाता है । बड़े बड़े साहसी हृदय भी हिम्मत खो देते हैं ।

यह मार्ग हो इतना कठिन है कि इसमें सभी प्रकार के ख़तरे उपस्थित हैं ।

मेरा वह आँसू जो तेरे दर्वाज़े की स्मृति में गिरा है और जिसपर उसकी धूल का अहसान है, सभी दर्वाज़ों की धूल से अधिक प्रतिष्ठित और मूल्यवान है ।

इसलिये कि तेरे अञ्चल पर किसी प्रकार की धूल अथवा कूड़ा न पड़ जावे मैं रास्तों पर अपने आँसुओं का छिड़काव कर देता हूँ ।

अकेला मैं ही एक दुखिया ऐसा नहीं हूँ जिसपर कि विपत्ति पड़ी है, बल्कि तेरे प्रणय में सभी हृदय रक्त के आँसू बहा रहे हैं ।

कमरे की बमने खस्ता चे बंदी कि जे बेह ।
 बर मिथाने विलो जानम् कमरे नेस्त कि नेस्त ॥
 अज सरे कूए तु रकतम् न तवानम् गामे ।
 बरना अन्दर दिले बेदिल सफरे नेस्त कि नेस्त ॥
 गैर अर्जी नुक्ता कि "हाकिज" जे तु नाखुशानूदस्त ।
 दर सरापाए बजूरत हुनरे नेस्त कि नेस्त ॥

(१६)

रोजए खुल्दे बरीं खिलवते दरवेशानस्त ।
 मायए मोहतशमी खिदमते दरवेशानस्त ॥
 गंजे इज्जत कि तिलिस्माते अजायब दारद ।
 फतहे आँ दर नजरे रहमते दरवेशानस्त ॥
 कस्मे फिर्दोस कि रिज्जवाँश व दरबानी रफु ।
 मंजरे अज चमने नुजहते दरवेशानस्त ॥
 उंचे जर भी शवद अज परतवे आँ कलब सियाह ।
 कीमयाएस्त कि दर सोहबते दरवेशानस्त ॥
 उंचे पेशश नेहद ताज तकब्बुर खुर्शीद ।
 किज्जियाएस्त कि दर हश्मते दरवेशानस्त ॥

तेरे प्रेम में, मैं अपने दिल और जान से लग रहा हूँ । क्या इसीलिये तूने मुझसे शत्रुता कर रखी है ?

तेरी गली से बाहर मैं अपना कदम कभी हटा ही नहीं सकता गोकि इस बे दिल के दिल में भी अन्यान्य सैकड़ों प्रकार की इच्छाएँ हैं ।

एक छोटी सी बात को छोड़कर कि "हाकिज" तुझसे अप्रसन्न है और तुझमें सभी अच्छाइयाँ हैं ।

१ सबसे ऊँचे स्वर्ग-स्थान का उपवन साधुओं का एकान्तवास है और साधुओं की सेवा से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ।

२ प्रतिष्ठा के कोष पर विलक्षण तिलस्म बँधे होते हैं । उनपर अधिकार प्राप्त करना साधुगणों की कृपा-दृष्टि पर ही अवलम्बित है ।

३ स्वर्ग का वह भवन जिसका रक्षक ही उसका दर्बान है, साधुओं के भूमने का केवल एक बाग है ।

४ वह विलक्षण वस्तु, जिसकी छाया मात्र से ही अँधेरे हृदय में प्रकाश हो जाता है, साधुओं की सत्संगति में ही प्राप्त होती है ।

वह प्रतिष्ठा जो सूर्य से भी उज्ज्वल है, साधुओं की सेविका है ।

दौलते रा के नवाशद गमज आसेवे जवाल ।
 बे तकल्लुक बिशानो दौलते दरवेशानस्त ॥
 ऐ तबंगर बफ़रोशीं हमा नख़्ख़त कि तुरा ।
 सरो ज़र दर कफ़े हिम्मते दरवेशानस्त ॥
 खुसरवाँ किन्लए हाजाते जहानंद वले ।
 सबबश बरंदगीए हज़रते दरवेशानस्त ॥
 रूप मक़सूद कि शाहों वदुआ मी तलबंद ।
 मज़हरश आइनए तलअते दरवेशानस्त ॥
 गंजे क़ारुं कि फ़रो मी रवद अज़ कह हनोज़ ।
 खांदाबाशी के हमज़ ग़ैरते दरवेशानस्त ॥
 अज़ करां ताबा करां लशकरे जुलमस्त वले ।
 अज़ अज़ल ता ब-अबद फ़ुर्सते दरवेशानस्त ॥
 मन गुलामे नज़रे आसिके अहदम कूरा ।
 सूरते ख़ाजिगिओ सीरते दरवेशानस्त ॥
 “हाफ़िज़” अर आबे हयाते अबदी मी तलबी ।
 मंवाश खाके दरे ख़लवते दरवेशानस्त ॥
 “हाफ़िज़” ईं जा ब-अदब बाश कि सुलतानिओ मुल्क ।
 हमा अज़ बंदगीए हज़रते दरवेशानस्त ॥

वह वैभव, जिसका पतन कभी सम्भव ही न हो साधुओं का ही है ।

ऐ धनवान ! तेरा यह सब घमंड व्यर्थ है । तेरा अभ्युदय और पतन सब साधुओं के आशीर्वाद पर ही निर्भर है ।

संसार के सम्राट, संसार की आवश्यकताओं को निस्सन्देह पूरा करते हैं । परन्तु वे साधुओं की सेवा के ही उपलक्ष में सम्राट बने हुए हैं ।

अपने अभीष्ट पर पहुँचना, जिसके लिये बड़े बड़े सम्राट इच्छुक रहते हैं, केवल साधुओं के संसर्ग पर ही निर्भर है ।

क़ारुं का प्रसिद्ध खज़ाना साधुओं की ही कोप-दृष्टि से अभी तक पृथ्वी के अन्दर वर्तमान है ।

पृथ्वी के एक सिरे से लेकर दूसरे तक अत्याचारों और विपत्तियों के दल छाए हुए हैं । परन्तु अनादिकाल से अंत समय तक साधुओं को उनसे किसी प्रकार का भय नहीं है ।

मैं इस ज़माने के मंत्री का सेवक हूँ । उसका मुख धनवानों के समान है और स्वभाव उदासीनों के समान ।

ऐ “हाफ़िज़” यदि तू अमृतमय “आबे हयात” के जल को पीना चाहता है तो साधुओं के दर की भस्म से ही वह प्राप्त किया जा सकता है ।

ऐ “हाफ़िज़” यहाँ सर नवा कर चल । यह राज्य और यह वैभव सब साधुओं की सेवा का ही परिणाम हुआ करता है ।

(१७)

रूप तु कस नदीदो हजारत रक़ीब हस्त ।
 दर पर्दे हुनोज़ो सदद अंदलीब हस्त ॥
 गर आमदम् बक़ूए तु चंदौ गरीब नेस्त ।
 चूं मन दरीं दयार फ़रावौ गरीब हस्त ॥
 हर चंद दोरम अज़ तु कि दूर अज़ तु कस मबाद ।
 लेकिन उमीदे वस्ले तू अम अनक़रीब हस्त ॥
 दर इश्के खानकाहो ख़राबात कर्क नेस्त ।
 हर जा के हस्त परतवे रूप हबीब हस्त ॥
 औजा के कारे सोमा रा जलवा मी देहंद ।
 नामूसे दैरे राहिबो नामे सलीब हस्त ॥
 आशिक़ कि शुद के यार बहालश नज़र न कर्द ।
 ऐ ख़ाजा दर्द नेस्त वगरना तबीब हस्त ॥
 फ़रयादे "हाफ़िज़ी" हमा आख़िर बहर्जे नेस्त ।
 हम किस्सए गरीबो हदीसे अजीब हस्त ॥

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी ग़लो में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबख़ाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सम्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज़्ज़त की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी रूप-स्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाफ़िज़ व्यर्थ में ही वह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जौं यारे दिलनवाजम शुकेस्त बा शिकायत ।
 गर नुक्रतादाने इश्की खुश बिश्नो ईं हिकायत ॥
 बे मुज्द यूदो मिन्नत हर खिदमते कि करदम ।
 यारब मबाद कसरा मखदूमे बे इनायत ॥
 रिदाने तिश्ना लव रा आबे तमी देहद कस ।
 गोई वली शनासां रफ़द जीं विलायत ॥
 दर जुल्क चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच कौंजा ।
 सरहा बुरीद बीनी बे जुर्मो बे जनायत ॥
 चश्मत ब गम्जा मारा खूं रेखत मी पसंदी ।
 जाना रवा न बाशद ख़रेज रा हिमायत ॥
 दरीं शबे सियाहम गुमगश्त राहे मकसूद ।
 अज गोशए बुरू आ ऐ कोकबे हिदायत ॥
 अज हर तरफ़ के रफ़म जुज वहशतम नयफ़जद ।
 जिनहार अजीं बयाबौ वीं राहे बे निहायत ॥

(१८)

मैं अपने उस मित्र को, जो इस हृदय को प्रसन्न करने वाला है, धन्यवाद देता हूँ, परन्तु शिकायत के साथ । यदि तू प्रणय के भेदों का ज्ञाता है तो इस कथा को आनन्द से सुन ।

मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी । भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो ।

प्यासे उदासियों को पीने के लिये कोई थोड़ा पानी भी नहीं देता है । मानो उन सिद्ध पुरुषों को परखने वाले इस देश में है ही नहीं ।

ऐ हृदय ! देख सँभल जा और उसकी काली अलकों के जाल में मत फँस । वहाँ पर सैकड़ों निरपराधियों के सिर कटे हुए मौजूद हैं ।

तेरी आँख ने अपनी मानलीला दिखला कर हमको मार डाला है, परन्तु तू इस कार्य को बुरा नहीं समझता है । ऐ जान ! हत्यारों की सहायता करना उचित नहीं है ।

इस अंधेरी रात में अपने लक्ष्य पर पहुँचाने वाले मार्ग से भटक गया हूँ । ऐ मार्ग-दर्शक तारे ! तू ही किमी कोने से निकल कर मुझे ठीक मार्ग पर पहुँचा दे ।

मैं चारो तरफ़ फिर आया परन्तु भटकने के अतिरिक्त हाथ कुछ भी नहीं आया । अब इस बीहड़ मार्ग से पनाह मांगता हूँ ।

ईं राह रा निहायत सूरत कुजा तवों बस्त ।
 कश सद हज़ार मंज़िल बेशस्त दर बदायत ॥
 ऐ आकाबे खूबाँ मी जोशद अंदरूनम ।
 यक साअतम बगुंजों दर सायए हिमायत ॥
 हर चंद बरूए आवम रु अज दरत न ताबम ।
 जौर अज हबीबो खुशतर कज मुद्ई रियायत ॥
 इश्कत रसद ब फ़रयाद गर ख़ुद बसाने "हाफिज" ।
 कुरआँ जे बर बख़ानी दर चार दह रवायत ॥

(१९)

जाहिदे जाहिर परस्त अज हाले मा आगाह नेस्त ।
 दर हज़क़े मा हर चे गोयद जाय हेच इकराह नेस्त ॥
 दर तरीक़त हर चे पेशे सालिक आयद ख़ैरे उस्त ।
 बर सिराते मुस्तक़ीम ऐ दिल कसे गुमराह नेस्त ॥
 ता चे बाज़ी रुख़ नुमायद बैज़क़े खाहम राँद ।
 अर्सए शतरंज रिंदों रा मजाले शाह नेस्त ॥

जिस मार्ग के आदि में ही सैकड़ों मंज़िलें पार करने का हैं, उसके अन्त के विषय में भला क्या कहा जा सकता है !

ऐ सुन्दरियों के सूर्य ! मेरा हृदय उबाल खा रहा है । उसे एक क्षण भर के लिये अपने साथ लेकर शान्त कर दो ।

तू चाहे जितने अत्याचार मेरे साथ कर और मेरी प्रतिष्ठा में बढ़ा लगा परन्तु मैं तेरे दरवाजे से मुख न मोड़ूंगा, क्योंकि मित्र का अत्याचार शत्रु की कृपा से बढ़कर होता है ।

प्रेम तेरी सहायता उसी अवस्था में करेगा जबकि तू क़ुरआन पढ़नेवालों के समान क़ुरआन को चौदह रवायतों के साथ जुबानी पढ़ेगा ।

(१९)

वह पवित्र मनुष्य जिसे केवल प्रकट बातों का ही ज्ञान है हमारी अवस्था नहीं जानता है । अतएव वह हमारे विषय में जो कुछ भी कह रहा है, उसमें बुरा न मानना चाहिये ।

जो कुछ भी ईश्वर के मार्ग के पथिक पर बीत रहा है, वह सब उसकी भलाई के लिए हैं । ऐ हृदय ! कोई मनुष्य सीधे मार्ग से भटक नहीं जाता है ।

फ़कीरों की शतरंज में बादशाह के बढ़ने के लिये स्थान ही नहीं है । इसलिये बाज़ी को समझने के लिये हम अपना केवल एक ही प्यादा आगे मैदान में बढ़ायेंगे ।

चीस्त ईं सक्रफे बलंद सादए बिस्तार नक्श ।
 जीं मुअम्महा हेच दाना दर जहाँ आगाह नेस्त ॥
 ईं चे इसतिगानास्त यारब वीं चे क़ादिर हिकमतस्त ।
 कीं हमा ज़रमे निहानस्तो मजाले आह नेस्त ॥
 साहबे दीवाने मा गोई नमी दानद हिसाब ।
 कंदरीं तुयारा निशाने हस्बतन लिस्लाह नेस्त ॥
 हर के खाहद गो बेयाओ हर चे खाहद गो बगो ।
 गीरो दारे हाजिबो दरबाँ दरीं दरगाह नेस्त ॥
 हर चे हस्त अज़ क़ामते ना साज़ बे अंदामे मस्त ।
 वर्ना तशरीफे तूबर बालाए कस कोताह नेस्त ॥
 बर दरे मैखाना रफ़न कारे यकरंगों बुवद ।
 ख़ुद फ़रोशांरा ब कूप मै फ़रोशां राह नेस्त ॥
 बंदए पीरे ख़राबातम के लुत्कश दायमस्त ।
 वर्ना लुफ़े शेख़ो जाहिद गाह हस्तो गाह नेस्त ॥

यह ऊँची और सादी छत, जिसमें बहुत से बेल बूटे भी खिंचे हुए हैं, क्या वस्तु है। इस भेद को कोई भी मनुष्य नहीं जानता है।

हे ईश्वर ! यह कैसी बेपरवाही और कैसी विलक्षण बात है। मुझमें सैकड़ों गुप्त घाव हैं, परन्तु उस पर भी उनकी पीड़ा के कारण हाय कहने का साहस नहीं है।

ऐसा ज्ञात होता है कि हमारे कोषाध्यक्ष को गणित नहीं आता है, क्योंकि उस पेचीदह प्रश्न में ईश्वर के लिये कोई निशान ही नहीं है।

जो आना चाहे उसे चला आने दो और जो कुछ वह कहना चाहे कहने दो। यह वह दरबार है जिसमें जाने के लिये न तो दर्बान ही रोकता है और न कोई दूसरा अफसर।

तेरे दिये हुए वस्त्र और पोशाक ऐसी नहीं है जो किसी के शरीर पर छोटी हो सके। यदि यह मेरे शरीर में ठीक ठीक नहीं आती है तो यह उस बेढङ्ग बदन का ही दोष है।

शराबख़ाने में उन लोगों को जाना चाड़िये जो कि एक ही रंग में रंगे हुए हैं। स्वार्थी मनुष्यों का वहाँ कोई काम नहीं है।

मैं तो उस मदिरा-गृह के स्वामी का सेवक हूँ। वह सदैव मेरे ऊपर कृपा-दृष्टि रखता है। वरन् पवित्र (कर्मकांडी) मनुष्य कभी तो दयालु हो जाते हैं और कभी नहीं।

“हाफिज” अर बर सद्द न नशीनद जे आली मशबीस्त ।
आशिको दरूकश अंदर बंदे मालो जाह नेस्त ॥

(२०)

सीनाअम जे आतशे दिल दर रामेजानानों बसोस्त ।
अतिशी बूव वर्गी खाना कि काशाना बसोस्त ॥
तनमज वास्तए दूरिए दिलबर बगुदास्त ।
जानमज आतशे इश्के रुखे जानानों बसोस्त ॥
हर कि जंजोरे सरे चुल्हे परोरुए दीद ।
दिल सौदा जदाअश बर मने दीवाना बसोस्त ॥
सोज़ दिल बी कि जे बस आतशे अश्कम दिले शमा ।
दोश घर मन जे सरे मेह चु परवाना बसोस्त ॥
ख़िर्कए जाहिद मरा आबे ख़राबात बबुर्द ।
ख़ानए अक़ले मरा आतशे खुमख़ाना बसोस्त ॥
आशानायां न गरीबस्त कि दिल सोजे मनंद ।
चूं मन अज ख़ेश बिरकुम दिले बेगाना बसोस्त ॥
माजरा कम कुनो बाज आ कि मरा मरदुमे चश्म ।
ख़िरका अज सर बदर आवदों बशूकाना बसोस्त ॥

हाफिज अपने उच्च विचारों के ही कारण कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता है । क्योंकि तलछट पीने वाला प्रेमी किसी प्रकार की पदवी अथवा ऊँचे और नीचे स्थान की चिन्ता ही नहीं करता है ।

(२०)

हृदय की अग्नि से मेरा सीना यार की जुदाई में जल गया है । इस घर की आग ने सारे घर को जलाकर भस्म कर डाला है ।

प्यारे के विरह में मेरा शरीर धुल गया और उसके प्रणय ने मेरे प्राणों में ही आग लगा दी ।

जिस मनुष्य ने किसी प्रियतमा की काली अलकों को देखा है, उसका आकुल हृदय मुझ पागल पर जलने लगा है ।

मेरे हृदय की तपन को तो देखो कि मेरे आँसुओं की गर्मी के होते हुए भी दीपक का दिज्ञ पतंगे के समान, मुझ पर तरस खा के रात समय जल कर भस्म हो गया ।

मेरी पवित्रता के लिबास को मदिरा-गृह के पानी ने डुबा दिया और वहाँ की अग्नि ने मेरी बुद्धि के घर को जला दिया ।

मुझे पागल देखकर दूसरों का हृदय भी पिघल गया है, फिर यदि मेरे मित्र मेरे ऊपर दयालु हैं तो इसमें आश्चर्य करने की कौनसी बात है ।

बहुत बातें बनाना उचित नहीं है । आओ, अब लौट आओ । मेरे शरीर ने तुम्हारे आगमन की प्रसन्नता में अपने वस्त्रों को भी जला डाला है ।

चूँ प्याला दिलम अज तोबा कि करदम विशकस्त ।
हम चो लाला जिगरम बे मयो पैमाना बसोस्त ॥
तकें अफसाना बगो हाफिजो मैं नोश दमे ।
कि न खुस्केम शबो शमां ब अफसाना बसोस्त ॥

(२१)

शगुश्ता शुद गुले हमरा ओ गश्त बुलबुल मस्त ।
सलाए सर खुशी ऐ आशिकाने बाद़ा परस्त ॥
असासे तौबा कि दर मोहकमी चु संग नमूद ।
बबीं कि जाम जे जाले चे तुर्फाअश विशकस्त ॥
बे आर बाद़ा कि दरबारगाहे इसतिगाना ।
चे पासवानो चे सुल्ताँ चे होशयारो चे मस्त ॥
दरीं रबाते दो दर चूं मुकर्ररस्त रहील ।
रवाक्ते ताक्के मईशत चे सर बलूंदो चे पस्त ॥
मक्रामे ऐश मयस्सर नमी शवद ब रंज ।
बजे बहुक्मे बला बस्ताअंद अहदे अलस्त ॥

मैंने जो आन खींची थी, उसके कारण मेरा हृदय प्याले के समान टूक टूक हो गया है और मदिरा और प्याले के बिना मेरा दिल लाला के फूल के समान जल गया है ।

ऐ हाफिज़ ! अब इस कहानी को बन्द करदो और थोड़ी देर बैठकर मदिरा पी लो और दम ले लो । दीपक यह कहानी सुनते ही सुनते बुझ भी गया और हम भी इसी के सुनने में रात भर जगते रहे ।

(२१)

लाल गुलाब खिल गया और बुलबुल उसके प्रणय में मतवाली हो उठा ।
ऐ मदिरा-भक्त प्रेमियो ! आज तो पाने के लिये सभी आमंत्रित किये गए हैं ।

लोग कान पर हाथ रख कर कहते हैं और बड़ी ही दृढ़ता के साथ कि अब शराब कभी नहीं पियेंगे । परन्तु उनकी प्रतिज्ञायें, कौंच का प्याला (यानी शराब) आते ही तोड़ डालता है ।

इस दरबार में सभी लोग मस्त हैं । चौकीदार, बादशाह, चालाक और मतवाले सब समान हैं ।

मदिरा लाओ उसे पियें । इस दो द्वारों वाली सराय में जब चलना निश्चित है तो फिर शान से जीवन बिताना या साधारण तौर पर रहना सब समान हैं ।

जीवन व्यतीत करने के लिये ऊंचा घर हो या नीचा, कम समान हो या अधिक सब बराबर है क्योंकि यह सत्य है कि ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न करने के समय बिना दुःख सहे सुख न मिलने का नियम था ।

ब हस्तो नेस्त मरंजाँ ज़मीरो खुश मी बाश ।
 कि नेस्तीस्त सरंजामे हर कमाल के हस्त ॥
 शिकोहे आसफोब्बो अस्पे बादो मंतिके तैर ।
 बबाद रफ्तो अज़ाँ ख़ाजा हेच तर्फ़ न बस्त ॥
 बबालो पर मरो अज़ रह के तैरे पर ताबी ।
 हवा गिरिफ़ ज़माने बले बख़्ताक़ निशस्त ॥
 ज़बाने किल्के तु “हाफिज” चे शुकराँ गोयद ।
 कि गुफ़तए सख़ूनत मी बरंद दस्त ब दस्त ॥

(२२)

सुबह दम मुर्ग़ चमन बा गुले नौखास्ता गुफ़ ।
 नाज़ कम कुन कि दर्री बाग़ बसे चूँ तु शगुफ़ ॥
 गुल ब खन्दीद कि अज़ रास्त न रंजम बले ।
 हेच आशिक़ रुख़ने तल्ख़ बमाशूक़ न गुफ़ ॥
 गर तमा दारी अज़ाँ जामे मुरस्सा मै लाल ।
 गौहरे अश्क बनो के मिज़ाअत बायद सुफ़ ॥
 ता अबद बूए मोहब्बत ब मशामश न रसद ।
 हर कि ख़ाके दरे मैख़ाना बरख़सारा नरफ़ ॥

परन्तु धनी और निर्धन होने का कोई सौच मत कर और प्रत्येक अवस्था में प्रसन्नचित्त रह । उत्थान के बाद पतन अवश्यम्भावी है ।

अवसक का रोब, हवा का घोड़ा और चिड़ियों को बोलो यह सब वस्तुयें मिट गईं । और ख़ाजा भी इस पृथ्वी से अपने साथ कुछ भी न ले जा सका ।

यदि तू उन्नति कर के बड़ा आदमी हो जावे तो भी अपने मार्ग से विचलित न हो । तू एक धनुष से छोड़े हुये बाण के समान है जो थोड़ी देर हवा में उड़ कर ज़मीन पर गिर जाता है ।

ऐ “हाफिज” ! तेरी लेखनी इस बात का धन्यवाद किस प्रकार दे कि तेरी कविता सर्वप्रिय हो रही है ।

प्रभात-काल में बुलबुल ने नये खिले हुये पुष्प से कहा कि घमंड में बहुत पैठिये मत । इस उपवन में आप के समान बहुत से खिल चुके हैं ।

फूल हँस कर बोला कि मैं सच्ची बात पर खेद नहीं करता । बात वास्तव में यह है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से कठोर बात नहीं कहा करता ।

यदि तुम्हें इस सुन्दर सजे हुए प्याले से लाल मदिरा की इच्छा है तो तुम्हें अपनी पलकों को नोक से आँसुओं के मोती पिरोने चाहिये ।

किस मनुष्य ने मदिरा-गृह के दरवाज़े की धूल अपने गालों से नहीं झाँकी उसके मस्तिष्क में प्रणय की सुगन्धि कभी भी नहीं पहुँचेगी ।

दर गुलिस्ताने हरम दोश चो अज लुत्के हवा ।
 जुल्के सुम्बुल जे नसीमे सहरी भी आशुफ़ ॥
 गुफ़म ऐ पसन्दे जम जामे जहां बीनत कू ।
 गुफ़ अफ़सोस कि आँ दौलते बेदार न खुफ़ ॥
 सख़ुने इश्क़ न आनस्त कि आयद बचबौ ।
 साक्रिया मै देहो कोताह कुनी गुफ़ शुनुफ़ ॥
 अरके “हाफ़िज” ख़िरदो सत्र बवरिया अंदास्त ।
 चे कुनद सिर रामे इश्क़े न्यारस्त ने नेहुफ़ ॥

(२३)

मारा जे आरजए तू परवाए खाब नेस्त ।
 बेरुए दिलफ़रेबे तु बूदन सबाब नेस्त ॥
 दर दौरे चश्मे मस्ते तु हुशियार कस न दीद ।
 कू दीदा कस तसव्वुरे चश्मत ख़राब नेस्त ॥
 दर हर कि बिनगरी बग़मे अज तु मुबतिलास्त ।
 यक दिल नदीदा अम कि जी इश्क़त कबाब नेस्त ॥
 हर कू व तेरो इश्क़ तु शुद कुशता बर दरद ।
 ऊ रा दरौ हिसाबे सबालो जबाब नेस्त ॥

गत रात्रि को स्वर्ग के उपवन में जब वायु की उत्तमता से सम्बुल की
 अलकें प्रभात-कालीन वायु के साथ उलझ रही थीं,

तब मैंने कहा कि ऐ जमशेद के सिंहासन ! तेरा प्याला वह कहां है जिसमें
 संसार का सारा दृश्य दिखलाई देता था ?

उसने कहा कि शोक है । वह जानता हुआ सो गया है । प्रेम वार्त्तालाप
 ऐसा नहीं है कि उसका वर्णन किया जावे । ऐ साक़ी ! मदिरा ला । इस बात-
 चीत को समाप्त कर ।

“हाफ़िज” के आंसुओं ने ज्ञान और धैर्य को नदी में बहा दिया वह
 करता ही क्या ! अपनी प्रणय-पीड़ा के रहस्य को गुप्त न रख सका ।

तेरे मितलन की इच्छा में मैंने सोने की भी चिन्ता छोड़ दी है और तेरी
 मोहक छवि के बिना अब अकेले रहना अच्छा नहीं लगता है ।

तेरी मतवाली चितवन सभी को मोह लेती है । ऐसी कोई भी आँख नहीं
 है जो उसके लिये व्याकुल न हो रही हो ।

सभी मनुष्य तेरे कारण शोकित हो रहे हैं । मैंने ऐसा एक भी हृदय नहीं
 देखा जो तेरे प्रणय की अग्नि में जला न जा रहा हो ।

जो कोई मनुष्य तेरे दर्वाजे पर प्रेम रूपी तलवार के घाट उतारा गया
 है, उससे मरने के उपरान्त किसी प्रकार के प्रश्न नहीं किये जायेंगे ।

हाकिम खु जर बबूता दर उफ़ादो ताब थाक़ ।
आशिक़ न बाशद ओँ कि खु जर क बताब नेस्त ॥

(२४)

दर अजल परतवे हुसनत जे तजल्ली दम ज़द ।
इश्क़ पैदा शुदो आतिश बहमा आलमजद ॥
जल्दए कर्द रुख़त दीद मुल्के इश्क़ न दाश्त ।
ऐन आतिश शुद अर्जी ग़ैरतो बर आदम ज़द ॥
अजल मीं रुवास्त कज़ौं शोला ख़रारा अफ़रोज़द ।
बर्क़ ग़ैरत बदरख़शीदो जहाँ बरहम ज़द ॥
मुहई रुवास्त कि आयद बतमाशा गहे राज़ ।
दस्ते ग़ैब आमदो बर सीनये ना महरम ज़द ॥
दीगरौं क़ुर्रए किस्मत हमा बर ऐश ज़दन्द ।
दिले ग़म दीदए मा बूव कि हम बर ग़म ज़द ॥
जाने अलबी हवसे चाह ज़नख़दौं तो दाश्त ।
दस्त दर हल्क़ए ओँ जुल्क़ ख़म अन्दर ख़मज़द ॥

प्रेमी सोने के समान धरिया में पड़कर ताब खा गया । वह प्रेमी जो सोने के समान तपाया गया हो वास्तविक प्रेमी नहीं कहा जा सकता है ।

(२४)

सृष्टि के आदि में तरे प्रतिविम्ब ने चमत्कार का विकास किया, अर्थात् तेरा जलवा प्रगट हुआ । उससे वह प्रेम उत्पन्न हुआ जिसने सारे संसार में आग लगा दी ।

तेरे मुख ने अपनी प्रभा दिखला कर देखा कि स्वर्गीय दूतों में प्रेम था ही नहीं । इस पर उसे क्रोध आगया और इसी से दुःखी तथा लज्जित होकर वह आदम के ऊपर जा पड़ा ।

बुद्धि यह चाहती थी कि उस प्रेम की लपट से अपना दीपक जला ले परन्तु लज्जा की बिजली ने चमक कर सम्पूर्ण संसार को परेशान कर दिया ।

प्रणय का झूठा दावा करने वाले ने यह चाहा कि वह उस रहस्यों से भरे हुए उपवन की सैर करे, परन्तु अदृष्ट से एक ऐसा हाथ निकला जिसने उसे धक्का देकर पीछे लौटा दिया ।

अन्धान्य सभी लोगों ने भोग विज्ञास और आनन्दोपभोग को पसन्द किया परन्तु तेरे दुःखित हृदय ने पुनः उसी पीड़ा को पसन्द किया ।

ऐ साहसी प्राण ! तेरा साहस बहुत ही बड़ा-बड़ा था । इसी लिये उसने उन चूँचरासी अंगकों तक अपना हाथ बढ़ा दिया ।

“हाफिज” ओँ रोज़ तरबनामये इश्क़े तो नविस्त ।
कि क़लम बर सरे असबाब दिले ख़ुर्रम ख़द ॥

(२५)

दर हर हवा कि जुज़ बर्क़ अन्दर तलब न बाशद ।
गर ख़िरमने ब सोज़द चन्दों अजब न बाशद ॥
मुर्गे कि बाग़मे दिल शुद चल्कतेश हासिल ।
बर शाख़सार उम्रश बर्गे तरब न बाशद ॥
दर कारख़ानये इश्क़ अज कुफ़ ना गुज़ीर अस्त ।
आतश करा ब सोज़द गर बूलहब न बाशद ॥
दर महफ़िले कि ख़ुरशेद अन्दर शुमारो ज़ह अस्त ।
ख़ुद रा बुचुर्ग़ दीदन शर्ते अदब न बाशद ॥
दर केश जौ फ़रोशां फ़जलो अदब न बाशद ।
ईजा नसब न गुंजद ओँ जा हसब न बाशद ॥
मै ख़ुर के उम्रे सरमद गर दर जहाँ तबौ याप्त ।
जुज़ बादऐ बहिरती हेचश सबब न बाशद ॥

हाफिज ने प्रेम और आनन्द से परिपूर्ण पत्र उसी दिन लिखा जिस दिन उसने आनन्दोपभोग की सभी सामिमियों को दूर कर दिया ।

(२५)

उस वायुमंडल में, जहाँ प्रेमी को विद्युत् के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं मिलती है, उस स्थान में यदि कोई खलियान जल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

वह जीव, जिसने प्रणय-पीड़ा से अपनी लगन लगा ली है, कभी फलता फूलता हुआ नहीं दिखलाई देगा ।

प्रणय-मन्दिर में ईश्वर के नाम का उच्चारण न करना ही उचित है । जब वहाँ नास्तिकता का निवास होगा तो फिर भय किस वस्तु का रह जायगा । अगर बूलहब (रसूल का चचा) न हो तो आग किसको जला देगी ।

जिस भवन में सूर्य एक कण के समान समझा जाता है वहाँ अपनी प्रतिष्ठा का विचार भी करना अनुचित है ।

जो लोग प्राणों पर खेज जाने के लिये उद्यत हैं उनके धर्म में बुद्धि और ज्ञान के लिये कोई स्थान नहीं है । प्रतिष्ठा, पद और मान का भी कोई काम वहाँ नहीं है ।

स्वर्ग यदि प्राप्त किया जा सकता है तो मदिरा द्वारा । संसार में जीवन यदि अमर बनाया जा सकता है तो उसी के द्वारा । इस्लिये मदिरा पान कर ।

“हाफिज” विस्माल जानों बा चूँ तो तंगदस्ती ।
रोके शब्द कि बा ओँ पैबन्द शब न बाराद ॥

(२६)

दस्त अज तलब न दारम ता कामे मन बर आयद ।
या तन रसद ब जानों या जों जे तन बर आयद ॥
जाँ बर लब अस्तो हसरत दर दिल कि अज लबानश ।
नगिरप्रता हेच कामे जाँ अज बदन बर आयद ॥
अज हसरते दहानश आमद बतंग जानम् ।
खुद कामे तंगदस्तों कि जाँ दहन बर आयद ॥
ब नुमाये रुख कि खल्के बाला शबंदो हैरां ।
ब कुशाये लब कि फरयाद अज मर्दों जन बर आयद ॥
गुफ्तम् ब खेश कज वै बर दार दिल दिलम गुफ्त ।
कार कीस्त ईं कू बा खेशतन बर आयद ॥
ब कुशाये तुरबतम् रा बाद अज वफातो बनगर ।
कज आतिशे दरुनम दूदे कफन बर आयद ॥
बर बूये आँ कि दर बाग या बुद गुले चो रूयत ।
आयद नसोम हरदम गिर्दे चमन बर आयद ॥

ऐ कंजूस “हाफिज” ! यदि तुझे तेरी प्रियतमा मिलेगी भी तो मृत्यु के दिन ।

(२६)

मैं अपनी लगन से हाथ तब तक न खींचूंगा जब तक कि मेरी इच्छा पूर्ण न हो जायगी या तो यह शरीर प्रियतमा तक पहुँच जावेगा या इसमें से प्राण ही निकल जावेंगे ।

प्राण निकलना चाहते हैं पर हृदय में अभी यह लालसा शेष है कि प्रियतमा के ओठों का स्वाद चख लिया जावे ।

उसका मुख देखने की इच्छा से मेरे प्राण आकुल हो रहे हैं । मेरे समान बेचारों का यह अभीष्ट कैसे सिद्ध हो सकता है ।

अपने मुख पर से घूँघट हटा ले जिससे तेरी रूप-सुधा का पान कर संसार चकित हो जावे और प्रेम में मतबाला हो जावे ।

और अपने ओठ खोल दे ताकि सब कोई चिल्लाने लगे । मैंने अपने हृदय से कहा कि अब उसका ध्यान छोड़ दे ।

उत्तर मिला कि यह कार्य बही कर सकता है, जिसे अपने ऊपर अधिकार हो ।

मृत्यु के उपरान्त मेरी समाधि खोलकर देखना कि मेरे हृदय की अग्नि के कारण मेरे कफन से धुआँ निकलता हुआ दिखलाई देगा ।

हर एक शिकन जे जुल्फत पंजाए शरत दारद ।
 चं ई दिले शकिस्ता बा आँ शिकन बर आयद ॥
 बरखोज ता चमन रा अज क़ामतो क़यामत ।
 हम सर्व दर बर आयद हम नारवन बर आयद ॥
 हरदम जु बेवफ़ाया न तबों गिरफ़्त यारे ।
 मायेमो खाके कूयश ता जौं जे तन बर आयद ॥
 गोयंद जिक्र खैरश दर खैले इश्क़बाज़ां ।
 हर जा कि नामे "हाफ़िज़" दर अंजुमन बर आयद ॥

(२७)

दिल्ला बसोज़ कि सोजे तु कारहा बकुनद ।
 नियाजे नीम शबी दफ़ए सद बला बकुनद ॥
 अताबे यारे परी चेहरा आशिक़ाना बकुश ।
 कि एक करिश्मा तलाफ़ी सद जफ़ा बकुनद ॥
 जे मुल्क ता मलकूतश हिजाब बर दारद ।
 हर आँ कि ख़िदमते जामे जहांनुमा बकुनद ॥

तुम्हारे मुख के समान फूल देखने की आशा से वायु दिन भर बाग के चक्कर काटा करती है । तुम्हारी प्रत्येक लट में पचास पचास फंदे पड़े हुए हैं । भला यह टूटा हुआ हृदय उनसे किस प्रकार जीत सकता है ।

तू उठकर चल जिससे कि उपवन में सरो और नारून के वृक्ष उत्पन्न हों । और वह भी तेरे क्रद और तेरे चलने की शोभा से ।

हर समय हृदय-हीन मनुष्यों के समान नये २ मित्रों को बनाना उचित नहीं है । हम उसकी गली की धूल के समान रहेंगे जब तक कि शरीर में प्राण हैं ।

प्रेमियों के जमाव में उसकी कुशलता के समाचार क्यों सुनाये जाते हैं उसमें तो हाफ़िज़ का भी नाम आ जाता है ।

(२७)

ऐ हृदय तू जल । तेरी जलन से अनेक कार्य पूर्ण होंगे और अर्द्धरात्रि की प्रार्थना सहस्रों विपत्तियों को टाल देती है ।

उस अप्सरा के समान सुन्दर प्रेमिका के रूठने को प्रेमियों के समान सहन कर । यदि उसने तेरी तरफ एक भी कृपा-कटाक्ष फेंक दिया तो सैकड़ों फिड़कियों का बदला मिल जायगा ।

वह मनुष्य जो अपने हृदय की सेवा में तत्पर है, बहुत ही अच्छा है । उसके लिये पृथ्वी से लेकर आकाश तक के सारे परदे उठा दिये जायेंगे ।

तबीबे इश्क़े मसीहा दमस्ते मुशकिक़ लक़ ।
 चु दर्द दर तौ न बीनद कियत दबा बकुनद ॥
 तु बा खुदाए ख़ुदाया कारए ओ दिल स़रादार ।
 कि रश्क़ अगर न कुनद मुद्ई ख़ुदा बकुनद ॥
 जे बख़्ते ख़ुफ़ा मलूलम बुवद कि बेदारे ।
 बवक्ते फ़ातहा सबह यक़ दुवा बकुनद ॥
 बसोख़ हाफ़िज़ो बूए जुल्के यार नबुर्द ।
 मगर दलालते ई दौलतश सबा बकुनद ॥

(२८)

वले कि ग़ैब नुमायस्त ज़ामे ज़म दारद ।
 जे ख़ाले कि दमे गुम शुद चे य़ाम दारद ॥
 बख़्तो ख़ाल ग़दायौ मदेह ख़ज़ीनए दिल ।
 बदस्ते शाहो शौ देह कि महतरम दारद ॥
 दिलम् कि लाफ़ तज़रूदज़दी कनू सद शरल ।
 बबूए जुल्क तो बा बादे सुबहदम दारद ॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तैंग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता !

“हाफिज़” प्रणय की अभि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान बार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

ऐसा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहंकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्वन में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीका में बैठा रहता है।

न हर दरक्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए ख़िर्ज़ा ।
 गुलाम हिम्मत सैदम कि ईं क़दम दारद ॥
 रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त ।
 नेहद बपाए क़दह हर कि शश दरम दारद ॥
 ज़े राज़े बहाए मी अकनू चु गिल दरेरा न दार ।
 कि अन्नले कुल बसइते ऐब मुत्तहम दारद ॥
 मुराद दिलज़ कि ज़ोयम कि नेस्त दिलदारी ।
 कि जल्बए नज़रो शेवए करम दारद ॥
 ज़े सिरें ग़ैब कस आगाह नेस्त ऐब मज़ोए ।
 क़दाम महरमे दिल रह दर्ी हरम दारद ॥
 ज़े ज़ेबे ख़िर्कए “हाफ़िज़” ज़े तर्फ़ों ब तवां बस्त ।
 कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद ॥

(२९)

दमे बा ग़म बसर जहाँ यकसर नमी अरज़द ।
 बमै बफ़रोश दिलक़े मा क़र्ज़ी बेहतर नमी अरज़द ॥

प्रत्येक वृक्ष पतझड़ के अत्याचार को सहन नहीं कर सकता । मैं सरो के वृक्ष के साहस का कायल हूँ । उसी में इतनी सहनशीलता वर्तमान है ।

अब वह ऋतु आ गई है कि लोग मतवाले हो कर मदिरा के पैरों पर अपना सर्वस्व लुटा दें । इस समय मदिरा का मूल्य देने में आगा पीछा न कर ।

यह वह प्याला है जो कि गुलाब के समान अपने कोष को छिपाये हुये है । यदि तू ऐसा करेगा तो स्वर्गीय वृत्त सैकड़ों दोष तेरे मत्थे मढ़ देगा ।

मैं किससे कहूँ कि मेरे हृदय की अभिलाषा को पूरा कर दे । एक भी यार ऐसा नहीं है जो मेरी दृष्टि के सम्मुख मुझे लुभाने के लिए आवे और क्या दृष्टि दिखलावे ।

अदृष्ट के रहस्यों को कोई नहीं जानता है और न उनके समझने का प्रयत्न करो । हृदय के रहस्यों से परिचित भी कोई जीव ऐसा नहीं है जो वहाँ तक पहुँच सके ।

“हाफ़िज़” की गुदड़ी की जेब से क्या लाभ उठाया जा सकता है ! हम तो ईश्वर को दूदने का प्रयत्न कर रहे हैं और उसमें मूर्ति वर्तमान है ।

(२९)

दुःख में एक क्षण भी व्यतीत करना संसार के सम्पूर्ण सुखों से कहीं बढ़कर है । हमारी गुदड़ी को मदिरा से बदल ले । गुदड़ी का मूल्य उससे बढ़कर नहीं है ।

बहूए मी करोशानश बजामे दर नमी गीरंद ।
 जहे सज्जादए तक्तबा कि यक साशिर नमी अरजद ॥
 रक्तीवम् सरजनशहा कर्द कर्जी बाबे रखे दर ताब ।
 चे उफाद ईं सरे मारा कि खाके दर नमी अरजद ॥
 तुरा आँ बेह कि रूप खद जे मुश्ताफाँ बपोशानी ।
 कि शावीए जहाँगीरी रामे लश्कर नमी अरजद ॥
 दयारो बार मरदम रा मुक्कीदे मी कुनद वर्ना ।
 चे जाए फारसे कीं मेहनत जहाँ यकसर नमी अरजद ॥
 बिशो ईं नक्शो दिल तंगी कि दर बाजारे यकरंगी ।
 मुश्काहाये गुनागूं मए अहमद नमी अरजद ॥
 शिकोहे ताजे सुलतानी कि बीमे जाँ व रों रह अस्त ।
 कुलाहे दिलकशस्त अम्मा तबर्क सर नमी अरजद ॥
 बस आसाँ मीं नमूद अव्वल रामे दरिया बबोए सूद ।
 गालत करदम कि एक मौजश बसद गौहर नमी अरजद ॥

मदिरा बेचने वालों की गली में तो उसका मूल्य एक प्याला भी नहीं समझा जाता । आखिर यह पवित्रता है क्या वस्तु जो एक प्याले के बराबर भी नहीं है ।

मेरे प्रतिद्वन्दी ने मुझसे बहुत सी तीखी बातें कहकर उस दरवाजे को छोड़ देने की आज्ञा दी । न मालूम मेरे इस सर को क्या हो गया है कि वह बस द्वार को धूल होने योग्य भी नहीं है ।

ऐ प्रियतमा ! तेरे लिये अपने प्रेमियों से मुँह छिपा लेना उत्तम होगा । संसार-विजय से जो प्रसन्नता होती है वह उस चिन्ता की समानता नहीं कर सकती जो सेना के प्रति होती है ।

देश और मित्रों ने मुझे बाँध रक्खा है अन्यथा फारस क्या एक संसार भी फिकर करने योग्य नहीं है ।

इस हृदय के घब्रों को धोकर साफ कर डाल । विश्वास की हाट में यह साफ गुदड़ी लाल मदिरा के ही भाव में ली जाती है ।

बादशाही ताज एक सुन्दर और मनोहर वस्तु है । एक बहुत बड़ी शान की चीज है । उसमें प्राण जाने का भय भी है । परन्तु वह सर दर्द के सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं रखता ।

पहले पहल नदी को देखकर जो भय उत्पन्न होता है वह क्षाम की आशा में बहुत ही सरल भाव होता है । परन्तु मैंने भूल की । उसकी एक लहर सी मोक्षियों से भी बढ़कर है ।

बरो गंजे कनायत जो बकुंजे आफियत बिनशी ।
कि यकदम तंग दिल वूदन ब बहो बर नमी अरज़द ॥
चु "हाफिज़" दर कनाअत कोश अष दुनियाए दू बगुज़र ।
कि यक जौ मिज़ते दोना दो सद मन ज़र नमी अरज़द ॥

(३०)

राहे बे ज़न कि आहे बर साजे आँ तबौज़द ।
शेरे बख़्शवाँ किं बा आँ रतले गिराँ तबौज़द ।
बर आसताने जानाँ गर सर तबौ निहादन ।
गुलबाँगे सर बलन्दी बर आस्माँ तबौज़द ॥
क्रहे ख़मीदए मा सहलत नुमायद अमाँ ।
बर चश्मे दुश्मनाँ तीर अज़ी कर्मा तबौज़द ॥
दर ख़ानक्रह न गुंजद इसरारे इश्क़बाज़ी ।
जामे मये मुग़ाना हम बा मुग़ाँ तबौज़द ॥
दरवेश रा न बाशद नुज़ले सराये सुत्ताँ ।
मायेम व कोहना दलक़े कातश दराँ तबौज़द ॥

जाकर किसी धैर्य के कोने को ढूँढ़ और उसमें बैठकर कुछ देर विश्राम कर ले । थोड़ी सी पीड़ा की बराबरी समस्त संसार की तरी और ख़ुश्की भी नहीं कर सकती ।

"हाफिज़" के समान धैर्य धारण करने का प्रयत्न कर और इस निरुद्योगी संसार से दूर हो जा । नीच मनुष्यों से जौ बराबर भलाई की उम्मीद करना कठिन है ।

(३०)

ऐ बजाने वाले कोई ऐसी गति बजा जिससे हृदय में पीड़ा उत्पन्न हो । और कोई ऐसी रागिनी अलाप कि जिससे मदिरा का एक बहुत बड़ा प्याला पिया जा सके ।

यार की चौखट पर सर रखना एक बहुत बड़ी प्रतिष्ठा की बात है । यदि संयोग से ऐसा किया जा सके तो आनन्द से परिपूर्ण शब्दों से आकाश तक गुंजाया जा सकता है ।

हमारे झुके हुये शरीर को तू अच्छा नहीं समझता परन्तु यह वह धनुष है जिसके बाण से शत्रु का नेत्र फोड़ा जा सकता है ।

इस रहस्यमय हृदय के अन्दर प्रेम के रहस्यों के लिये पर्याप्त स्थान नहीं है । अब मदिरा बेचने वाले की मदिरा का प्याला उसी के साथ पीना चाहिये ।

उदासियों के पास राजसी भवनों को सुसज्जित करने का सामान कहाँ से आया । उनके पास तो केवल गुदबियाँ हैं और वह भी पुरानी, जिनमें आग लगाई जा सकती है ।

अह्ने नज़र दो आलम दर यक नज़र बे बाज़द ।
 इश्क़स्तो दावे अव्वल बर नज़दे जौ तवाँजद ॥
 गर दौलते विसालत रूहाहद दरी कशूदन ।
 सरहा बदीं तख़्त्युल बर आस्तौ तवाँजद ॥
 बा अक़लो फ़हमो दानिश दावे सख़ुन तवाँ दाद ।
 चू जम्मा शुद मञ्चानी गूये बयौ तवाँजद ॥
 शुद रहज़ने सलामत जुल्के तो धी अजब नेस्त ।
 गर राहज़न तु बाशी सद कारवाँ तवाँजद ॥
 अज़ शर्म दर हिजाबम साक़ी तलत्तुफ़ कुन ।
 बाशद के बोसए चंद बरअ्यौ दहौ तवाँजद ॥
 बर चोबयारे चश्मम् गर साया अफ़ग़नद दोस्त ।
 बर खाके रह गुज़ारश आबे रवौ तवाँजद ॥
 बर अज़मे कामरानी फ़ाले बज़न चे दानी ।
 युमकिन के गूये दौलत दरई जहाँ तवाँजद ॥
 ईश्क़ो शबाबो रिन्दी मजमए मुरादस्त ।
 साक़ी बेआ के जामे दर ई जमौ तवाँजद ॥

प्रेमी मनुष्य प्रेमिका के एक ही कटाक्ष पर दोनों जहानों को न्यौछावर कर देते हैं। प्रणय का प्रारम्भ हो गया है। उसके लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगाना चाहिये।

यदि सौभाग्य से तू अपने अगणित प्रेमियों से मिलने के लिये उद्यत हो जाय तो बहुत से सर तेरी चौखट से ही टकरा जायें।

बुद्धि, ज्ञान और विद्या के बल से कविता में मिठास भरी जा सकती है। जब बहुत से विषय इकट्ठे हो जायें तो कविता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

तेरी घुँघराळी अलकों ने मेरे धैर्य को लूट लिया और इसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं है। यदि तू लुटेरा होता तो प्रेमियों के सहस्रों अफ़िलों को लूट सकता था।

मुझे मेंप लग रही है। ऐ साक़ी! तू मेरे ऊपर दया दिखला। तेरी कृपा के आधार पर ही संभव है कि मैं उसके मुख का कुछ चुम्बन ले सकूँ।

मैं अपने मित्र के मार्ग की धूल पर अपनी आँखों के आँसुओं से छिड़काव कर सकता हूँ।

सफलता की आशा रख कर तू अपना कार्य आरम्भ कर दे। मैं नहीं कह सकता हूँ कि परिणाम क्या होगा। सम्भव है कि सौभाग्य की बाज़ी तू इस

प्रेम, युवावस्था और फ़कीरी यह वस्तुयें अभिलाषा की जड़ हैं। साक़ी आगो बड़। इस थोड़े से जीवन में ही एक प्याला पिया जा सकता है।

“हाफिज” बहत्तके कुरआँ कजरिफ्तो शीर बाज आ ।
बाशाद कि गूये दौलत बा मुखलिसौं तबाँजद ॥

(३१)

सालहा दिल तलबे जामे जम अज मा मी कर्द ।
डूँचे खुदाश्त जे बेगाना तमन्ना मी कर्द ॥
गौहरे कज सदके कौनो मकाँ बेरुनस्त ।
तलब अज गुमशुदगाने लबे दरिया मी कर्द ॥
मुश्किले खेश बरज पीरे मुगाँ पुर्दम दोश ।
कू बताइदे नजर हल्ले मोअम्मा मी कर्द ॥
दोदमश खुर्रमो खुशदिल कदहे बादा बदस्त ।
बंदराँ आईना सद गूना तमाशा मी कर्द ॥
गुफ्तमी जामे जहाँ बीं बतू कै दाद हकीम ।
गुफ्तआँ रोजकेई गुम्बदे मीना मी कर्द ॥
आँ हमौं शोब्दहा अक्ल कि मी कर्द आँजा ।
सामरी पेशे असाओ यदे बैजा मी कर्द ॥

ऐ “हाफिज” ! तू धर्म (कुरान) के लिये अपने हृदय की चिन्ता और बनावटी बातों को त्याग दे । कदाचित् तू संत मनुष्यों की संगति को प्राप्त कर सुखी हो सके ।

(३१)

वर्षों से मेरा हृदय उस अमृतमय प्याले (जामे जम) की खोज में था ।
उसे यह भी नहीं ज्ञात था कि वह प्याला उसी के पास वर्तमान था ।

उसे दूसरों से माँगने की क्या आवश्यकता थी ! जो मोती संसार की पहुँच से परे है उसको वह उन लोगों से माँगता था जोकि उचित मार्ग से भटके हुये थे ।

मैं अपनी इस कठिनता को उन साधु महात्मा से कहने गया जोकि अपनी दृष्टि की सहायता से बड़ी २ कठिन पहेलियों को हल कर देते थे ।

मैंने देखा कि वह बड़े ही आनन्द से मदिरा का प्याला हाथ में लिये बैठे हैं । और उसी मदिरा रूपी दर्पण में नाना प्रकार की सैरें देख रहे हैं ।

मैंने उससे पूछा कि यह प्याला तुम्हें किस प्रकार प्राप्त हुआ । उसने कहा कि जिस दिन वह वैद्य यह गेंद (संसार) बना रहा था, उसी दिन उसी से मुझे यह प्राप्त हुआ है ।

बुद्धि वहाँ एक से एक बढ़कर आश्चर्यमय कार्य करके दिखलाती थी । कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में । जैसा हज़रत मूसा और सामरी ने बुद्धि के बल से किया था ।

बेदिली दर हम्रा अहवाले खुदा बा ऊ बूद ।
 ऊ नमी दीदशो अज दूर खुदारा मी कर्द ॥
 गुफ्त आँ यार कजू गश्त सरे दार बलंद ।
 जुर्मश ई बूद कि इसरार हबेदा मी कर्द ॥
 कौचे रुहुल्कुदस अर बाज मद्द करमायद ।
 ईगारों हम बे कुनद उंचे मसीहा मी कर्द ॥
 गुफ्तमश जुल्फ चु जंजीर बुतों अज पए बीस्त ।
 गुफ्त “हाकिम” गिलए अज दिले शौदा मी कर्द ॥

(३२)

सहर बुलबुल हिकायत बासबा कर्द ।
 कि इश्क रूये गुले बामा चहा कर्द ॥
 अजों रंगे रुखम खूँ दर दिल अरु ।
 बर्षी गुल्शन ब खारम् मुब्तला कर्द ॥
 गुलामे हिम्मते आँ नाजनीनम ।
 कि कारे खैर बे रुओ रेया कर्द ॥

एक ऐसा प्रेमी था कि जिसके साथ ईश्वर प्रत्येक अवस्था में वर्तमान रहता था परन्तु वह उन्हें देख नहीं पाता था और दूर से उनका नाम ले ले कर पुकारता था ।

उस यार ने कहा कि उसे (मंसूर) को शूली मिलने का कारण यही था कि वह प्रणय के रहस्यों को समझ गया था और उन्हें खोलता था ।

यदि वह पवित्र आत्मा फिर से सहायता करे तो अन्य लोग भी बड़ी करने लगे जो ईसा किया करते थे (मृतकों को जिला देना और रोगियों को चंगा कर देना ।)

मैंने उससे पूछा कि तेरी यह जंजीर के समान अलकें किस लिये हैं । उसने उत्तर दिया कि “हाकिम” अपने पागल दिल की शिकायत करता था, इसलिये उस पागल को बाँधने के लिये ।

(३२)

सुबह को बुलबुल ने प्रभात कालीन वायु से कहा कि देखो पुष्प के रूप ने मेरी कैसी अवस्था कर दी है । उसके प्रेम में पड़कर मैं इस अवस्था को पहुँच गया हूँ ।

अपने रूप के रंग से उसने मेरे हृदय को रक्त में परिणित कर दिवा है और इस उपवन के द्वारा मुझे काँटों में फंसा दिया है ।

मैं तो उस सुन्दरी के साहस का क्रायल हूँ, जिसने बिना किसी वनावट के हृदय पर अधिकार कर लिया है ।

खशरा बाद-आँ नसीमे सुव्हगाही ।
 कि दर्दे शब नशीनाँ रा दवा कर्द ॥
 मन अज बेगानगाँ हरगिज न नालम् ।
 के बामन हर्चे कर्द-आँ आशना कर्द ॥
 गरअज सुस्ताँ तमा करदम खता बूद ।
 बरअज दिलबर वफा जुस्तम् जफा कर्द ॥
 जे हर सू बुलबुले आशिक दर अफराँ ।
 तनुम दरमियाँ बादे सवा कर्द ॥
 नक्राबे गुल कशीदो जुल्के सुंबुल ।
 गिरहबन्दे कबाए गुंचा वा कर्द ॥
 वफा अज ख्वाजगाँन शहा बामन ।
 कमाले दीनोदीलत वुल वफा कर्द ॥
 बशारत बरबकूये मै फ़रोशाँ ।
 कि "हाफ़िज" तौबा अज जुहदे रेया कर्द ॥

(३३)

इश्क़त न सिरेंसरेस्त कि अज सर वदर शवद ।
 मेहरत न आरिजेस्त कि जाए दिगर शवद ॥

यह प्रभात काल की शीतल वायु उसी को शीतलता प्रदान करे, जिसने रातभर जागने वालों के दुख को दूर करने का प्रयत्न किया है ।

मैं दूसरे लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहता । मेरे साथ तो जो कुछ भी किया है उसी मित्र ने किया है ।

यदि मैंने बादशाह के सम्मुख किसी वस्तु के लिये प्रार्थना की तो वह मेरी मूल प्रमाणित हुई और यदि मैंने प्रियतमा से वादा पूरा करने की आशा की तो उसने मुझ पर अत्याचार किया ।

ऐ प्रेमी बुलबुल ! तू फूल के लिये चारों ओर चिल्लाता फिरता है, व्याकुल हो रहा है, परन्तु वास्तव में यदि किसी ने उसका मज्जा चक्खा तो प्रभात कालीन वायु ने ।

पवन ने फूल के घूँघट को हटा दिया, सम्बुल की अलकों को बिखरा दिया और कलियों को खिला दिया ।

(३३)

तेरा प्रेम कोई साधारण वस्तु नहीं है जिसकी सुधि मुला दी जाय । पर तेरे प्रति मेरे हृदय में जो प्रणय की जड़ जम गई है वह ऐसी नहीं है कि उसे निकाल कर दूर फेंक दिया जाय ।

इश्क़े तू दर दर्ख़ानमो मेहे तू दर दिलम ।
 बारगीर अंदरूँ शुबो वा जौं बदर शवद ॥
 दर्देस्त दर्दे इश्क़ कि अंदर इलाजे ऊ ।
 हरचंद सई बेश तुमाई बतर शवद ॥
 अव्वल यके मनम् केदरीं शह हर शबे ।
 फ़रयादे मन जे इश्क़ व अफ़लाक़ वर शवद ॥
 गर जौं के मन सरिश्क़ फ़िशानम बज़िदा रवद ।
 क़िशते इराक़ जुम्ला बयक़बार तर शवद ॥
 वै दरमियाने जुल्फ़ बदीदम रुख़े निगार ।
 वर हैअते कि अन्न मुहीते क़मर शवद ॥
 गुफ़ूम कि इन्तिदा कुनमज़ बोसा गुफ़ू नै ।
 बगुज़ार ता कि माह जे उक़रव बदर शवद ॥
 ऐ दिल बयाद लालश अगर बादख़ुरा ।
 मगुज़ार हाँ कि मुह्य्यौं रा ख़बर शवद ॥
 “हाफ़िज़” सर अज़ लहद बदर आरद बपाये बोस ।
 गर खाके ऊ बपाए शुमा पए सिपर शवद ॥

मेरे सीने और मेरे हृदय में तेरे प्रेम ने पैदाइश के साथ प्रवेश किया था और अब वह प्राणों के साथ निकलेगा ।

प्रेम एक ऐसा रोग है कि उसकी जितनी ही औषधि की जाय उतनी ही रोगी की अवस्था और भी बुरी होती जाती है ।

इस नगर में केवल मैं ही एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसकी प्रेम में रोने की आवाज़ आकाश तक पहुँच जाती है ।

यदि मैं अपनी आँखों से आँसू बहाऊँ तो एक नदी प्रकट होकर तमाम खेतों को भर दे ।

रात मैंने अपने प्रियतमा के मुख को देखा । उसे काली अलकों ने आच्छादित कर रक्खा था । उसे देखकर ऐसा ज्ञात होता था मानो चन्द्रमा को बादलों ने ढक लिया हो ।

यह हाल देखकर मैंने कहा कि क्या मैं चुम्बन लेना प्रारम्भ करूँ । उसने उत्तर दिया कि तनिक ठहर जाओ । चन्द्र को बादलों में से निकल आने दो ।

हे हृदय ! यदि तू उसके अधरों की याद में मदिरा पीकर मतवाला बनना चाहता है तो इस प्रकार अपना कार्य कर कि बैरियों को ख़बर न होने पावे ।

यदि तুম “हाफ़िज़” का समाधि पर चलो तो वह उसमें से निकल कर तुम्हारे पैरों का चुम्बन ले ले ।

(३४)

इश्क़े तू निहाले हैरत आमद ।
 वस्ले तू कमाले हैरत आमद ॥
 बस ग़र्कए बहरे वस्ल काख़िर ।
 हम बा सरे हाल हैरत आमद ॥
 नै वस्ल बैमाँद व नै वासिल ।
 आँ जा कि ख़याले हैरत आमद ॥
 अज़ हर तरफ़े कि गोश करदम ।
 आवाज़े सवाले हैरत आमद ॥
 यक दिल बनूमों कि दर रहे ऊ ।
 बर चेहरा न ख़ाले हैरत आमद ॥
 शुद मुन्हज़म अज़ कमाले इज़ज़त ।
 आँ रा कि जलाले हैरत आमद ॥
 सर ता क़दमे वजूदे “हाफ़िज़” ।
 दर इश्क़ निहाल हैरत आमद ॥

(३५)

अक्से रूये तु चु दर आइनये जाम उफ़ाद ।
 आरिफ़ अज़ ख़न्दये मए दर तमए ख़ाम उफ़ाद ॥

(३४)

तेरा प्रेम आश्चर्य का पौदा है और तेरा मिलना आश्चर्य की पराकाष्ठा ।

मिलने के लिये बहुत से उत्सुक आश्चर्य में डूब गये । जहाँ विस्मय उत्पन्न हो जाता है,

वहाँ पर न मिलन ही रह जाता है और न मिलने वाला ही ।

हमने जिस तरफ़ भी कान लगाया आश्चर्य के ही शब्द सुनाई पड़े । उसी के विषय में प्रश्न किये जाते थे ।

कोई ऐसा जीव दिखला दो, जिसके मुख पर, इस प्रणय मार्ग में आश्चर्य की छाप न लगी हो ।

जिस किसी ने भी इस आश्चर्य को समझ पाया वह प्रतिष्ठा की बाढ़ में बहने लगा ।

“हाफ़िज़” का जीवन इस प्रेम की पृथ्वी में सर से पाँव तक आश्चर्य के वृक्ष में परिणत होकर रह गया है ।

(३५)

प्याले के दर्पण में तेरे मुख का प्रतिबिम्ब पड़ गया । मदिरा हँस उठी ।
 ज्ञानने वाले ने समझा कि वह उसकी प्रेमिका की हँसी है ।

हुस्ने रूये तु बयक जलवा कि दर आईना क़द ।
 ईं हमा नक्श दर आइनये औहाम उफ़ाद ॥
 चेकुनद कज़ पये दौरों न रबद चूँ परेकार ।
 हर कि दर दायरये गरदिशे अय्याम उफ़ताद ॥
 मन जे मसजिद ब ख़राबात न खुद उफ़तादम ।
 ईं नम अज़ अहदे अज़ल हासिले फ़रजाम उफ़ाद ॥
 आँ शुद ऐ ख़वाजा कि दर सौमुआ बाज़म बीनी ।
 कारे मन बारुख़े साक्की व लवे जाम उफ़ाद ॥
 ईं हमाँ अक्से मयौ नक्शे मुख़ालिफ़ कि नमूद ।
 यक फ़रोगे रुख़े साक्कीस्त कि दर जाम उफ़ाद ॥
 ग़ैरते इश्क़ ज़बाने हमाँ ख़ासाँ बबुरीद ।
 कज़ कुजा सिरे ग़मश दर दहने आम उफ़ाद ॥
 हर दमश बा मने दिल सोख़्ता लुफ़े दिगर अस्त ।
 ईं ग़दा बीं कि चे शाइस्तये इनआम उफ़ाद ॥

बस वह उससे मिलने के लिये व्यर्थ के विचारों में पड़ गया। तेरे मुख ने दर्पण में जैसे ही अपनी शोभा दिखलाई वैसे ही उसके साथ ही साथ उसी दर्पण में संसार की सारी विचित्रतायें अंकित हो गईं।

जो मनुष्य समय रूपी चक्कर में पड़ गया है वह उसके साथ चक्कर लगाने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता है।

मैं स्वयं पूजागृह से मदिरागृह में नहीं चला आया हूँ। मैंने जो सृष्टि के प्रारंभ में प्रतिज्ञा की थी यह उसी का फल है।

महाशय जी ! वह समय व्यतीत हो गया जब आप मुझे पूजागृह में देखते थे। अब मैं प्रणय की पूजा करने लगा हूँ और मेरी पहुँच साक्की के चेहरे और प्याले के ओंठों तक हो गई है।

मदिरा की यह झलक और उसमें एक दूसरे के विरुद्ध दिखलाई देने वाले चित्र साक्की के ही दृष्टि फेरने के परिणाम हैं। जैसा कि प्याले के दर्पण में हुआ है।

प्रणय की शरमिन्दगी ने तमाम मुख्य मुख्य और बड़े बड़े आदमियों की जुबान काट डाली थी। आश्चर्य यह होता है कि उसके प्रेम का रहस्य साधारण मनुष्यों को कैसे मालूम हुआ।

देखो तो यह दीन हीन उसका पुरस्कार पाने के योग्य किस प्रकार हो गया है कि उसके साथ वह सदैव कोई न कोई दयाभाव प्रकट किया करता है।

मन के दर जुम्रये उश्शाक़ बरिन्दी अलमम ।
 तबले पिन्हाँ चे ज़नम तश्ते मन अज़ बाम उफ़ाद ॥
 ज़ेरे शम्शीरे ग़मश रक्कम कुनौ बायद रफ़ ।
 कौ के शुद कुश्तये ऊ नेक सर अंजाम उफ़ाद ॥
 दर ख़मे जुल्फ़े तु आवेख़्त दिल अज़ चाहे ज़क़न ।
 आह कज़ चाग़ वरूँ आमदो दर दाम उफ़ाद ॥
 पाक बीं अज़ नज़रे रास्त व मक़सूद रसीद ।
 अहबल अज़ चश्मे दो बीं दर तमये ख़ाम उफ़ताद ॥
 सूफ़ियाँ जुम्ला हरीफ़न्दो नज़र बाज़ वले ।
 जीं मियाँ “हाफ़िजे” दिल सोख़्ता बदनाम उफ़ाद ॥

(३६)

आशिक़ों रा दर्द दिल बिस्वार मी बायद कशीद ।
 दागे यारो गुस्सये अग़यार मी बायद कशीद ॥
 दाद खाही रा कि मी खाहद ज़े सुल्ताँ दादे ख़ेश ।
 इन्तज़ारे बामदादे वार मी बायद कशीद ॥

प्रेमियों में मेरा नाम एक बड़े और मतवाले प्रेमी के नाम से प्रसिद्ध है । अब जब मैं इस प्रकार कलंकित हो गया हूँ तो इस भेद को छिपाने से क्या लाभ ।

उसकी प्रेम की तलवार के नीचे बड़ी ही प्रसन्नता से जाना चाहिये । उसके हाथ से जिसकी मृत्यु होती है वह एक बहुत ही उत्तम परिणाम पर पहुँचता है ।

मेरा दिल पहिले तेरी ठुड़ी में आ कर अटक गया था । अब वहाँ से निकला तो तेरी काली लटों के फन्दे में फँस गया । शोक ! कुँ से निकल कर वह जाल में जा पड़ा ।

ज्ञानी मनुष्य अपनी तीक्ष्ण और विचारपूर्ण दृष्टि के कारण अपने लक्ष्य पर पहुँच गया । परन्तु वह मनुष्य जिसकी दृष्टि ठीक न थी और जो एक को दो समझता था, वह बीच में ही रह गया ।

साधारणतः सभी साधु इस जमाव में योग देने वाले और प्रेमी हैं । परन्तु दुखिया हाफ़िज़ ही के सर बदनामी का टीका लग गया है ।

(३६)

प्रेमियों को बहुत ही सहनशील होना उचित है । उनको विरह की पीड़ा और प्रतिद्वन्द्वियों की सफलता का शोक सभी कुछ सहन करना चाहिये ।

जो लोग न्यायालय से उचित न्याय की आशा रखते हैं उन्हें प्रभात के दरबार-आम का इंतज़ार करना चाहिये ।

अज बराये दीदने दीदारे गुल यारे अजीज ।
 खारिये देहकानो जौरे खार मी बायद कशीद ॥
 जुल्फ रा आहिस्ता गर्दी वज्रफाँरा न कुश ।
 सिल्क रंजूरस्त वर हिंजार मी बायद कशीद ॥
 हर कि आशिक शुद अगर चे नाजनीने आलमस्त ।
 नाज ऊ कै रास्त आयद बार मी बायद कशीद ॥
 दर दिले शबहाये तार अज इशितयाक़े रूये यार ।
 आहे सदर्दो नालहाये ज़ार मी बायद कशीद ॥
 “हाफिज” चन्दी अलम मारा दर अय्यामे फिराक़ ।
 वर उमीदे वादये दोदार मी बायद कशीद ॥

(३७)

मुआशराँ गिरह अज जुल्फे यार बाज कुनेद ।
 शबे ख़ुशस्त बर्दी वस्तश दराज कुनेद ॥
 हज़ूरे ख़िलवते उंसस्त व दोस्ताँ जमा अंद ।
 वाँ यकाद बख़ानेद व दर फ़राज कुनेद ॥
 रबाबो चंग बबाँगे बलंद मी गोयंद ।
 कि गोशे होश व पैगामे अह्ले राज कुनेद ॥

उस पुण्य के समान सुन्दर प्रियतमा का मुख देखने के लिये बहुत से कष्ट और कंटकों के अत्याचार सहन करने चाहियें ।

इन काली अलकों को तनिक धीरे से हटाओ । और निर्बलों को मत मारो । यह प्रेम के रोग से पीड़ित क़ैदियों की पंक्ति है । इनके ऊपर इतने कठोर मत बनो ।

प्रेमी इस संसार में चाहे सभी से अधिक नाज़ुक क्यों न हो लेकिन उसको यह दिखलाना न चाहिये । उसे तो कष्ट मेलने के लिये उद्यत होना चाहिये ।

अँघेरी रातों में प्रेमिका की स्मृति में ठंडी र आहें भरना और प्रेम-व्यथा में आँसू बहाना चाहिये ।

ऐ “हाफिज” प्रेमिका के मिलने की आशा में प्रेमी को बिगहकाल में यह सब कष्ट उठाना चाहिये ।

(३७)

ऐ मित्रो ! यार की घुँघराली अलकों के पेचों को सुलभाओ । इस आनन्दमयी रजनी में, इसी बहाने से उससे मिलन का समय बढ़ा कर लो ।

इस हृदय को प्रसन्न करने वाले एकान्त स्थान में आकर उपस्थित हो । अन्वान्य सभी मित्र भी इकट्ठे हो रहे हैं ।

नज़र बन्द करने का मंत्र पढ़कर द्वार को बन्द कर लो । डोलक और मृदंग दोनों ऊँचे स्वर से कह रहे हैं कि रहस्यवालों की बातें तनिक ध्यान से सुनो ।

नखुस्त मोएजए पोर सोहबत ईं हर्फस्त ।
 कि अज मुसाहबे ना जिस एहतराज कुनेद ॥
 बजाने दोस्त कि गम परदए शुमाँ न दरद ।
 गर एतमाद बर अस्ताफे कारसाज कुनेद ॥
 मियाने आशिको माशूक फर्क बिस्तारस्त ।
 चु यार नाज तुमायद शुमा नियाज कुनेद ॥
 हर औं कसे कि दर्ी हल्का जिंदा नेस्त बइश्क ।
 बरू चु मुर्दा बफतवाए मन नमाज कुनेद ॥
 अगर तलब कुनेद इनाम अज शुमा "हाफिज" ।
 हवालतश बलबे यारे दिलनवाज कुनेद ॥

(३८)

मनो इंकार शराब ईं चे हिकायत वाशद ।
 गालिब न ईं कर्म अवलो किकायत वाशद ॥
 मनकि शबहा रहे तकवा जदा अम बादको चंग ।
 नागहाँ सर बगह आरम चे हिकायत वाशद ॥
 जाहिद अर राह बरिंदी न बरद माजूरस्त ।
 इश्क कारेस्त कि मौकफे हिदायत वाशद ॥

बहुत ही अनुभवी साधु की शिक्षा यह है कि बेजोड़ साथी से सदैव अलग रहो ।

यार के प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रणय में तुम्हारे सिर पर कलंक का टीका कभी भी नहीं लगेगा ; यदि तुम ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रखो ।

प्रेमी और प्रेमिका में बहुत बड़ा भेद है । जब प्रेमिका अपनी मान लीला दिखलावे तो तुम उसको मनाने के लिये विनती किया करा ।

इस जमाव में जिस मनुष्य के हृदय में लगन नहीं है, जाओ मैं आज्ञा देता हूँ, उसे मृत समझकर उसके ऊपर मंत्र पढ़ो ।

"हाफिज" यदि तुमसे कोई पुरस्कार मांगे तो उसे उसी मनोमोहक यार के पास भेज देना ।

(३८)

यह कैसे हो सकता है कि मैं मदिरा-पान से इन्कार करूँ । जहाँ तक मैं समझता हूँ मुझमें इतनी बुद्धि और ज्ञान है ।

मैंने इस ेम जाल में पड़कर बहुत सो रातें जागकर व्यतीत की हैं । अब यदि मैं ठीक मार्ग पर आजाऊँ तो यह कौन सी बड़ी बात होगी ।

परहेजगार यदि अपने मार्ग से विचलित न हो तो वह समा करने योग्य है । प्रेम एक ऐसी वस्तु है कि वह उसी को प्राप्त होता है जिसे ईश्वर देता है ।

बंदए पोरे मुरानेम कि जे जेहूम बरिहौंद ।
 पीरे मा हर चे कुनद ऐन विलायत बाशद ॥
 ता बग़ायत रहे मैखाना नमी दानिस्तम ।
 वर्ना मस्तूरीए माँ ता बचे ग़ायत बाशद ॥
 जाहिदो उज्बो नमाखो मनो मस्तीओ नियाज ।
 तातुरा ख़द जे मियाँ बा कि इनायत वाशद ॥
 दोश अर्जी गुस्ता नखुस्तम कि फ़क़ोहे मी गुफ़्त ।
 “हाफिज” अर मस्त बुवद जाए शिकायत बाशद ॥

(३९)

मनो सलाहो सलामत कसीं गुमाँ नबरद ।
 कि कस बारिंद खराबात जन्ने आँ नबरद ॥
 मनो मुरक्कए देरीना बहे आँ दारम ।
 कि जेरे ख़िर्का कश मै कसीं गुमाँ नबरद ॥
 मुबाश ग़ारा बइल्मो अमल फ़कीह मुदाम ।
 कि हेच कस जे क़ज़ाए ख़दाए जाँ न वरद ॥
 मशो करेफ़ए रंगो वू क़दह दर कश ।
 कि जंगे ग़म जे दिलत जुज मए मुगाँ नबरद ॥

मैं तो अपने गुरु का सेवक हूँ जिसने ज्ञान का उपदेश देकर मुझे नादानी से बचाया है। मेरा गुरु जो कुछ करता है वह सब सत्य होता है।

मैं यह भी नहीं जानता था कि मदिरागृह किस दिशा में है। नहीं तो मैं अभी तक उससे इतनी दूरी पर क्यों पड़ा रहता।

परहेज़गार अपने कर्मकांड का गर्व करे और मैं अपने ज्ञान-ध्यान में मग्न रहूँ; देखूँ तो हम दोनों में से वह किसपर दयादृष्टि दिखलाता है।

(३९)

मुझको कोई मनुष्य चरित्रवान् और भला नहीं समझेगा; क्योंकि मदिरा-भक्त पर किसी को यह गुमान भी नहीं हो सकता।

मैंने अपना यह पुराना भेष (गुदड़ी) इसलिये नहीं बदला है कि उसकी ओट में मदिरा पीता रहूँ और किसी को मेरे इस काम की ख़बर भी न हो।

हे ज्ञानी ! अपनी बिद्या का घमंड न कर। ईश्वर की आज्ञा से कोई भी नहीं बच सकता।

इस दिखावटी सौन्दर्य पर मोहित न हो और मदिरा पान कर। क्योंकि जबतक कोई मतवाला नहीं होजाता तब तक उसके मन का मैल दूर नहीं होता है।

मने जईक चेगूना गमे तु बर दारम ।
 कि बारे हिअ तुई जाने नातवों न बरद ॥
 अगर्चे दीदा बूद पासवाने तू ऐ दिल ।
 बहोश वाश की नक्रदे तू पासबां न बरद ॥
 बसई कोश अगर मुज्द बायदत ऐ दिल ।
 कसे कि कार न कर्दे उअ रायगों न बरद ॥
 सखुन ब निज्दे सखुनदों अदा मकुन “हाकिज” ।
 कि तोह्फा कस दुरो गौहर ब बहो कों न बरद ॥

(४०)

नक्रद सूफी न हमों साफिए बेगश वाशद ।
 ऐ वसा खिर्का कि शाइस्तए आतश बाशद ॥
 सूफिए मा कि जे विरदे सहरी मस्त शुदे ।
 शामगहश निगरों वाश कि सरखश बाशद ॥
 खुश जुवद गर महके तजरवा आयद बमियों ।
 तासिया रू शवद हर कि दरगश बाशद ॥
 खत्ते साक्री गर अजी गूना ज़नद नक्रश बर आव ।
 ऐ बसा रुख कि ब ख़ताबा मुनक्क़श बाशद ॥

मैं दुर्बल हूँ, तेरे विरह में किस प्रकार जीवित रह सकता हूँ। मेरे प्राण यह भार सहन करने में असमर्थ हैं।

ऐ हृदय ! नेत्र तेरी रखवाली अवश्य कर रहे हैं, पर इस पर भी तुझे सावधान रहना उचित है। कहीं चौकीदार तेरे मंचित धन में हाथ न लगा दे।

ऐ हृदय ! यदि तू मजदूरी करने का इच्छुक है तो परिश्रम करने का प्रयत्न कर। जो परिश्रम नहीं करता है उसे व्यर्थ में मजदूरी नहीं मिलती है।

जो भेद को समझने वाले हैं, ऐ “हाकिज” ! तू उनके पास भेद को समझने के लिए मत जा। समुद्र और खान के पास मोती और जवाहर लेकर उपस्थित होना उचित नहीं है।

(४०)

साधुओं की सभी चीज़ें खरी नहीं होती हैं। बहुत सी गुदड़ियाँ ऐसी होती हैं जो जला डालने के योग्य होती हैं।

हमारा बह उदासी जो प्रभात को प्रार्थना में मग्न रहता है, तनिक देखना सन्ध्या को किस प्रकार मदिरा में मतवाला हो जाता है।

अनुभव की कसौटी पर प्रत्येक कार्य को कसना चाहिये, जिससे उनमें जो कुछ खुटाइयाँ हों दूर हो जावें।

साक्री यदि कपोलों पर अपने हाथ से लिखने लगे तो बहुत से मुख रक्त से रक्तवर्ण हो जायेंगे।

गमे दुनियाए दनी खुरी बादा बखुर।
 हैफ बाशद दिले दाना कि मुशब्बश बाशद ॥
 नाज परवर्दे तनाम न बुरद राह बदीस्त।
 आशिको शेवए रिंदाने बला कश बाशद ॥
 दल्को सज्जादए “हाफिज” बेबरद बादा फरोश।
 गर शराबज कफे औ साक्रिए महबश बाशद ॥

(४१)

बा मुहई मगोयेद असरारे इश्को मस्ती।
 ता बेखबर बे मोरद दर रंजे खुद परस्ती ॥
 आशिक शौवर ने रोजे कारे जहां सर आयद।
 नाखौंदा नक्शे मकसूद अज कारगाहे हस्ती ॥
 बा जोफो नातवानी हम चू मसीम ख्शबाश।
 बीमारे अन्दरी रह खुशतर जे तन्दुरुस्ती ॥
 दर गोशये सलामत मस्तूर चू तबौ बूद।
 ता नरगिसे तो गोयद बा मारमूजे मस्ती ॥

तू बेचारा इस संसार की चिन्ताओं में कब तक व्यस्त रहेगा। सब कुछ छोड़कर मदिरा पान कर और मतवाला हो जा। समझने बूझने वाला मनुष्य यदि इस प्रकार की भूल करे तो बड़े दुख की बात है।

जो बड़े सुख में पालित-पोषित होता है, वह कठिनाइयों से दूर भागता है। यार तक पहुँचने के लिये ऐसे आदमी की आवश्यकता होती है जो विपत्तियों से नहीं घबड़ाता।

“हाफिज” का सर्वस्व उसी साक्री के हाथ लगेगा। यदि उसको उसी मतवाले साक्री के हाथ की मदिरा मिले।

(४१)

प्रेम की मूठी डींग मारने वालों से प्रणय और मस्ती के रहस्यों को प्रगट न कर। उसकी नादानी को दूर करने का प्रयत्न मत कर।

उसे अपने ही विश्वास के रोग में घुल घुल कर मरने दे। प्रेमी बन जा, नहीं तो यह संसार एक दिन मिट जाने को है। और तू इस क्षणभंगुर जगत से बिना ही अपने अभीष्ट को प्राप्त किये हुए चल देगा।

इस दुर्बल और रोगी जीवन में तुझे स्वस्थ रहने में इस प्रकार प्रसन्न रहना चाहिये जैसे कि प्रभात-वायु। कारण कि इस प्रेम-पथ में अस्वस्थ ही बैठा रहना उत्तम होगा।

मला हम प्रेमी लोग इस संसार के एक कोने में कुशलता पूर्वक कैसे बैठे रह सकते हैं। तेरी आँख का इशारा तो हमें मतवाले बनने को कह रहा है।

बर आस्ताने जानों अज आसमाँ मयन्देश ।
 कज औजे सर बलंदी उफ़ी व खाके पस्ती ॥
 इशकत बदस्ते तूफ़ाँ खाहद सुपुर्दन ऐ जौँ ।
 चू वक्त अजी कशाकश पिंदाश्ती कि जस्ती ॥
 खारर चे जाँ बकाहद गुल उअ्रे औँ वखाहद ।
 सहलस्त तस्ल्लिए मै दर जम्बे जौँके मस्ती ॥
 सूफी पियाला पैमाँ “हाफिज” करावा परदाज ।
 ऐ कोतह आस्तीनां ता कै दराज दस्तो ॥

(४२)

ऐ दिल मबाश खाली यक दम जे इश्को मस्ती ।
 वाँगह वरो के रस्ती अज नेस्ती व हस्ती ॥
 गर खिरकापोश बीनी मशगूले कारे खुद वाश ।
 हर क्लिए कि वाशद बेहतर जे खुदपरस्ती ॥
 दर मजहबे तरीकत खामी निशाने कुफ़स्त ।
 आरे तरीके रिंदी चालाकी अस्त व चस्ती ॥

प्यारे के द्वार पर पहुँचकर यह मत सोचना कि आसमानी विपत्तियाँ तुम्हें प्रतिष्ठा के शिखर से अप्रतिष्ठा के गढ़े में गिरा देंगी ।

ऐ प्राण ! तुझे यह प्रेम तूफ़ान में फँसा देगा । क्या तू यह समझता है कि जिस प्रकार बिजली अपनी क्षणिक प्रभा दिखलाकर आकाश में विलुप्त हो जाती है उसी प्रकार तू भी इस तूफ़ान के चक्र में पड़कर विलीन हो जायगा ?

कण्टक प्राण को कष्ट देता है परन्तु पुष्प उसे सुख पहुँचा कर उसका बदला चुका देता है । मदिरा की तेज़ी व कड़वाहट उसके नशे के आनन्द के कारण सहन कर ली जाती है ।

सूफी ! (फकीर) तू तो आनन्द से प्याले पर प्याला उड़ाता जा रहा है परन्तु “हाफिज” मटक खाली किये दे रहा है । ऐ प्यारे ! तुम कब तक यह अत्याचार करते रहोगे ?

(४२)

ऐ हृदय ! तू एक क्षण भी प्रेम और मस्ती से रहित न रह । इससे तू स्वतंत्र हो जायगा । कारण कि तू संसार और मस्ती से स्वतंत्र हो जायगा ।

यदि तू किसी को चिथड़ों में देखे तो उसी समय अपना कार्य आरम्भ कर दे । क्योंकि अपने ही आप धर्म पर चलने की अपेक्षा गुरु के बतलाये मार्ग पर चलना अच्छा है ।

सुधार-मार्ग अथवा धर्म में देर करना धर्म के विरुद्ध है । एक फकीर को सदैव आलस्य से दूर रहकर कार्य करने के लिये उद्यत रहना चाहिये ।

ता अन्नलो फल बीनी बे मारफत नशीनी ।
 थक नुकाअत बगोयम खुदरा मर्बी कि रस्ती ॥
 ओं रोज दीदा बुदम ईं फितनहा कि बरखास्त ।
 कज सरकशी जेमानी वा मा नमी नशस्ती ॥
 सुल्ताने मन खुदा रा जुल्फत शिकस्त मारा ।
 ता कै कुनद सियाही चंदीं दराज दस्ती ॥
 फर मजलिसे मुगानम दोशों सनम् चे खुश गुलु ।
 वा काफिरीं चे कारत गर बुत नमी परस्ती ॥
 अज राहे दीदा “हाफिज” ता दीदा जुल्फे पस्तत ।
 वा जुम्ला सर बलंदी शुद पायमाले पस्ती ॥

(४३)

ऐ बे खबर वकोश कि साहब खबर शवी ।
 ता राहरौ न वाश कि राहवर शवी ॥
 दस्तज मसे वजूद चु मर्दाने रह बुशोद ।
 ता कीमियाए इश्क बेयाबी व जर शवी ॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्र में रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी । मैं तुझे एक गुरु बताए देता हूँ । स्वयम् कभी शिक्षक मत बनना ।

बस फिर स्वतंत्रता तेरी है । उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा ।

ऐ मेरे सम्राट ! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा । तेरी अलकों ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है । यह काली नागिनें कब तक डसती रहेंगी ? मेरी कुछ तो सुनाई कर ।

रात को मदिरा बेचने वालों की सभा में उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्मियों से क्या सम्बन्ध है ?

“हाफिज” बड़ा ही प्रतिष्ठित था । परन्तु जब से उसने तेरी बिखरी हुई अलकों को देखा है बरवाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है ।

(४३)

ऐ अज्ञानी ! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे । जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा ।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे । इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा ।

खाबो खुरत जे मर्तबए खेश दूर कर्द ।
 "अंगारसी बखेश कि बे खाबो खुर शबी ॥
 गर नूरे इश्क़े हक़ बदिलो जान्त ओकुद ।
 बिछाह कज आफ़ताबे फ़लक़ ख़ब तर शबी ॥
 यक़दम गरीक़ बहे खुदा शो गुमो मबर ।
 कज आब हक़ बह बयक मूए तर शबी ॥
 अज पाए ता सरत हमा नूरे खुदा शबद ।
 दर राहे जुल जलाल चो बेपाओ सर शबी ॥
 बज्हे खुदा अगर शबदत मंजरे नज़र ।
 जी पस शके निर्माद कि साहब नज़र शबी ॥
 बुनियाद हस्तिए तु चू ज़ेरो ज़बर शबद ।
 दर दिल मदार हेच कि ज़ेरो ज़बर शबी ॥
 दर मक़तबे हक़ायक़े पेशे अदीबे इश्क़ ।
 हाँ ऐ पिसर बकोश कि रोज़े पिदर शबी ॥
 गर दरसरत हवाए विसालस्त "हाफ़िज़" ।
 बायद कि ख़ाक़ दरग़हे अहे हुनर शबी ॥

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते हैं । तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जलि दे देगा ।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय में हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की रापथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा ।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक बाल को भी नहीं भिगो सकेगा ।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा । पर यह होगा तभी जब तू परमेश्वर के मार्ग में निज को घुला देगा ।

यदि ईश्वर की शक्त सदैव तेरी दृष्टि में रहने लगी तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा बन जायगा ।

उस समय यदि तेरा जीवन विनष्ट भी हो जाय तो तुझे यह न समझना चाहिये कि तू नाश को प्राप्त होगया । यदि तू ऐसा समझ लेगा तो वास्तव में तू नष्ट ही हो जायगा ।

ऐ डरपोक़ दिल ! तू सत्य की पाठशाला में प्रेम को अपना गुरु बनाकर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर, ऐसा करने से तुझे एक दिन पिता बनने का पद प्राप्त हो सकता है ।

ऐ "हाफ़िज़" ! अगर तेरी हार्दिक अभिलाषा मिलने की है तो तू मालिक के द्वार की धूल बन जा ।

(४४)

बेरो ऐ तबीबम अज सर कि खबर जे सर न दारम ।
 बखुदम दमे रिहा कुन कि जे खुद खबर न दारम ॥
 बैयादतम् क्रइम नेह कि जे बे खुदी शवम बेह ।
 मै नाबो नोश वहमदेह कि रामे दिगर न दारम ॥
 रामम् अर खुरी अर्जी पस न कुनम् जे राम खुरी बस ।
 नजरे कि जुज तु बाकस बसरत नजर न दारम ॥
 दिगरत मगू कि खाहम् जे बरखुदत बिरानम ।
 तू बरीनो मन बरानम कि दिलज तु बर नदारम् ॥
 जे ज़रत कुनन्दे जेवर ब ज़रत कशद दर बर ।
 मने बेनबाए मुजतर चे कुनम कि ज़र न दारम ॥
 बमन अर्चे मै परस्तम् मरेहेद मै कि मस्तम ।
 मबरेद दिल जे दस्तम कि दिले दिगर न दारम ॥
 दिले "हाफिज" अरबजोई रामे दिल जे तुंद खूई ।
 चु बगोएदत बगोई सरे दर्द सर न दारम ॥

(४४)

ऐ बैद्य ! मेरे सिरहाने से उठ जा । तू दवा कैसे देने आया है ? मुझे तो अपने शिर का भी होश नहीं है । मैं अपने आपे से बाहर हूँ । मुझे थोड़ी देर इसी अवस्था में पड़ा रहने दे ।

मित्र ! मेरी कुशलता पूछने के लिये आ जा ताकि मैं इन बन्धनों से छुटकारा पा जाऊँ । मुझे निर्मल और मोठी मदिरा पीने के लिये दे । और इस हृदय में अब कोई चिन्ता नहीं है ।

मैं तेरे अतिरिक्त और किसी पर दृष्टि भी नहीं डालता । यदि तू अब भी मुझे देखने आ जाता तो मैं सम्पूर्ण दुखों को सहन करने के लिये उद्यत हूँ ।

तेरे शिर की शपथ, तेरे अतिरिक्त मेरे लिये दूसरा कोई नहीं है । बस एक दृष्टि कृपा की चाहिये । मुझसे फिर यह न कहना कि मैं तुझे निकालना चाहता हूँ अपने पास रखना नहीं चाहता । यदि तूने मुझे अपने पास न रखने का प्रण कर लिया है तो मैंने तेरे साथ रहने का ।

सेने से ही तेरे आभूषण बने हैं और सुवर्ण से ही तू प्राप्त होता है । मैं निर्धन दुखिया हूँ । कल क्या मेरे पास धन ही नहीं है ।

मैं मदिरा-मत्त हूँ पर अब मुझे न चाहिये । मैं मस्त हो रहा हूँ । मेरे हाथ से मेरा दिल मत छीनो । मैं दीन हूँ और मेरे पास दूसरा दिल नहीं है ।

तू हाफिज का प्यारा नहीं बनता और जब वह तेरे सम्मुख नए दिल की पीड़ा की कहानी रखता है, तब तू क्रोध में आकर कह देता है कि मुझसे यह शिर की पीड़ा सहन नहीं की जाती है ।

(४५)

फाश मी गोयमो अज गुफये खुद दिल शादम् ।
 बन्दये इश्कमो अज हर दो जहाँ आजादम् ॥
 तायरे गुल्शाने क़ुदसम् चे देहम शरह किराक ।
 के दर्री बाँगे ह्मादिसा चँ उफ़ादम् ॥
 मन मलक बूदमो किरदौसे बरी जायम् बूद ।
 आदम् आर्बद दर्री दैरे ख़राब आबादम् ॥
 सायए तूबाओ दिल जूये हूरो लबे हौज ।
 बहवाये सरे कूये तु बेरक़ अज यादम् ॥
 नेस्त बर लौहे दिलम् जुज अलिके कामते यार ।
 चे कुनम् हर्फे दिगर याद न दाद उस्तादम् ॥
 यक नज़र कर्देमो सद तीरे मलामत ख़ुर्दम् ।
 दानये चीदमो दर दामे बला उफ़ादम् ॥
 कौकबे बग़्ते मरा हेच मुनज्जिम न शनास्त ।
 यारब अज मादरे गेती बचा ताले जादम् ॥
 मीख़ुरद ख़ूने दिलम् मर्दुमके चश्मो सज़ास्त ।
 के चेरा दिल बजिगर गोशये मर्दुम दादम् ॥

(४५)

मैं बिल्कुल सत्यभाव से कहता हूँ और इस कहने पर प्रसन्न हूँ कि मैं प्रेम का अनुचर हूँ और दोनों जहान की मुझे कोई चिन्ता नहीं है ।

मैं विपन्न बाटिका का एक पत्नी हूँ । विरह का क्या वर्णन करूँ और कैसे कहूँ कि मैं इस विपत्ति में कैसे पड़ गया ।

मैं स्वर्गीय दूत था और स्वर्ग मेरा निवास स्थान था । आदम मुझको इस भग्न गृह में ले आया ।

स्वर्ग के वृत्त और स्वर्ग के सम्पूर्ण आनन्द तेरी गली के प्रेम में बिस्मृत सागर में विलुप्त हो गये ।

मेरे हृदय पटल पर प्रियतम के स्वरूप का अलिक लिखा हुआ है । और उस पर कुछ अंकित ही नहीं है । मैं कर ही क्या सकता हूँ, गुरु ने मुझे दूसरा अच्छर बतलाया ही नहीं है ।

केवल एक ही बार देख लेने पर, मेरे हृदय में सहस्रों तीखे बाण चुभ गये । वह घायल हो गया । और केवल एक ही दाना ताड़ लेने के कारण मैं विपद्-जाल में फँस गया ।

किसी भी ज्योतिषी ने मेरे नक्षत्रों को नहीं पहचाना । भगवन् ! मैं किस घड़ी में इस संसार में उत्पन्न हुआ था ।

मेरा दिल मुझे धिक्कारता है कि तूने किसी मनुष्य को प्यार-व किया, एक कोने को क्यों प्यार किया है ।

पिदरो मादरे मन बन्दा न बूदन्द बले ।
 मन तुरा बन्दा शुदम गर्बे ब अस्ल आजादम् ॥
 ता शुदम हल्का ब गोशे दरे मैखानये इश्क ।
 हरदम आयद गमे अज नौ बमुबारकबादम् ॥
 पाक कुन चेहए “हाफिज” ब सरे जुल्क अज अश्क ।
 बर्ना ई सैल बमादम् ब बरद बुनियादम् ॥

(४६)

मस्तम् अज बादए शब्बाना हनोज ।
 साकिए मा नरफ़ खाना हनोज ॥
 मैकशीओ बरामूजा मी गोई ।
 तौबा करदो जे इश्क या न हनोज ॥
 नाजनीनो जे इश्के तू बिल्लाह ।
 आलमे तौबा कर्द मा न हनोज ॥
 हस्त मजलिस बरौ करार कि बूद ।
 हस्त मुतरिब दरौ तराना हनोज ॥
 चश्म मस्तश बरामूजा जादू ।
 मी जनद तीर बर निशाना हनोज ॥

मेरे जन्म दाता पिता तेरे सेवक न थे पर मैं तेरा अनुचर बन गया हूँ ।
 परन्तु सेवक होते हुए भी मैं स्वतंत्र हूँ ।

जब से मैं ने प्रेम के मदिरा-गृह का सेवा व्रत धारण किया है तब से कोई
 न कोई नया रंज मुझे इस व्रत पर बधाई देने आ ही जाता है ।

अपने इस सेवक के आँसुओं को अपनी काली अलकों से पोंछ दे नहीं
 तो यह दिन प्रति दिन की बाद इसके अस्तित्व को भी बहा ले जायगी ।

(४६)

रात को जो मदिरा पी थी उसका नशा अबतक बना हुआ है और
 पिलाने वाला भी अभी तक यहीं उपस्थित है ।

तू मुझे घायल भी करता है और फिर बड़े दर्प के साथ कहता है कि तूने
 अब भी प्रेम करना छोड़ा या नहीं ।

प्रियतम ! तेरे प्रेम से सारा संसार हाथ खींच बैठा है, परन्तु मैं अभी
 तक उसमें लव-लीन हो रहा हूँ ।

यह बैठक सदैव से ऐसी ही चली आ रही है और उसमें वही राग अब
 भी अलापा जा रहा है ।

और उसकी मतवाली आँखों से तीर छूट छूट कर अब भी लक्ष्य पर
 पड़ रहे हैं ।

“हाफिज़” खस्ता दरमियों आमद ।
मी कुनदयार अजु केराना हनोज़ ॥

(४७)

ऐ बाद मुश्कलू बगुज़र सूर आँ निगार ।
बकुशा गिरह जे जुल्कश व बूए बमन बयार ॥
बाऊ बगो कि ऐ बुते नामेहबाने मन ।
बाजा कि आशिकाने तू मुर्दन्द जे इंतज़ार ॥
दिलदादाएमो मेह तू अज जौं खरीदायम ।
बर मा जफ़ाओ जौरे फ़िराक़त रवा मदार ॥
कर्दी व रोज़गार फ़रामोश बंदा रा ।
ज़िनहार अहूदेयारे वफ़ादार गोश दार ॥
ऐ दिल बेसाज बा गमे हिआनो सत्र कुन ।
ऐ दीदा दर फ़िराक़श अज़ीं बेश खूं मबार ॥
बारे खयाले दोस्त जे पेशे नज़र मशू ।
चू बर विसाले दोस्त नदारेम इश्तिहार ॥
“हाफ़िज़” तू तावकै गमे हाले जहाँ ख़ुरी ।
बिसयार गम मख़ूर कि जहाँ नेस्त पाएदार ॥

ऐ दीन “हाफ़िज़” ! तू निकट आ पहुँचा है परन्तु प्यारा अब भी तुमसे
कनाई काट रहा है (कतरा रहा है) ।

(५७)

ऐ कस्तूरी की सुगन्ध से सुगन्धित वायु ! तू मेरे प्रियतम की गलो से
होकर आ । और उसकी काली धुंधराली लटी को बिखेर कर उनकी तनिक
सी सुगन्ध मुझ तक पहुँचा ।

उससे कहना कि कठोर हृदय ! तू वापस चल । तेरे प्रेमी विरह-वेदना में
पड़े हुए तड़प रहे हैं ।

हमने दिल दे दिया है और प्राण न्योछावर कर तेरा प्यार पाया है । अब
तो हम पर कृपा कर और इस जुदाई रूपी अत्याचार को रोक ।

समय अधिक व्यतीत हो जाने के कारण तू ने इस सेवक को भुला दिया
है । प्यारे ऐसा न कर । तू तो अपने प्रेमियों के प्रति अपने वचनों को पूरा
करने के लिये विख्यात है ।

ऐ हृदय ! तू विरह-वेदना से मैत्री कर ले और धैर्य धारण कर । और
नेत्रों ! तुम उसके विरह में अब और अधिक रक्ताश्रु न बहाओ ।

प्रियतम से मिलने का हमें अधिकार प्राप्त नहीं है परन्तु इतना तो कर कि
उसके रूप को आँख से ओझल न होने दे ।

“ऐ हाफ़िज़” ! संसारी वस्तुओं का अधिक सोच मत कर क्योंकि संसारी
सभी वस्तुएं नाशवान हैं ।

(४८)

मुरों दिलम् तायरेस्त क़दसीये अर्श आशियाँ ।
 अज़ क़फ़से तने मख़ल सेर शुदा अज़ जहाँ ॥
 चूँ बेपरद ख़ी जहाँ सिदरह बुअद जाये ऊ ।
 तकिया गहे बाज़े मा कंगूरये अर्श दाँ ॥
 अज़ सरे ईं ख़ाक़दाँ चूँ व पर व मुरों ख़ी ।
 बाज़ नशेमने कुनद बर दराँ आस्ताँ ॥
 सायए दौलत क़ितद बर सरे आलम बसे ।
 गर बे कुशद मुरों माँ बालो परे दर जहाँ ॥
 दर दो जहानश मकाँ नेस्त बजुज़ फ़ौक़े चर्ख़ ।
 जिस्मे वै अज़ मादन अस्त जाने वै अज़ लामकाँ ॥
 आलमे उलवी बुवद जलवागहे मुरों माँ ।
 आबे ख़ुरेऊ बुवद गुल्शने बागे जिनोँ ॥
 तादमे बहदत ज़दी “हाकिमे” शोरीदा हाल ।
 ख़ामये तौहीद कश बर बर्क़े इन्सो जाँ ॥

(४८)

मेरे हृदय का पवित्र पक्षी अमरलोक का निवासी है। अब वह इस शरीर के पिंजड़े से उड़ गया है और संसार से अपना मुख फेरने के लिये उद्यत है।

जब वह इस संसार से उड़ेगा तो उसके स्थान पर सदरह का वृक्ष होगा और हमारा बाज अमरलोक के शिखर पर जा बैठेगा।

प्राणपखेरू इस मृत्युलोक से उड़ कर पुनः उसी स्थान में अपना घोंसला बनावेगा जहाँ कि वह पहले रहता था।

यदि हमारा पक्षी आत्मिक जगत में अपने परों को फैला दे तो सारा संसार महत्वपूर्ण हो जावेगा जैसा कि हुमा के परों की छाया से होता है।

आत्मा का घर इन दोनों जहानों में कहीं भी नहीं है और यदि है तो आकाश पर, शरीर में इसका कुछ दिनों के लिये बसेरा होना आवश्यक है परन्तु रूढ़ का निवास स्थान किसी खास स्थान में है।

हमारे पक्षी का घर है अमरलोक में और यह चरता है स्वर्ग के उपवन में।

ऐ वीन “हाकिम” चूँकि तू ने अद्वैत का दावा किया है, अतएव तू मानवी और जिनोँ के जगत से बाहर चला जा और अद्वैत में ही अपने जीवन को विसर्जित कर दे।

(४९)

बरौर अजॉ कि बे शुद दीनो दानिश अज दस्तम् ।
 बेआ बगो कि जे इश्कत चे तरफ बर बस्तम् ॥
 अगर्चे खिर्मने उअम गमे तू दाद व बाद ।
 बख्ताक पाए अजीजत कि अहद नशिकस्तम् ॥
 चु ज़र्रा गर चे हक्कीरम बर्बी बदौलते इश्क ।
 कि दर हवाये रुखत चूं बमेह पैवस्तम् ॥
 बेयार बाद के उअरेस्त तामन ज़ सरेअमन ।
 व कुंजे आफियत अज बहे ऐश नशिस्तम् ॥
 अगर जे मदुमे हुशियारी ऐ नसीहत गू ।
 सखुन व ख़ाक मयफ़गन चेरा कि मन मस्तम् ॥
 चे गूना सर जेखिजालत बरआवरम् बर दोस्त ।
 के खिदमते बसजा बर नयामद अज दस्तम् ॥
 बसोख़ "हाफिजो" औं यारे दिल नवाज न गुफ़ ।
 कि मरहमे व फिरस्तम् चो खातिरश खस्तम् ॥

(४९)

तू ही आकर बता दे कि तेरी लगन में मैंने क्या प्राप्त कर लिया ! हाँ, अपने धर्म और बुद्धि से अवश्य हाथ धो बैठा हूँ ।

तेरे प्रेम ने मेरी जीवन रूपी सम्पदा को मटियामेट कर दिया परन्तु तेरी पवित्र धूल को शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपने वचनों का पालन किया ।

मैं एक धूल का कण हूँ परन्तु तेरे प्रेम की शक्ति से मैं तुझे देखने के लिये उड़ता हुआ सूर्य तक आ पहुँचा हूँ ।

साक्षी ! मदिरा ला । बहुत समय से आराम और चैन से किसी कोने में बैठने तक का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है ।

ऐ उपदेशक ! यदि तू समझदार है तो अपनी बात न जाने दे कि मैं तो मतवाला हो रहा हूँ ।

मैंने अभी तक उसकी कोई उत्तम सेवा भी नहीं की इसलिये लज्जा आती है । उस प्यारे के सम्मुख अपना शिर कैसे उठाऊँ !

"हाफिज" मैं तो जल मरा परन्तु उस दिल को खुश करने वाले प्रियतम ने यह भी नहीं कहा कि लाओ जिसे घायल किया है उसके लिये थोड़ा मरहम ही मेज दूँ ।

(५०)

हर कस कि नदारद ब जहाँ मेहे तु दरदिल ।
 हक्का कि बुवद तायते ऊ जायओ वातिल ॥
 बरदाश्तन अज इश्के तू दिल फिके मुहालस्त ।
 अज जाने खुद आसौं बुवद अज इश्के तू मुरिकल ॥
 अज इश्के तू नासेह चु मरा मनांनुमायद ।
 ऐ दोस्त मगरहम तु कुनी हल्ले मसाइल ॥
 गरतेम जहाँरा कि बबीनेमो नदीदेम ।
 हमचू तो कसे ज़ेबा दर शकलो शमाइल ॥
 ऐ जाहिदे खुदबीं बदरे मैकदा बगुज्जर ।
 आँ दिलबरे मन बीं कि बुवद मोरे क़बाइल ॥
 अज वस्तल तू शुस्तंद रक़ीबीं जे तमों दस्त ।
 चूँ गश्त मरा कामे दिल अज लाले तू हासिल ॥
 “हाफिज” तू बरो बंदगिए पीरे मुग़ों कुन ।
 दर दामने ऊ दस्त जनो अज हमा बगुसिल ॥

(५०)

इस संसार में जो मनुष्य तुमसे हार्दिक प्रेम नहीं रखता वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। उसकी प्रार्थना सर्वाश में व्यर्थ और बेकार है।

तेरे प्रेम से दिल हटा लेना एक असम्भव विचार है। प्राण से हाथ धो बैठना सहल है परन्तु तेरे प्रति प्रणय का छोड़ देना कठिन है।

शिक्षा देने वाला जब मुझे यह शिक्षा देता है कि तेरे प्रेम में न पड़ूँ, उस समय प्यारे ! कदाचित् तू ही इन समस्याओं को सुलझा सके।

मैंने सम्पूर्ण जगत का चक्कर लगा डाला, पर तू कहीं भी नहीं दिखलाई पड़ा।

ओ अभिमानी विवेकी ! आ इस मदिरा-गृह के द्वार पर आजा और मेरे उस प्रियतम को देख जो सब देवताओं का स्वामी है।

प्यारे जब से मेरे हृदय की आकांक्षा तेरे ओठों से पूर्ण हो गई तब से लोभी प्रतिद्वन्दी तेरे मिलने के विचार में मतवाले हो रहे हैं।

ये “हाफिज” ! तू जाकर शराब बेचने वाले के स्वामी की चाकरी कर ले और उसका दामन पकड़ कर फिर संसार की सभी आशायें छोड़ दे।

(५१)

हिजाबे चेहरे जों मी शब्द गुबारे तनम् ।
 खुशा दमै कि अर्ची चेहरा पर्दा बरफिगतम् ॥
 चुर्नी क्रकस न सजाये चूँ मने खराइलहास्त ।
 रबम् ब गुल्शाने रिज्जवों कि मुरों ओँ चमनम् ॥
 अर्यों न शुद कि चिरा आमदम् कुजा बूदम् ।
 दरेयो दर्द कि गाफिल जे कारे खेशतनम् ॥
 चिगूना तौफ कुनम दर फिजाए आलमे क़दूस ।
 चु दर सरा चे तरकीबां तरुता बंदतनम् ॥
 अगर जे खूने दिलम् यूए मुश्क मी आयद ।
 अजब मदार कि हमर्दद नाफए खुतनम् ॥
 मरा कि मंजरे हूरस्तो मसकनो मावा ।
 खरा बकूए खराबातियों बुबद वतनम् ॥
 तराजे पैरहने ज़र कशम् मर्बी चूँ शमा ।
 कि सोजहास्त निहानी दरुने पैरहनम् ॥
 बयाओ हस्तिए “हाफिज” जे पेशे ऊ बरदार ।
 कि बावजूद तु कस न शुनूद जे मन कि मनम् ॥

(५१)

मेरे शरीर की धूल प्राणों के मुख का घूँघट है । वह कितना अच्छा समय होगा जब मैं उस मुख पर से यह घूँघट हटा दूँगा ।

यह भिट्टी का पिंजड़ा मेरे समान मनोहर बोली बोलने वाली चिड़िया के योग्य नहीं है । मुझको तो स्वर्ग के उपवन में जाना चाहिये । कारण कि मैं उसी बारा का पंखी हूँ ।

यह रहस्य प्रकट नहीं होता कि मैं कहाँ था और यहाँ क्यों आया हूँ । शोक तो यह है कि मैं अपने ही भेद से नितान्त अनभिज्ञ हूँ ।

मेरा शरीर तो इस साँसारिक शरीर-रूपी घर में बन्द है फिर मैं पवित्र जगत के वायु-मंडल में किस प्रकार भ्रमण करूँ ।

मैं तो खुतन की मुश्क का साथी हूँ । मेरे शरीर से यदि कस्तूरी की सुगन्ध निकलती है तो इसमें आश्चर्य करने की कौन सी बात है ?

इस मदिरा—गृह के शोर गुज़ में मैं क्यों रहूँ जब मेरे देखने के लिए स्वर्गीय अप्सराओं का सौन्दर्य है और रहने के लिये स्वर्ग ।

यह न देख कि मैं दीपक के समान उज्ज्वल और चमकीले बख धारण किये हूँ, क्योंकि मेरे इन बखों के नीचे एक कठोर जलन उपस्थित है ।

प्यारे ! “हाफिज” के सामने से उसके लेखक को हटा क्योंकि तेरे होते हुए किसी अन्य को मेरे मुख से अभिमान के शब्द सुनना भी ठीक नहीं है ।

(५२)

बारहा गुफ्तमो बारे दिगर मी गोयम ।
 की मने दिल हुदा ई रह न, बखुद मी बोयम ॥
 दर पसे आईना तूती सिफतम दाश्ता अन्द ।
 उब्हे उस्तादे अजल गुफु बुगोमी गोयम ॥
 मन अगर खारमो गर गुल चमन आराए हेस्त ।
 की अजौं दस्त कि मी परवरदम मी रोयम् ॥
 दोस्ताँ ऐब मने बेदिले हैरौं मकुनेद ।
 गौहरे बारमो साहब नखरे मी जोयम् ॥
 गर्चे बावस्के मुलम्मा मए गुलगू ऐबस्त ।
 मकुनमा ऐब कजू रंगे रिया मी शोयम् ॥
 खन्दओ गिर्यए उश्शाक जे जोय दिगरस्त ।
 मय सरायम बशबो वक्ते, सहर मां मोयम् ॥
 बायजम गुफु कि "हाफिज" वरे मयखाना मबू ।
 गो मकुन ऐब कि मन मुखे खुतन मी बोयम् ॥

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ ।

मुझको परछाई के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है । मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ ।

मैं कष्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ ।

मित्रो ! मुझ धवड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो । मेरे पास एक मोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जौहरी की खोज में हूँ ।

गुदड़ी बाजार में गुलाबी शराब कहाँ ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई ? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हैंसते और आँसू गिराते हैं । मैं रात को सोना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ये "हाफिज" तू इस मयिरा-गुह के द्वार पर क्या खड़ा करता है ? उससे कह दो कि यह बुरा न माने मैं तो खुतन के डरक को सूँघा करता हूँ ।

(५३)

दिलम् रबूदए छली बशेस शोर अंगेज ।
 दरोरो बादओ कत्ताले वज्रओ रंगामेज ॥
 किदाए पैरहने चाके माहूरयाँ बाद ।
 हजार जामए तक्रबाओ खिर्राए परहेज ॥
 फिरशतए इश्क नदानद कि चीस्त किस्सा मखौँ ।
 बस्नाह जामो गुलाबे बस्नाके आदमरेज ॥
 गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेजद ।
 न आबे सदै ज़नद दर सख़ून बर आतशे तेज ॥
 फ़कीरो खस्ता बदरगाहत आमदम रहमे ।
 कि जुज विलायतुअम नेस्त हेच दस्तावेज ॥
 बेआ कि हातिके मैखाना दोश बा मन गुफ़ ।
 कि दर मुक़ामे रिज़ा बाशो अज़ कज़ा मगुरेज ॥
 मबाश ग़री बबाज़ूए खुद कि हर सायत ।
 हजार शोबदा बाज़द सिपहे मकरंगेज ॥

(५३)

मेरा हृदय उस सुन्दर दिलवर ने छीन लिया है और मुझे बहुत कष्ट दे रहा है । वह झूठी प्रतिज्ञाएं करता है, बंध करने वालों का सा उसका ढङ्ग है और बातें ख़ूब बना लेता है ।

उस रूपवान् प्रियतम के फटे हुए वस्त्रों पर सहस्रों ईश्वरोपासकों और फ़कीरों के वस्त्र न्योछावर हैं ।

स्वर्गीय दूत को प्रेम करना नहीं आता । उससे व्यर्थ में कहानी न कहो । एक मदिरा का प्याला मंगालो और आदम की भिट्टी पर थोड़ा सा गुलाब छिड़क दो ।

मैं तो उन शब्दों को उपयुक्त समझता और मानता हूँ जो हृदय में जलन (उत्कट प्रेम) उत्पन्न कर देते हैं । अपने शब्द को नहीं चाहता जो शीघ्र ही जलन को मिटा देता है, अग्नि की तेज़ी को अपनी बारि-धारा से शीतल कर देता है ।

मैं दीन हूँ और दुखिया । तेरे द्वार पर आया हूँ । कुछ कृपा कर ।

आजा, मदिरा-गृह का स्वामी मुझसे रात ही कह चुका है कि तुझे प्रसन्न रहना चाहिये और मौत से दूर न भागना चाहिये ।

किसी भी अवस्था में अपनी शक्ति पर घमण्ड न कर । यह बहुरूपिया आकाश प्रतिघड़ी सहस्रों रंग दिखलाता है ।

पियाला दर कफनम् बन्द ता सहगहे हभ ।
 बसै जे दिल बे बरम् हौले रोखे रस्ता खेज ॥
 मियाने आशिको माशूक हेच हायल नेस्त ।
 तु खुद हिजाबे .खुदी "हाफिज" अज मियाँ बर खेज ॥

मेरे कफन में प्याले को छिपा देना ताकि मरने के समय उससे मदिरा पीकर प्रलय का भय अपने हृदय से दूर कर सकूँ ।

भगवान और भक्त के बीच में कुछ पर्दा नहीं । बस ऐ " हाफिज " तू .खुद ही पर्दा है, अपनी .खुदी के पर्दे को हटा दे (तो उससे मिल जायेगा) ।

जामी

[जन्म १४१४ ई० : मृत्यु १४९२ ई०]

इनका पूरा नाम था मुल्ला नूरद्दीन अब्दुल रहमान। परन्तु जन साधारण में यह जामी नाम से ही विख्यात थे। खुरासान नामक एक छोटे से नगर में इनका जन्म हुआ था और उसी में मृत्यु भी। यह बड़े भारी विद्वान, ऊँचे कवि और जिज्ञासु थे। इन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से तीन दीवान हैं जिनमें उच्च कविताएँ हैं, सात प्रेम कहानियाँ तथा उपदेश प्रद मसनवियाँ हैं। उन्होंने इतने विषयों पर अपनी लेखनी उठाई है कि लोगों को आश्चर्य होता है। मुहम्मद साहब के उपदेशों से लेकर, पौराणिक कहानियाँ, सन्तों के जीवन चरित्रों, व्याकरण, पिंगल इत्यादि पर भी उन्होंने लिखा है। रहस्यवाद पर उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं, वह वास्तव में ध्यान देने योग्य हैं। इनमें से दो पुस्तकें—लवाहे और तहफातुल अहरार, जिसके पद मैंने उद्धृत किये हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम, रहस्यवाद की उत्तम से उत्तम पुस्तकों में से एक है। कल्पना की ऊँची उड़ान, भाषा, और उसकी उपयुक्तता तथा शैली के लिहाज से इसकी गणना रूमी की मसनवी और अत्तार की मंतक़रुत्तेर के साथ ही की जाती है। इन दोनों से जामी ने सीखा भी बहुत कुछ था। उसके चरित्र में फिरदौसी, हाफ़िज़, सादी, अनवरी और स्याक़ानी इत्यादि के चरित्रों से भिन्नता थी। और यह भिन्नता थी उसकी स्वतंत्रता। वह किसी भी दरबार में नहीं गया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई वह प्रसन्न था और निर्धन भी। उसकी निर्धनता ने उसे कभी भी हतोत्साह नहीं बनाया और न कभी उसने आवश्यकता पड़ने पर दान करने से मुख मोड़ा। उसने जो कुछ भी लिखा अपनी इच्छा से परन्तु डेवोज़ के शब्दों में वह लोगों के लिये बहुत ही सुन्दर तथा उच्च कविताएँ छोड़ गया है।

इनकी रचनाओं में व्यंग देखने ही योग्य है। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने इसका एक उदाहरण दिया है। एक बार वह कुछ पंक्तियाँ पढ़ रहे थे। जिनका आशय था:—

“तुम मेरी निद्राहीन आँखों तथा पीड़ित हृदय में इस प्रकार बस रहे हो कि कोई भी मुझे दूर से आता हुआ तुम्हारे ही रूप में दिखलाई देता है।”

इसी समय किसी ने पूछा:—

“मान लीजिये कि वह गधा हो।”

जामी ने उत्तर दिया “मैं तो सोचता हूँ वहाँ तुम्हीं हो।”

उनके जीवन के विषय में कैप्टन नैसन और बैरन विक्टर रौसन के लेख बहुत ही उत्तम हैं। इस विषय का अध्ययन करने वालों को इनसे लाभ हो सकता है।

प्रमुख रचनाएँ:—

लवाहे,

सुलेमान अब्बाल

लैला मजनूँ।

(१)

गुप्तमश ऐ खिञ्जे मसीहा नफस ।
 खिञ्जो मसीहा तुई इमरोज ब बस ॥
 अज कदमत सञ्जए ऐशम दमीद ।
 वज नफसत जौके हयातम रसीद ॥
 ऐने शका शुद जे तो बीमारीयम ।
 बेह जे सद इतलाक गिरिफ्तारीयम ॥
 सेहते मन दौलते दीदारे तुस्त ।
 शरबते मन लज्जते गुफारे तुस्त ॥
 रूप तो शुद महबते ईमाने मन ।
 नूरे यक्की जद अलम अज जाने मन ॥
 आँचे रसीद अज तो बजाने सकीम ।
 बाशद अजौ हुजतो चुरहौ अकीम ॥
 उब्हे शुदम अज तो बआँरह शिनास ।
 मुनत्तिजे आँ नेस्त दलीलो क्रियास ॥

(१)

मैंने उससे कहा कि हे मेरे पथ प्रदर्शक ! यदि आज संसार में मेरा कोई शुभेच्छु अथवा उत्तम पथ पर चलाने वाला है, तो वह केवल आप ही हैं ।

आपके चरणों के स्पर्श से मेरा जीवन रूपी पौधा लहलहाने लगा । आपके वचनों से मुझे जीवन का आनन्द प्राप्त हो गया ।

आपकी कृपा से मेरा रोग आरोग्यता में परिवर्तित हो गया और अब मेरे बन्धन सहस्रों स्वतंत्रताओं से बढ़कर हैं ।

आपके दर्शनों से मैं हरा-भरा हो जाता हूँ । आपके वचनों से जीवन में स्फूर्ति आती है ।

आपका मुख देखने से मेरा हृदय सचाई से परिपूर्ण हो जाता है और मुख पर दृष्टि पड़ते ही दिल में विश्वास का उजाला हो उठता है ।

आपकी तरफ से इस व्यथित हृदय को जो कुछ प्राप्त हुआ है वह तर्क तथा प्रेम से नहीं मिल सकता ।

आपके कारण मुझे जितनी बातें ज्ञात हुई हैं वह वाद विवाद अथवा अनुमान के सहारे नहीं मायूम की जा सकतीं ।

बर मन अर्जी पस रामे बारे नमुन्द ।
 बर रुखे मकसूद गुबारे नमुन्द ॥
 लेक अर्जी बीम जे वा ओप्तम ।
 कज तो मबादा कि जुदा ओप्तम ॥

(२)

गुरु कि जामी मशौ अन्देशा नाक ।
 चूँ गुदत आईना जे अन्देशा पाक ॥
 बारा हमेशा जेरहे दिल बमन ।
 आईना अतदार मुक्काबिल बमन ॥
 ता जे करोरे कि जे मन बर तो ताफ़ ।
 दानिशो दीदे तो शबद दीद याफ़ ॥
 याफ़ते तोरा अज तो रिहानद तमाम ।
 जुम्ला यके याबीओ बस बस्सलाम ॥

(३)

उब्बे दिलज पेश न दानिस्ता बूद ।
 पेशे नज़र जुम्ला हवेदा नमूद ॥

अब मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही और मेरा लक्ष्य मेरे सम्मुख प्रकट हो गया ।

परन्तु एक और भय मुझे व्याकुल कर रहा है । कहीं आपसे विलग न होना पड़े ।

(२)

पीर ने कहा कि “जामी” अपने हृदय में किसी प्रकार के भय अथवा सन्देह को स्थान न दे ।

जब तेरा हृदय-दर्पण निर्मल हो गया है तो सदैव प्रसन्नता से मेरे साथ रह और उस दर्पण को मेरे सम्मुख रख ;

ताकि जो प्रकाश तुझे मेरे द्वारा प्राप्त हुआ है, उसकी कृपा से तेरा ज्ञान विस्तृत हो और नेत्रों को उसका दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो,

और मेरा स्वरूप दाता तेरे अहंकार को हटा दे, जिससे तुझे सबमें वही दिखलाई पड़े । बस अब जा ।

(३)

हृदय को जिन बातों का ज्ञान पहले नहीं था, वह सब अब साफ तौर से नेत्रों के सम्मुख वर्तमान हैं ।

दीद के आलम जे समक ता समा ।
नेस्त बजुज वाजिबो मुमकिन बमा ॥

(४)

हस्तिए वाजिब यके आमद बजात ।
हस्त तआयुत जे शयूनों सिकात ॥
कसरते सूरत जे सिकातस्तो बस ।
अस्ल हमा बहदते जातस व बस ॥
बह यके मौज हजाराँ हजार ।
रुए यके आईना हा बेशुमार ॥

(५)

कदं चूई बन्द कुशाई मरा ।
दाद जे हर बन्द रिहाई मरा ॥
रिश्तए मन अज गिरहए कैदरस्त ।
बर गिरहम गौहरे इतलाकबस्त ॥
क़त्रए नाचीज़ बबह आरमीद ।
हसतिए खुद रा हमगी बह दीद ॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है ।

(४)

वह एक ही है । उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।
यदि यह नाना रूप उसके हैं भो तो वह केवल उसके गुणों के कारण हैं । प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है ।
सबका मूल तथा तत्त्व एक ही है । समुद्र एक है, परन्तु लहरें लाखों ।
मुख एक है और दर्पण अगणित !

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी बन्धन ढीले हो गये ।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की वस्तुओं से मेरा सम्बन्ध छूट गया । हृदय में विश्वास आ गया ।

अस्तित्व हीन बूंद समुद्र में मिल गया और अपने जीवन रूपी सरिता की खैर भी कर ली ।

दर सूबरे बहर चो मौले बिहार ।
 याप्रत हमा जल्बए खेश आशकार ॥
 चूं पए गौहर सूए दरिया शिताफ़ ।
 हेच गौहर जुअ गौहरे खुद न याफ़ ॥
 चूं बतमाशा सूए खुद बिनगिरीस्त ।
 हेच न दानिस्त कि जुअ बहु चोस्त ॥
 “जामी” अगर जौके जदी दस्तो पा ।
 ता कि बदीं बहु शबी आशनों ॥
 राकर्णए बहु आमदा राब्वास शौ ।
 तालिबे दुरों गौहरे खास शौ ॥
 दर दिलत अज शोला हालात हस्त ।
 लायेका ओं हुस्न मक़ालीत हस्त ॥
 सोख्तए शोखए हालात बाश ।
 साख्तए शरहे मक़ालात बाश ॥

(६)

रौनक्रे ऐयामे जवानीस्त इश्क़ ।
 माए कामे दो जहानीस्त इश्क़ ॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया ।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ़ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था ।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया ।

ऐ “जामी” ! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर ।

तेरे हृदय में मस्ती की अग्नि प्रज्वलित हो रही है । अतएव मीठे वचन कहना उचित है ।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत हो जा ।

(६)

प्रणव युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है ।

मैले तहरक बफलक इश्क दाद ।
 खौक्रे तजरुद बमलक इश्क दाद ॥
 चूँ दिलो जौ बूए ताआशुक गिरिफ़ ।
 बा गिले तन रंग ताल्लुक गिरिफ़त ॥
 राबतए जानो तने मा अज्जओस्त ।
 मुर्दने मा जीस्तने मा अज्जओस्त ॥
 उलबी ब सिफ़ली हमा बन्देबयन्द ।
 पस्ते शवे क़द्रे बलन्देबयन्द ॥
 मह कि ब शब नूर देही याफ़ा ।
 परतवे अज्ज मेह बरो ताफ़ा ॥
 खाक जे गरदूँ न बुवद ताबनाक ।
 ता असरे मेह न युफ़द ब खाक ॥
 चूँ बतन आज़ादा जे मेहरस्त दिल ।
 संगे सियाह हस्त दरौ तीरा गिल ॥
 हर कि दर आतिशे इश्कस्त राक़ ।
 अज्ज दिले ऊ ता बसनोबर चे क़र्र ॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और स्वर्गीय दूत में सदाकौँची बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है ।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने मिट्टी तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया ।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं ।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्तियों में बँधे हुए हैं और उसकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं ।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है ।

मिट्टी तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता ।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रहित है तो वह काली मिट्टी में काले पत्थर के समान है ।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके हृदय तथा सनोबर के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।

कारे सनोबर चे बुबद राफिली ।
 अज रामे इरक्रे कि न साहबदिली ॥
 जिन्दगिए दिल बरामे आशक्रीस्त ।
 तारके जाँ बर कदमे आशक्रीस्त ॥
 ता न शबद इरक्रे ब दिल बुर्दगी ।
 गर्मिए दिल नेस्त जुज अकसुर्दगी ॥
 ऐ शुदा कारे तो बदअज नीकू आँ ।
 जुफे सद अन्दोह जे ताक्रे अबरुआँ ॥

(७)

गह दम जे अन्देशए माहे जनी ।
 मह बकलक बीनिओ आहे जनी ॥

(८)

गह बरिजाले दिले शैदा शमी ।
 रूपे चो दीवाना ब सहरा नेहो ॥

(९)

यार हम आगोश बहम बाद नोश ।
 तू पसे जानुए राम अन्दर खरोश ॥

सनोबर का क्या काम है ? बेखबर रखना, और वह भी प्रणय की पीड़ा से । प्रेम से परिपूर्ण कर देना उसका काम नहीं है ।

दिल का अस्तित्व प्रेमी की जलन में ही है और प्राण का शिर प्रणयी के चरणों पर पड़ा हुआ है ।

जब तक दिल किसी दूसरे के अधिकार में नहीं चला जाता उसे प्रणय का अनुभव नहीं होता । और प्रणय के अनुभव के बिना दिल का होना न होना बराबर है । ऐ प्रणयी !

तेरा काम सुन्दरियों ने त्रिगाड़ रक्खा है और उनके तीखे कटाक्षों का शिकार बनकर तुझे सहस्रों विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है ।

(७)

कभी तो तू किसी चन्द्रमुखी के ध्यान में मस्त रहता है और चन्द्रमा को तरफ देख देख कर आहें भरा करता है ।

(८)

कभी तू किसी मृग की चाह में मतवाला होकर जंगलों में निकल भागता है और बरबार त्याग देता है ।

(९)

तेरे अंक में तेरा प्यारा बैठा हुआ मदिरा के प्यालों पर प्याले खाली कर रहा है परन्तु तू शोक के बोझ से दबा हुआ रोता है ।

यारे हम आवाज़ बहम परदा साज़ ।
तू जे तपे फुर्कते ऊ दर गुदाज़ ॥
यार हम आहंग बहर सीना तंग ।
तू जे गमश कोफ़ा वर सीना संग ॥
जोरकये बर्ज चुनौ गीर यार ।
कश बुवद अन्दर दिलो जानत करार ॥
महरमे खिलबत गहे राजत शवद ।
मूनिसे शबहाए दराजत शवद ॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ ।
न गमा जने ताहमे यक काख़ शौ ॥
रु ब यके आर कि फरखुन्दा गीस्त ।
तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त ॥
मेवण मक़सूद कै आरद दरख़न ।
ता न कुनद पाए व यक जाए सख़्त ॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठ हुआ स्वर में स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है ।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है ।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे प्राणों और दिल ही में निवास करे ।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली अपने पास रखे और विरह की लम्बी रातों में तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे ।

(१०)

एक ही वृत्त की चोटी पर बैठ जा और एक ही ढाल पर आसीन होकर अपना राग अलाप । यदि तेरा ध्यान किसी की ओर आकर्षित होता है तो उसके अतिरिक्त और किसी को दिल में जगह न दे ।

यह एक बहुत अच्छी बात है । अपने दिल को चारों तरफ दौड़ने से रोक, क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं है ।

बूझ में वह मेवा किस समय दिखलाई देता है ? उस समय जब कि उसके फलने का समय आता है । उसी प्रकार तू भी उसी समय फलेगा जब एक स्थान पर दृढ़ हो जायगा ।

लवाहे “ जामी ”

(१)

यारब दिले पाको जाने आगाहम देह ।
 आहे शबो गिर्यए सहर गाहम देह ॥
 दर राहे खुद अहाल जे खुदम बे खुद कुन ।
 अंगह बेखुद जे खुद बखुद राहम देह ॥
 यारब हमा खलक रा बमन बदखू कुन ।
 वज्र जुम्ला जहाँनियों मरा यकमू कुन ॥
 रूप दिले मन सर्फ कुन अज्र हर जिहते ।
 वज्र इश्क खुदम यक जहतो यकरू कुन ॥
 यारब बेरिहानेयम जे हिरमों चे शवद ।
 राहे दिहोयम बकूप इरफाँ चे शवद ॥
 बस गज्र कि अज्र करम मुसल्माँ करदी ।
 यक गज्र दिगर कुनी मुसल्माँ चे शवद ॥
 यारब जे दा कौन बे नियाजम गरदों ।
 वज्र अफसेर फक्र सर्फराजम गरदों ॥
 दर राहे तलब महरमें राजम गरदों ।
 जाँ राह कि न सूर तुस्त बाजम गरदों ॥

(१)

हे ईश्वर ! मुझे पवित्र हृदय और विचारवान् प्राण प्रदान कर और ऐसा कर जिससे मैं रात को तबपूँ और दिन को रोऊँ ।

अपने मार्ग में पहले मुझे ऐसा बना दे कि मैं अहंकार को भूल जाऊँ और फिर मुझे ऐसा मनवाला बना दे कि मैं तुम्ही को ढूँढ़ता फिरूँ ।

हे ईश्वर ! मुझे सभी लोगों के प्रति बुरा और उनसे पृथक् कर दे ।

मेरी इन्द्रियों को सभी सांसारिक वस्तुओं से हटाकर अपने में केन्द्रीभूत करले जिससे कि तू ही मेरा सर्वस्व हो जावे ।

हे ईश्वर तू ने बहुत से पथ भ्रष्ट मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगाया है (अपने में विश्वास उत्पन्न कर दिया है) फिर मुझ गुमराह का भी यदि अपने में (ईश्वर में) विश्वास उत्पन्न कर देगा तो क्या बड़ी बात होगी ?

मुझे भी उचित पथ पर ला । उस मार्ग से जो तेरी तरफ नहीं आता है मुझे लौटा कर उस पथ पर डाल जो तुम तक पहुँचाता है ।

मुझे दोनों जहानों के प्रलोभनों से छुटाकर अपनी खोज में मगवाला बना दे ।

तूने बहुतों को उबार है । मुझे भी उबार ले ।

(२)

मन हेचम व कम जे हेच हम बिस्यारे ।
 अज हेचो कम अज हेच न आयद कारे ॥
 हर सिर कि जे असरारे हकीकत गोयम ।
 जानम न बुवद बहा बजुज गुफारे ॥
 दर आलमे फक्र बेनिशाने औला ।
 दर क्रिस्सए इश्क बेजवाने औला ॥
 जाँकस कि न अहे जौको असरार बुवद ।
 गुफन बतरीके तर्जुमानी औला ॥
 सुकुम गौहरे चन्द कि रौशन खिर्दआँ ।
 दर तर्जुमए हदीसे आली सनदआँ ॥
 बाशद जे मने हेचमदाँ मोतमिदाँ ।
 ई तोहफा रसानन्द बशाहे हमदाँ ॥

(३)

ऐ आँके बक्रिबल्लए बुताँ रुस्त तुरा ।
 वर मरज चेरा हिजाब शुद पोस्त तुरा ॥

(२)

मैं अकर्मण्य हूँ और बहुत से अकर्मण्य मनुष्यों से गया बीता हूँ ।
 साधारण और निम्न श्रेणी वालों का कार्य उसी श्रेणी वालों से नहीं सरता ।

मैं रहस्यों को कहता अवश्य हूँ परन्तु रहस्य उद्घाटन करने वालों में से नहीं हूँ ।

प्रेम के मार्ग में यदि सन्यास ले तो उसमें गुम नाम रहना ही उत्तम है
 और प्रणय की कथा कहने में गूंगा ही बना रहना उचित है ।

उस मनुष्य से, जिसमें न ईश्वरीय बोध है और न रहस्य जानता है, कह
 देना कि उसके लिये ईश्वरीय बातों का किताब से पढ़ लेना ही उचित होगा ।

ऊँची सनदे रखने वाले लोगों के वचनों का मर्म समझाने में मैंने भी
 बुद्धिमानों के समान ही सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है ।

कदाचिन् कुछ न समझने वाले मनुष्य मुझे भी, उसके दर्बार के विश्वास
 पात्रों द्वारा उस बादशाह के निकट पहुँचा दे अर्थात् मेरी भी गणना ज्ञानियों
 में होने लगे ।

(३)

ईश्वर ने किसी मनुष्य को दो दिल प्रदान नहीं किए हैं । इसके अतिरिक्त
 उसने अपने जीबों को अनुपम बुद्धि और ज्ञान से भूषित किया है ।

दिल दर पए ईनों आँ न नेकूस्त तुरा ।
यक दिलदारी बसस्त यक दोस्त तुरा ॥

(४)

ऐ दर दिले तू हज़ार मुशकिल जे हमा ।
मुशकिल शब्द आसूदा तुरा दिल जे हमा ॥
चूँ तफ़्फ़ूए दिलस्त हासिल जे हमा ।
दिल रा ब यके सिपारो बग़ुसिल जे हमा ॥

मादाम कि दर तफ़्फ़ूए बसवासी ।
दर मज़हबे अहले जमा शर्ह ननासी ॥
बख़्त कि नई नास बले नसनासी ।
नसनासिए खुद जे जेहल मीनशिनासी ॥

ऐ सालिके रह सख़ून जे हर बाब मगोए ।
जुज राहे वसूले रबबेअरबाब मपोए ॥
चूँ इल्लते तफ़्फ़ूस्त असबाबे जहाँ ।
जमईअते दिल जे जमये असबाब मजो ॥

उसने किसी को दो दिल क्यों नहीं दिये हैं ? इसमें भी भेद है । यदि तेरे एक ही दिल होगा तो तेरा भुकाव भी एक ही तरफ़ होगा ।

(४)

ऐ मनुष्य ! इन बहुत सी वस्तुओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने से तेरे हृदय में बहुत सी कठिनाइयाँ आ उपस्थित हुई हैं । तेरा हृदय इन्हीं कार्यों से विपत्तियों का केन्द्र हो रहा है ।

जब इतने रहस्यों के कारण तेरा हृदय इस प्रकार व्याकुल हो रहा है तो उसे सब ओर से हटा कर एक ही तरफ़ लगा ।

जब तक तू प्रेम और विश्वास में संलग्न रहेगा तब तक तू लोगों की दृष्टि में बहुत बुरा जचेगा ।

ईश्वर की शपथ, तू मनुष्य नहीं बरन् राक्षस है । परन्तु अपनी मूर्खता के कारण तू यह भी नहीं जान सकता कि तू राक्षस हो रहा है ।

ऐ पथिक ! तू अन्य प्रकार की बातों को न सोच और उस भक्तवत्सल तक पहुँचाने वाली सीधी राह को छोड़कर कोई दूसरा मार्ग ग्रहण न कर ।

जब सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं तब तू केवल एक ही वस्तु से लगन क्यों नहीं लगाता ।

ऐ दिल तलबे कमाल दर मदरस चन्द ।
 तकमील उसूलो हिकमतो हिन्दसा चन्द ॥
 हर फिक्र कि जुज्र जिक्रे खुदा वसवसास्त ।
 शरमे जे खुदा वदारा ई वसवसा चन्द ॥

(५)

बायार बगुलचार शुदम रहगुजरी ।
 बर गुल नजरे फगन्दम अज्र बेखबरी ॥
 दिलदार बताना गुफ़ शरमत वादा ।
 रुखसारे मन ई जास्त तू दर गुल नजरी ॥
 आमद सहर आँ दिलबरे खूनीं जिगराँ ।
 गुफ़ जे तो बर खातिरे मन बारे गिराँ ॥
 शरमत वादा कि मन बसूयत निगराँ ।
 बाशम तू निही चश्म बसूए दिगराँ ॥
 माएम बराहे इश्क पोयाँ हमा उम्र ।
 वग्ले तो बजहो जेहद जोयाँ हमा उम्र ॥
 यक चश्म ज़दन जमाले तो पेशे नज़र ।
 बेहतर जे जमाले खूबरोयाँ हमा उम्र ॥

ऐ हृदय ! तू कब तक इस संसारी ज्ञान के पीछे लगा रहेगा । शब्दों और अक्षरों को समझने में कब तक लगा रहेगा !

ईश्वरोपासना के अनिरिक्त और सभी प्रकार की चिन्ताएँ व्यर्थ हैं । ईश्वर की तो कुछ शर्म कर । इन व्यर्थ बातों के संभट में कब तक रहेगा !

(५)

मैं अपने यार के साथ घूमता हुआ उपवन में पहुँचा और घोखे से एक दूसरे पुष्प की तरफ देखने लगा ।

मेरी प्रियतमा ने ताने के साथ कहा कि तुम्हको अपने कार्य पर लज्जित होना चाहिये । मेरा कपोल तेरे सम्मुख है और इस पर भी तू दूसरे पुष्प पर नज़र डालता है ।

सुबह को वह घायल हृदयों की प्रियतमा मेरे पास आई और कहने लगी कि देख तेरे कारण मेरे हृदय पर एक बड़ा भारी बोझ रहा करता है ।

तुम्हें दूसरों की तरफ ताकने में लज्जा नहीं आती जब कि मैं तेरी तरफ ताक रही हूँ ।

मैं अपने जीवन के प्रारम्भ काल से ही तुम्हको ढूँढ़ रहा हूँ और तेरे मिलने की प्रतीक्षा में हूँ ।

यदि क्षण भर के लिये भी तेरा मुख मुझे दिखलाई पड़ जाता है तो वह सैकड़ों प्रियतमाओं के मिलन से बढ़ कर है ।

(५)

हर सूरते दिलकश कि तुरा रूप नमूद ।
 खाहद फलकश जो दूर चश्मे तो रबूद ॥
 दिल रा बकसे देह कि दर अतवारे वजूद ।
 बूदस्त हमेशा बा तोबो खाहद बूद ॥
 रक्तु आँ के बक्किबलिए बुताँ आरम ।
 हर्फे गमे शौं बलौहे दिल बेनिगारम ॥
 आहंगे जमाले जावदानी दारम ।
 हुस्ने कि न जावेदौं, अजो बेजारम ॥
 चीजे कि न रूप दर बक्ता बाशी अजो ।
 आखिर हृदफे तीरे बला बाशी अजो ॥
 अज हर्चे बमुर्दगी जुदा खाही शुद ।
 आँ बेह कि बाजन्दगी जुदा बाशी अजो ॥
 ऐ खाजा अगर मालो अगर फर्जन्दस्त ।
 पैदास्त कि मुद्दते बक्कायश चन्दस्त ॥
 खुशआँ कि दिलश बदिलबरे दरबन्दस्त
 किश बा दिलो जाने अह्ने दिल पैवन्दस्त ॥

(५)

तुम्हको प्रसन्न करने वाले मुख शीघ्र ही तेरी निगाहों से ओझल हो जाते हैं,

यदि दिल ही देना है तो ऐसे को दे जाँ कि जीवन के उलट फेर में सदैव से तेरे साथ रहा है और रहेगा ।

वह जमाना व्यतीत हो चुका जब मैं नाशवान वस्तुओं के चक्कर में था और मेरे हृदय से उनका सम्बन्ध टूट गया है ।

अब मैं उस अविनाशी स्वरूप के जलवे को देखने के लिए व्याकुल हो रहा हूँ ।

जिस वस्तु की वजह से तू अमरत्व को प्राप्त नहीं कर सकता आखिर वह भिट जायेगी । जिसकी वजह से ईश्वर से पृथक् रह कर विपत्तियों में पड़ता है, उसे अपने इस जीवन में ही त्याग देना अच्छा है ।

मित्र ! धन और संतान जो कुछ भी है वह सब नाशवान् है ।

इसलिये वही मनुष्य ज्ञानवान कहा जा सकता है जिसने इन सभी वस्तुओं का त्याग कर ऐसे से सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, जो बड़े २ ज्ञानियों का प्यारा है ।

(७)

रफतम बतमाशाए गुल आँ शमा तराज ।
 चूँ दीद मियाते गुलशनम गुल बनज ॥
 मन असलमो गुलहाए चमन फरएमनन्द ।
 अज अस्त चेरा बकरा मी आई बाज ॥
 अज लुके कदो सबाहते खदचे कुनी ।
 बज सिल्सिलए जुलके मुजुअद चे कुनी ॥
 अज हर तरफ जमाले मुतलक ताबो ।
 ऐ बेखबर अज हुस्ने मुक़यद चे कुनी ॥

(८)

ऐ बिगदर तू हमी अन्देशई ।
 मा बक्री तू उस्तखानो रेशई ॥
 गर गुलस्त अन्देशये तो गुलशनी ।
 वर बुवद खारे तो हम चूँ गिलखनी ॥

(९)

गर दर दिले तो गुल गुजरद गुल बाशी ।
 वर बुलबुले बेकरार बुलबुल बाशी ॥

(७)

मैं फूलों को देखने के लिए उपवन में गया । तब इस दीपक को प्रकाश प्रदान करने वाले ने बड़े ही भाव के साथ कहा,

कि वास्तव में मैं ही सब कुछ हूँ । और यह तमाम फूल मुझी से उत्पन्न हुए हैं । तू मूल को छोड़ कर टहनियों की तरफ क्यों वापस आ रहा है ?

तू शरीर के सौन्दर्य और गारे गालों के पीछे क्यों पड़ा हुआ है ? और चोटी बँधी हुई घुँघराली अलकों से तेरा क्या काम चलेगा ?

ऐ अज्ञानी ! इस नाशवान सौन्दर्य के क्षणिक मोह में पड़ कर तू उस अविनाशी रूप को क्यों भुलाये बैठा है, जिसका प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है ।

(८)

ऐ भाई ! तुझमें जो कुछ भी है वह ध्यान और चिन्तन है । शेष सब हड्डी और मांस है ।

इसी ध्यान के ही प्रभाव से तू शान्ति प्राप्त कर सकता है । यदि तू पुष्प का ध्यान करता है तो पुष्प बन जाता है और कण्टक का ध्यान करता है तो कण्टक हो जाता है ।

(९)

यदि तू अपने हृदय में फूल का विचार करेगा तो तू फूल हो जायगा और यदि उसी के प्रेमी बुलबुल में ध्यान लगायेगा तो बुलबुल बन जायगा ।

तू जुझवी हक कुलस्त गर रोजे चन्द ।
 अन्देशए कुल पेश कुनी कुल बाशी ॥
 जामेजिशे जानो तन तुई मकसूदम ।
 वज्र मुर्दनो जीस्तन तुई मकसूदम ॥
 तू देर बेजी कि मन बेरकम जे मियाँ ।
 गर मन गोयम जे मन तुई मकसूदम ॥
 कै बाशदो कैलिबासे हस्ती शुदा शक ।
 ताबौं गश्ता जमाले वजहे मुतलक ॥
 दिल दर सुतूवाते नूरे ऊ मुसतहलक ।
 जौं दर गलबाते शोके ऊ मुसतशारक ॥

(१०)

रुख गचें नमी नुमाई तो मरा सालहासाल ।
 हाशा कि बुवद मेहे तोरा बीमे जवाल ॥
 दारम हमा जा बा हमा कस दर हमा हाल ।
 दर दिल जे तू आरजू व दरदीदा खयाल ॥

ईश्वर अंशी है और तू अंश है । यदि कुछ दिनों तू अंशी (उसी कुल) की धुन में लगा रहा तो फिर उसी के स्वरूप को प्राप्त कर लेगा ।

प्राण और शरीर के पारस्परिक सम्मिलन में भी तू ही मेरा अभीष्ट है और मृत्यु तथा जीवन का भी तू ही अभीष्ट है ।

तू बहुत दिनों तक जीवित रह । मैं तेरे बीच में से निकल गया हूँ । अब यदि मैं अपने को “ मैं ” कहकर बोलता हूँ तो उससे तेरा ही आशय निकलता है ।

वह दिन कब आवेगा जब मैं अपने अस्तित्व के इन प्रकट वस्त्रों को फाड़ कर उसी प्रकाश में लवलीन हो जाऊँगा ।

उस समय मेरा दिल उसके रूप के प्रकाश में मिलकर विलुप्त हो जायगा और मेरे प्राण उसकी चाह के दरिया की लहरों में डूब कर विलीन हो जायँगे ।

(१०)

यद्यपि बघों से तूने मुझे अपना मुख नहीं दिखलाया है, परन्तु इससे यह नहीं हो सकता कि तेरा प्रेम मेरे हृदय से दूर हो जावे ।

हर जगह, चाहे किसी भी अवस्था में मैं होऊँ तू मेरे हृदय के अन्दर वर्तमान रहता है । मेरे साथ कोई भी हो, पर दृष्टि के सम्मुख सदैव तेरा ही स्वरूप उपस्थित रहता है ।

(११)

यारव मददे कज दुईए खुद बेरेहम ।
वज बद बेबरम वज बदोए खुद बेरेहम ॥
दर हस्तिए खुद मरा जे खुद बेखुद कुन ।
ता अज खुदी, ओ बेखुदीए खुद बेरेहम ॥

आँरा के फना शेवओ फक्र आईनस्त ।
ना कश्फो इक्की ना मार्फत ना दीनस्त ॥
रफत ऊ जे मियाँ हमी खुदा मानंद खुदा ।
अलफको इज्जानम्मह हुवलाह ईनस्त ॥

(१२)

अज नेस्तीस्त ई कि फनाए खेशतन मोखाही ।
अज खिर्मने हस्तियत जूर गो काही ॥
ता यकसरे मू जे खेशतन आगाही ।
गर दम जनी अज राहें फना गुमराही ॥

(११)

हे ईश्वर मेरी सहायता कर जिससे मेरा अहंकार मिट जावे । मेरी सभी
कुभावनाएँ दूर हो जावें और हृदय की मलिनता काफूर हो जावे ।

तू इतनी कृपा मेरे ऊपर बिखला दे कि जिससे अपनत्व को भूल कर मैं
मतवाला हो जाऊँ और खुदी और मस्ती में किसी प्रकार का अन्तर न ज्ञात
कर सकूँ ।

जब मनुष्य इस अवस्था में पहुँच जाता है, वह पूर्ण उदासी हो जाता है
और उसे धर्म इत्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है ।

ऐसा मनुष्य स्वयं किसी प्रकार का अस्तित्व न रखकर ब्रह्मस्वरूप हो
जाता है । पूर्ण योगी वही होता है जिसमें ईश्वर के अतिरिक्त और किसी
प्रकार की भावना नहीं रहती ।

(१२)

तुझे यह स्मरण रखना चाहिये कि अपना आपा खो देने के लिये
अस्तित्व का ज्ञान अणुमात्र भी हृदय में न रखना चाहिये ।

यदि उसका अणुमात्र भी ज्ञान रहेगा तो अपनत्व को बिस्तार देने का
दावा करना ही व्यर्थ है ।

(१३)

तौहीद बडर्फे सूफिए माहबे सैर ।
तख्खसीसे दिल अज तबज्जहे ऊस्त बरौर ॥
रम्जे जे निहायत मुक्कामाते तुयूर ।
गुलम बतो गर फझ कुनी मंतिक्केतैर ॥

(१४)

ऐ बुलबुले जाँ मस्त जे यादे तो मरा ।
वै मायए गम पस्त जे यादे तो मरा ॥
लज्जाते जहाँरा हमा दर पाए फिगन्द ।
जौके कि देहद दस्त जे यादे तो मरा ॥

(१५)

वर ऊदे दिलम नवाकत यक जमजमा इश्क ।
जाँ जमजमा अम जे पाए ता सर हमा इश्क ॥
हक्का कि व अहदहा नयायम बेरँ ।
अज ओहदए हक गुजारीए यकदमा इश्क ॥

(१३)

ऐ ईश्वर की खोज करने वाले ! तुझे इस मार्ग पर चलने के लिये उसे छोड़कर सभी वस्तुओं से दिल को हटा लेना है ।

मैं तुझ पर सन्यासियों के अन्तिम पद का एक रहस्य प्रकट कर रहा हूँ । यदि तू उनकी बातें समझता है, तो इसको भी समझ जा ।

(१४)

कि हे मेरे प्राणों के स्वामी ! तेरी स्मृति में यह हृदय मतवाला हो रहा है और शोक की पूँजी घटने लगी है ।

तेरी याद में जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है उसने तमाम ससार के मज्नों को अपने पैरों से रौंद डाला है ।

(१५)

मेरे हृदय रूपी सितार पर, प्रेम ने एक ऐसी गति बजा दी है, जिसके प्रभाव से मैं सर से पैर तक प्रेम ही प्रेम हो गया हूँ ।

सच तो यह है कि मैं सहस्र मुख से भी प्रेम को पूर्णतया धन्यवाद देने में सफल न हो सकूँगा ।

(१६)

या मन बहवाका बिलरुहे समेहतो ।
हम फौक्रिओ हम तहतियो ना फौक्रो न तहत ॥
जाते हमा जुज वजूद क्रायम बवजूद ।
जाते तू वजूदे साजिजो हस्तिए बहत ॥

बस बेरंगस्त यारे दिलखाह ऐ दिल ।
क्राने न शबी बरंग नागाह ऐ दिल ॥
अस्ले हमा रंगहा अजौ बेरंगस्त ।
मन अहसना सिबरातम मिनल्लाहए दिल ॥

(१७)

हम्ती बक्रयासो अक़ले असहाबे कयूद ।
जुज आरिजे आयौनो हक्रायक़ न नमूद ॥
लेकिन बमुकाशफ़ाने अरबाबे शहूद ।
आयौ हमा आरिजन्दो मारुज वजूद ॥

(१८)

परमात्मन् ! तेरी लगन में मैंने अपने प्राणों तक का न्योछावर कर दिया है । तू सर्वत्र व्याप्त है किन्तु तुझे ऊपर नीचे कहीं भी नहीं कह सकते ।

सभी वस्तुएँ तुझी से उत्पन्न हुई हैं परन्तु तू सब से अलग है । सब के जीवन का सम्बन्ध तुझ से है, परन्तु तेरा जीवन किसी से भी सम्बन्धित नहीं है ।

वह नितान्त पवित्र और निर्मल है । वह भिन्न, जिसको हृदय चाहता है बिल्कुल बेरंग है । उस पर एक भी निशान नहीं है । ऐ हृदय ! तू कहीं रंग पर ही सन्न मत कर लेना ।

तमाम अंग केवल उसी बेरंग को प्रकट कर रहे हैं । ऐ दिल ! यह समझ ले कि ईश्वर रंगरहित होकर भी सब रंगों से बढ़कर है ।

(१७)

हस्ती ईश्वर के प्रकाश को प्रकट करने वाली एक वस्तु है अन्यथा शब्दों में इसका वर्णन ही नहीं हो सकता है ।

अब यह प्रश्न उठता है कि वह मुख्य मुख्य वस्तुएँ कौन सी हैं जिन्हें हस्ती अपने अन्दर धारण किए हुए है । वह वस्तुएँ हैं कुछ विशेषता रखने वाली । उनकी सत्यता उस पर प्रकट है ।

(१८)

बा गुल्ल रुखे खोश गुल्लम ऐ गुंघे देहों ।
 हर लहजा मपोरा चेहरा चूँ अरवा देहों ॥
 जद खन्दा कि मन बअक्से खूबाने जहों ।
 दर पर्दा अर्यों बाशमो बे पर्दा नेहों ॥
 रुखसारे तो बेनकाब दीदन न तवों ।
 दीदारे तो बेहिजाब दीदन न तवों ॥
 मादाम कि दर कमाले इशाराक बुबद ।
 सर चरमए आफ़ाब दीदन न तवों ॥
 खुराँद चूँ बर फलक जनद रायते नूर ।
 दर परदा तू वो खीरा शवद दीदा जे दूर ॥
 बाँदम कि कुन्द जे पर्देए अन्न जहूर ।
 फन्नाजिरो इल्महो ईलैहे भिन गैरे कुसूर ॥

(१९)

दामाने गिनाए इश्क़ पाक आमद पाक ।
 जालूदगिए वजूदे बा मुरते खाक ॥

(१८)

मैंने अपने गुलाब के से मुखवाली प्रियतमा से कहा कि ऐ सुन्दरी ! तू मानिनियों के समान अपने मुख को सदैव छिपाये न रखा कर ।

उसने हँस कर उत्तर दिया कि मैं तो संसार की अन्यान्य प्रेमिकाओं से बिल्कुल भिन्न हूँ । मैं पर्दे के भीतर साफ़ दिखलाई देती हूँ, परन्तु उसके बाहर छिपो रहती हूँ ।

जब तक तेरे मुख पर नकाब न पड़ा हो उसका दिखाई देना असम्भव है । और तेरी सूरत बिना पर्दे के दृष्टि में ही नहीं आ सकती ।

जिस समय सूर्य, अकाश में पूर्ण रूप से प्रकाशित होता है, उस समय उसका देखना नामुमकिन है ।

यदि तू पर्दे के भीतर भी हो तब भी पूर्णरूप से प्रकाशित देखने में, तेरी आँखें दूर से ही चौंथिया जाती हैं ।

परन्तु, इसके विपरीत जब वह बादलों के अन्दर होता है तब सरलता से देखा जा सकता है ।

(१९)

मेरा काँच बिल्कुल पवित्र और अदारा है । वह किसी पर अवलम्बित नहीं है । उसका अस्तित्व एक मुट्ठी धूल के साथ सम्बद्ध नहीं हो सकता ।

चूँ जल्वागरो नज़ारगाए जुम्ला .खुदस्त ।
 गर मा व तू दर्मियों न बाशेम चे बाक ॥
 हर शारों सिफत कि हस्तिए हक़ दारद ।
 दर .खुद हमा मालूमो मोहक़क़ दारद ॥
 दर खिन्ने मुक़य्यदात मोहताज बख़ेश ।
 अज़ दीदने आँ गिनाए मुतलक़ दारद ॥
 बाजिब ज़े बजूद नेको बद मुसतग़नीस्त ।
 बाहिद ज़े मरातिबे अदद मुसतग़नीस्त ॥
 दर .खुद हमा रा चू जावदाँ मी बीनद ।
 अज़ दीदने शाँ बुरूँ ज़े .खुद मुसतग़नीस्त ॥

वह सब को प्रकाश और पवित्रता प्रदान करने वाला है । यदि हम और तुम दोनों उसके बीच में न रहें तब भी उसकी कोई हानि नहीं हो सकती ।

उसके लिये किसी ऐसे मध्यस्थ की, जिसमें होकर वह अपने आपको प्रकट कर सके, आवश्यकता नहीं है । प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो ईश्वर के सभी गुणों और विशेषताओं में वर्तमान है ।

फिर उसको क्या पड़ी है कि वह अपने आपको अन्य वस्तुओं द्वारा प्रकट करे ।

उसको उचित और अनुचित, भले और बुरे किसी की भी पर्वाह नहीं है । उसको प्रतिष्ठा और उसके दर्जों की कोई चिन्ता नहीं है ।

जब वह सब को सदैव अपने अन्दर ही देखता है तो फिर उसको अपने से बाहर देखने की उसको क्या पर्वाह है ?

शब्दार्थ

पृ० ८—मंसूर हल्ताज : एक बहुत बड़े सूफी भक्त थे, जिन्होंने घोषित किया था कि 'मैं सत्य हूँ।' उनके ऊपर धर्म-विरोध का दोष लगाया गया और ऐसे निहट्ट वाक्यों को कहने के कारण उनको फांसी की सजा दी गई, क्योंकि उलमाओं की राय में ऐसे वचन इस्लाम धर्म के विरुद्ध थे। सूफी उनको बहुत पूज्य और प्रतिष्ठित समझते हैं और महान सिद्ध पुरुष की तरह मानते हैं।

पृ० १०—याकूब : एजक के पुत्र और एक सिद्ध पैगम्बर थे जिनका हवाला कुरान में 'कुल के प्रधान' की तरह दिया गया है। वह यूसुफ के पिता थे।

पृ० १०—यूसुफ : कुरान में विस्तृत विचरण दिया हुआ है। "जामी" ने इनकी प्रेम कहानी को अपनी पुस्तक 'यूसुफ व जुलेखा' में अमर बना दी है। वे अपनी शुद्धता के आदर्शों के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार जब वह अपने पिता और भाइयों सहित मिश्र जा रहे थे तो उनके डाही भाइयों ने उनको एक कुएं में ढकेल दिया, किन्तु वह बच गये। बाद को मिश्र की शाहजादी जुलेखा का उनके प्रति प्रेम हो गया। जुलेखा बुराई की ओर उन्हें ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर उनको कैदखाने में बंद कर दिया गया। जांच करने के बाद वह निर्दोष पाये गये, और छोड़ दिये गये।

पृ० ११—फरहाद व शीरी : फरहाद एक महान प्रेमी था, जो शाहजाही शीरी के प्रेम में फंस गया था। शीरी ने उसकी बहुत कठिन परीक्षा ली जैसे पहाड़ में से नहर निकलवाई। लेकिन उसने उस कार्य को पूरा किया। किन्तु शीरी ने अपने वादे को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपनी आत्महत्या कर ली। अपने सच्चे प्रेमी की मृत्यु को सुनकर शीरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये। "निजार्मा" ने अपनी कविताओं से इस घटना को अमर कर दिया है।

पृ० १२—यमन : अरब का दक्खिनी-पश्चिमी भाग है, और उपजाऊ होने के कारण अरब का बाग कहा जाता है।

पृ० १२—खुतन : तातारियों का स्थान।

पृ० १५—असहाबे क़हफ़ : 'गुफा के साथी' : कुरान में इसका उल्लेख किया गया है। जब समराट डेसिको ईसाइयों को सताता था, तब सात नवयुवक एक गुफा में छिप गये। उस अत्याचारी ने

- गुफा का मुँह बंद करवा दिया लेकिन उनको रास्ता मिल गया और उनकी कोई हानि नहीं हुई और अद्भुत रूप से बच गये ।
- पृ० २१—अफलातून : यूनान का एक बहुत बड़ा दार्शनिक था ।
- पृ० २२—क्राहूँ : मूसा पैराम्बर के देश का था । वह अपनी सम्पत्ति के लिये प्रसिद्ध था । मूसा के विरुद्ध बिद्रोह करने और अपनी दौलत के घमण्ड के कारण उसको सजा मिली ।
- पृ० २२—जैहूँ : स्वर्ग-लोक की एक नदी का नाम है ।
- पृ० २८—इब्राहीम : छे पैराम्बरों में से एक हैं, और ' परमात्मा के मित्र ' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं । ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनों इसको अपने पैराम्बरों में से मानते हैं ।
- पृ० २८—इसराफील : एक स्वर्गादूत है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह प्रलय के दिन तुरही बजाकर मरे हुए लोगों को जगावेगा ।
- पृ० ३३—जुलकरनैन : यूनान का सम्राट, सिकन्दर : कोई बहादुर पुरुष जो इबराहीम के समय में रहता था ।
- पृ० ३५—फिरऔन : मूसा के समय में मिश्र का बादशाह था । वह लाल सागर में डूब कर मर गया ।
- पृ० ३५—सलमान : अली के मित्र का नाम ।
- पृ० ६२—क्यामत : प्रलय ।
- पृ० ६३—जुब्बा : सर का पहनावा ।
- पृ० ६३—सूफ़ : ऊनी लबादा जो सूफी पहनते हैं ।
- पृ० ६३—सीमुरी : एक चिड़िया ।
- पृ० ६५—लुक्मान : एक बहुत बड़ा दार्शनिक जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिये मशहूर है । यूनानी उसको ऐसाप कहते हैं ।
- पृ० ७०—तयम्मुम : जहाँ पर नमाज के वज्र के लिए पानी नहीं मिलता है, वहाँ मुसलमान नमाजों बालू का प्रयोग करते हैं, जिस क्रिया को इस नाम से पुकारा जाता है ।
- पृ० ७५—तरसा : मूर्तिपूजक : ईसाइयों को भी इस नाम से पुकारते हैं ।
- पृ० ७६—दफ ब चंग : बाजों के नाम ।
- पृ० ८३—जिबराहिल : स्वर्ग का दूत, जिसके द्वारा मुहम्मद साहब पर कुरान बरसारी गई : कभी २ ईसाइयों के पाक दूत को भी इस नाम से बुलाया गया है ।
- पृ० ८३—शुक्रवार : शुक्रवार की प्रार्थना । इसकी महत्ता यह है कि पैराम्बर अक्सर इस दिन उपदेश किया करते थे ।

- पृ० ८७—हाकिम : अदृश्य बोलने वाला : आकाश वाणी ।
- पृ० ९३—तौकै सुरैया : एक गृह ।
- पृ० ९८—कैकुबाद : ईरान के एक प्रसिद्ध बादशाह का नाम ।
- पृ० १०२—संजर : ईरान के एक बादशाह का नाम ।
- पृ० १११—कुफ़ : धर्मविरोध और अविश्वास । मुसलिम, मूर्ति पूजकों और अग्निपूजकों के मत को 'कुफ़' कहा करते थे ।
- पृ० ११६—जुन्नार : माला ।
- पृ० १२२—तसबीह : माला ।
- पृ० १३४—मुसहफ़ : पूजा करने का आसन ।
- पृ० १३५—खिर्क़ा : सूफी का लबादा ।
- पृ० १६१—अनलहक़ : मंसूर अल इल्ताज इन शब्दों को कहा करते थे 'मैं खुदा हूँ, इस धर्मविरोध के लिये मुसलमानों ने उनको सूली पर चढ़ा दिया ।
- पृ० १६८—ईसा : ईसाइयों के पैगम्बर । मुसलमानों ने इनको भी स्वीकार किया है ।
- पृ० १६९—मरियम : ईसा की माँ ।
- पृ० १९४—चलोपा : छोटा सलीब, जिसको ईसाई कमर में पहनते थे ।
- पृ० १९४—नसरानियों : ईसाई ।
- पृ० १९४—कोह क़ाफ़ : पहाड़ों का एक समूह । मुसल्मानों का यह विश्वास है कि वहाँ पर जिनों और राक्षसों का निवासस्थान है । अकसर काकेशस पहाड़ के लिये प्रयोग किया जाता है ।
- पृ० १९४—इब्नसीना : अरब का एक बहुत बड़ा मुस्लिम दार्शनिक ।
- पृ० १९४—क्रौस : ग्रहों का एक क्रम ।
- पृ० २०५—मजनुँ ब लैला : जामी की लिखी हुई बहुत बड़ी प्रेमकहानो के प्रधान पात्र ।
- पृ० २०७—मुप्रती : वह हाकिम जो क़ानून बनाता है । वह क़ाज़ी को सहायता देता है और उसको अपना फ़तवा भी देता है । क़ुरान और हदीस का बड़ा ज्ञाता माना जाता है ।
- पृ० २०९—खलील : इब्राहिम का दूसरा नाम ।
- पृ० २०९—नमरुद : एक ईश्वर-विरोधी बादशाह था जिसने इब्राहिम को सताया था और एक बार आग में फेंक दिया था, किन्तु संयोग वश वह बच गये । एक बार उसने जब इब्राहिम पर चढ़ाई की

तो उसकी सेना के लोगों में एक ऐसी अव्यवस्था फैल गई कि एक दूसरे की बोली न समझकर आपस में लड़-कट कर मर गए। एक मच्छड़ नमरूद की नाक में घुस गया, जिसके कारण उसे बहुत पीड़ा हुई और उसी रोग में उसकी मृत्यु हो गई।

पृ० २१५—यूनस : एक पैगम्बर था। जब वह परमात्मा के उपदेश की शिक्षा देता था तो कोई नहीं सुनता था। किन्तु उसको एक मछली निगल गई। इस प्रकार वह सजा पाने से बच गया। बाद में वह मछली दिखाई पड़ी और वह बाहर निकल आया।

पृ० २२४—बैतुलमुकद्दस : 'पवित्र-घर' : जेरुसलम के मन्दिर को यह नाम दिया गया है।

पृ० २२६—अलस्त, कालूबला : जिस समय सृष्टि हुई उस समय ईश्वर ने फरिश्तों से कहा, 'कहो मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, उन्होंने इसे स्वीकार किया। अरबी शब्द, अलस्त, का शाब्दिक अर्थ है 'मैं तुम्हारा खुदा हूँ और कालूबला, का अर्थ है 'तू मेरा खुदा है।'

पृ० ६५—मुहम्मद : इज्जरत साहब के नाम से भी विख्यात हैं। इसलाम धर्म के पैगम्बर और प्रवर्तक हैं।

पृ० २६५—अबूजेहल : पैगम्बर मुहम्मद के चचा थे और अक्सर उनसे लड़ा करते थे।

पृ० २८९—मूसा : छे पैगम्बरों में से एक थे और इसलिए प्रसिद्ध थे कि परमात्मा के साथ बातचीत किया करते थे। उस समय फ़रऊन मिश्र में शासन करता था, और इसराईल के लड़कों को सताता था। इसका कारण यह था कि वह अपना साम्राज्य उन लड़कों में से एक के द्वारा खोने को था। वह लड़का मूसा था। उसने फ़रऊन को नष्ट कर दिया और इसराइलियों को बचा लिया और उन्हें क़ानून बतलाया और अच्छे चाल चलन का उपदेश दिया। उसने एक मर्तबा भगवान से प्रार्थना की कि तेरी शान देखा चाहता हूँ। तब तूर पहाड़ पर एक ज्योति प्रगट हुई। मूसा मूर्छित हो गया और तूर पहाड़ जल गया।

पृ० २९१—इबलीस : एक पिशाच है। पहले वह भूत प्रेत और जानवरों पर शासन करता था। किन्तु जब उसका जन्म हुआ और उसने आदम के सामने मुकने से इनकार किया, तब वह स्वर्ग के बाहर खे निकाल दिया गया।

पृ० ३०२—शेख : प्रधान मौलवी को कहते हैं। यह बहुत आदरणीय होता है।

पृ० ३२६—मोह्तसिब : धर्म और लोगों के चालचलन का निरीक्षक होता है। मुस्लिम शासक इसको नियुक्त करता है कि वह धर्म की रीति-रिवाज के विपरीत चलनेवाले मुसलमानों को सजा दे।

पृ० ३२९—तूबा : स्वर्ग का एक वृक्ष।

पृ० ३८८—सिदरा : एक पेड़ है जो सातवें आकाश में है, और जिसकी जड़ छटवें आकाश में है। इसके फल घड़े की तरह होते हैं और पत्तियाँ हाथी के कान की तरह।

पृ० ३५३—सामरी : एक जादूगर जो मूसा से लड़ा, लेकिन उसके जादू की मूसा के असा (लाठी) के सामने कुछ बन न पड़ी।

पृ० ३८५—खिज़्र : कुछ लोगों द्वारा पैगम्बर माने जाते हैं और अब भी जीवित समझे जाते हैं। वह सूफियों की सहायता करते हैं और मूसा के साथी समझे जाते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि उन्होंने जीवन-रूपा मरने को प्राप्त कर लिया है जिससे वह जल पिया करते थे। वह हर एक काल के समकालीन व्यक्ति समझे जाते हैं और एक बड़े पथप्रदर्शक हैं।

पृ० ३९२—गब्र : एक बहुत पुराने मजहब का नाम है। दानियाल इनका पैगम्बर था। वे अग्नि की पूजा करते थे और अग्नि को परमात्मा का स्वरूप मानते थे। मूर्ति-पूजा को घृणा की दृष्टि से देखते थे। ज़ारुसथर ने इस धर्म में सुधार किया और इसके समर्थक प्रधानतः ईरान में थे जहाँ पर इसकी वृद्धि हुई, हिन्दुस्तान में वे पारसी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी मजहबी किताब 'जेन्दावस्ता' है।